Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
મશબ/1215/170-179/છ, તા. 23-3-2016 – થી મંજૂર

हिन्दी

(प्रथम भाषा)

कक्षा 11

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है ।
सभी भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परंपरा पर गर्व है।
मैं हमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता-पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा- एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा। उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

मूल्य: ₹ 36.00

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन' , सेकटर 10-ए, गांधीनगर - 382010

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर

इस पाठ्यपुस्तक के सभी अधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन है। इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

विषय परामर्शन
डॉ. महावीरसिंह चौहान

लेखन-संपादन
डॉ. दयाशंकर त्रिपाठी(कन्वीनर)
डॉ. आलोक गुप्ता
डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता
श्री राजेशसिंह क्षत्रिय
डॉ. कोकिलाबहन पारेख
डॉ. कन्हैयालाल डामोर
श्री उर्मिलाबहन दुबे

समीक्षा
डॉ. ईश्वरसिंह चौहान
श्री जे. एस. नैथाणी
श्री मुकेशकुमार तिवारी

संयोजन
डॉ. कमलेश एन. परमार
(विषय-संयोजक : हिन्दी)

निर्माण-संयोजन
श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन
श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गए नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसंधान में गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकृति दी है।

नये राष्ट्रीय अभ्यासक्रम के परिपेक्ष में तैयार किए गए विभिन्न विषयों के नये अभ्यासक्रम के अनुसार तैयार की गई **कक्षा 11 हिन्दी (प्रथम भाषा)** की यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है। नये पाठ्यपुस्तक की हस्तप्रत निर्माण की प्रकिया में संपादकीय पेनल ने विशेष ख्याल रख कर तैयार की है। एन.सी.ई.आर.टी. एवं अन्य राज्यो के अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए गुजरात के नये पाठ्यपुस्तक को गुणवत्तालक्षी कैसे बनाया जाय उस पर संपादकीय पेनल ने सराहनीय प्रयत्न किया है।

इस पाठ्यपुस्तक को प्रसिद्ध करने से पहले इसी विषय के विषय निष्णांतों एवं इस स्तर पर अध्यापनरत अध्यापको की ओर से सर्वांगीण समीक्षा की गई है। समीक्षा शिबिर में मिले सुझावों को इस पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। पाठ्यपुस्तक की मंजूरी क्रमांक प्राप्त करने की प्रकिया के दौरान गुजरात माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड के द्वारा प्राप्त हुए सुझावों के अनुसार इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक सुधार करके प्रसिद्ध किया गया है।

नये अभ्यासक्रम का एक उदेश्य है, इस स्तर के छात्र व्यवहारिक भाषा का उपयोग करने के साथ-साथ अपनी भाषा अभिव्यक्ति को विशेष असरकारक बनाएँ। साहित्यिक स्वरूप एवं सर्जनात्मक भाषा का परिचय के साथ-साथ हिन्दी भाषा की खूबियों को समझकर अपने स्व-लेखन में प्रयोग करना सीखें, इस लिए भाषा-अभिव्यक्ति एवं लेखन के लिए छात्रों को पूर्ण अवकाश दिया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक को रुचिकर, उपयोगी एवं क्षतिरहित बनाने का पूरा प्रयास मंडल द्वारा किया गया है, फिर भी पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा में रुचि रखनेवालों से प्राप्त सुझावों का मंडल स्वागत करता है।

एच. एन. चावडा — नियामक
डॉ. नीतिन पेथाणी — कार्यवाहक प्रमुख

दिनांक : 03-03-2016 **गांधीनगर**

प्रथम संस्करण : 2016

प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, विद्यायन , सेक्टर-10ए, गांधीनगर की ओर से एच. एन. चावडा, नियामक

मुद्रक :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह – *

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे ;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे ;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे ;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो ; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं ;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व संझे और उसका परिरक्षण करे ;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे ;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे ;

(झ) सार्वजनिक सम्पति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे ;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के क्षेत्रों में उत्कर्ष की और बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले ;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, बालक या प्रतिपाल्य के लिए यथास्थिति शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

---

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रमणिका

1. मातृवेदना	(कविता)	सूरदास	1
2. अपराध	(कहानी)	उदयप्रकाश	3
3. सवैया और कवित्त	(कविता)	देव	6
4. रुचि	(निबंध)	बालकृष्ण भट्ट	8
5. ज्ञानोपदेश	(कविता)	ब्रह्मानंद स्वामी	11
6. अभय साधक-बाबा आमटे	(जीवनी)	न्यायाधीश चंद्रशेखर धर्माधिकारी	13
7. भारतमाता	(कविता)	सुमित्रानंदन पंत	16
8. मजबूरी	(कहानी)	मन्नू भंडारी	18
9. बिस्तरा है न चारपाई है	(गज़ल)	त्रिलोचन शास्त्री	25
10. अदम्य जीवन	(रिपोर्ताज़)	रांगेय राघव	27
11. याचना	(कविता)	कन्हैयालाल नंदन	33
12. परमात्मा का कुत्ता	(कहानी)	मोहन राकेश	35
13. नदी, न पुल	(कविता)	फूलचंद गुप्ता	40
14. धूप-बत्ती : बुझी, जली!	(निबंध)	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	42
हिन्दी के विविध रूप			46

द्वितीय सत्र

15. मानसरोदक खंड	(कविता)	मलिक मुहम्मद जायसी	56
16. महाराजपुर से ग्वारीघाट	(यात्रा-वृतांत)	अमृतलाल बेगड़	58
17. दातव्य कौ अंग	(कविता)	वाजिद जी	63
18. स्कंदगुप्त	(नाट्यांश)	जयशंकर प्रसाद	64
19. बादल-राग	(कविता)	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	69
20. राजेन्द्र बाबू	(संस्मरण)	महादेवी वर्मा	71
21. लहरों का निमंत्रण	(कविता)	हरिवंशराय 'बच्चन'	75
22. बड़ी दादी की बड़ी बात	(उपन्यास-अंश)	कमलेश्वर	77
23. रामदास	(कविता)	रघुवीर सहाय	83
24. गंगा : देश की प्राण नाड़ी	(निबंध)	विद्यानिवास मिश्र	85
25. गुठली आम की	(कविता)	रंजना जायसवाल	88
26. ओ लाल आफताब!	(गद्य-गीत)	फणीश्वरनाथ रेणु	90
27. मकई के खेत में	(कविता)	निलय उपाध्याय	93
28. खितीन बाबू	(कहानी)	अज्ञेय	95
साहित्य शास्त्र			99

(पूरक वाचन)

1. जुदाई गुजरात की	(कविता)	वली	115
2. गाँधीजी को एक चिट्ठी	(पत्र)	जयप्रकाश नारायण	117
3. पुस्तकें	(कविता)	विश्वनाथप्रसाद तिवारी	119
4. रसायन और हमारा पर्यावरण	(विज्ञान-लेख)	डॉ. एन. एल. रामनाथन	121

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1 मातृवेदना

सूरदास

(जन्म : सन् 1478 ई ; निधन : सन् 1573 ई.)

कृष्ण भक्त कवि सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव में हुआ था। वे दिल्ली-मथुरा मार्ग पर यमुना-किनारे गऊघाट पर रहते थे और कृष्णभक्ति के पद रचकर गाया करते थे। पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक वल्लभाचार्यजी से उनकी भेंट यहीं पर हुई थी। वल्लभाचार्यजी की प्रेरणा से ही सूर ने दैन्य भाव त्याग कर कृष्ण की बाललीलाओं का गान आरंभ किया था। 'श्रीमद् भागवत' से भी सूर पर्याप्त प्रभावित हुए । उनकी भक्ति में सख्य भाव की प्रधानता देखने को मिलती है।

सूर के पदों में वात्सल्य और श्रृंगार का बेजोड़ वर्णन हुआ है। उनके बाललीला संबंधी पदों में बाल मनोभावों का बड़ा सहज चित्रण हुआ है।'सूरसागर' उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। 'भ्रमरगीत' उनका सर्वोत्तम उपालंभ काव्य है जिसमें गोपियों की वेदना का बहुत भावपूर्ण चित्रण हुआ है। 'साहित्य लहरी' सूर के दृष्टकूट पदों का संग्रह है। सूर की कविता में ब्रज भाषा का माधुर्य नाद-सौंदर्य के साथ फूट पड़ा है।

प्रस्तुत पदों में पुत्र-वियोग से व्यथित माता के हृदय का क्रंदन आँसू बन फूट पड़ा है। कंस की सूचना से सुफलक-सुत अर्थात् अक्रूर जब कृष्ण को मथुरा ले जाते हैं और नंद खाली हाथ वापस लौट आते हैं तब माता यशोदा उनके समक्ष अपनी असह्य वेदना तो व्यक्त करती ही हैं,नंद को उपालंभ भी देती हैं। कहती हैं कि अपने प्राण प्यारे के बिछुड़ने पर आपकी छाती फट क्यों नहीं गई ? राजा दशरथ की तरह पुत्र-वियोग में आपके प्राण क्यों नहीं निकल गए ? माता यशोदा को अपना ही नहीं सारे ब्रज का जीवन अंधकारमय प्रतीत होता है। अपने को हतभागिनी समझती हुई माता के आँसू रुकने का नाम नहीं लेते। सूर ने इन पदों में वात्सल्य-वियोग का मार्मिक वर्णन किया है।

(1)

दोउ ढोटा गोकुलनायक मेरे।
काहैं नंद छाँड़ि तुम आए , प्रान जिवन सब केरे ॥
तिनकें जात बहुत दुख पायौ, रोर परी इहिं खेरे।
गोसुत गाइ फिरत हैं दहुँ दिसि, वै न चरै तृन घेरे॥
प्रीति न करी राम दशरथ की, प्रान तजे बिनु हेरैं।
'सूर' नंद सौं कहति जसोदा, प्रबल पाप सब मेरैं॥

(2)

नंद हरि तुमसौं कहा कह्यौ।
सुनि सुनि निठुर बचन मोहन के, कैसैं हृदय रह्यौं ॥
छाँड़ि सनेह चले मंदिर कत, दौरि न चरन गह्यौ।
दरकि न गई बज्र की छाती, कत यह सूल सह्यौ॥
सुरति करत मोहन की बातैं, नैननि नीर बह्यौ।
सुधि न रही अति गलित गात भयौ, मनु डसि गयौ अह्यौ॥
उन्हैं छाँड़ि गोकुल कत आए, चाखन दूध दह्यौ।
तजे न प्रान 'सूर' दसरथ लौ, हुतौ जन्म निबह्यौ॥

शब्दार्थ-टिप्पणी

दोउ ढोटा दोनों बालक (कृष्ण-बलराम) **रोर** बहुत से लोगों की रोने की आवाज **खेरे** गाँव **दहुँ** दस **तृन** घास **प्रबल** भारी **निठुर** निष्ठुर, कठोर **सनेह** स्नेह, प्रेम **मंदिर** घर **कत** कैसे **दरकि** फट **सूल** वेदना **सुरति** याद करके **सुधि** ध्यान,याद **गलित** शिथिल, गला हुआ **गात** शरीर **अह्यौ** साँप **निबहौं** निबाहना, सार्थक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) गोकुलनायक किसे कहा गया है ?

(2) ब्रज की गायों की क्या स्थिति है ?

(3) 'प्रीति न करी राम दसरथ की' से क्या तात्पर्य है ?

(4) सारे दु:ख का कारण यशोदा किसे मानती हैं ?

(5) 'दरकि न गई बज्र की छाती' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(6) 'यशोदा को मानो साँप ने डस लिया हो' उनकी किस स्थिति को देखकर कहा गया है ?

(7) यशोदा की आँखों से आँसू क्यों बहने लगे ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) 'दोउ ढोटा गोकुलनायक मेरे' पद का भावार्थ लिखिए।

(2) माँ यशोदा की वेदना अपने शब्दों में विस्तार से लिखिए।

(3) ससंदर्भ व्याख्या कीजिए:

सुरति करत मोहन की बातैं, नैननि नीर बह्यौ ।
सुधि न रही अति गलित गात भयौ, मनु डसि गयौ अह्यौ॥

योग्यता-विस्तार

- यशोदा की मातृवेदना से संबंधित अन्य पद पुस्तकालय से ढूँढकर पढ़िए और लिखिए।
- सूर रचित अपने प्रिय पदों को लय व ताल के साथ गाएँ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 अपराध

उदयप्रकाश

(जन्म :सन् 1952 ई.)

आठवें दशक के एक महत्तवपूर्ण कवि-कहानीकार उदयप्रकाश का जन्म मध्यप्रदेश के शहडोल जिले के सीतापुर गाँव में हुआ था। वे स्नातक तर विज्ञान के छात्र रहे किंतु बाद में नंददुलारे वाजपेयी स्वर्ण पदक के साथ हिन्दी साहित्य में एम.ए. कर अध्यापन और शोधकार्य किया। कुछ वर्ष 'पूर्वग्रह' और 'दिनमान' का संपादन भी किया।

उदयप्रकाश समकालीन हिन्दी कविता के एक ऐसे समर्थ कवि हैं जिन्होंने प्रगतिशील कविता की विरासत को लेकर अपनी कविता की एक नई पहचान बनाई। उनकी कविता और कहानी दोनों में जनसाधारण अर्थात् आम आदमी की आवाज की सहज अभिव्यक्ति हुई है। वे अपने आसपास के परिवेश को पूरी ईमानदारी से अपनी रचनाओं में आलेखित करते हैं। सुनो कारीगर, अबूतर, कबूतर, रात में हारमोनियम, एक भाषा भी होती है- इनके काव्य संग्रह हैं। दरियाई घोड़ा, तिरिछ, और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर तथा 'मोहनदास' कहानी संग्रह हैं। 'मोहमदास' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

आत्मकथन शैली में रचित इस कहानी में कथा-नायक है छोटाभाई। छोटेभाई की मानसिक पीड़ा और पश्चाताप का वर्णन कहानी का मुख्य उद्देश्य है। खेलते समय अपनी ही गलती से अपने सिर पर लगी चोट का मिथ्या दोषारोपण छोटाभाई अपने अपाहिज किंतु देवतुल्य बड़े भाई पर लगाकर उसे पिता से पिटवाता है। उस समय उसे इस बात के लिए तनिक भी मलाल नहीं होता किंतु बाद में अपने किए पर बहुत ग्लानि एवं पीड़ा होती है। यह घटना उसे आजीवन अपराध बोध से पीड़ित रखती है। माता-पिता अब नहीं हैं इसलिए अब वह उनसे क्षमा भी नहीं माँग सकता। अपराध का प्रायश्चित व्यक्ति को ऊँचा उठा देता है, यह बात संकेत के रूप में उभरकर आती है।

मेरे भाई मुझसे छह साल बड़े थे। आश्चर्य था कि पूरे गाँव में सभी लड़के मुझसे छह वर्ष बड़े थे। मैं इसलिए सबसे छोटा था और अकेला था। सब खेलते तो उनके पीछे मैं लग जाता।

मेरे भाई बचपन से अपाहिज थे। उनके एक पैर को पोलियो हो गया था। लेकिन वे बहुत सुन्दर थे। देवताओं की तरह। वे आसपास के कई गाँवों में सबसे अच्छे तैराक थे और उनको हाथ के पंजों की लड़ाई में कोई नहीं हरा सकता था। घूँसे से नारियल और ईंटे तोड़ देते थे।

जबकि मैं दुबला-पतला था। कमज़ोर और चिड़चिड़ा। मुझे अपने भाई से ईर्ष्या होती थी क्योंकि उनके बहुत सारे दोस्त थे।

मैं सबसे छोटा था इसीलिए मैं भाई के लिए एक उत्तरदायित्व की तरह था। वे मुझसे प्यार करते थे और मेरे प्रति उनका रुख एक संरक्षक की ज़िम्मेदारी जैसा था।

सब खेलते और मैं छोटा होने के कारण अकेला पड़ जाता तो भाई आकर मेरी मदद करते। जोड़ी और पालीवाले कई खेलों में मुझे अपनी पाली में शामिल कर लेते थे। कोई दूसरा लड़का अपनी पाली में मुझे शामिल करके हार का खतरा नहीं उठाना चाहता था। अकसर भाई मेरी वजह से ही हारते। फिर भी वे मुझसे कभी कुछ नहीं कहते थे। मैं उनकी ज़िम्मेदारी था और वह उसे निभाना चाहते थे। जहाँ तक मुझे याद है, उन्होंने कभी मुझे नहीं मारा।

जो कुछ मैं बताने जा रहा हूँ उसका सम्बन्ध भाई और मुझसे ही है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण घटना है। ऐसी घटना जो जीवन-भर आपका साथ नहीं छोड़ती और अक्सर स्मृति में, बीच-बीच में, कहीं अचानक सुलगने लगती है। किसी अँगारे की तरह।

हुआ उस दिन यह कि मैं भाई के साथ खेलने गया। उस दिन बारिश हो चुकी थी और शाम की ऐसी धूप फैली हुई थी जो शरीर में उल्लास भरा करती है। ऐसे में कोई भी खेल बहुत तेज़ गतिमय और सम्मोहक हो जाता है।

सभी लड़के खड़ब्बल खेल रहे थे। लकड़ी की छोटी-छोटी डण्डियाँ हर लड़के के पास थीं। पूरी ताकात से खड़ब्बल को ज़मीन पर, आगे की ओर गति देते हुए, सीधे मारा जा रहा था। ताकत और संवेग से नम धरती पर गिरा हुआ खड़ब्बल गुलाटियाँ खाते हुए बहुत दूर तक जाता था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मुझमें न इतनी ताकत थी, न मैं इतना बड़ा था कि खड़ब्बल उतनी दूर तक पहुँचाता, जबकि वहाँ एक होड़, एक प्रति द्वन्द्विता शुरू हो चुकी थी। कोई भी हारना नहीं चाहता था। यह एक ऐसा खेल था जिसमें कोई पाली नहीं होती, कोई किसी का जोड़ीदार नहीं होता। हर कोई अपनी अकेली क्षमता से लड़ता है।

भाई भी उस खेल में डूब गए थे। वे कई बार पिछड़ रहे थे, इसलिए गुस्से और तनाव में और ज़्यादा ताकत से खड़ब्बल फेंक रहे थे।

वे मुझे भुला चुके थे। और मैं अकेला छूट गया था। छह वर्ष पीछे। कमज़ोर। उस दिन, उस खेल में शामिल होने के लिए मुझे छह वर्षों की दूरी पार करनी पड़ती, जो मैं नहीं कर सकता था।

भाई जीतने लगे थे। उनका चेहरा खुशी और उत्तेजना में दहक रहा था। उन्होंने एक बार भी मेरी ओर नहीं देखा। वे मुझे पूरी तरह भूल चुके थे।

मुझे पहली बार यह लगा कि मैं वहाँ, कहीं नहीं हूँ।

मुझे रोना आ रहा था और भाई के प्रति मेरे भीतर एक बहुत ज़बर्दस्त प्रतिकार पैदा हो रहा था। मैं अपने खड़ब्बल को, अकेला अलग खड़ा हुआ एक पत्थर पर पटक रहा था। मैं ईर्ष्या, आत्महीनता, उपेक्षा और नगण्यता की आँच में झुलस रहा था।

तभी अचानक मेरा खड़ब्बल चट्टान से टकराकर उछला और सीधे मेरे माथे पर आकर लगा। माथा फूट गया और खून बहने लगा। मैं चीखा तो भाई मेरी ओर दौड़े। खेल बीच में ही रुक गया था। "क्या हुआ ? क्या हुआ" भाई घबरा गए थे और मेरे माथे को अपनी हथेली से दबा रहे थे। मेरा गुस्सा मिटा नहीं था। मैं भाई को अपनी उपेक्षा का दण्ड देना चाहता था।

मैंने भाई को झटक दिया और खुद को छुड़ाकर घर की ओर भागा। भाई डर गए थे और दौड़कर मुझे मनाना चाहते थे। लेकिन उनका दायाँ पैर पोलियों का शिकार था इसलिए वे मेरे साथ दौड़ नहीं सकते थे। उन्होंने लँगड़ाकर दौड़ने की कोशिश भी की लेकिन वे गिर गए।

मेरी कमीज़ खून से भीग गई थी। सिर के बाल खून से लिथड़ गए थे। माँ मुझे देखकर डर गई और रोने लगीं। पिताजी घबराए हुए घाव पर पावडर डालने लगे।

मैंने रोते हुए माँ को बताया कि मुझे भाई ने खड़ब्बड़ से मारा है।

तभी मैंने देखा कि भाई लँगड़ाते हुए चले आ रहे थे। अकेले। उनको आशंका हो गई होगी। वे डरे हुए रहे होंगे।

भाई बार-बार कहते रहे कि मैंने इसे नहीं मारा, लेकिन पिताजी उन्हें पीटे जा रहे थे। भाई रो रहे थे। वे सच बोल रहे थे, लेकिन उन्हें सज़ा मिल रही थी।

मैंने भाई का चेहरा देखा। वे मेरी ओर देख रहे थे। उनकी आँखें लाल थीं और उनमें करुणा और कातरता थी, जैसे वे मुझसे याचना कर रहे हों कि मैं सच बोल दूँ। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। उन्हें सज़ा मिल चुकी ती। फिर इतनी जल्द बात को बिल्कुल बदलना मुझे सम्भव भी नहीं लग रहा था। क्या पता, पिताजी फिर मुझे ही मारने लगते। मैं डर गया था।

यह घटना वर्षों पुरानी है। लेकिन भाई की वे कातर आँखें अब भी मुझे कभी-कभी घूरने लगती हैं। याचना करती हुई, सच बोलने की भीख माँगती हुई। मेरी स्मृति में जब भी वे आँखें जाग उठती हैं, मेरी पूरी चेतना ग्लानि, बेचैनी और अपराध-बोध से भर उठती है।

मैं अपने इस अपराध के लिए क्षमा माँगना चाहता हूँ। इस अपराध की सज़ा पाना चाहता हूँ। लेकिन अब तो माँ और पिताजी भी नहीं हैं, जिनसे मैं यह बताऊँ कि उस दिन ठीक-ठीक क्या हुआ था।

भाई ही मुझे क्षमा कर सकते हैं, जिन्हें मेरे झूठ का दण्ड भोगना पड़ा। उनसे मैंने इस घटना का जिक्र भी करना चाहा, लेकिन उन्हें वह घटना याद ही नहीं। वे इसे बिल्कुल पूरी तरह भूल चुके हैं।

तो इस अपराध के लिए मुझे क्षमा कौन कर सकता है ? क्या यह ऐसा अपराध नहीं है जिसके बारे में लिया गया जो निर्णय था, वह गलत और अनन्यायपूर्ण था, लेकिन जिसे अब बदला नहीं जा सकता ?

और क्या यह ऐसा अपराध नहीं है, जिसे कभी भी क्षमा नहीं किया जा सकता ? क्योंकि इससे मुक्ति अब असम्भव हो चुकी है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

अपाहिज अपंग, विकलांग **उत्तरदायित्व** जिम्मेवारी **पाली** गोल **संरक्षक** रक्षा करनेवाला **वजह** कारण **अंगारा** चिनगारी **खड़ब्बल** घर के बाहर छोटी-छोटी डंडियों से खेला जानेवाला लड़कों का खेल **नम** गीला **गुलाटियाँ** उलटना-पलटना **होड़** प्रतिस्पर्धा **प्रतिकार** बदले का भाव

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) गाँव के सभी लड़के कथा-वाचक से कितने वर्ष बड़े थे ?
(2) कथा-वाचक के बड़े भाई कब से अपाहिज थे ?
(3) कथा-वाचक के प्रति उसके बड़े भाई का रुख किस प्रकार का था ?
(4) 'खड़ब्बल' कहाँ-घर के बाहर या अंदर-का खेल है ?
(5) दोनों भाइयों में कौन सच और कौन झूठ बोल रहा था ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) बड़े भाई की क्या विशेषताएँ थी ?
(2) 'खड़ब्बल' खेल का वर्णन कीजिए।
(3) कथा-वाचक की चेतना ग्लानि, बेचैनी, अपराध-बोध से क्यों भर गयी ?

योग्यता- विस्तार

- प्रेमचेद की 'बड़े भाई साहब' कहानी पढ़िए और 'अपराध' कहानी से उसकी तुलना कीजिए ।
- बच्चों के खेल पर आधारित एक कहानी खोजकर पढ़िए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 सवैया और कवित्त

देव (देवदत्त)

(जन्म : सन् 1673 ई; निधन : सन् 1767 ई.)

महाकवि देव रीतिकाल के सर्वाधिक प्रतिभासंपन्न कवि माने जाते हैं। इनका जन्म इटावा जिले के कुसमरा गाँव में हुआ था। ये मूलत: एक सहृदय कवि हैं। यद्यपि काव्यशास्त्र की रचना भी इन्होंने की है। स्वमानी स्वभाव की वजह से ये किसी एक आश्रयदाता के यहाँ अधिक न टिक सके। इन्हें बिहारी के समान ही लोकप्रियता एवं सम्मान प्राप्त हुआ है। इनकी रचनाओं का मुख्य विषय शृंगार है। देव में जीवन के मार्मिक प्रसंगों की पहचान और उनका अभिव्यंजना-कौशल विशेष महत्त्वपूर्ण है।

इनकी रचनाओं की संख्या लगभग 52 बताई जाती है किंतु महत्त्वपूर्ण रचनाएँ इस प्रकार हैं- भावविलास, भवानीविलास, रसविलास, सुखसागर तरंग, प्रेमचंद्रिका तथा काव्य-रसायन । इनका प्रकृति-चित्रण बहुत सुंदर होता है। ब्रज भाषा का सौंदर्य इनकी कविता में सहज ही फूट पड़ा है। कवित्त और सवैया इनके प्रिय छंद रहे हैं।

पहला छंद 'सवैया' है जिसमें कृष्ण के रूप-सौंदर्य के प्रति ललचाकर मुग्ध हो जानेवाली गोपी की बरबसता-विवशता का मार्धुयमय वर्णन है।

दूसरा छंद 'कवित्त' है जिसमें ऋतुराज वसंत के बालरूप की अनन्य सुंदरता का मनोहर चित्रण है। प्रकृति के कोमल पालने में सोये हुए वसंत रूपी बालक को पवन झुला रहा है, केकी, कीर, कोयल, कंजकली आदि अपने-अपने अंदाज से उसे उल्लसित कर रहे हैं। पराग-रूपी राई-नोन से उसकी नजर उतारी जा रही है। प्रकृति के इस रोमांचक खेल का अलंकारिक वर्णन बहुत सुंदर एवं मार्मिक बन पड़ा है।

सवैया

धार में धाइ धँसी निरधार है, जाइ फँसी उकसीं न उघेरी।
री अँगराय गिरी 'गहरी गहि' फेरे फिरीं न घिरीं नहिं घेरीं।
देव कछु अपनो बस ना रस लालच लाल चितै भई चेरीं।
बेगि ही बूड़ि गईं पखियाँ अँखियाँ मधु की मखियाँ भईं मेरी।

कवित्त

डार द्रुम पालन, बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै, तन छबि भारी दै।
पवन झुलावै केकी-कीर बतरावै 'देव',
कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै।
पूरित पराग सों उतारो करै राई -नोन,
कंजकली नायिका, लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत, ताहि
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै॥

शब्दार्थ-टिप्पणी

धाइ दौड़कर **निरधार** निराधार **उकसीं** ऊपर उठना,उभरना **उघेरी** खिंचना **अँगराय** अंगड़ाई लेकर **चितै** देखते ही **चेरीं** दासी **बेगि** वेग, तेजी से **बूड़ि गईं** डूब गईं **द्रुम** पेड़ **बिछौना** बिस्तर **सुमन झिंगूला** फूलों का झबला **केकी** मोर **कीर** तोता **हलावै-हुलसावै** हिलाना, बातों की मिठास **उतारो करै राई नोन** नजर लगने से शिशु को बचाने के लिए उसके ऊपर राई-नमक घुमाकर आग

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) गोपबाला कृष्ण के प्रेम-रस में किस तरह डूबती है ?

(2) गोपबाला अपनी आँखों की तुलना किससे करती है ?

(3) बाल वसंत को कौन झूला झुला रहा है ?

(4) बालक वसंत को किसकी नजर न लगे, उसके लिए क्या उपाय किया जा रहा है ?

(5) 'प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

2. उत्तर लिखिए :

(1) गोपबाला अपनी आँखों की विवशता का चित्रण सखी से किस प्रकार करती है ?

(2) बाल वसंत के रूपक को समझाइए ।

(3) ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(A) धार में धाइ धँसी निरधार है, जाइ फँसी उकसीं न उघेरीं।
री अँगराय गिरी 'गहरी गहि' फेरे फिरीं न घिरीं नहिं घेरीं।

(B) पवन झुलावै केकी-कीर बतरावै 'देव,'
कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै।

योग्यता-विस्तार

- भारतीय ऋतुचक्र में वसंत के महत्त्व को जानिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 रुचि

बालकृष्ण भट्ट

(जन्म: सन् 1844 ई; निधन:न् 1914 ई.)

पं. बालकृष्ण भट्ट का जन्म उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद में हुआ था। पिता बड़े व्यापारी थे लेकिन भट्टजी का मन पैतृक व्यापार में नहीं लगा, उन्होंने सारा जीवन साहित्य की सेवा में अर्पित कर दिया। निबंधकार और पत्रकार के रूप में भारतेन्दु युग के लेखकों में उनका स्थान बहुत ऊँचा रहा। आत्मपरकता और व्यक्ति व्यंजकता उनके निबंधों की प्रमुख पहचान है। कुछ लोग तो उन्हें हिन्दी का 'एडिसन' भी कहते हैं। 'हिन्दी प्रदीप' नामक मासिक पत्रिका का संपादन कार्य लगातार बत्तीस वर्षों तक उन्होंने किया था।

उनके निबंधों का संचयन 'भट्ट निबंधावली' के नाम से उपलबद्ध है। 'नूतन ब्रह्मचारी' तथा 'सौ अजान एक सुजान' उनके मुख्य उपन्यास हैं। 'दमयंती स्वयंबर', 'चंद्रसेन','शिशुपालवध', तथा 'रेल का विकट खेल' प्रमुख नाटक हैं। संस्कृत और बंगला भाषा से अनुवाद भी उन्होंने किए। 'हिन्दी शब्द सागर' के संपादन में भी उन्होंने अपना सहयोग दिया।

प्रस्तुत निबंध में वैयक्तिक रुचि को किसी भी काम की सफलता का मुख्य आधार बतलाया गया है। लेखक के अनुसार रुचि या श्रद्धा से किया जानेवाला काम ही 'विधिवत्' कर्म कहा जा सकता है। खान-पान, पढ़ाई-लिखाई, खेल-कूद, जप-तप आदि जीवन की जितनी ही प्रवृत्तियाँ हैं, उनको लेकर हर व्यक्ति की रुचि अलग-अलग होती है, कम या ज्यादा हो सकती है। अत: रुचि जितनी गहरी होगी, काम उतना ही उमदा होगा। सच ही कहा है कि जितना गुड़ डालोगे,उतना ही मीठा होगा। लेखक ने बड़े सहज ढंग से रुचि विषयक विविधताओं और विशेषताओं का निरूपण किया है।

कोई काम हो उमदी तरह पर कभी नहीं होगा जब तक उस काम में रुचि न हो। गीता में भगवान् कृषणचन्द्र ने कहा भी है--

बिना श्रद्धा अर्थात् रुचि के जप, तप, दान, हवन आदि जो किया जाता है, सब व्यर्थ है-- करना न करना दोनों एक-सा है; न परलोक में उसका कुछ फल मिलता है, न इसी लोक में इस काम की कोई तारीफ करता है। शास्त्रवालों ने विधिपूर्वक या विधिवत् पर बड़ा जोर दिया है। सच पूछो तो रुचि या श्रद्धा से किसी काम का करना ही विधि है क्योंकि विधि तभी हो सकती है जब मन में हमारे उस काम की ओर रुचि है। ध्यान जमाकर देखिए तो मनुष्य जन्मते ही रुचि में दखल देने लगता है मानो रुचि उसकी दासी या जरखरीद लौंडी हो; बच्चे को माँ को दूध के एवज गाय या बकरी का दूध शीशी या रुई के फाहे में दिया जाता है तो वह उसको ऐसी रुचि से नहीं पीता, जैसा माँ का दूध। ऐसे ही माँ की गोद के बदले उसे पालने या चारपाई पर सुला दो तो कदाचित् दस में दो-एक ऐसे होंगे जिसको बिना रोये-गाये खुशी से उस पर लेटे रहना रुचेगा। फिर ज्यों-ज्यों उमर में वह बढ़ता जाता है, अपने हर एक काम खाना, पीना, सोना, ओढ़ना पहिनना, खेल-कूद, पढ़ना-लिखना आदि में रुचि को जगह देता जाता है।

रुचि ही के जुदे-जुदे प्रकारान्तर या उसकी बारीकियाँ फैशन के नाम से चल पड़े हैं; इस नई सभ्यता के जमाने में जिसकी हद से जियादह छानबीन हो रही है। फ्रांस और इंगलैंड सरीखे मालदार सभ्य देशों में जिसकी यहाँ तक उन्नति है कि सुनते हैं, इंग्लैंड में अमीर घरानों की लेडियों के लिए दिन में तीन बार पेरिस से उनके पोशाक आदि वेश-भूषा का नमूना आया करता है। वैसे ही हम लोग भी अपने खाने-पीने में रुचि की बारीकियों को बेहद बढ़ाये हुए हैं। कोई कहते हैं, हम नहीं जानते लोगों को रोटी खाना कैसे पसन्द आता है, हमको तो दोनों जून ताजी-ताजी लुचुई और बेढ़नी मिलती जाय तो कभी कच्ची रसोई का नाम न लें। दूसरे कहते हैं, तुम्हारी भी क्या ही रुचि है ? लुचुई-सी सकील चीज तुम्हें कैसे रुचती है; अजी, कहीं बिना कच्ची रसोई खाये जी भरता है। हमारे हिन्दुस्तान में कच्ची रसोई का तरीका ऐसा बढ़िया रक्खा गया है कि अगर तकल्लुफ को मौका दिया जाय तो हकीकत में रसोई रसायन हो जाती है। एक तीसरे बोल उठे, यह तो अपनी-अपनी रुचि की बात है। पर मेरी राय

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तो यह है कि खाना मुसलमान बहुत अच्छा पकाते हैं, खूसूसन गोश्त की किस्में। इस पर कोई कंठीबन्द वहाँ पर बैठे थे, बोल उठे--हरे-हरे तुम्हारी रुचि कैसी है, हम नहीं कह सकते। हमको तो मांस-भोजन का नाम सुन मिचलाई आने लगती है। आपने हमारे गोपाल मन्दिर की खुशबूदार बसोंघी, मोहनथाल और दूसरे-दूसरे छप्पन प्रकार के भोग का महाप्रसाद मालूम होता है कभी आँख से भी नहीं देखा, नहीं तो मुसलमानों के भोजन को कभी न सराहते?

ऐसे ही पेय वस्तु में भी रुचि आ टाँग अड़ाती है। पीना हम उसे कहेंगे जो बिना दाँतों की सहायता के केवल जीभ और तालू द्वारा हलक के भीतर जाता है; परन्तु रस के ज्ञान में रसना अर्थात् जीभ का अधिक सम्बन्ध है तो वहाँ रुचि की सलाह ली जाती है। पेय पदार्थों में सबसे पहले पानी है, जिसको वैद्यक वाले यों तो कहते हैं--शरत् और वसन्त ऋतु को छोड़कर और महीनों में नदी का पानी पीने योग्य है--

पानीयं पानीयं शरदि वसन्ते च पानीयम्।
नादेयं नादेयं शरदि वसन्ते च नादेयम् ॥

यानी कोई कहता है, हम तो सदा ताजा पानी पीते हैं और इसके सैकड़ों फायदा बतलाता है। दूसरे कहते हैं हम तो जाड़े में भी ठंडा पानी पीते हैं और गरमियों में तो बिना बर्फ प्यास बुझती ही नहीं। इतने में एक अँगरेजी पढ़े वहाँ बैठे थे,बोले--आपको मालूम नहीं, कितने निहायत बारीक कीड़े पानी में रहते हैं। इसलिए इसे छान लेना बहुत जरूरी है। लिखा भी है--

वस्त्रपूतं पिवेज्जलम्।

मैंने तो एक फिलटर खरीदा है उसी में छान बिल्लौर ग्लास में पानी पीता हूँ। बर्फ के साथ शीशे के ग्लाश में पानी रख पीने में बड़ा मजा मिलता है। इतने में एक चौथे साहब बोल उठे- हमको ये सब खटराग मालूम होता है। यहाँ तो खरा खेल फरुखाबादी पसन्द आता है। प्यास ने सताया तो दो आने फेंक दिये, सोडावाटर का बोतल मुँह में लगाया घट्ट-घट्ट उतार गये, कलेजा तर हो गया। इतने में एक पाँचवें साहब जो वहाँ मौजूद थे, कहने लगे- हे भगवान्! धर्म के अब तुम्हीं रक्षक हो। न जानिये कैसा समय आया है कि अँगरेजी पढ़-पढ़ लोग भ्रष्ट हो जाते हैं। अपने तो कैसी ही प्यास लगी हो बिना चरणोदक मिलाये जल कभी नहीं पीते।

अब सोने को लीजिये। पंसेरियों खटमल से लदी हुई टूटी खाट से ले उमदा पलंग, ईजी-चेयर और कोच तक न जानिये कितने खटराग रचे गये हैं। सो बस इस रुचि ही के भाँति-भाँति के ईजाद हैं। इतने पर भी जब नींद का झोंका आता है तब यह रुचि यहाँ तक बेहया बन जाती है कि कंकड़ पर भी ,सोइये तो मखमली कोच का मजा मिलता है।--

निद्रातुराणां न च भूमिशय्या।

ऐसे भी जिद्दी सोनेवाले मनहूस पाये जाते हैं कि चलते-चलते सोते हैं, खाते-खाते सोते हैं, बातचीत करने में एक बात मुँह से निकली तो दूसरे में अन्तर्ध्यान हो गये।

अब पहनावे की लीजिए। लोग कहते हैं, यहाँ के लोग भद्दे हैं, फैशन नहीं जानते। पर यहाँ ग्रन्थ के ग्रन्थ नख-सिख सोलहों सिंगार के ऊपर लिखे गये हैं। यहाँ के अनगिनत किस्म के पोशाक और आभूषण जुदी-जुदी रुचि के अनुकूल गिनने लगें तो घड़ी न चाहिए, वरन् दिन का दिन समाप्त हो जाय। तो अब देर तक पढ़ने वालों को इस रुचि के भँवरजाल में फँसाय रखना और किसी दूसरे लेख के पढ़ने से वंचित रखना है, इसलिए इस सियापे को अब बन्द कर छोड़ते हैं। पढ़नेवालों की रुचि के अनुकूल फिर कभी निकालेंगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

उमदी अच्छाई, उत्तम **तारीफ** प्रशंसा **लुचुई** मैदे री पतली पूरी,लूची **तकल्लुक** उपनाम **बसोंधी** एक प्रकार की रबड़ी जो सुंधित होती है **पंसेरी** पाँच शेर **खटमल** खाट में उत्पन्न होने वाला कीड़ा जो मनुष्यों का खूँन चूसता है ईजाद आविष्कार

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) बालक हर काम में रुचि को कब जगह देता है ?

(2) रुचि को हम अपने जीवन में कहाँ-कहाँ जगह देते हैं ?

(3) फ्रांस और इग्लैंड की अमीर महिलाओं के बारे में हम क्या सुनते हैं ?

(4) लोग किस प्रकार से पानी पीना पसंद करते हैं ?

(5) रसोई रसायन कब होती है ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) पानी के फायदे बताइए।

(2) अपनी रुचि के बारे में लिखिए।

(3) नींद का झोंका आता है तब नींद क्यों बेहया बनती है ?

योग्यता- विस्तार

- रुचि के बारे में लेखक के विचार अपने शब्दों में लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5 ज्ञानोपदेश

ब्रह्मानंद स्वामी

(जन्म : सन् 1772 ई; निधन : सन् 1832 ई.)

गुजरात के स्वामीनारायण संप्रदाय के प्रसिद्ध कवि ब्रह्मानंद स्वामी का मूल नाम लाडू बारोट (गढ़वी) था। माना जाता है कि इनका जन्म आबू पर्वत की तलहटी में बसे खाणग्राम नामक गाँव में हुआ था और निधन सौराष्ट्र के मूली नामक स्थान पर हुआ था। कहते हैं कि सहजानंद स्वामी के दर्शन पाकर ये इतने आनंद विभोर हो गए कि इनके मुँह से ये शब्द निकल पड़े-'ज्ञान की कुंजी ने मेरी बुद्धि का ताला खोल दिया'। फलस्वरूप सन् 1805 ई. में ये स्वामीनारायण संप्रदाय में दीक्षित हो गए।

ब्रह्मानंद की कविता में प्रेम और भक्ति का बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है। राधा और कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का इन्होंने भाव-विभोर होकर हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। गुजराती के साथ इन्होंने ब्रज भाषा में भी विपुल मात्रा में कविताएँ लिखी हैं। हिन्दी में रचित मुख्य रचनाएँ इस प्रकार हैं-'विवेक चिंतामणि,''उपदेश चिंतामणि,''ब्रह्म विलास,''नीति प्रकाश' इनकी कुछ रचनाओं में सद्गुरु की महिमा और माया के त्याग पर बल दिया गया है।

प्रस्तुत पद में कवि ने सांसारिक माया-मोह का त्याग कर फकीरों की तरह जीवन जीने का उपदेश दिया है। इसके लिए सच्चे सद्गुरु की शरण में जाना आवश्यक है। जो मनुष्य अपनी काया में छिपे चोरों पर विजय प्राप्त कर लेता है वह तीनों लोकों पर विजयी हो जाता है। उसके भीतर अनहद नाद बजने लगता है और समस्त सिद्धियाँ उसकी चेरी बन जाती हैं। ब्रह्मानंद स्वामी का यह पद कबीर के उस पद का स्मरण करा देता है जिसमें कबीर कहते हैं-'मन मेरो लागो यार फकीरी में'।

कर ले खूब फकीरी रे, बंदे कर ले खूब फकीरी।
अदल ब्रह्म अमीरी रे, बंदे कर ले खूब फकीरी॥
धर ले ध्यान अचल सद्गुरु का, दुबधा तज दिलगीरी रे।
पांच पचीस चोर या घट में, प्रगट लेत धन हेरी॥

याकुं मार पकड़ वश कर ले, तीन लोक जय तेरी रे।
किसके मातपिता सुत बंधव, किसकी माया मेरी।
याके संग लग्या क्या मोहवश, अवसर नावे फेरी रे॥
शरण पकड़ सद्गुरु साहेब की, छोड़ आश जग केरी।
अनहद नाद टकोरा बाजे, सुन ले गगन धुन गेरी रे।
अष्ट सिद्ध नव निध तेरे आगे, सबै होयगी चेरी।
ब्रह्मानंद झील निरशंसे, प्रेम उदधि की लहरी रे॥

शब्दार्थ-टिप्पणी

बंदे भक्त **अदल** अविनाशी **अचल** स्थिर,दृढ़ **दुबधा** दुविधा, असंमजस **दिलगीरी** दिलवाला **घट** शरीर **हेरी** हर लेना **याकुं** उसको **फेरी** दुबारा **जगकेरी** संसार की **चेरी** दासी **निरशंसे** संशय **उदधि** समुद्र

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) ब्रह्मानंद ने अमीरी किसे कहा है ?

(2) ब्रह्मानंद किसका ध्यान करने के लिए कहते है ?

(3) तीनों लोक में जय-जयकार कब होगी ?

(4) ब्रह्मानंद किससे निकलने की बात करते हैं ?

(5) ब्रह्मानंद ने अपनी तुलना किससे की है ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) 'ज्ञानोपदेश' के मूलभाव को स्पष्ट कीजिए।

(2) ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

धर ले ध्यान अचल सद्‌गुरु का, दुबधा तज दिलगीरी रे।
पांच पचीस चोर या घट में, प्रगट लेत धन हेरी ॥
याकुं मार पकड़ वश कर ले, तीन लोक जय तेरी रे॥

योग्यता-विस्तार

- ज्ञानोपदेश से संबंधित किसी अन्य संत कवि की कविता ढूँढ़कर पढ़िए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6 अभय साधक - बाबा आमटे

न्यायाधीश चंद्रशेखर धर्माधिकारी
(जन्म : सन् 1927 ई.)

चंद्रशेखर धर्माधिकारी का जन्म मध्यप्रदेश के रायपुर में हुआ था। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए., एल.एल.बी. किया था। उन्होंने 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आंदोलन में भी भाग लिया था। सामाजिक सरोकारों से भी वे बराबर जुड़े रहे। एक सफल वकील और न्यायाधीश के साथ-साथ वे एक अच्छे लेखक भी हैं। उन्होंने हिन्दी, मराठी, गुजराती और अंग्रेजी में लेखन-कार्य किया।

हिन्दी में उन्होंने कई ग्रंथ लिखे जिनमें 'अंतर्याता', 'न्यायमूर्ति का हलफनामा', 'लोकतंत्र एवम् राहों के अन्वेषी', 'समाजमन' एवं 'सहप्रवास' मुख्य हैं। 'माणूस नामा' और 'शोध गाँधीचा' मराठी में लिखित प्रमुख ग्रंथ हैं।

जीवन-कथा के इस अंश में जीवनीकार ने सुप्रसिद्ध समाजसेवी बाबा आमटे के परोपकार एवं निस्वार्थ त्यागवृति से परिपूर्ण जीवन का बड़ी बारीकी एवं ईमानदारी से आलेखन किया है। 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल होने से वे पहलीबार प्रकाश में आए उसके बाद जीवन पर्यंत समाज के हर दीन-दुखी वर्ग की समर्पण भाव से सच्ची सेवा की। उन्होंने दलितों, विकलांगों, अनाथ बच्चों, वृद्धों एवं गंभीर रोगों से पीड़ित लोगों की व्यक्तिगत रूप से और अनेक सामाजिक संस्थाएँ बनाकर अथाक सेवा-सुश्रुसा की। 'मानव बचाओ' और 'पर्यावरण बचाओ' उनका मूल मंत्र बन गया था। इसके लिए उन्हें अनेक बड़े-बड़े पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए बाबा के इस मानव सेवा के काम में उनके पूरे परिवार ने भी तन-मन-धन से सहयोग दिया। लेखक ने बाबा की जीवन-यात्रा को सहज ही सजीव कर दिया है।

---

26 दिसम्बर 1904 को हिंगणा घाट में, एक कर्मठ परिवार में, मुरलीधर उर्फ बाबा आमटे का जन्म हुआ। परिवार सुखी था। बाबा ने बी.ए., एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त की। वरोरा में उन्होंने वकालत शरू की। बाद में 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू हुआ और वे उसमें कूद पड़े। जेल गए। एक युवा स्त्री को तकलीफ देने वाले ब्रिटिश सैनिकों से अकेले भिड़ पड़े। इसीलिए गांधीजी ने उन्हें 'अभय साधक' कहा था। 1947 में वे वरोरा नगर परिषद के उपाध्यक्ष बने। मेहतर संगठन के वे अध्यक्ष थे। उनके जीवन से तादात्म्य हो इसलिए, उन्होंने मेहतरों के साथ, भंगी का काम करना शुरू किया। एक दिन बरसते पानी में वे सर पर मैले का टोकरा लिए जा रहे थे कि इनका ध्यान गटर में पड़े एक आदमी की ओर गया। वह महारोगी था। शरीर पर कई जख्म थे और उनमें कीड़े रेंग रहे थे। उनके लिए वह साक्षात्कार का क्षण सिद्ध हुआ। उनकी पूरी जिन्दगी ही बदल गयी। 1949 में बाबा ने 'स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल डिसीजेस' संस्था में, महारोग का इलाज कैसे करें, इसका अध्ययन पूरा किया। तत्सम्बन्धी प्रतिबन्धक दवाई तैयार करने के लिए, अपने शरीर का उपयोग करने की तैयारी तक उन्होंने दर्शाई। 1950 में बाबा ने 'महारोगी सेवा समिति' नामक संस्था की नींव चन्द्रपुर जिले के वरोरा में रखी। इसके बाद का बाबा आमटे का जीवन एक 'खुली किताब' है सभी लोग उस कर्मठ जीवन के बारे में जानते हैं। जिस क्षण उन्होंने महारोगी के शरीर पर टाट का कपड़ा डाला, उस क्षण उनके जीवन की अभय साधना शुरू हुई, ऐसा खुद बाबा ही कहते हैं। जब इन्दु घुले नामक कर्मठ वेद शास्त्र-सम्पन्न परिवार में जन्मी लड़की ने बाबा से एक अलग ढंग का विवाह किया, तभी 'अभय और साधना' का सच्चा मिलन हुआ। वे 'संयुक्ताक्षर' बन गए। जमीन सम्बन्धी मिला हुआ पुश्तैनी अधिकार, उन्होंने सहज त्याग दिया। बाबा आमट ने जीवन के हर अंग को स्पर्श किया। अनाथ लड़को के लिए 'गोकुल' शुरू किया और वृद्धों के लिए 'उत्तरायण'। प्रज्ञाचक्षु (दृष्टिहीन)लोगों के लिए 'आनन्द अन्ध विद्यालय' की स्थापना की। अपंगों को मौका मिले, इसलिए 'सन्धि निकेतन' स्थापित किया। श्रमिक विद्यापीठ की कल्पना रखी, आनन्द निकेतन महाविद्यालय भी स्थापित किया। आनन्द मूक विद्यालय के साथ सोमनाथ, हेमलक सा, अशोक वन आदि प्रकल्प खड़े किए। वस्तुत: आमटे ने समग्र जीवन का एक समग्र नक्शा तैयार किया। 'भारत छोड़ो' के बाद जब औरों ने 'भारत छोड़ो' का उद्योग प्रारम्भ किया तब बाबा ने 'भारत छोड़ो' अभियान का प्रारम्भ किया। बाबा यानी युवकों के प्रेरणा स्रोत। सोमनाथ में हर साल 'श्रम संस्कार छावनी' के नाम से युवकों का शिबिर लगता है। 'शान्ति द्वारा शान्ति' नामक अनोखे अभियान के तहत उन्होंने पंजाब के 52 देहातों का दौरा किया। बाबा को कई पुरस्कार मिले। पद्मश्री, पद्मविभूषण, राष्ट्रभूषण, जमनालाल बजाज पारितोषिक, पुणे और नागपुर विद्यापीठ की डी. लिट् पंजाबराव कृषि विद्यापीठ की उपाधि 'कृषि-रत्न', सामाजिक न्याय के लिए रामशास्त्री प्रभुणे पुरस्कार, डेमियन डेरेन पारितोषिक (अमेरिका) महाराष्ट्र शासन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

का राष्ट्रीय पुरस्कार, एन.डी. दिवाण पारितोषिक (नासेओह पारितोषिक समिति), मैगसेसे अवॉर्ड, महात्मा गाँधी पुरस्कार इत्यादि। लेकिन बाबा का सच्चा पुरस्कार है, उनके दोनों सुपुत्र और बहुएँ भारती तथा मन्दा तथा उनके पौत्र और पोती। विकास-प्रकाशन ने अनन्द वन, सोमनाथ, अशोक वन, भामरागड़ के प्रकल्प जिस उत्साह और जोश के साथ अपने कन्धों पर उठाए, उन्हें विकसित किया, उसका कोई सानी नहीं। महारोगी और आदिवासी क्षेत्र में काम करने वाले पिता की, उसी काम में, हाथ बँटाने वाली सन्तान गूलर का फूल मानी जाती है। लड़के डॉक्टर और बहुएँ भी डॉक्टर ! सभी को सही अर्थ में समाज-स्वास्थ्य की चिन्ता है। पुरस्कार तो उन्हें भी बहुत मिले। ख्याति भी बहुत मिली, लेकिन उनकी दृष्टि में 'आनन्द वन' का विस्तार होना समाज के लिए भूषण वह नहीं है। वह समाज में बढ़ते अनारोग्य का लक्षण है। वे सारे यह सपना देखते हैं कि यह आनन्द वन मिट जाए और ऐसे आनन्द वन की जरूरत न रहे, ऐसी समाज-व्यवस्था निर्मित हो। विज्ञान यह कहता है कि महारोग अन्य रोगों जैसा ही एक रोग है। लेकिन जैसा कि गांधीजी कहते हैं, शरीर के महारोग से बदतर है, मन का महारोग। कुष्ठ रोगियों को समाज में फिर से सम्मान पूर्वक जीना नसीब हो, इसलिए उनसे दोस्ती करने वाले लोग चाहिए। ऐसे कई दोस्त बाबा के काम से जुड़े । उनमें अण्णा साहब सहस्त्रबुद्धे, पु.ल. देशपांडे, सुप्रसिद्ध गायक वसन्तराव देशपांडे, राम शेवालकर, तो थे ही, लेकिन इन्दौर के सुप्रसिद्ध पत्रकार तथा साहित्यिक राहुल बारपुते, बाबा डिके, कुमार गन्धर्व और उनके साथ मेरे जैसे भी कोई दोस्त थे। हर साल महारोगियों के साथ, आनन्द वन में, हम सभी का मित्र-मिलन होता था। जिसके बारे में सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एस. एम. जोशी जी ने कहा था कि, 'जब-जब जिन्दगी की बैटरी क्षीण हो जाए तब उसे 'चार्ज' करने के लिए आनन्द वन के मित्र-मिलन में आना चाहिए।' देश में मौजूद सभी समस्याओं से बाबा सक्रियता से जुड़ते थे। बाबा आमटे जमा-खर्च का हिसाब रखकर जीने वालों लोगों में से नहीं थे। बहुत जिद्दी-से थे। मन में सहज ही यह बात आ जाती है कि इसीलिए तो वे बाबा आमटे हैं- हम जैसों से कई मायने में अलग और अकेले। बाबा ने कई अनाथ बच्चों को और महारोगियों के लड़कों को अपने परिवार में शामिल कर लिया। उनके माँ-बाप के रूप में साधना ताई का और अपना नाम दिया। जब तक वे हैं तब तक कोई अनाथ नहीं, यह उन्होंने अपने वर्ताव से सिद्ध कर दिया। उन्हें बाड़ पर बैठकर काम करना नहीं आता। वे दूर खड़े दर्शक नहीं, प्रतिभागी और सहयोगी बनकर जीना चाहते थे।

1 अप्रैल, 1984 को बाबा ने गढ़चिरौली जिले में 'जंगल बचाओ-मानव बचाओ' समिति की ओर से एक मोर्चा आयोजित किया था। वे इन्द्रावती नदी पर बनने वाले इंचमपल्ली बाँध और भोपालपट्टम बाँध का तीव्र विरोध कर रहे थे। आजकल क्षीण होते जंगल और वन्य जीवन, आदिवासियों की दरिद्रता की तरह बाबा को बेचैन करते थे। जुलाई 1988 में पर्यावरणवादियों की, आनन्द वन में एक परिषद हुई। बड़े बाँधों का विरोध क्यों ? इसका एक घोषणा-पत्र तैयार किया गया। बड़े बाँधों के कारण देश की नैसर्गिक साधन सम्पत्ति नष्ट होने से लाखों लोग विस्थापित हो रहे हैं। जमीन और पानी के आधार पर विकसित 'सभ्यता' समाप्त हो रही है। दूसरी ओर बाँधों के निर्माण के लिए हम अन्य देशों से भीख माँग रहे हैं। यह जो सब कुछ हो रहा है, वह शहरवासियों को, धन्वतों को और प्रस्थापितों को अधिकाधिक अमीर बनाने के लिए हो रहा है। अकाल छाया से देश को मुक्त करने के बजाय उसे अकाल की खाई में ढकेला जा रहा है। बाढ़ नियन्त्रण के बजाय बाढ़ें लगातार आ रही हैं। सामान्य लोगों की जीवन-रेखा उन्नत होने के बजाय वे, बेघर और विस्थापित होते जा रहे हैं, ऐसी स्थिति उस घोषणा-पत्र में व्यक्त की गई थी। बाबा के शब्दों में 'शोषण से जो समृद्ध होता है, वह समाज को एक शाश्वत अँधेरा देता है।' विस्थापित आज तक कभी पुनर्स्थापित नहीं हो सके, यह कटु सत्य है। इसलिए बाबा कहते हैं-'जहाजों के साथ अपने आपको डूबा देनेवाले कर्णधार जहाँ होते हैं वहीं पर डूबते देश को बचाने वाली नाविकों की पीढ़ियाँ जन्म लेती हैं।' बाबा ऐसे ही 'नाविक' थे।

आनन्द वन की 'अनाम वृक्ष स्मरणशिला', 'बालतरु की पालकी' और 'वृक्ष का जुलूस' एक ओर निसर्ग प्रेम का आविष्कार था, तो दूसरी तरफ पर्यावरण के संरक्षण का श्रीगणेश भी था। मित्र मिलन में डॉ. वसन्तराव देशपांडे, डॉ. रूपा कुलकर्णी ने बालतरु के गीत गाए। गोकुल की अनाथ 'धरती' को पालने में सुलाया। निसर्ग से जुड़ा हुआ और अनाथों से नाता जोड़ने वाला ऐसा समारोह मैंने अन्यत्र कहीं नहीं देखा। साक्षी रूप पु. ल.देशपांडे और मुझ जैसे पालकी के भक्त करताल बजाने वाले और कंठीधारी। किसी की भी नजर लगे, ऐसा समारोह होता था वह। उसमें महारोगी भी शामिल होकर गाते थे। वहाँ गाने के लिए गला सुरीला होना जरूरी नहीं था, जरूरी था अच्छा दिल होना। इसलिए बाबा कहते थे- 'आनन्द वन के रोग से आनन्द वन का आत्म विश्वास ज्यादा प्यारा है।' और 'सच्चे कलाकार की कला गाय के पन्हाने जैसी होती है, जो अपने आप फूट पड़ती है।'

नवम्बर 1972 में सोमनाथ में विदर्भ साहित्य सम्मेलन का आयोजन हुआ। अध्यक्ष थे श्री विश्राम बेडेकर और उद्घाटक थे प्रो. नरहर कुरुन्दकार। उस सम्मेलन में, लेखक का आविष्कार स्वतन्त्रता पर एक परिचर्चा हुई, जिसका मैं अध्यक्ष था। तब सम्म्लेन में उपस्थित साहित्यकारों से बाबा ने एक सवाल किया,''अजन्ता और एलोरा में कई भग्न मूर्तियाँ हैं, चित्र हैं। सारी दुनिया के रसिक लोग उनमें होने वाला भग्न और नष्टप्राय हिस्सा अपनी कल्पना से भर देते हैं और उन कलाकृतियों का आनन्द उठाते हैं। अगर पत्थरों की भग्न पाषाण मूर्तियाँ सौन्दर्य तथा आस्वाद का विषय बन सकती हैं तो फिर जिसके अंग

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अवयव भग्न हुए हैं, या गल गए हैं; वह महारोगी आस्वाद का विषय क्यों नहीं हो सकता ? उसका जो अंग गल गया है, उसे आप अपनी कल्पना से पूरा कर दीजिए। लेकिन मेरा दु:ख यह है कि रसिक से रसिक आदमी के लिए भी यह सम्भव नहीं होता ! ऐसा क्यों है ?'' उपस्थित यह प्रश्न उनके जीवन का यक्ष प्रश्न है। सभी दु:खों को दया और दान की भूमिका से देखनें के बजाय, सहजीवन और सहसंवेदना की भूमिका से देखकर, उनकी अस्मिता जगाने वाला. मेरे जीवन में मिला हुआ पहला आदमी था– बाबा आमटे। उन्होंने मुझे इस प्रश्न की ओर देखने की एक नई दृष्टि प्रदान की। महारोगी, अनाथ, अन्ध और दु:खी आदमी अपने इस देश में भी अस्मिता की खोज में है। वे प्रतिष्टित रूप में जीएँ, खुद के पैरों पर खड़े रहें, किसी के सामने भीख के लिए हाथ न फैलाएँ यह भूमिका बाबा मम भाव से साकार करते रहे। शरीर से अपंग परन्तु मन से मजबूत महारोगियों की ओर से शरीर से सुदृढ़ और मन से अपंग मुझ जैसे कई लोगों को बाबा ने, इन्हीं महारोगियों की सहायता से, एक नई दुनिया कैसे बनायी जाती है और उनके अपने कैसे सत्य किए जा सकते हैं, इसका पाठ पढ़ाया। बाबा का एक प्रसिद्ध वाक्य है, ''जिन्हें वेदना का वरदान नहीं वे शरीर से उन्मत्त हैं और जो यातनाहीन हैं, वे सपने नहीं, देख सकते।'' अनन्त: अन्धकार देखने के लिए भी आँखों में प्रकाश चाहिए। हर बार नई योजनाएँ बनाना, समाज के सभी स्तरों के लोगों को खासकर युवकों को उसमें समाविष्ट कर लेने की प्रेरणा देना, उन योजनाओं को यथार्थ में उतारना और दु:खी तथा रोगी लोगों को नया जीवन प्रदान करना, ये काम बाबा निरन्तर करते आए हैं। उनका नारा है,'हाथ लगे निर्माण में, नहीं माँगने, मारने में।'

हाथ 'निर्माण' के लिए है, किसी पर 'उठाने' के लिए नहीं; यह नारा युवकों के लिए नया था। सेवा करने वालों के लिए भी उन्होंने कुछ सवाल रखे। समाज में दैन्य ओर दु:ख किसने पैदा किए। वह कौन–सी ताकत है जो लोगों के जीवन का हक छीन लेती है और अनाथ तथा दु:खी लोगों की संख्या बढ़ाती रही है ? भूख से बेहाल लोगों के मुँह का कौर कौन छीन लेता है ? रोजी–रोटी पहले छीन ले और फिर उसी रोटी का एक टुकड़ा दान के तौर पर फेंककर पुण्य कमाने वाला, यह समाज आखिर कैसा समाज है ? ये लोग बिना खैरात या बिना भीख माँगे जीने का हक प्राप्त कर सके, उसका उपभोग कर सके ऐसा समाज वे बनाना चाहते थे। उनका यह सपना था। बाबा खुद अच्छे कवि और साहित्यकर्मी थे। और सपनों को साकार करने की शक्ति उनमें थी। ऐसे बाबा का निधन 9 फरवरी 2008 को हुआ। लेकिन हमारी मान्यता है कि 'मृत्यु' से ऐसे महान व्यक्ति तथा उनका कर्तृत्व समाप्त नहीं होता। इसीलिए हम महान व्यक्तियों की जयन्ती मनाते हैं। यह जन्म शताब्दी बाबा आमटे के कार्य को और उजागर करेगी, यह मेरी भावना है। अबू आदम् के शब्दों में, उनके बारे में इतना ही कहूँगा कि उनकी प्रजाति की वृद्धि हो।

शब्दार्थ–टिप्पणी

मेहतर सफाई कामकरने वाला **नैसर्गिक** प्राकृतिक **बदतर** बुरे से बुरा **विस्थापित** मूल स्थान से उखड़ा हुआ

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) बाबा आमटे का जन्म कहाँ हुआ था ?
(2) गांधीजी ने बाबा आमटे को 'अभय साधक' क्यों कहा था ?
(3) बाबा का ध्यान गटर में किस पर पड़ा ?
(4) बाबा ने किस संस्था की नींव रखी थी ?
(5) आमटे ने भारत जोड़ो अभियान कब प्रारंभ किया ?
(6) बाबा किन–किन पुरस्कारों से पुरस्कृत हुए ?
(7) बाबा सच्चा पुरस्कार किसे मानते हैं ? क्यों ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) बाबा कैसी समाज व्यवस्था चाहते हैं ?
(2) बाबा कैसा जीवन जीना चाहते थे ?
(3) बाबाने गढ़चिरौली जिले में क्या आयोजित किया था ?
(4) विदर्भ साहित्य सम्मेलन में बाबा ने क्या सवाल किया था ?

योग्यता– विस्तार

- कुष्ठ रोगियों के अस्पताल या आश्रम की मुलाकात लीजिए।
- बाबा आमटे जैसे अन्य समाजसेवी की जीवनी पढ़िए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7 भारतमाता

सुमित्रानंदन पंत

(जन्म : सन् 1900 ई; निधन : सन् 1977 ई.)

छायावादी कवि पंतजी का जन्म अल्मोड़ा के कौसानी नामक गाँव में हुआ था। बचपन में ही माता के वात्सल्य का साया उठ गया अत: पिता और दादी ने पाल-पोष कर बड़ा किया। पल-पल अपना नवीन साज सँवरती कूर्मांचल की पर्वत-श्री ने उनके हृदय को इस कदर प्रभावित किया कि प्रकृति ही उनकी कविता की मूल प्रेरणा बन गई। उनकी प्रथम दौर की कविताओं में प्रकृति के विविध रंगी चित्र अंकित हैं। उनकी कविता समय-समय पर नये मोड़ लेती रही है। छायावाद से कवि प्रगतिवाद की ओर मुड़ा और अंत में आध्यात्म की ओर आकृष्ट हुआ। निराला की तरह पंतजी ने भी छन्द के रजतपाश तोड़े लेकिन लय को नहीं छोड़ा। उनकी कविता की भाषा में सहजता और सुकुमारता का सुंदर समन्वय हुआ है।

उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं- ग्रंथि, वीणा, पल्लव, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ाचाँद, लोकायतन और चिदंबरा। 'कला और बूढ़ाचाँद' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी और 'चिदंबरा' के लिए उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

'ग्राम्या' नामक संग्रह में संकलित 'भारतमाता' कविता में भारतमाता को संपूर्ण भारत का प्रतीक बतलाते हुए अनेकविध अभावों से ग्रस्त, दीन-हीन, तापित-शापित, शोषित-प्रताड़ित भारतवासियों के जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। पराधीनता के पाश में जकड़ी हुई भारतमाता का ग्रामीण अंचल नई सभ्यता और संस्कृति के आलोक से वंचित है। यद्यपि उसके पास गीता का ज्ञान है, जीवन-विकास का मंत्र भी है किंतु इस समय जीवन के बहुमुखी विकास के लिए देशवासियों के दृढ़-संकल्प और सशक्त संगठन की आवश्यकता है। कवि इस कविता द्वारा देश को जगाना चाहता है। संस्कृत गर्भित-सामासिक शब्दावली के बावजूद कविता सहज संप्रेषणीय बन पड़ी है।

भारत माता
ग्राम वासिनी!
खेतों में फैला दृग श्यामल
शस्य भरा जन जीवन आंचल
गंगा यमुना में शुचि श्रम जल
शील मूर्ति,
सुख दुख उदासिनी!
स्वप्न मौन, प्रभु पद नत चितवन,
होंठों पर हँसते दुख के क्षण,
संयम तप का धरती सा मन,
स्वर्ग कला,
भू पथ प्रवासिनी!
तीस कोटि सुत, अर्ध नग्न तन,
अन्न वस्त्र पीड़ित, अनपढ़, जन,
झाड़ फूस खर के घर आँगन,
प्रणत शीष
तरुतल निवासिनी!
विश्व प्रगति से निपट अपरिचित,
अर्ध सभ्य, जीवन रुचि संस्कृत,
रूढ़ि रीतियों से गति कुण्ठित,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राहु ग्रसित
शरदेन्दु हासिनी!
सदियों का खँडहर, निष्क्रिय मन,
लक्ष्य हीन, जर्जर जन जीवन,
कैसे हो भू रचना नूतन,–
ज्ञान मूढ़
गीता प्रकाशिनी !
पंचशील रत, विश्व शान्ति व्रत,–
युग युग से गृह आँगन श्रीहत,
कब होंगे जन उद्यत जाग्रत ?
सोच मग्न
जीवन विकासिनी!
उसे चाहिए लौह संगठन,
सुन्दर तन, श्रद्धा दीपित मन,
भू जीवन प्रति अथक समर्पण,
लोक कलामयि,
रस विलासिनी !

शब्दार्थ-टिप्पणी

शस्य खेती, नई घास, फसल **शुचि** पवित्र **खर** तृण,घास **प्रणत** झुका हुआ **शरदेन्दु** शरद ऋतु का चन्द्रमा

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) गंगा यमुना का जल कैसा है ?
(2) भारत माता के मन की उपमा किससे दी गई है ?
(3) प्रवासिनी भारत माता के पुत्र किस हालत में हैं ?
(4) 'राहु ग्रसित शरदेन्दु हासिनी।' का अर्थ बताइए।
(5) भारत माता किस सोच में डूबी हुई है ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) भारत माता की निराशा का कारण बताइए।
(2) 'कब होंगे जन उद्यत जाग्रत ?' पंक्ति में निहित राष्ट्र प्रेम को स्पष्ट कीजिए।

योग्यता-विस्तार

- पंत के समकालीन किसी कवि की देश प्रेम की कविता को खोजकर पढ़िए, समझिए और इस कविता से उसकी तुलना कीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8 मजबूरी

मन्नू भंडारी

(जन्म : सन् 1931 ई.)

सुप्रसिद्ध कथाकार मन्नूजी का जन्म मध्यप्रदेश के भानपुरा में हुआ था। लिखने की प्रेरणा उन्हें अपने पिता सुखसंपत्तिराय भंडारी से मिली, जो हिन्दी के प्रथम पारिभाषिक शब्दकोश के निर्माता थे। कोलकाता और दिल्ली में उन्होंने अध्यापन कार्य किया। वे प्रेमचंद सृजनपीठ की निदेशिका भी रहीं।

उन्होंने कहानी और उपन्यास के साथ-सात नाटक भी लिखे। उन्होंने नारी जीवन की समस्याओं का उद्‌घाटन एवं स्त्री-पुरुष संबंधों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण बड़ी सहजता से किया है। उन्होंने 'एक इंच मुस्कान' नामक उपन्यास की रचना अपने पति राजेन्द्र यादव (हिन्दी-कथाकार)के साथ मिलकर की। 'आपका बंटी' एवं 'महाभोज' उनके बहुचर्चित उपन्यास हैं। 'मैं हारगई', 'एक प्लेट सैलाब','यही सच है', 'त्रिशंकु' कहानी संग्रह हैं। 'बिना दीवारों के घर' और 'महाभोज' उनके बहुमंचित नाटक हैं। उनकी कई रचनाओं का फिल्मांकन भी हुआ है।

प्रस्तुत कहानी में एक बूढ़ी अम्मा (दादी) की अप्रितम ममता का हृदय-स्पर्शी चित्रण किया गया है। चलने-फिरने से लाचार बीमार बूढ़ी अम्मा अपने बेटे और पोते (बेटू) के बम्बई से आने पर खुशी के मारे पागल हो जाती है और अपना दुख-दर्द सब भूल जाती है। बहू को दूसरा बच्चा होने वाला है इस बहाने वह बेटू को अपने पास रख लेती है और बेहद लाड-प्यार करती है। लेकिन जब बहू बेटू को बम्बई ले जाने को कहती है तो उसके पाँवों तले की जमीन खिसक जाती है। बूढ़ी माँ और बेटू दोनों एक-दूसरे से जुदा होना नहीं चाहते। रमा बहू एक बार तो जोर-जबरजस्ती बेटू को ले भी जाती है लेकिन बेटू वहाँ बीमार हो जाता है और वापिस बूढ़ी माँ के पास लौट आता है। लेकिन दूसरी बार बहू बच्चे के भविष्य-निर्माण के बहाने उसे अपने साथ ले जाती है। इसबार बूढ़ी माँ भी मजबूरीवश अपने मन को जैसे-तैसे मना लेती है। वह बेटू के वहाँ रम जाने के लिए मनौतियाँ मानती है। यह पता चलने पर कि अबकी बार बेटू का मन वहाँ लग गया है वह प्रसाद चढ़ाती है। भीतर से आहत होकर भी बाहर खुशी प्रकट करना उसकी मजबूरी बन जाती है।

"बेटू को खिलावे जो एक घड़ी,
उसे पिन्हाऊं मैं सोने की घड़ी।
बेटू को खिलावे जो एक पहर,
उसे दिलाऊं मैं सोने की मोहर।"

बूढ़ी अम्मा ज़ोर-ज़ोर से यह लोरी गा रही थीं, और लाल मिट्टी से कमरा लीप रही थीं। उनके घोंसले जैसे बालों में से एक मोटी-सी लट निकलकर उसके चेहरे पर लटक आई थी, और उनके हिलते सिर के साथ हिल-हिलकर मानो लोरी पर ताल ठोंक रही थी। बरतन मलने के लिए आई हुई नर्बदा ने जो यह देखा तो हैरत में आ गई, बोली, "अम्मा, यह क्या हो रहा है? कल तो गठिया में जुड़ी पड़ी थीं, दरद के मारे तन-बदन की सुध नहीं थी, और आज ऐसी सरदी में आँगन लीपने बैठ गईं !"

एक क्षण को अम्मा का हाथ रुका, फिर पुलकित स्वर में वे बोलीं, "अरी नर्बदा, मेरा बेटू आ रहा है कल!" और फिर गाने के लहजे में बोली, "बेटा मेरा आवेदा..."

"ओहो, तो रामेसुर लल्ला आ रहे हैं कल!" नर्बदा बोली।

"मैं कह नहीं रही थी कि छुट्टी मिली नहीं कि वह दौड़ा आएगा। अम्मा के मारे तो उसके प्राण सूखते हैं। इतना बड़ा हो गया, फिर भी यहाँ आएगा तो रात में एक बार मेरी गोदी में जरूर सोएगा। पर इस बार मैं कह दूँगी किं चल, मैं तुझे गोदी में नहीं लूँगी, अब तू गोदी में सोएगा कि बेटू?" और वे हँस पड़ीं, जैसे कोई भारी मज़ाक कर दिया हो। फिर एकाएक काम का ख़याल आ जाने से बोलीं,"ले री, मैंने ख़ड़िया भिगो रखी है, ज़रा बाहर के आँगन को माँड दे। बस ऐसा माँडना कि सब देखते ही रह जाएँ। क्या करूँ, आजकल हाथ काँपने लगा है, नहीं तो मैं माँड लेती "

नर्बदा को खड़िया के काम में लगाकर वे फिर गाने लगीं :

"आओ री चिड़िया चून करो
बेटू ऊपर राइ-नून करो
नून करो-नून करो...

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

"ले, मैं तो भूल ही गई– क्या है इसके आगे ? रामेसुर छोटा था तो ढेरों याद थीं, उसके बाद तो छोटा बच्चा ही घर में नहीं रहा सो सब भूल गई। मेरा रामेसुर तो बिना लोरी सुने कभी सोता ही नहीं था, बेटू भी ज़रूर उसी पर पड़ा होगा। अब तो दौड़ता–फिरता होगा आँगन में।"और उनकी धुंधली आँखों के आगे जैसे दौड़ते फिरते बेटू के चित्र बनने–बिगड़ने लगे। उसी कल्पना में खोई–खोई वे बोलती गईं, "पहले बहू लेकर आई थी तब तो दो महीने का था, बस पालने में पड़ा–पड़ा हाथ–पैर मारता था और मैं जाकर खड़ी हो जाती थी तो टुकुर–टुकुर मुझे ही निहारा करता था। सूरत भी एकदम रामेसुर पर ही पड़ी है उसकी। अब तो खुद देख लेना, सारा घर नापता फिरेगा।" और वे हँस पड़ीं। इन सब कल्पनाओं से ही उनका शरीर रोमांचित हो उठा।

अम्मा का काम समाप्त हुआ तो मिट्टी में सनी दोनों हथेलियों को ज़मीन पर पूरे जोर से टिकाते हुए उन्होंने उठने का प्रयत्न किया, पर एक सर्द आह–सी उनके मुँह से निकलकर रह गई। वे उठ नहीं पाईं तो बड़े ही कातर स्वर में बोलीं,"अरे नर्बदा, मुजे ज़रा उठा दे री, घुटने तो जैसे फिर जुड़ गए।"

"जुड़े तो सही। ऐसी सर्दी में कब से मिट्टी में सनी बैठी हो बेटे–बहू आ रहे हैं तो ऐसी क्या नवाई हो रही है ? सभी के घर आते हैं ?"और नर्बदा ने अम्मा को सहारा देकर उठाया, उसके हाथ धुलाए और खटिया पर लिटा दिया।

"तू भी कैसी बात करती है नर्बदा ? तीन बरस बाद मेरा बेटा आ रहा है, और मैं आँगन भी न लीपूं ?"

"तीन बरस बाद आ रहा है तो मैं तो यही कहूँगी कि उनमें मोहमाया नहीं है। तुम यों ही मरी जाती हो उसके पीछे।"

"देख नर्बदा, मेरे रामेसुर के लिए कुछ मत कहना। यह तो मैं जानती हूँ कि तीन–तीन बरस मुझसे दूर रहकर उसके दिन कैसे बीतते हैं,पर क्या करे, नौकरी तो आख़िर नौकरी है। मेरे पास आज लाखों का धन होता तो बेटे को यों नौकरी करने परदेश नहीं दुरा देती, पर–" और उनके कुछ क्षण पहले पुलकते चेहरे पर मायूसी छा गई। आँखें अनायास ही डबडबा आईं।

नर्बदा यहाँ बरसों से काम करती है, अम्मा के लिए उसके मन में अपार श्रद्धा है, पर बेटे के प्रसंग को लेकर वह जब–तक उनका दिल दुखा दिया करती है। कुछ और खरी–खोटी सुनाने का उसका मन हो रहा था, पर आज वह मानो अम्मा पर तरस खाकर चुप रह गई। जब तक वह काम करती रही, अम्मा शून्य में ताकती जाने क्या सोचती रहीं, बोलीं एक शब्द भी नहीं। जब वह जाने लगी तो न चाह कर भी उन्हें कहना पड़ा,"तू जाते समय ग्वाले को कहती जाना कि कल दूध जल्दी दे जाए,और अब दूध ज़्यादा लगेगा। बच्चे वाले घर में तो दूध पूरा ही रहना चाहिए। और जब तक वे लोग यहाँ रहें, तब तक तू चौका–बर्तन करके यहीं रहा करना! घर में पाँच प्राणी रहते हैं तो काम तो निकल ही आता है, फिर बच्चे का साथ रहेगा। लेन–देन की चिन्ता मत करना, मैं रामेसुर को एक कहूँगी तो वह पाँच देगा।"

कुछ तो गठिया के दर्द ने और कुछ नर्बदा की बातों ने अम्मा का उत्साह तोड़ दिया। बहुत–से काम उन्होंने सोच रखे थे, पर वे कुछ न कर सकीं। बस अपनी खाट पर पड़े–पड़े भूली–बिसरी लोरियाँ याद करके गुनगुनाती रहीं। धीरे–धीरे रात के अंधकार में उसके मन की मायूसी भी डूब गई और वे भोर होने के पहले ही उठ बैठीं। घुटने का दर्द मन के उत्साह में खो गया, और बेटे–पोते से मिलने की उमंग में मौसम की ठंडक भी जैसे जाती रही। सात बजते–बजते तो वे सब घर ही पहुँच जाएँगे। साथ छोटा बच्चा है, दूध तो गरम करके रख ही दूँ। फिर उन दोनों को भी तो चाय की आदत होगी, ऐसी सर्दी में चाय तैयार नहीं मिलेगी तो अम्मा को क्या कहेंगे भला ?" दूसरा चूल्हा भी जला दूँ, नहाने को गरम पानी भी तो चाहिए।

उस कड़कड़ी सर्दी में ठिठुरते–ठिठुरते अम्मा ने बेटे–बहू को गरम पानी करने के सारे आयोजन कर डाले। फिर सोचा–लगे–हाथ तरकारी भी काट दूँ, नहीं तो वे इधर आएँगे और उधर मैं चूल्हे में सिर देकर बैठ जाऊँगी। तीन बरसों में मेरा बेटा आ रहा है, घड़ी–दो–घड़ी उससे बात भी करूँगी ? इनका क्या, ये तो अपनी राजी–खुशी पूछकर औषधालय चल देंगे। तरकारी भी कट गई–अब क्या करे ? अम्मा अपने को इतना व्यस्त कर देना चाहती थीं, जिससे प्रतीक्षा के बोझिल क्षण महसूस न हों, पर समय जैसे बीत ही नहीं रहा था! तभी दूर कहीं घोड़ों के घुंघरुओं की आवाज़ आई और तांगा अम्मा के घर के सामने रुका। अम्मा पागलों की तरह दरवाजे की ओर दौड़ पड़ीं। रामेश्वर की गोद से उन्होंने झपटकर बच्चे को ऐसे छीना, मानो किसी चोर–उचक्के के हाथ से अपने बच्चे को छीन रही हों, और कसकर उसे सीने से चिपका लिया। चरणछूते रामेश्वर की पीठ पर हाथ फेरते हुए दूसरे हाथ के घेरे में उसे लपेट लिया। बच्चा एकाएक इतना प्यार और शारीरिक कष्ट पाकर रो उठा और माँ के पास जाने के लिए मचलने लगा। वे उसके आँसू पोंछने लगीं, और उनकी अपनी आँखों से भी आँसू की धारा बहने लगी। पुचकारने पर भी जब बच्चा चुप नहीं हुआ तो बहू की ओर बढ़ाते हुए उन्होंने कहा,"अभी मुझे पहचानता नहीं। एक बार मुझे पहचानने लगेगा तो छोड़ेगा नहीं।" उपेक्षित–सी एक ओर ओर खड़ी बहू ने बच्चे को ले लिया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चाय-पानी हो गया, और रामेश्वर नहाने चला गया तो अम्मा ने बहू को अकेले पाकर कहा, "ख़बर तो दी होती बहू, कि तुम्हारे महीने चढ़े हैं, कितने महीने हैं ?"

झेंपते हुए बहू ने उत्तर दिया, "यह भी कोई लिखने की बात थी अम्मा!" फिर ज़रा रुकते-रुकते कहा, मानो कहने का साहस बटोर रही हो, "अम्मा, इस बार बेटू को आप ही रखेंगी। जैसे भी हो, मैं यहाँ हूँ तब तक इसे अपने से हिला लीजिए। मैं तो इसके मारे ही परेशान थी, दो-दो को तो.."

अम्मा आँखे फाड़-फाड़कर ऐसे देख रही थीं मानो जो कुछ सुन रही हैं उस पर विश्वास करें या नहीं। फिर एकाएक बोल पड़ीं, "तुम कह क्या रही हो बहू, बेटू को मेरे पास छोड़ जाएगी, मेरे पास! सच ? हे भगवान, तुम्हारी सब बात पूरी हों। तुम बड़भागी होओ। मेरे इस सूने घर में एक बच्चा रहेगा तो मेरा जनम सफल हो जाएगा।" फिर वे एकाएक रो पड़ीं,"तुम क्या जानो बहू! अपने कलेजे के टुकड़े को निकालकर बम्बई भेज दिया। रामेसुर के बिना यह घर तो मसान-जैसा लगता है। ये ठहरे सन्त आदमी, दीन-दुनिया से कोई मतलब नहीं। मैं अकेली ये पहाड़ जैसे दिन कैसे काटती हूँ सो मैं जानती हूँ। भगवान तुम्हें दूसरा भी बेटा दें, तुम उसे पाल लेना! मैं समझूँगी, तुमने मेरा रामेसुर लेकर मुझे अपना रामेसुर दे दिया! पर देखो, अपनी बात से मुड़ना नहीं...मैं...मैं" तभी रामेश्वर ने ठिठुरते हुए रसोई में प्रवेश किया , "अम्मा, एक अंगीठी ज़रा इधर रख दो। बम्बई में रहकर तो सरदी सहने की आदत नहीं रही। यहाँ तो नहाते ही जैसे जम गया।" अम्मा ने अंगीठी रामेश्वर के पास सरका दी। तभी रामेश्वर का ध्यान अम्मा के कपड़ों की ओर गया, "यह क्या अम्मा, तुम कुछ भी गरम कपड़ा नहीं पहने हो! सरदी खा गईं तो बीमार पड़ जाओगी। फिर तुम्हें गठिया की भी तकलीफ़ है, ऐसे कैसे चलेगा ? न हो तो बनवा लो कपड़े मैं रुपये दे दूँगा " पर वह सब अनसुना करके अम्मा बोलीं,"देख, आज बहू ने कह दिया है कि बेटू अब मेरे पास रहेगा, और अब जो बच्चा होगा वह तुम्हारे पास। तू कहीं टाल मत जाना, बात पक्की हो गई। आज से बेटू मेरा हुआ!"

"अरे, हम सभी तो तुम्हारे हैं, अम्मा, बोलो नहीं हैं ?" परिहास के स्वर में रामेश्वर बोला!

"हो क्यों नहीं। मेरे नहीं तो और किसके हो! पर बेटू आज से मेरे पास रहेगा।" अम्मा ने कहा।

तभी वैद्यराज जी कुछ ख़ाली शीशियाँ लेकर आए तो अम्मा बोलीं, "सुनते हो जी, इस बार बेटू यहीं रहेगा। बेचारी बहू ख़ुद अभी बच्ची है, दो-दो को कैसे संभालेगी ? और फिर पहले बच्चे पर तो यों भी दादी का हक़ होता है।"उनके हाथों की गति बढ़ गई थी और वे अब उठने-बैठने में ज़रा भी तकलीफ़ महसूस नहीं, कर रही थीं।

दोपहर को नर्बदा से भी कहा, "बहू के तो फिर बच्चा होने वाला है, बेचारी दो-दो को कैसे संभालेगी, सो मुझसे कहने लगी- अम्मा, बेटू को तो तुम्हें ही रखना पड़ेगा। उसे कहने में बड़ा संकोच हो रहा था कि मुझे बुढ़ापे में तरलीफ़ होगी, पर तू ही बता, घर के बच्चोंको रखने में कैसी तकलीफ़ भला! ऐसे समय में घर के ही लोग काम न आएँगे, तो कौन आएंगे भला ?"

इसके बाद घर में जो कोई भी आया, उसे यही ख़बर सुनाई गई। अम्मा इस बात का इतना प्रचार कर देना चाहती थीं कि यदि फिर किसी कारण से बहू का मन फिर भी जाए तो शरम के मारे ही वह अपना इरादा न बदल पाए। अम्मा का सारा दिन बेटू को खिलाने में और उसकी नोन-राई करने में ही बीतता। जाने कैसी-कैसी औरतें घर में आती हैं, तंदुरस्त-सुंदर बच्चे को कड़ी नज़र से देख जाएँ तो लेने के देने पड़ जाएँ। बेटू को लेकर उनके शिथिल और नीरस जीवन में नया उत्साह आ गया था। घुटनों के दर्द के मारे कहाँ तो वे अपने शरीर का बोझ ही नहीं ढो पाती थीं, और कहाँ अब वे बेटू को लादे फिरती हैं। शाम को उसके साथ आँख-मिचौनी खेलती। बेटू का घोड़ा बनकर आँगन में दौड़तीं-फिरतीं। बेटू के साथ-साथ उनका भी जैसे बचपन लौट आया था। देखने वाले अम्मा के पागलपन पर हँसते, पर उसकी उन्हें ज़रा भी चिंता नहीं थी. रामेश्वर ने टोका, "अम्मा, क्यों उसे लादे फिरती हो, यों ही तुम्हारे घुटनों में दर्द रहता है।"तो बिगड़ पड़ी, "कैसी बातें करता है रामेसुर, इसमें भी कोई वज़न है जो उठाना भारी पड़े। फूल जैसा तो हल्का है, ख़ाली-ख़ाली दोनों बेला मिलते टोक दिया। माँ-बाप की नज़र ही सबसे ज़्यादा लगती है बच्चों को, तभी तो बेटू एक दिन भी ठीक नहीं रहता है।"

निश्चित समय पर दूध पिलाना, शीशी में दूध भरना, बाद में उसकी सफ़ाई करना आदि सब काम अम्मा के लिए बिलकुल नए थे। उन्होंने तो रामेश्वर को अपने ढंग से पाला था जब बच्चा रोया झट दूध पिला दिया। दूध के लिए भी समय देखना पड़ता है, यह बात उनके लिए एकदम नई थी। दो साल तक तो उन्होंने रामेश्वर को अपना दूध पिलाया था, उसके बाद गिलास से पिलाती थीं। यह शीशी का नख़रा उस ज़माने में था ही नहीं, और होगा भी तो शहरों में। पर रमा से बड़ी लगन और तत्परता से एक जिज्ञासु विद्यार्थी की तरह उन्होंने यह सब भी सीखा। पति से ज़िद करके औषधालय की दीवार-घड़ी, जो पिछले बीस वर्षों से वहीं लगी थीं, उतरवाकर घर में लगवाई, और घड़ी देखना सीखा। उनके एकाकी जीवन में समय का कोई महत्त्व

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ही नहीं था। न पति को दफ़्तर जाना रहता था, न बच्चों को स्कूल, जो समय पर कोई काम करना पड़े। पर अब एकाएक ही उन्हें घड़ी की आवश्यकता महसूस होने लगी थी। यों उनकी याददाश्त बड़ी कमज़ोर थी, पर दूध के समय उन्होंने जो याद किए तो कभी नहीं भूलीं। शुरू-शुरू में यह सब उन्हें बड़ा अटपटा-सा लगा, पर फिर भी वे सारा काम बड़ी सतर्कता से करतीं। शीशी में दूध भरते समय उनका बूढ़ा हाथ अक्सर काँप जाया करता था, और दूध बाहर को गिर जाता था। उस समय वे एक असफल विद्यार्थी की तरह सफ़ाई पेश करती थीं, ''बहुत जल्दी सीख लूँगी बहू। ज़रा-सा हाथ काँप गया था, फिर शीशी का मुँह भी तो कितना छोटा है।'' उनका कहने का भाव ऐसा होता मानो वे कह रही हों कि इस छोटी-सी ग़लती के कारण ही कहीं तुम बेटू को ले मत जाना!

बीस दिन के बाद जब बहू ने अपनी माँ के घर प्रयाण किया तो बेटू ने न ज़िद की, न वह रोया ही। माँ के कड़े नियंत्रण के बाद दादी के असीम दुलार में रहना, जहाँ कोई बन्धन नहीं, अंकुश नहीं, बेटू को बड़ा अच्छा लगा। बहू चली गई, अम्मा ने निश्चिंतता की एक साँस ली। महीना बीतते-न-बीतते खबर आयी कि बहू के दूसरा लड़का हुआ है। अम्मा की छाती पर से जैसे एक भारी बोझ हट गया। संशय का एक काँटा जो रमा के जाने के बाद भी उनके मन में चुभा करता था, वह भी निकल गया। बेटू अब मेरा है, पूरी तरह मेरा है, यह भावना उसी दिन पूरी तरह उनके मन में जम पाई।

जाने से पहले रामेश्वर ने अम्मा और पिताजी के लिए ढ़ेर-सारे कपड़े बनवाए थे। अम्मा सारे मोहल्ले की औरतों को दिखाती फिरती। जो कोई आता उसी से कहतीं, ''अम्मा के पीछे तो बस रामेसुर पागल है, न आगे की सोचता है, न पीछे की। उसका बस चले तो मुझ पर ही सारा घर लुटा दे। लाख मना करती रही, पर एक बात नहीं मानी। अब बुढ़ापे में ये छपी साड़ियाँ पहनकर कहाँ जाऊँगी, पर वह क्यों सुनने लगा?'' उनकी झुर्रियों-भरे चेहरे पर चमक आ जाती, और वे आँखें मूँदकर अपने बेटे के चिरायु होने की कामना करतीं। जब रामेश्वर के जाने का समय आया तो उन्होंने रो-रोकर घर भर दिया। हिचकियाँ लेते हुए बोलीं, ''देख रामेसुर, यह तीन-तीन बरस तक घर का मुँह न देखने वाली बात अब नहीं चलेगी। साल में एक बार तो आ ही जाया कर मेरे लाल! नौकरी की जगह नौकरी है, और माँ-बाप की जगह माँ-बाप! मेरी तबीयत भी ठीक नहीं रहती, किसी दिन भी आँख मुँदी रह जायेगी, तो मैं तेरी सूरत को भी तरस जाऊँगी। सो कम-से कम अपनी इस बुढ़िया माँ को...'' पर आगे वे कुछ नहीं कह सकीं, बस फूट-फूट कर रोने लगीं। आँसू भरी आँखों से वे रामेश्वर के ताँगे को तब तक देखती रहीं, जब तक वह आँखों से ओझल नहीं हो गया। उसके बाद उन्होंने कसकर बेटू को अपनी छाती से चिपका लिया।

दूसरे साल रामेश्वर नहीं आया, केवल रमा आई, शायद बेटू को देखने। पर बेटू को जो देखा तो उसका माथा ठनक गया। जिस बेटू को वह छोड़ गई थी, और जिसे अब वह देख रही रहै, दोनों में कोई सामंजस्य ही नहीं था। बात-बात में उसकी ज़िद देखकर रमा का ख़ून खौला जाता। खाना वह दादी अम्मा के हाथ से खाता, और सारे दिन चरता रहता था। रात में सोता तो दादी अम्मा के दोनों अंगूठे पकड़कर सोता, और जब तक दादी अम्मा उसे लोरी नहीं सुनातीं तब तक उसे नींद नहीं आती थी। सारे दिन दादी अम्मा की धोती का पल्ला पकड़कर उनके पीछे-पीछे घूमा करता, और शाम को गली-मुहल्ले के गंदे-गंदे बच्चे के बीच खेलता। उसे देखकर कौन कहेगा कि यह एक पढ़ी-लिखी सभ्य लड़की का बच्चा है। घर के सामने से जो कोई भी फेरीवाला निकल जाता, उसी से बेटू कुछ-न-कुछ ज़रूर ख़रीदता, न दिलवाने से ज़मीन-आसमान एक कर देता, और मचल-मचलकर सारे आँगन में लोटता।

आखिर रमा को ज़बान खोलनी ही पड़ी, "अम्मा, आपने तो इसे बिगाड़कर धूल कर रखा है, इस तरह कैसे चलेगा?"

दादी माँ ने हँसते हुए बड़े सहज भाव से कहा, "अरे, बचपन में कौन ज़िद नहीं करता बहू! रामेसुर भी ऐसे ही करता था, यह तो सच हूबहू उसी पर पड़ा है। समय आने पर सब अपने-आप छूट जाएगा। यही तो उमर होती है ज़िद करने की, साल-दो-साल और कर ले फिर अपने-आप सब कुछ छूट जाएगा!" और वे मुग्ध भाव से गोद में बैठे बेटू के बालों में अंगुलियाँ चलाने लगीं। रमा ख़ून का घूँट पीकर रह गई। रमा की इच्छा हुई बेटू को अपने साथ लेती जाए, पर एक साल का पप्पू ही उसे इतना परेशान करता था कि दोनों को साथ रखने का साहस नहीं हुआ। बम्बई जाते ही उसने अम्मा के पास ज़रा खरी-खरी भाषा में पत्र पहुँचाने आरंभ कर दिए। जैसे ही वह चार साल का हुआ, रमा ने लिख दिया कि अम्मा अब उसे यहाँ के नर्सरी स्कूल में भर्ती करवा दें, कम-से-कम कुछ तमीज़ तो सीखेगा! चिट्ठियाँ पढ़ती तो अम्मा को लगता बहू का दिमाग़ बौरा गया है। भला चार साल का दूध पीता बच्चा कहीं स्कूल जा सकता है! रमा के पत्र आते रहे और अम्मा का ढर्रा अपने ढंग से बराबर चलता रहा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दो साल बाद फिर रमा और रामेश्वर अपने तीन साल के पप्पू को लेकर आए। पप्पू ने अंग्रेज़ी की छोटी-छोटी कविताएँ याद कर रखी थीं और बड़े अदब के साथ बोलता था। अभी दो महीने पहले ही रमा ने उसे वहाँ के अंग्रेज़ी स्कूल में भर्ती करवाया था। पर बेटू वैसा ही था जैसा रमा उसे छोड़ गई थी। उम्र में वह ज़रूर बड़ा हो गया था बाकी सब-कुछ वैसा ही था। रमा उठते-बैठते रामेश्वर से कहती,"जैसे भी हो, इस बार बेटू को लेकर चलना ही होगा। यही हाल रहा तो इसकी ज़िन्दगी चौपट हो जाएगी। यह भी कोई ढंग है भला!"

"अम्मा को बड़ा दुख होगा, और बेटू तुम्हारे पास ज़रा भी तो नहीं आता, वह अम्मा को छोड़कर कैसे रहेगा? ये सारी बातें सोच लो!"रामेश्वर इस प्रसंग को जैसे टालना चाहते थे।

"अम्मा के दुख की बात मैं मानती हूँ।" रमा ने अपने आवेश को दबाते हुए कहा, " पर अब उन्हें लिखा कि स्कूल में डाल दो तो वह भी तो उनसे नहीं हुआ। जैसे बताती हूँ वैसे तो रखती नहीं। अब इनके दो दिन के सुख के लिए बच्चे का सारा भविष्य बिगाड़ कर रख दूँ?"उसका गला भर्रा आया था।

रामेश्वर बेचारा बड़े धर्म-संकट में था। उसे पत्नी की बातों में भी सार नज़र आता था, और वह अम्मा की भावनाओं को भी ठेस नहीं पहुँचाना चाहता था, सो बिना कुछ निर्णय दिए सारी बात रमा पर छोड़ कर वह बम्बई लौट गया। रमा कभी मिठाई दिलाकर, कभी ताँगे में घुमाकर बेटू को अपने से हिलाने की कोशिश करने लगी। बेटू को ताँगे में घूमने का बेहद शौक था, जो कम ही पूरा होता था। अम्मा को भी स्वप्न में भी ख़्याल नहीं था कि रमा पप्पू के रहते हुए भी बेटू को ले जाने का प्रस्ताव रखेगी। जिस दिन उन्होंने सुना, उनके पैरों-तले की ज़मीन सरक गई। जब रमा ने बेटू को उनके पास छोड़ने का प्रस्ताव रखा था, तब एकाएक उन्हें अपने कानों पर भी विश्वास नहीं हो रहा था। ठीक उसी प्रकार ले जाने की बात पर भी उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था। फिर भी काँपते स्वर में कहा,"कैसी बात करती हो बहू। मेरे बिना वह पल-भर भी तो नहीं रहता। इतना बड़ा हो गया, फिर भी जब तक में कौर नहीं देती तब तक वह खाता नहीं, तो एकाएक मुझसे दूर कैसे रहेगा?"

"नहीं रहेगा तो थोड़े दिन रो लेगा, आख़िर उसकी पढ़ाई का सिलसिला भी तो ज़माना है अम्मा! देखो, पप्पू स्कूल जाने लगा है और यह भी तुमहारा पल्ला पकड़े-पकड़े ही घूमता है।"

" अरे पढ़ लेगा बहू, पढ़ लेगा! उमर आएगी तो पढ़ लेगा। यह मत सोचना कि मैं उसे गंवार ही रहने दूँगी। रामेसुर को भी तो मैंने ही पाला-पोसा है, उसे क्या गंवार रख दिया? फिर यह तो मुझे और भी प्यारा है। मूल से ब्याज ज़्यादा प्यारा होता है, इसे तो मैं खूब पढ़ाऊँगी, तू चिंता मत कर बहू, पर इसे ले जाने की बात मत कर..."और वे फफक-फफककर रो पड़ीं।

रमा की आँखों में भी आँसू तो आ गए, फिर भी उसने अपने पर काबू पाते हुए, और स्वर को भरसक कोमल बना कर कहा, " मैं आपका दिल नहीं दुखाना चाहती अम्मा, पर आपके इस ज़रूरत से ज़्यादा प्यार ने ही तो इसे बिगाड़कर धूल कर दिया है। एक भी आदत तो इसमें अच्छी नहीं है। यदि आप सचमुच ही इसे प्यार करती हैं और इसका भला चाहती हैं तो इसे मेरे साथ भेज दीजिए, और उसके साथ दुश्मनी ही निभानी है तो रखिए इसे अपने पास।"कहने के बाद ही रमा को लगा, जैसे बहुत बड़ी बात कह गई है।

" मैं...मैं अपने बेटू के सात दुश्मनी निभाऊँगी-मैं उसकी दुश्मन हूँ...मैं...तू मेरे प्यार की परीक्षा लेना चाहती है, पर ऐसी कठिन परीक्षा तो मत ले बहू, इससे तो तू मेरे प्राण ही ले ले!"और वे फूट-फूटकर रोने लगीं। कुछ देर बाद एकाएक स्वर संयत करके बोलीं,"ले जा बहू ले जा। मेरा बेटू फूले-फले, पढ़-लिखकर लायक बने इससे बढ़कर खुशी की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है। मेरा क्या है, मेंरा क्या चार दिन की हँसी-खुशी के लिए मैं तेरे बच्चे की ज़िन्दगी नहीं बिगाड़ूँगी। मैं अपढ़-गंवार औरत ठहरी, इसे लायक कहाँ से बनाऊँगी! तू इसे ले जा। चार दिन को मेरी ज़िन्दगी में हंसी-खुशी आ गई, इसी में तेरा बड़ा जस मानूँगी. " और रमा कुछ कहे उससे पहले ही उन्होंने रसोईघर में जाकर भीतर से किवाड़ बन्द कर लिए।

रमा को खुद इस सारी बात से बड़ा दु:ख हो रहा था, पर बच्चे की बात सोच कर वह निर्णय बदलने में अपने को असमर्थ पा रही थी। यही सोच-सोचकर वह अपने को तसल्ली दे रही थी कि समय का मरहम अम्मा के घाव को अपने-आप भर देगा।

दो दिन बाद औषधालय के एकमात्र नौकर और दोनों बच्चों को लेकर रमा अपनी माँ के यहाँ चल पड़ी। बेटू को बताया ही नहीं गया कि रमा उसे अपने साथ ले जा रही है। रोज़ की भाँति ताँगे में घूमने के लालच में वह चला गया। जाते समय कह गया,"दादी-अम्मा, मैं तुम्हारे लिए मिठाई और गोली लेकर आऊँगा" दादी-अम्मा ने उसे कलेजे से लगा लिया। एक बार उनकी इच्छा हुई कि वह बेटू को बता दे कि रमा उसे हमेशा के लिए उनसे अलग करके ले जा रही है, पर फिर भी वे चुप रहीं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उसके बाद जो भी कोई घर में आया, अपार आश्चर्य से उसने पूछा, "अरे, बहू बेटू को ले गई? तुम तो कहती थी कि बेटू अब तुम्हारे पास ही रहेगा।" अम्मा को लगा, जैसे किसी ने उनके कलेजे पर गरम सलाख़ दाग़ दी हो। तिलमिलाकर जवाब देतीं, "कहती तो थी पर अब रखा नहीं जाता। गठिया के मारे मेरा तो उठना-बैठना तक हराम हो रहा है, तो मैंने ही कह दिया कि बहू, अब पप्पू बड़ा हुआ सो बेटू को भी ले जाओ।"

"अरे अम्मा, एक पल तो तुम उसे छोड़ती नहीं थीं, अब रह लोगी उसके बिना?"

"नहीं रह सकती तो भेजती क्यों? अब यह कोई बच्चे पालने की उमर है भला! जिसकी थाती उसी को सौंपी। बुढ़ापा है, कुछ भजन-पूजन ही कर लूँ। उनके मारे मेरा सब-कुछ छूट गया था!" बड़े ही संदिग्ध भाव से अम्मा की इस दलील को औरतें स्वीकार कर पाती थीं। आज अम्मा के पास कोई काम नहीं था करने को सो, ख़ाली आँगन में दर्दीला स्वर से एक लोरी गुनगुना रही थीं। साम को गुब्बारे वाला आया, बुढ़िया के बाल वाला आया, खिलौने की मिठाई बेचने वाला आया तो मुरझाये स्वर में अम्मा ने सबको यही जवाब दिया,"जाओ, भाई जाओ! आज तुम्हारा ग्राहक नहीं है। उसे मैंने उसकी अम्मा के साथ भेज दिया। अब यहाँ मत आया करो, कभी मत आया करो, कोई तुम्हारी चीज़ नहीं ख़रीदेगा!" और उनका मन सुबक उठता, पर उनकी आँखों के आँसू जैसे सूक गए थे!

तीसरे दिन औषधालय का नौकर वापस आया, तो सबसे पहले ख़बर दी कि दादी-अम्मा को याद करते-करते बेटू को बुखार आ गया और वह उसे भरे बुख़ार में छोड़कर आया है। वह रमा के हाथ से न कुछ खाता है न दवाई पीता है। अम्मा ने सुना तो ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गई। पागलों की भाँति दौड़ती हुई औषधालय में पहुँची, "अरे सुनते हो, बेटू रो-रोकर बीमार हो गया है। मैं तो पहले ही जानती थी कि वह मेरे बिना रहेगा नहीं, पर बहू को कौन समझाए! अब तो रात की गाड़ी से ही जाकर मुझे उसे लाना होगा! वह तो रो-रोकर प्राण दे देगा। हे भगवान, मेरी मत पर भी पत्थर पड़ गए थे जो बहू की बात मान गई?"

अम्मा रोती थीं और कपड़े ठीक करती जाती थीं। नर्बदा आई तो आश्चर्य से बोली,"कहाँ की तैयारी कर रही हो अम्मा?"

"अरे, सिब्बू बहू को छोड़कर लौटा तो बताया कि बेटू ने रो-रोकर बुख़ार चढ़ा लिया। मैं तो भेजकर अपनी तरफ़ से निश्चिन्त हो गई थी, पर वह रह सकता है क्या? उसके तो प्राण मुझमें कुछ ऐसे पड़ गए थे कि क्या बताऊँ। कोई अगले जन्म का संस्कार ही समझो! अब जाकर लाना पड़ेगा, नहीं तो छोरा रो-रोकर प्राण दे देगा।" और गर्व और आनंद से उनकी छाती फूल गई।

तीसरे दिन ही बेटू को लेकर वे लौट आईं। जिसने देखा उसी ने कहा,"अरे, चार दिन में ही बच्चा सूख गया।"

"सूखेगा नहीं, कुछ तो खाया नहीं, और एक पल को आँसू नहीं टूटा। मैं तो सोचती थी कि बहू के हवाले करके सुख से पूजा-पाठ करूँगी, पर अब यह रहता भी तो नहीं।"

एक साल उन्होंने इसी प्रकार और निकाल दिया। रमा बम्बई से आई और फिर बेटू का वही रवैया देखा तो सोचा कि वह उसे सीधे बम्बई ले जाती तो यह सारा कांड नहीं होता। अम्मा बम्बई तक आ नहीं सकती थी। सो इस बार फिर एकबार दादी माँ को रुलाकर उनके मना करने पर भी वह बेटू को लेकर बम्बई के लिए चल पड़ी। जाने किस आशा से अम्मा ने अपनी सारी जमा-पूँजी ख़र्च करके शिब्बू को साथ कर दिया। रमा मना करती रही कि अब दोनों बच्चे बड़े हैं और वह संभाल लेगी, पर अम्मा ने शिब्बू को साथ भेज ही दिया

दूसरे दिन से जो कोई भी आता, अम्मा उसी के सामने यह मनौती मनातीं कि किसी प्रकार बेटू रमा के पास हिल जाए तो वह सवा रुपये का परसाद चढ़ाएँगी। उच्च स्वर से वह रात-दिन रट लगाए रहतीं कि बेटू मुझे किसी करह भूल जाए। पर सात दिनों के बाद जब सिब्बू लौट कर आया तो वे ऐसे दौड़ पड़ीं मानो वह बेटू को लेकर ही आया हो। झपटकर उन्होंने पूछा, "मेरा बेटू कहाँ है? मेरा बेटू ठीक है शिब्बू, तुझे मैंने किसलिए भेजा था।" उनका स्वर बुरी तरह काँप रहा था।

"इस बार तो अम्मा, बहूजी ने बेटे को हिला दिया। वहाँ बहूजी के मकान में बहुत सारे बच्चे हैं, उन सबसे दोस्ती हो गई, सो ख़ूब खेलता है। ट्राम, बस, बगीचे, झूले-इन सबमें उसका मन लग गया।" शिब्बू ने बताया तो अम्मा शून्य-पथराई आँखों से उसे देख रही थीं मानो कुछ समझ ही नहीं रही हों। शिब्बू कहे चला जा रहा था, "चलो, तुम्हारी चिन्ता दूर हुई। मैं तो अम्मा, दो दिन इसी मारे ज़्यादा रुक गया कि कहीं रोया तो अपने साथ लेता आऊँगा, पर इस बार बहूजी ने उसे समझा दिया और वह भी समझ गया। अब वहाँ जम जाएगा। अब तो तुम परसाद चढ़ाओ अम्मा, और मज़े से भजन-पूजा करो।"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एकाएक जैसे अम्मा की चेतना लौट आई, "क्या कहा...बेटू भूल गया ? वहाँ जम गया ? सच, मेरी बड़ी चिन्ता दूर हुई। इस बार भगवान ने मेरी सुन ली। ज़रूर परसाद चढ़ाऊँगी। मेरे बच्चे के जी का कलेस मिटा, मैं परसाद नहीं चढ़ाऊँगी भला ?" और फिर गीली आँखों और काँपते हाथों से, उन्होंने जेब से सवा रुपया निकालकर शिब्बू को देते हुए कहा, "ले, पेड़े लेता आ, अब परसादी चढ़ाकर बाँट ही दूँ। कौन, नर्बदा ? सुना नर्बदा, बेटू मुझे भूल गया–वह भूल ही गया..." और उन्होंने आंचल से भर-भर आती आँखें पोंछीं और हँस पड़ीं।

शब्दार्थ-टिप्पणी

पुलकित अत्यधिक प्रसन्न, प्रफुल्लित **औषधालय** आयुर्वेदिक अस्पताल **बड़भागी** सौभाग्य शालिनी **परिहास** हँसी, मजाक **तत्परता** शीघ्रता **जिज्ञासु** जानने का इच्छुक **सर्तकता** सावधानी **अंकुश** नियन्त्रण **भरसक** यथासंभव **संयत** संतुलित

मुहावरे

आँख डबडबा आना आँखों में आंसू आ जाना **खरी-कोटी सुनाना** भला बुरा कहना **नोन-राई करना** नजर उतारना **संशम का काँटा चुभना** शक होना **उठना बैठना हराम होना** काम करने में मुश्किल होना

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) अम्मा की प्रसन्नता का क्या कारण था ?
(2) अम्मा की खुशी के बारे में जानकर नर्बदा ने क्या कहा ?
(3) अम्मा अपने आपसे व्यस्त क्यों रखना चाहती थी ?
(4) बहू ने क्या कहा जिस पर अम्मा को विश्वास नहीं हुआ ?
(5) अम्मा सभी को बेटू के अपने पास रुकने की खबर क्यों सुनाती थीं ?
(6) बेटू को देखकर बहू का माथा क्यों ठनका ?
(7) शिब्बू ने लौटकर अम्मा को क्या बताया ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) रामेसुर के आने के उत्साह में माँ की तैयारी का वर्णन कीजिए।
(2) बेटू को अपने पास रखने के लिए अम्मा ने क्या-क्या करना प्रारम्भ किया।
(3) रमा की चिंता का क्या कारण था ? उसने अम्मा से क्या कहा ?
(4) बम्बई में बेटू का मन लग गया, ये जानकर अम्मा की क्या प्रतिक्रिया हुई ?
(5) अम्मा की मन:स्थिति का चित्रण कीजिए।

3. संदर्भ व्याख्या लिखिए :

(1) क्या बात करता है रामेसुर, इसमें भी कोई वजन है जो उठाना पड़े, फूल जैसा तो हल्का है।
(2) संशय का एक काँटा जो रमा के जाने के बाद भी चुभा करता था, वह भी निकल गया।

योग्यता विस्तार

- घर के आसपास के किसी वृद्धाश्रम या किसी वृद्ध के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9 बिस्तरा है न चारपाई है

त्रिलोचन शास्त्री

(जन्म : सन् 1917 ई; निधन : सन् 2007 ई.)

त्रिलोचन शास्त्री का जन्म सुल्तानपुर जिले के कटघरा चिरानी पट्टी गाँव में हुआ था। त्रिलोचन मूल नाम वासुदेवसिंह था, जिसे संस्कृत अध्यापक ने बदलकर त्रिलोचन कर दिया। आर्थिक अभावों के बीच उन्होंने फक्कड़ाना जीवन जीते हुए किताबों की दुनिया से अधिक दुनिया की किताब पढ़ी। प्रमुख प्रगतिवादी कवि के रूप में उनकी एक विशिष्ट पहचान बनी। ग्रामीण परिवेश के राग-विराग का उनकी कविता में सहज निरूपण हुआ है। पूँजीवादी समाज-व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश होने के कारण अभावग्रस्त जन-सामान्य के जुझारूपन और उसकी उत्कट जिजीविषा की उनकी कविता में ओजस्वी अभिव्यक्ति हुई है।

हिन्दी कविता में त्रिलोचन 'सोनेट' के पर्याय के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने गीत और गजलें भी लिखीं । 'धरती,' 'गुलाब' और 'बुलबुल,' 'दिगंत,' 'ताप के ताए हुए दिन' 'उस जनपद का कवि हूँ,' 'अरघान' तथा 'तुम्हें सौंपता हूँ ' प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं। पत्रकारिता एवं कोश-निर्माण में उनका महत्त्वपूर्ण प्रदान रहा ।'ताप के ताए हुए दिन' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शलाका सम्मान प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत गजल में कवि ने दर-ब-दर की ठोकरें खाने को विवश आम आदमी की अभावग्रस्त जिंदगी का यथार्थ चित्र अंकित किया है। मरने के लिए घुट-घुट कर जी रहे आदमी के जीवन का संघर्ष सबसे बड़ी सच्चाई है। बिस्तरा और चारपाई का न होना सब कुछ स्वयं व्यंजित कर देता है।

बिस्तरा है न चारपाई है,
ज़िन्दगी खूब हमने पाई है।

कल अँधेरे में जिसने सर काटा,
नाम मत लो हमारा भाई है।

ठोकरें दर-ब-दर की थीं हम थे,
कम नहीं हमने मुँह की खाई है।

कब तलक तीर वे नहीं छूते,
अब इसी बात पर लड़ाई है।

आदमी जी रहा है मरने को
सबसे ऊपर यही सच्चाई है।

कच्चे ही हो अभी त्रिलोचन तुम
धुन कहाँ वह सँभल के आई है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

दर-ब-दर द्वार-द्वार पर, हर जगह **तलक** तक **मुँह की खाना** मात खाना ,पराजय **तीर** बाण, किनारा

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) कवि ने किस तरह की ज़िन्दगी पाई है ?

(2) ग़जल में किस सच्चाई का उल्लेख किया गया है ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) गजल का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

(2) ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

'कल अँधेरे में जिसने सर काटा,
नाम मत लो हमारा भाई है।'

योग्यता-विस्तार

- इस भाव से संबंधित अन्य दो कविताएँ खोजिए और उनका अध्ययन कीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10 अदम्य जीवन

रांगेय राघव

(जन्म: सन् 1923 ई; निधन:न् 1962 ई.)

रांगेय राघव का जन्म राजस्थान के भरतपुर जिले के वैर के रियासती मंदिर सीताराम के तमिल महन्त स्वामी रंगाचार्य के घर हुआ था। मूल तमिलभाषी होकर भी राजस्थान के एक छोटे से कस्बे में रहकर उन्होंने आजीवन हिन्दी की सेवा की। सबसे पहले उनकी रचना कोलकात्ता से प्रकाशित 'विशाल भारत' में छपी थी।

साहित्य की प्राय: सभी विधाओं पर उन्होंने लिखा किंतु कथाकार के रूप में उनका प्रदान विशेष रहा। राहन रूकी, 'कब तक पुकारूँ', 'पक्षी और आकाश', 'घरौंदे' उनके मुख्य उपन्यास हैं। उनकी कहानी 'गदल' हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियों में से एक मानी जाती है। रांगेय राघव एक अच्छे चित्रकार भी थे। राजस्थान साहित्य अकादमी, उत्तरप्रदेश सरकार एवं अन्य अनेक संस्थाओं ने उन्हें पुरस्कृत किया था।

'अदम्य जीवन' बंगाल के सन् 1942 के अकाल पर रांगेय राघव द्वारा लिखित यह रिपोर्ताज 'तूफानों के बीच' शृंखला का एक अंश है। इसमें उस भीषण अकाल की अमानवीय बना देने वाली दैवीय यातना तथा दुष्टतापूर्ण मानवीय अनीतियों के बावजूद बंगाल के लोगों की अदम्य जिजीविषा का मार्मिक आख्यान है। लेखक ने बंगाल के भीषण अकाल से ग्रस्त शिद्धिरगंज नामक गाँव में घटित विनाश लीला का सच्ची संवेदना के साथ कलात्मक चित्रण किया है। भुखमरी और बीमारियों की वजह से सारा गाँव उजड़ गया है। दूर-दूर तक सिर्फ कब्रें ही कब्रें दिखाई देती हैं, बीच-बीच में कुछ टूटे-फूटे घर बचे हैं, कुछ लोग बचे हैं, जिन्दा लाश की तरह। कुदरत की मार और जमाखोरों की क्रूरता के बावजूद जीवित रहने की अदम्य इच्छा है, मौत से जूझने का अदम्य साहस है। लेखक के विचार से जनशक्ति कभी मर नहीं सकती, मिट नहीं सकती। उसे कोई न मार सकता है, न मिटा सकता है। आँखों देखी घटनाओं का लेखक ने जो यथार्थ चित्र अंकित किया है, वह मन को झकझोर देता है।

हम पगडंडियों से बढ़ते जा रहे थे। सूर्य आकाश में चढ़ने लगा था। कहीं-कहीं कोई किसान किसी पेड़ की छाया में बैठा दीख पड़ता था। सर्वत्र नीरवता छा रही थी। आकाश में बादल तैर रहे थे, जिन्हें देखकर खेतों से एक सोंधी-सी उसांस उमंग उठती थी। दूर हरियाली लहर तेज चलती हवा की तरंगों पर गूँज-सी उठती थी। हरी-भरी पृथ्वी पर कभी-कभी बादलों के छा जाने से कहीं धूप और कहीं छाया, बरबस हृदय को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। किन्तु मेरे साथी को जैसे इन सब बातों में दिलचस्पी नहीं थी। बायाँ हाथ उठाकर वह कह रहा था--"वही है शिद्धिरगंज, देख रहे हो न वह ताड़ का पेड़?"

दूर--लगभग मील-भर की दूरी पर-कालनेमि की तरह खड़ा था वह लम्बा ताड़ का पेड़। जैसे-जैसे हम उस पेड़ की तरफ बढ़ रहे थे, आकाश के बादल लहरों की तरह उस पर केन्द्राकार आ-आकर फैल जाते थे। वर्षों से ताड़ का वह पेड़ इसी तरह खड़ा है और वर्षों से उसके हिलते पत्तों ने बादलों की मर्मर सुनी है; किन्तु आज उसकी छाया में मनुष्य विक्षुब्ध हैं।

मेरा साथी चुपचाप बढ़ा चला आ रहा था। एकाएक वह ठिठककर खड़ा हो गया। मैं उसके पीछे था। मैंने उसका कन्धा पकड़कर कहा-"भट्टाचार्यजी, क्या हुआ?"

"कुछ नहीं; गाँव आ गया।"

"गाँव! पर यहाँ तो कोई बस्ती शुरू ही नहीं हुई।"

साथी की आँखों में निराश मुस्कराहट काँप उठी--"नहीं क्यों कहते हैं आप? वह देखिए, वह...!" और उसने अपना हाथ सामने की ओर उठा लिया। मिट्टी का एक छोटा-सा ढूह घास में से अपना अनगढ़ सिर निकाले चुपचाप पड़ा था। मैं समझ नहीं सका कि क्या यही गाँव है? मैंने कहा--"यह तो मिट्टी का एक ढूह-मात्र है।"

"इस गाँव की यही तारीफ है। आदमी मिलने से पहले यहाँ कब्रें शुरू हो जाती हैं!"

मैंने देखा, वह सचमुच कब्र थी। कच्ची मिट्टी, सिर पर कोई साया नहीं, चारों तरफ कोई घेरा नहीं। हम लोग बढ़ चले। प्रतीक्षा की-सी नीरवता में प्राय: हर पाँच-दस कदम पर एक-न-एक कब्र थी। मेरा हृदय काँप उठा।

सामने एक टूटा घर था- भग्न, विध्वस्त; मानो तूफान में उसका वैभव नष्ट हो गया था और उसके सामने पेड़ों की शीतल और मनोरम छाया में चौदह कब्रें आँखें मूँदे पड़ी थीं। एक लड़का, जो वहीं बैठा एक आम की गुटली का सब-कुछ खा जाने में लगा था, अपने-आप चिल्ला उठा-"बाबू, एक-एक में दो-दो, तीन-तीन हैं। एक-एक में दो-दो, तीन-तीन।"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

और वह फिर गुठली को मुँह मारने लगा। भट्टाचार्यजी पेड़ों की घनी छाया में एक पेड़ से सटकर खड़े विश्राम कर रहे थे। वे कहने लगे–''बाहर से तुम्हारी तरह ही बहुत–से लोग आते हैं। हम चाहते हैं कि तुम यहाँ की एक–एक कब्र से बात करो और हिन्दुस्तान के कोने–कोने में जाकर कहो कि जिस ढाके की मलमल एक दिन शहंशाह पहनते थे, आज वहाँ जुलाहे चूहों की तरह मर रहे हैं। बोलो, सुना सकोगे संसार को यह?''

छोटी–छोटी पगडंडियों से होता हुआ यह स्वर कब्रों से टकराकर गूँज उठा और मानो कब्रों से आवाजें आने लगीं। चौदह कब्रें –आँखों के सामने एकबारगी उनमें सोए कंकाल तड़प उठे और नाच उठे यातना से व्याकुल, भूख से तड़प–तड़पकर मरते हुए प्राणियों के चित्र।

राह में एक वृद्ध अपनी चटाई पर बैठा करघा चला रहा था। हम लोग उसी के पास जाकर रुक गए। वृद्ध ने हमारी ओर दृष्टि उठायी। भट्टाचार्य ने कहा–''दादा, आगरे से आये हैं यह, यहाँ का हाल देखने।''

'जियो बेटा जियो!' वृद्ध ने गद्‌गद स्वर से कहा–'यह आगरा कहाँ है?'

'हिन्दुस्तान में?'

''हिन्दुस्तान से आये हो? आओ, बैठो बेटा, आओ।'' उसने चटाई की ओर इशारा किया। हम लोग बैठ गये। वृद्ध कहने लगा–''जो देखने लायक था, वह तो खत्म हो गया मगर तुम आए हो, तो देखो; आगे जाने क्या हो?'' वह क्षण–भर चिन्तित–सा दिखायी दिया फिर भी एकाएक स्वर बदलकर उसने कहा––''तुम हमारे मेहमान हो, भैया! आराम से बैठो ज़रा। हम भूखे हैं; मगर तुमने जो इतना कष्ट किया है, किसलिए? हमें अपना समझकर ही न? फिर तुम समझते हो, हमें इसका ज्ञान नहीं है?''

मैं चुप बैठा रहा। भट्टाचार्यजी कहने लगे–'दादा, कष्ट–वष्ट की बात छोड़ो; इन्हें इस गाँव के कुछ हालचाल बताओ।'

वृद्ध एक क्षण चुप रहा। फिर बोला– ''हालचाल? वह देखो....!'' और उसने एक कब्र की ओर इशारा किया और कहता गया–''शिद्धिरगंज के हालचाल सुनना चाहते हो? एक–दो–तीन, गाँव के एक छोर से दूसरे छोर तक गिनते चले जाओ। कसम है, अगर तुम किसी को हाय–हाय करते पाओ। नहीं, आज कुछ नहीं है। था एक दिन, जब गाँव में रात–दिन रोने–कराहने के सिवा और कुछ भी सुनायी नहीं देता था; मगर अब तो वह सब–कुछ नहीं।''

वास्तव में हमें कोई भी रोता नहीं दिखा। सब मानो अपने–अपने काम में लगे थे। मैंने देखा, डॉक्टर चुपचाप घरों की ओर देख रहा है। बाँस के सुन्दर–सुन्दर झोंपड़े! सदियों से बंगाल– हम लोगों–पर बार–बार बाहरी हमले होते रहे; मगर आक्रमणकारी कभी भी यहाँ की शस्य–श्यामला पवित्र भूमि को नहीं रौंद सके। यहाँ मनुष्य को इतना समय मिल चुका था वह बैठकर आराम से इतने सुन्दर और स्वच्छ घर बना सकता और आज वही घर निर्जनता की अर्गला लगाए मूक खड़े थे! अकाल ने उनपर अपनी जो वीभत्स छाया डाली थी, उसका धुंधलका अभी तक भी मानो कोनों में छिपा बैठा था।

मैं देख रहा था, जिनके शरीर में केवल हड्डियाँ ही शेष नहीं थीं आज भी उनमें जीवित रहने का साहस था। अकाल आया, बीमारी आयी और फिर दूसरे अकाल की गहरी आँधी भी क्षितिज पर सिर उठाने लगी है; किन्तु अविचलित हैं यह! किसलिए? इसीलिए न कि यह जनता किसी से भी दब नहीं सकती! एक दिन विजेताओं ने इन्हें कुचला था, आज भी मनुष्य का स्वार्थ और भीषण व्यापार इन्हें निचोड़ रहा है; किन्तु यह तो अभी अदम्य, अविजय हैं!

बूढ़ा फिर कहने लगा। अबके उसका स्वर दृढ़ था–''इस गाँव में आज घरों पर किसकी दृष्टि ठहरेगी, भैया? इधर देखो, वे जो छाया में सो रही हैं चुपचाप, वे मिट्टी की कच्ची कब्रें, गिनकर देख लो, अगर पाँच सौ से कम दिखायी पड़ें! और एक–एक में एक ही आदमी दफनाया गया हो, यह भी कोई जरूरी बात नहीं है। यह है हम मुसलमानों की बात और अगर तुम सुनना चाहते हो कि हिन्दू क्यों नहीं मरे, तो जाकर शीतलक्खा की धारा से पूछो कि क्यों शिद्धिरगंज के सैंकड़ों किसानों को बहा ले गयी, जिनकी हड्डियों तक का आज पता नहीं?''

और वह सहसा मुस्करा उठा। मैंने देखा और समझने की चेष्टा की। मृत्यु ने उसे विक्षुब्ध कर दिया था। उसने कहा–''इस गाँव में करीब हर घर में मौत हो चुकी है। हज़ारों व्यक्ति मर चुके हैं; मगर सब तो नहीं मर सकते थे, और शायद सब नहीं मरेंगे; मगर कौन जाने, आगे क्या होगा?''

इस समय कुछ और लोग भी वहाँ इकट्ठे हो गये थे। रहमत, जो अपने ताने को एक दफा ठोककर उठ आया था, आकर वहीं बैठ गया था। चर्चा चल पड़ी। रहमत कहने लगा–''हाँ, काफी लोग मर गये हैं।''

''तुम्हारे घर में कितने आदमी थे?''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''पच्चीस थे, जिनमें बीस मर गए। अब पाँच बाकी हैं।'' और उसने अब्दुल के हाथ से हुक्का लेकर धुआँ उगलना शुरू कर दिया। बोला–''यह मिल जाती है, भैया बस!'' उसने तम्बाकू की ओर इशारा किया। और मुस्करा उठा। पहले वृद्ध की वह क्षुब्ध आकृति अब कुछ दीन–सी हो गयी थी–मानो पहले जो व्यक्तिगत दु:ख सजीव होकर चारों ओर हाहाकार कर उठा था, अब सामूहिक रूप में केवल साधारण–सा होकर चक्कर काटने लगा है। कुछ देर बाद रहमत ने एक लम्बी सांस छोड़ी और फिर गम्भीर भाव से कहा:'आने दो, जो–कुछ आएगा, उसे झेलेंगे।''

पगडंडी पर मरियल भुखमरे कुत्ते भूँक उठे, मानो रहमत की बात को समझकर उन्होंने उसका समर्थन किया हो। रहमत ने फिर कहा–" उन दिनों तीस–चालीस आदमी रोज़ मरते थे। अकाल तो खत्म हो गया; मगर बीमारियों ने जो पकड़ा, तो उनसे अभी तक गला नहीं छूटा।''

डॉक्टर ने पूछा–''क्या–क्या बीमारियाँ हैं यहाँ?''

रहमत बिना सोचे ही रटी हुई–सी बात बतला गया–''मलेरिया, बसन्त (चेचक)और चर्म रोग।''

मैंने चारों ओर दृष्टि उठाकर देखा। लोगों के गालों की हड्डियाँ उभर आई थीं, आँखों में सूजी–सी ललाई छा रही थी, किसी–किसी के गले में सूजन थी। उन्हें लक्ष्य कर डॉक्टर ने मुझसे कहा–''करीब–करीब सभी या तो मलेरिया के शिकार रह चुके हैं या अब भी मलेरिया–ग्रस्त हैं।''

एक चंचल लड़का कहने लगा–''आपको अकाल की बात कुछ नहीं मालूम। यहाँ चावल किसी भी दाम पर नहीं मिलता था। तीन–साढ़े–तीन सौ आदमी तो इस गाँव को छोड़ गए। भुखमरे नहीं तो... !'' और उसकी झंकारती हँसी एकबारगी ठिठुराती–सी फैल गयी। उसकी बगल में एक लड़की खड़ी ती, कोई नौ–दस बरस की। यह बीच में ही बोल उठी–''भूल गया न कि अभी भी कई भुखमरे हैं, जो यहाँ लंगरखाने में खा रहे हैं।''

सहसा रहमत ने कहा–''अब्दुर्रहमान, आओ, इधर बैठो।''

अब्दुर्रहमान आया ही था कि एक आदमी कह उठा–''इसके घर में सोलह आदमी थे, जिनमें से यह अकेला बचा है।'' अब्दुर्रहमान ने निराश नयनों से हमारी ओर देखकर कहा–''क्या बताऊँ बाबू, अफसोस सिर्फ यह है कि अब घर भी नहीं रहा। रहमत के यहाँ पड़ा रहकर इन्हें दु:ख देता हूँ। ''

रहमत हँस पड़ा–''क्या बात कहते हो, अब्दुर्रहमान? तुम तो एक आये हो; मगर और जो उन्नीस की जगह बाकी है... ।'' और सब हँस पड़े! इतने में सामने से घूँघट काढ़े एक स्त्री निकली। हठात् पूछ बैठा–''रहमत, क्या तुम्हारे गाँव में स्त्रियों को अपनी इज्जत बेचने पर भी उतारू होना पड़ा था?''

रहमत के मुँह पर एक काली छाया फैल उठी। उसने पल–भर कुछ नहीं कहा। फिर गम्भीर स्वर में कुछ सोचकर बोला–''बाबू, बात तो बुरी है; मगर है सच। कुछ थी ऐसी ; मगर बुरा कहकर भी कितनी बुरी थीं वे, मैं नहीं जानता। कुछ कहते हैं कि जैसे इतने मरे, वे भी मर जाती, तो हर्ज ही क्या था? पर मैं सोचता हूँ, मर जाना क्या सहज है? कोई क्या अपने आप मर जाना चाहता है? खैर, जाने दीजिए, इस बात को जाने ही दीजिए।''

अब्दुर्रहमान हर बार कह उठता था–''क्या करेंगे हम?क्या, बताइए न?'' उसके स्वर में अथाह निराशा और विवशता गूँज उटती थी। ''चावल का भाव अब भी 18 या 19 रुपये मन है। कहाँ से खरीदें हम? गाँव में अधिकांश अब भी एक वक्त ही खाते हैं और चावल खरीदने वाले भी सब ही तो चावल नहीं खाते, कई तो शकरकन्द के सहारे ही जी रहे हैं।''

''इतनी आमदनी नहीं, फिर बताओ,'' रहमत कहने लगा "कोई कैसे खरीदे? अकाल खत्म हुआ ही कब, जो दूसरा शुरू होगा? हमने कच्ची कब्रों में कई लाशों को बिना कफन के गाड़ दिया। आपको शायद मालूम न हो, हम मुसलमानों के यहाँ लाश को कफन में बाँधकर गाड़ने का कायदा है। मगर कायदा क्या करे, जब जिन्दों के लिए भी कपड़ा नहीं है, तो मरों की क्या कीमत है बाबू?"

उसका यह प्रश्न उसका अपना नहीं था। उसने अनजाने नहीं, जानबूझकर ही अँगुली उठायी थी उधर, जिधर मनुष्य को नंगा रखकर मनुष्य अपने मुनाफों के लिए बेशुमार कपड़ा तालों में बन्द कर रखा था, जहाँ वस्तु मनुष्य के लिए न होकर पैसे के लिए थी। कितना बड़ा व्यंग्य और विद्रूप था यह कि आज कपड़ा बनानेवाले स्वयं नंगे थे!

हम लोग काफी देर बैठ चुके थे। एक लड़का कह उठा,''चलिए बाबू, गाँव देखिए।'' और हम लोग उठे। वहाँ एकत्र हुए लोगों में से कुछ ने हमें प्रणाम किया, कुछ ने आशीर्वाद दिया और हम लोग चल दिये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहीं-कहीं कब्रें टूट गयी थीं। सामने के दो घर बिलकुल टूट गये ते, उनके केवल चबूतरे बाकी थे। सामने एक गाय घास चर रही थी। पेड़ों की छाया में अनेक कब्रें सोयी पड़ी थीं। लड़के ने कहा,''यह है आदू मियाँ का घर। मर गया बेचारा! उसके घर में उन्नीस आदमी थे, अब कोई भी नहीं बचा है।'' वायु सनसनाती हुई बह गयी। आदू मियाँ वहाँ बैठकर हँसता था, आज उसका कोई पता नहीं। लड़के को घर का एक-एक प्राणी याद था-अभी कल ही की तो बात थी। मगर निर्विकार खड़ा था। मानवी भावनाएँ कितनी कठोर हो गयी थीं! सहसा आगे चलकर वह एक कब्र पर खड़ा होकर कहने लगा,"बाबू, यह मेरे बाप की कब्र है। बस, मैं इतनी कब्रों में से इसे पहचानता हूँ। वह मुझे बहुत प्यार करता था। सचमुच वह मेरे ही लिए मर गया।" लड़का कुछ ठिठुर गया। मैंने देखा, डॉक्टर चौंक उठा। वह मुझसे बोला, "यह मुसलमान होकर कब्र पर खड़ा है ? हमारे यहाँ तो ऐसे नहीं होता।"

भट्टाचार्यजी मुस्करा उठे। उन्होंने लड़के से वही प्रश्न दुहरा दिया। लड़का क्षण-भर चुप रहा। फिर हँस पड़ा- "यहाँ तो सब ऐसा ही करते हैं, बाबू ! कहीं पैर रखने की भी तो जगह नहीं है। कहाँ तक कोई कब्रों को बचता हुआ, उनका चक्कर देकर चले ? इतनी ताकत है कितनों में।"

हम लोग आगे बढ़े। भट्टाचार्यजी एक आदमी से कुछ बातें करने लगे। वह आदमी कह उठा, "गाँव-कमेटी के, यूनियन-बोर्ड के मेम्बर सब चोर हैं,चोर! कोई हमारी परवाह करता है ? रिश्तेदारों को कारड देते हैं, अपनों को देते हैं; हमारी क्या पूछ... ?"दूसरा आदमी चलते-चलते रुककर कह उठा, "हममें एका नहीं है, वर्ना क्या मजाल कि वह अपनी मनमानी करें!"

तब तो बंगाल अभी जीवित है! आज भी वह अपना रास्ता खोज निकालना जानता और चाहता है। भूख से व्याकुल होकर भी यह भारत का संस्कृति-जनक सिर झुकाने को तैयार नहीं है। आज भी वह इन आँधी-तूफानों को झेलकर फिर से विराट् रूप में फूट निकलना चाहता है। सचमुच कोई इनका कुछ नहीं कर सकता। यदि जनता में चेतना है, तो इन्हें भूखों मारने वाले नर-पिशाच नाज-चोरों का अन्त दूर नहीं है।

एकाएक लड़का एक झोंपड़े के पास पहुँचकर रुक गया। हमने देखा, भीतर कुछ जुलाहे साड़ियाँ बुन रहे थे। लड़के ने कहा,"ढाके की साड़ियाँ प्रसिद्ध हैं न बाबू! अब यही दो-चार घर रह गये हैं, और कुछ दिन बाद शायद..!"वह कहते-कहते चुप हो गया। जुलाहे काम छोड़कर हमारी ओर देख रहे थे। सामने ही एक औरत बैठी थी वह विधवा थी। उसके घर के दस आदमी मर चुके थे- और सामने केवल अनगढ़ कब्रें थीं।

अधिकांश घरों की टीनें उखड़ गई थीं और न जाने कितनों ने भूख से लड़ने के लिए अपनी टीनें बेच दी थीं। भट्टाचार्यजी ने अँगुली से दिखाते हुए कहा, ''सामने एक भद्रलोक का घर था। उसे भी टीन बेच देनी पड़ी, क्योंकि।'' सहसा वे रुक गये। बात पलटकर उन्होंने कहा, ''वे जो टीनें दिखाई दे रही हैं उखड़ी-उखड़ी. इसकी वजह यह नहीं कि उसके मालिक उन्हें बेचना नहीं चाहते थे ; मगर इसलिए कि उनमें इतनी ताकत ही नहीं रही थी कि उठाकर इन्हें बाजार तक ले भी जाते और यही कारण है कि !''

मैंने देखा, घर के चबूतरे के बीचोंबीच एक कब्र थी। यह भी एक मनुष्य था, जो अपने घर का वक्षस्थल फाड़कर सो रहा था। फोड़ों की तरह वे कब्रें जगह-जगह सूजी हुई-सी दिखायी दे रही थीं।

धूप तेज़ हो चली थी। हम हाट में पहुँच गये थे। मछलियों की बू वातावरण को भेद रही थी। एक बूढ़ा व्याकुल-सा भागा जा रहा था। भट्टाचार्यजी ने बताया, ''उसे उस समय तीव्र ज्वर था, जिसके कारण उसका दिमाग ठीक नहीं था।'' हाट के एक कोने में स्थानीय डॉक्टर की एक डिस्पेंसरी थी, छोटी-सी, गमगीन-सी। डॉक्टर के दिल में यह मुफ्त दवाखाने खोलेजाने की बात जमती नहीं थी। आखिर वह फिर क्या खाएगा। हमारे डॉक्टर ने उससे बातचीत की। उसके पास न कुनैन थी, न सिन्कोना; और गाँव में हर घर में मलेरिया का रोगी था, बच्चे की तिल्ली और जिगर बढ़े हुए थे।

दवाखाने के एक बेंच पर बैठा एक आदमी कह रहा था-"हर एक चीज़ चोर-बाजार में है, हर एक चीज पर मुनापाखोरी हो रही है; कोई करे तो क्या करे ?"

एक औरत, जो पास में खड़ी थी, कहने लगी, "तुम डॉक्टर हो ? पहले क्यों नहीं आये ? जाने कितनी जानें बच जातीं! यहाँ एक सरकारी दवाखाना है जिसमें कोई खास दवाई नहीं, मरीजों की कोई खास तवज्जह नहीं। कहाँ, ढाकेस्वरी मिल नं. 2 में तुम्हारा दवाखाना है ? अब वहीं आएँगे कल से; चार-पाँच मिल तो हैं ही...।"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उस समय उस औरत की बात की अनुसूची करके खैराती अस्पताल का एसिस्टेंट डॉक्टर मुझसे कह रहा था–"हमने 75 फीसदी आदमियों की हालत सुधार दी है.... ।" भट्टाचार्यजी मुस्करा रहे थे। एक ओर हमारे शासक बोल रहे थे, दूसरी ओर वही बात जनता कर रही थी। सामने अनेक जर्जर रोगी खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे– बुझी हुई आँखें, उभरी हुई पसलियाँ और वही भयानक चर्म रोग!

यहाँ से हम लंगरखानों की ओर चल दिये। लंगरखाने और जगह बन्द हो गये हैं, किन्तु यहाँ अभी तक खुले हैं। खुले हुए मैदान में, पेड़ों की छाया में, तीन भट्ठियाँ खुदी हैं। एक बड़ों का लंगरखाना है, जहाँ खिचड़ी बँटती है। करीब सौ आदमी आज भी उसी पर पलते हैं। मैली–कुचली औरतों के जमघट में कुछ बैठी चूल्हा फूँक रही थीं। एक औरत ने बताया, कि बच्चों के दो लंगरखाने हैं–एक हिन्दू, एक मुसलमान। दोनों में सौ–सौ बच्चे खाते हैं। साढ़े सात सेर खिचड़ी बँटती है और कुछ मछली, बस इतना ही! किसी तरह लोग जी–भर रहे हैं। भट्टाचार्यजी ने बताया कि फ्रेंड्स एम्बूलैंस यूनिट इन्हें चला रहा है।

मैं और भट्टाचार्य आगे चल पड़े फिर हम दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गये। भट्टाचार्यजी कहने लगे,"तुमने देखा, साढ़े सात सेर? सौ में कितना पड़ा?'

सामने भट्ठी में से धुआँ निकलकर ऊपर घुमड़ रहा था। आज सारा बंगाल महानाश की आग पर लटका भुन रहा है और चारों ओर से राक्षस मानो उसे चबा जाना चाहते हैं। इतने में डॉक्टर आ गया। उसके साथ एक औरत थी, जो रो रही थी। मुझे बड़ा विस्मय हुआ। यहाँ लोग अभी तक रो सकते हैं! तब तो इन्हें हृदय है। वह कह रही थी––"दवाखाना लेकर अब आये हो? पहले आते, तो मेरे बच्चे तो बच जाते..!" अरे, वह माँ थी। उसके छः बच्चे मर गये थे। और सिर्फ दो बचे थे।

"मैं अब यहीं लंगरखाने में काम करती हूँ, किसी तरह पेट भर जाता है। भीख नहीं माँगी जाती, बाबू.....!"और वह फिर रो पड़ी–'मेरे बच्चे....!' दिल कड़ा कर हम लोग वहाँ से चल दिये। वह आँखों में आँसू–भरे शत–शत आशीर्वाद देती–सी –ज्यों–की त्यों खड़ी रही।

खेतों में कब्रें चुपचाप उदास–सी सोयी पड़ी थीं, जिन्हें चिथड़ों में लिपटा एक बुड्ढा एक पेड़ की छाया में बैठा विरक्त भाव से देख रहा था। एक टूटी–सी दीवार में तीन आले अब भी खड़े थे; मगर घर नहीं थे। आठों घर विध्वस्त पड़े थे। उनके सामने बराबर–बराबर में तीस कब्रें पड़ी थीं और एक नवयुवक, जो देखने में बुड्ढा लगता था, उनकी और देख–देखकर मुस्करा रहा था। वे सब एक दिन जुलाहों के घर थे; पर अकाल के ताने और बीमारियों के बाने ने सहसा उनके जीवन–व्यापार का अन्त कर दिया था।

"दिन में नहीं, दिन में नहीं, रात को," भट्टाचार्यजी कहने लगे, "गाँव में कब्रिस्तान की–सी छायाएँ नाचने लगती हैं।, शिद्धिरगंज कभी भी नहीं भूलेगा कि एक दिन आदमी के बनाए अकाल ने उसका सत्यानाश कर दिया था। जो आदमी अपनी हड्डियों से –दधीचि की हड्डियों से यह अमर कथा लिख गये हैं, बंगाल उनकी ज्वलन्त स्मृति को कभी नहीं भुलाएगा।"

मेरे मुँह से हठात् निकल गया– 'उसे हिन्दुस्तान कभी नहीं भुलाएगा भट्टाचार्यजी, मानवता उसे कभी नहीं भुला सकेगी।'

डॉक्टर आगे–आगे चल रहा था। हम लोग लौट रहे थे। नदी की पतली धारा में कुछ नंगे लड़के नहा रहे थे, जिनकी पतली हड्डियों से टकराकर छोटी–छोटी लहरें मानो निराश–उदास लौट जाती थीं। उन्होंने देखा और समवेत स्वर में चिल्ला उठे–"इन्कलाब जिन्दाबाद! इन्कलाब जिन्दाबाद!!"

गर्व से मेरी छाती फूल उठी। कौन कहता है कि बंगाल मर गया है? जहाँ भूख और बीमारियों से लड़कर भी मनुष्यों के बालकों में क्रान्ति को चिरजीवी रखने का अपराजित साहस है, वह राष्ट्र कभी भी नहीं मर सकेगा। हड्डी–हड्डी से लड़ने वाले यह योद्धा जीवन की महान शक्ति को अभी तक अपने में जीवित रख सके हैं। संसार कहता है, स्टालिनग्राड में लोग खंडहरों में से लड़े थे और उन्होंने दुश्मन के दाँत खट्टे कर दिये। उन्होंने बर्बरता की धारा को रोककर रूस को गुलाम होने से बचा दिया। किन्तु मैं पूछता हूँ क्या शिद्धिरगंज दूसरा स्टालिनग्राड नहीं? मनुष्य भूख से तड़प–तड़पकर यहाँ जान दे चुके हैं, वे भीषण रोगों का शिकार हो चुके हैं, उनके घर खंडहर हो गए हैं, कब्रों से जमीन ढँक गयी है, नदियों में लाशों की सड़ाँध एक दिन दूर–दूर तक फैल गयी थी, किन्तु मनुष्य का साहस जीवित है। आज भी बंगाल के बच्चे क्रान्ति को नहीं भूले हैं। क्या इन योद्धाओं ने भारतीय संस्कृति की जड़ों पर होनेवाले आघात को सहकर आज संसार को यह नहीं दिखला दिया कि जनशक्ति कभी पराजित नहीं हो सकती, वह कभी मर नहीं सकती? जब फासिस्तबाद से भी बर्बर नर–पिशाच मुनाफाखोरों ने नाज पर बैठकर जहर उगला, कपड़ा–चोरों ने उनकी बहू–बेटियों को निर्लज्ज होने दिया, तब भी क्या इन्होंने सिर झुकाया? नहीं, ये वीरों की तरह लड़े हैं। आज शिद्धिरगंज की पृथ्वी शहीदों के मजारों से ढँक गयी है। युग–युग– तक संसार को याद रखना पड़ेगा कि एक दिन मुनष्य के स्वार्थ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

और असाम्य के कारण, गुलामी और साम्राज्यवादी शासन के कारण, बंगाल जैसी शस्य-श्यामला भूमि में भी मनुष्य को भूख से दम तोड़ना पड़ा था ? और लोगों ने उसे पूरी शक्ति से इसलिए झेला था कि मानवता जीवित रहना चाहती थी। उसे कोई मिटा नहीं सकता।

आज अकाल का वह पहला भीषण स्वरूप समाप्त हो चुका है। किन्तु रोगों की वर्षा-आँधी के बाद प्रलय उमड़ रही है और इस समय भी लोग कहते हैं-बंगाल का अकाल समाप्त हो चुका है ! पर आज यह कुछ नहीं तो भी महामरण का भीषण नृत्य है। जब हम लोग शिद्धिरगंज से लौट रहे थे, शीतलता की प्रशान्त धारा में नहाता हुआ एक आदमी गा रहा था--

''सोनार बांगला होलो शोंशान, एक साथे सबे चल।"

उसका यह स्वर दूर-दूर तक लहरों पर फैल उठता था।

शब्दार्थ-टिप्पणी

उसांस उच्छ्वास, साँस **बरबस** अचानक **विक्षुब्ध** बेचैन **अनगढ़** बिना गढ़ा हुआ **विध्वस्त** नाश,नष्ट **अर्गला** किवाड़ के पीछे लगाने का डंडा **कारड** कार्ड

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) ढाके की मलमल क्यों खतम हो गई ?
(2) शिद्धिरगंज के लोगों का दु:ख व्यक्तिगत नहीं सामूहिक था कैसे ?
(3) अकाल और बीमारियों की बजह से रोज कितने आदमी मरते थे ?
(4) लोग लंगरखाने में क्यों खाते थे ?
(5) गाँव में कैसी-कैसी बीमारियाँ फैली थी ?
(6) गाँव की स्त्रियों की स्थिति कैसी थी ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) 'कपड़ा बनाने वाले स्वयं नंगे थे'- समझाइए।
(2) ढाके की साड़ियाँ बुननेवालों की हालत कैसी थी ?
(3) बंगाल आज भी जीवित क्यों है ?
(4) बंगाल की स्थिति का वर्णन कीजिए।
(5) जुलाहों के घर का अंत क्यों हो गया ?

3. मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

गला न छूटना, दिल कड़ा करना, दाँत सट्टे करना, भूख से दम तोड़ना

योग्यता- विस्तार

- आदमी के बनाए अकाल ने सत्यानाश कर दिया कैसे ? चर्चा कीजिए।
- "जब जिन्दों के कपड़ा नहीं है, तो मरों की क्या कीमत"-समझाइए।
- 'अकाल और उसके बाद'-कविता पिढ़ए।
- 'मानवी नी भवाई' (गुजराती) फिल्म देखिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

11 याचना

कन्हैयालाल नंदन

(जन्म : सन् 1933 ई; निधन :न् 2010 ई.)

प्रसिद्ध कवि-पत्रकार कन्हैयालाल नंदन का जन्म उत्तरप्रदेश के फतेहपुर जिले में हुआ था। इलाहाबाद से उच्चशिक्षा प्राप्त कर भावनगर विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी। जीवन के कुछ वर्ष तक मुंबई विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। पत्रकारिका उनका प्रिय विषय रहा। उन्होंने टाइम्स ऑफ इंडिया के साप्ताहिक 'धर्मयुग' में सह-संपादक एवं 'सारिका' तथा 'दिनमान' जैसी विशिष्ट पत्रिकाओं में संपादक के रूप में काम किया। 'नवभारत टाइम्स' एवं 'सन्डे मेल' के प्रदान संपादक के रूप में सराहनीय काम किया। भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उनकी रचनाओं के अनुवाद प्राप्त होते हैं।

'मुझे मालूम है', 'समय की दहलीज' एवं 'एक टुकड़ा वसंत' उनके मुख्य कविता संग्रह हैं। 'अंतरंग', 'जरिया-नजरिया', 'आग के रंग', 'धार के आरपार' उनके समीक्षा ग्रंथ हैं। 'घाट-घाट का पानी', 'विदेशी धरती', 'धरती लाल गुलाबी चेहर' उनके संस्मरण ग्रंथ हैं। श्रेष्ठ हास्य कथाएँ, श्रेष्ठ व्यंग्य कथाएँ, श्रेष्ठ हिन्दी गीत-संचयन आदि संपादन-ग्रंथ हैं।

प्रस्तुत कविता में माँगने की अपेक्षा देने को अधिक महत्त्वपूर्ण बताया गया है। याचना दारिद्रय का प्रतीक है और देना भीतरी समृद्धि का। कवि ने पहाड़ से, झरने, दूब, फूलों आदि से जो-जो माँगा, नहीं मिला। हताश और आहत कवि पर तरस खाते हुए हवा ने धीरे से उसके कान में कहा- माँगने से नहीं, निश्छल होकर देने से सब कुछ पाओगे। जो जितना बाँटेगा वह उतना ही अधिक पाएगा। जीवन के एक महत्त्वपूर्ण मूल्य की अभिव्यक्ति इस कविता में हुई है।

मैंने पहाड़ से माँगा
अपनी स्थिरता का थोड़ा अंश मुझे दे दो
पहाड़ का मन न डोला

मैंने झरने से कहा
दे दो थोड़ी सी अपनी गति मुझे भी
झरना अपने नाद में मस्त रहा
कुछ न बोला

मैंने दूब से माँगी थोड़ी-सी पवित्रता
वह अपने दलों में मुस्कराती रही
मैंने फूलों से माँगी जरा-सी कोमलता
और चिड़िया से

उसका चुटकी भर आकाश
लहरों से थोड़ी-सी चंचल तरलता
धूप से एक टुकड़ा उजास

ओक में भरने को खड़ा रहा देर तक
कहीं से कुछ न पाया
याचना अकारथ जाते देख
आहत मन लौट आया
तरस खाया हवा ने

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हौले से कान में बोली
नाहक हो उदास
अपने लिए माँगने से बाहर निकलो
निश्छल, सहज हो जाओ
यह ,सब प्रचुर है तुम्हारे पास
माँगने से कुछ नहीं मिलेगा
देने से पाओगे
जितना ही हरियाली बाँटोगे
अंदर हरे हो जाओगे।

शब्दार्थ-टिप्पणी

ओक अँजुरी **हौले** धीरे **उजास** उजाला **अकारण** व्यर्थ, निरर्थक

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) कवि पहाड़ से क्या माँगता है ?
(2) झरने से माँगने पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होती है ?
(3) कवि चिड़िया और धूप से क्या माँगता है ?
(4) हवा कवि के कान में क्या राज कहती है ?
(5) कवि आहत मन से क्यों लौट आया ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) कवि किस-किस से क्या-क्या माँगता है ?
(2) ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

'जितनी ही हरियाली बाँटोगे
अंदर हरे हो जाओगे।'

योग्यता-विस्तार

- अज्ञेय की 'सवेरे उठा तो धूप खिली थी' कविता से इसकी तुलना कीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

12 परमात्मा का कुत्ता

मोहन राकेश

(जन्म: सन् 1925 ई.; निधन सन् 1972 ई.)

स्वातंत्र्योत्तर युगीन कथाकार-नाटककार मोहन राकेश का जन्म अमृतसर में हुआ था। उनका बचपन का नाम मदन मोहन गुगलानी था। उनकी उच्च शिक्षा लाहौर में हुई। उन्होंने कई शहरों में अध्यापन कार्य किया। कुछ समय के लिए 'सारिका' का संपादन भी किया। लेखन-कार्य उनके जीवन की मुख्य प्रवृत्ति रही।

हिन्दी नाटक को एक नई दिशा देने में उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा। 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' और 'आधे-अधूरे' उनके प्रयोगशील रंग नाटक हैं। 'अंधेरे बंद कमरें', 'न आने वाला कल' प्रमुख उपन्यास हैं। 'नये बादल', 'इंसान के खंडहर', 'जानवर और जानवर',' रेशे-रेशे', 'क्वार्टर', 'वारिश' आदि मुख्य कहानी संग्रह हैं। 'अंडे के छिल के और अन्य एकांकी' उनका एकांकी संग्रह है। नई-कहानी आंदोलन के साथ उनकी वैचारिक सक्रियता उल्लेखनीय रही।

प्रस्तुत कहानी देश के सरकारी तंत्र की जड़ता-शिथिलता और उसमें व्याप्त रिश्वतखोरी पर आक्रोशपूर्ण व्यंग्य करती है। बिना रिश्वत सामान्य आदमी की फाइल आगे बढ़ती ही नहीं। कहानी का मुख्य पात्र एक अधेड़ आदमी है जो अपनी जमीन के अधिकार के लिए वर्षों से दफ्तर का चक्कर काट रहा है। उसे लगता है कि उसके जीते जी उसकी अर्जी पास नहीं होगी। जब उसके धैर्य का अंत हो जाता है तब वह सरकारी बाबुओं को सरकारी कुत्ते और अपने आपको परमात्मा का कुत्ता बतलाकर भौंकने लगता है। अंततः नंगा हो जाने की कोशिश करता है तब जाकर कमिश्नर स्वयं आकर उसे दफ्तर में ले जाता है और उसकी अर्जी पर फैसला होता है। वह जाते-जाते दूसरों से भी कहता है "चूहों की तरह बिटर-बिटर देखने से कुछ नहीं होता। सबके सब भौंको। अपने आप सालों के कानों के परदे फट जाएँगे। भौंको कुत्तों, भौंको..." यह संवाद भ्रष्टाचार से लड़ने की प्रेरणा देता है। कहानी में निहित व्यंग्य बहुत तीखा है।

बहुत से लोग यहाँ-वहाँ सिर लटकाये बैठे थे, जैसे किसी का मातम करने के लिए इकट्ठे हुए हों। कुछ लोग अपने साथ लाई हुई पोटलियाँ खोलकर खाना खा रहे थे। दो एक व्यक्ति पगड़ियाँ सिर के नीचे रखकर कम्पाउण्ड के बाहर सड़क के किनारे बिखर गए थे। चने-कुलचेवाले का रोजगार गर्म था और कमेटी के नल के पास छोटा-मोटा क्यू लगा था। नल के पास कुर्सी डालकर बैठा हुआ अर्जीनवीस धड़ाधड़ अर्जियाँ टाइप कर रहा था। उसके माथे से पसीना बह कर उसके होंठों पर आ रहा था लेकिन उसे पोछने की फुरसत नहीं थी। सफेद दाढ़ियोंवाले दो-तीन लम्बे जाट अपनी लाठियों पर झुके हुए उसके खाली होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। धूप से बचने के लिए लगाया हुआ टाट हवा से उड़ा जा रहा था और थोड़ी दूर मूढ़े पर बैठा हुआ उसका लड़का अपनी अंग्रेजी प्राइमर को रट्टा लगा था--"सी. ए. टी. कैट, माने बिल्ली; बी. ए. टी. बैट, माने बल्ला; एफ ए. टी फैट, फैट माने मोटा...।" कमीजों के बटन आधे खोले हुए और फाइलें बगल में दवाये हुए कुछ बाबू, एक-दूसरे से छेड़खानी करते हुए रजिस्ट्रेशन ब्रांच से रिकार्ड ब्रांच की तरफ जा रहे थे। लाल बेल्टवाला चपरासी आस -पास की भीड़ से उदासीन अपने स्टूल पर उकड़ूँ होकर बैठा मन-ही-मन कुछ हिसाब कर रहा था। कभी उसके होंठ हिलते थे और कभी उसका सिर हिल जाता था। सारे कम्पाउण्ड में सितम्बर की खुली धूप फैली हुई थी। चिड़ियाँ डालों से कूदने और फिर ऊपर को उड़ने का अभ्यास कर रही थीं और कौए पोर्च के सिरे पर चहलकदमी कर रहे थे। एक सत्तर-पिचहत्तर की बुढ़िया, जिसका सिर हिल रहा था और चेहरा झुर्रियों के गुंझल के सिवा कुछ नहीं था, लोगों से पूछ रही थी कि वह अपने लड़के के मरने के बाद उसके नाम एलॉट हुई जमीन की हकदार है या नहीं...।

अन्दर हॉल कमरे में फाइलें धीरे-धीरे हिल रही थीं। दो-चार बाबू बीच की मेज के पास जमा होकर चाय पी रहे थे। उनमें से एक दफ्तरी कागज पर लिखी हुई अपनी ताजी गजल यारों को सुना रहा था, और यार इस विश्वास के साथ सुन रहे थे कि वह जरूर उसने 'शमा' या 'बीसवीं सदी' के पुराने अंक में से चुराई है।

"अजीज साहब, ये शेर आपने आज ही कहे हैं या दो-तीन साल पहले कहे हुए शेर आज अचानक याद आ गये हैं?" साँवले चेहरे और घनी काली मूँछोंवाले एक बाबू ने बाईं आँख को जरा-सा दबाकर पूछा। आसपास सब लोगों के चेहरे खिल गए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

"यह मेरी ताजा गजल है" –अजीज साहब ने अदालत के कटहरे में खड़े होकर हलफिया सच बोलने के लहजे में कहा। "इससे पहले इसी वजन पर कोई और चीज कही हो तो याद नहीं।" और आँखों से सबके चेहरों को टटोलते हुए उन्होंने हल्की–सी हँसी के साथ कहा–"अपना दीवान तो कभी कोई रिसर्च करने वाला ही मुरत्तब करेगा...।"

एक फरमायशी कहकहा लगा, जिसे शी–शी की आवाजों ने बीच में ही दबा दिया। कहकहें पर लगाई ब्रेक का मतलब था कि कमिश्नर साहब अपने कमरे में तशरीफ ले आए हैं। कुछ क्षणों का वक्फा रहा, जिसमें सुरजीतसिंह वल्द गुरमीतसिंह की फाइल एक्शन के लिए दूसरी मेज पर चली गई। सुरजीतसिंह वल्द गुरमीतसिंह मुस्कराता हुआ हॉल से बाहर चला गया और जिस बाबू की मेज से फाइल गई थी, वह नये पाँच रुपये के नोट को सहलाता हुआ चाय पीनेवालों के जमघट में आ शामिल हुआ। अजीज साहब अब काफी धीमी आवाज में अपनी गजल का अगला शेर सुनाने लगे। साहब के कमरे की घंटी हुई। चपरासी मुस्तैदी से उठकर कमरे में गया और उसी मुस्तैदी से बाहर आकर अपने स्टूल पर बैठ गया।

चपरासी से खिड़की का पर्दा ठीक कराकर कमिश्नर साहब ने मेज पर रखे हुए कागजों पर एक साथ दस्तखत किए और पाइप सुलगाकर रीडर्स डाइजेस्ट का ताजा अंक पढ़ने लगे। लेटीशिया बालड्रिज का लेख कि उसे इतालवी मर्दों से क्यों प्यार है, वे पढ़ चुके थे। और लेखों में हृदय कि शल्यचिकित्सा के सम्बन्ध में जे. डी. रैटक्लिफ का लेख उन्होंने सबसे पहले पढ़ने के लिए चुन रखा था। पृष्ठ एक सौ ग्यारह खोलकर उन्होंने हृदय के नये आपरेशन का ब्यौरा पढ़ना आरम्भ किया।

तभी बाहर शोर सुनाई देने लगा।

कम्पाउण्ड में पेड़ के नीचे बिखकर बैठे हुए लोगों में तीन आकृतियाँ आ शामिल हुई थीं। एक अधेड़ आदमी था जिसने अपनी पगड़ी नीचे बिछा ली थी और हाथ पीछे करके और टाँगें फैलाकर उस पर बैठ गया था। पगड़ी के एक खाली छोर पर, उससे जरा बड़ी उम्र की स्त्री और जवान लड़की बैठी थी और उसके पास ही खड़ा एक दुबला–सा लड़का अपने आस–पास की हर चीज को घूर रहा था! पुरुष की फैली हुई टाँगें धीरे–धीरे पूरी खुल गई थीं और आवाज इतनी ऊँची हो गई थी कि कम्पाउण्ड के बाहर भी बहुत से लोगों का ध्यान उसकी ओर खिंच गया था। वह बोलने के साथ घुटने पर हाथ मार रहा था– "सरकार वक्त ले रही है। दस–पाँच साल में सरकार फैसला करेगी कि अर्जी मंजूर होनी चाहिए या नहीं। सालों, यमराज भी तो हमारा वक्त गिन रहा है। उधर वह हमारा वक्त पूरा करेगा और तुम कहना कि तुम्हारी अर्जी पास हो गई है।"

चपरासी की टाँगें स्टूल से नीचे उतरीं और वह सीधा हो गया। कम्पाउण्ड में बिखरकर बैठे और लेटे हुए सब लोग अपनी–अपनी जगह पर कस गए। कई लोग पेड़ के पास जमा हो गए।

"दो साल से अर्जी दे रखी है कि सालों, जमीन के नाम पर तुमने जो गड्ढा एलाट कर दिया है, उसकी जगह मुझे दूसरी जमीन दो। मगर दो साल से अर्जी दो कमरे पार नहीं कर पाई।" यह आदमी बोलता रहा–"इस कमरे से उस कमरे में अर्जी के जाने में वक्त लगता है। इस मेज से उस मेज तक जाने में वक्त लगता है। सरकार वक्त ले रही है। लो मैं आ गया हूँ। यहीं पर अपनाघर–बार लेकर। ले लो जितना तुम्हें लेना है। सात साल की भुखमरी के बाद मुझे जमीन दी है...सौ मरले का गड्ढा । उसमें मैं बाप–दादों की अस्थियाँ गाड़ूँ? अर्जी दी थी कि मुझे सौ मरले दे दो, लेकिन जमीन तो दी। मगर अर्जी दो साल से वक्त ले रही है। मैं भूखा मर रहा हूँ और अर्जी वक्त ले रही है।"

चरपरासी अपने हथियार लिए हुए उठा...माथे पर तेवर और आँखों में आक्रोश। आस–पास जमा भीड़ को हटाता हुआ वह उसके सामने आ गया।

"ए मिस्टर, चल हियाँ से बाहर।" उसने हथियारों की पूरी चोट के साथ कहा– "चल उठ।"

"मिस्टर यहाँ से नहीं उठ सकता।"– वह आदमी बोला। "मिस्टर यहाँ का बादशाह है। पहले मिस्टर देश के बेताज बादशाहों की जय बुलाता था। अब वह किसी की जय नहीं बुलाता। अब वह आप बादशाह हैं...बेलाज बादशाह। उसे कोई लाजशरम नहीं है। उस पर किसी का हुकम नहीं चलता। समझे चपरासी बादशाह?"

"अभी पता चल जाएगा तुझे कि तुझ पर किसी का हुकम चलता है या नहीं।" चपरासी बादशाह और गरम हुआ।–"अभी पुलिस के सुपुर्द कर दिया जाएगा तो सारी बादशाही निकल जाएगी...।"

"हा–हा!" बेलाज बादशाह हँसा।– "तेरी पुलिस मेरी बादशाही निकालेगी? मैं पुलिस के सामने नंगा हो जाऊँगा और कहूँगा कि निकालो मेरी बादशाही। हममें से किस–किस की बादशाही निकालेगी पुलिस? ये मेरे साथ तीन बादशाह और हैं। यह मेरे भाई की बेवा है। उस भाई की, जिसे पाकिस्तान में टाँगों से पकड़कर चीरा गया था। यह मेरे भाई का लड़का है, जो अभी से

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तपेदिक का मरीज हो गया है। और यह मेरे भाई की लड़की है, जो अब ब्याहने लायक हो गई है। इसकी बड़ी बहन पाकिस्तान में है। आज मैंने इन सबको बादशाही दे दी है। ले आ तू जाकर पुलिस कि आकर इन ,सबकी बादशाही निकाल दे। कुत्ता साला...।"

अन्दर से कई-एक बाबू निकल कर बाहर आ गए। 'कुत्ता साला' सुनकर चपरासी आपे-से बाहर हो गया। वह तैश में उसे बाँह पकड़कर घसीटने लगा- "अभी तुझे पता चल जाता है कि कौन साला कुत्ता है। मैं तुझे मार-मार कर..." और उसने उसे अपने टूटे हुए बूट की ठोकर दी। स्त्री और लड़की सहम कर वहाँ से हट गईं। लड़का रोने लगा।"

बाबू लोग भीड़ को हटाते हुए आगे बढ़ गये और उन्होंने चपरासी को पकड़कर हटा लिया। चपरासी बड़बड़ाता रहा-- "कमीना आदमी दफ्तर में आकर गाली देता है। मैं अभी तुझे..."

"एक नहीं तुम सब के सब कुत्ते हो-"वह आदमी कहता रहा। "तुम भी कुत्ते हो और मैं भी कुत्ता हूँ। फर्क इतना है कि तुम सरकार के कुत्ते हो। हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हो और सरकार की तरफ से हो? मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ। उसकी दी हुई हवा को खा कर जीता हूँ और उसकी तरफ से भौंकता हूँ। उसका घर इन्साफ का घर है। मैं उसके घर की रखवाली करता हूँ। तुम सब उसकी इन्साफ की दौलत के लुटेरे हो। तुम पर भौंकना मेरा फर्ज है। मेरे मालिक का फरमान है। मेरा तुमसे असली बैर है! कुत्ते का कुत्ता दुश्मन होता है। तुम मेरे दुश्मन हो, मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ। मैं अकेला हूँ! इसलिए तुम सब मिलकर मुझे मेरा भौंकना बन्द नहीं कर सकते। मेरे अन्दर मेरे मालिक का नूर है। मेरे वाहगुरु का तेज है। मुझे जहाँ बन्द कर दोगे, मैं वहाँ भौंकूँगा और भौक-भौंककर सबके कान फोड़ दूँगा। साले; आदमी के कुत्ते ; जूठी हड्डी पर मरने वाले कुत्ते,-दुम हिला-हिलाकर जीनेवाले कुत्ते...।"

"बाबा जी बस करो"- एक बाबू हाथ जोड़कर बोला। "लोगों पर रहम खाओ और अपनी यह सन्तबानी बन्द करो। तुम बताओ, तुम्हारा केस क्या है, तुम्हारा नाम क्या है... ?"

"मेरा नाम है बारह सौ छब्बीस बटा सात। मेरे माँ-बाप का दिया हुआ नाम खा लिया कुत्तों ने। अब यही नाम है, जो तुम्हारे दफ्तर का दिया हुआ है। मैं बाहर सौ छब्बीस बटा सात हूँ। मेरा और कोई पता नहीं है। मेरा नाम याद कर लो। अपनी डायरी में लिख लो। वाहगुरु का कुत्ता-बारह सौ छब्बीस बटा सात।"

"बाबा जी, आज जाओ, कल-परसो आ जाना। तुम्हारी अर्जी की कार्यवाही तकरीबन-तकरीबन पूरी हो चुकी है..."

"तकरीबन-तकरीबन पूरी हो चुकी है और मैं अब तकरीबन तकरीबन पूरा हो चुका हूँ। अब सिर्फ यह देखना है कि पहले वह पूरी होती है या पहले मैं पूरा होता हूँ। एक तरफ सरकार का हुनर है और दूसरी तरफ परमात्मा का हुनर है। तुम्हारा तकरीबन अभी दफ्तर में ही रहेगा और मेरा तकरीबन-तकरीबन कफन में पहुँच जाएगा। सालों ने सारी पढ़ाई खर्च करके दो लफ्ज ईजाद किए हैं-शायद और तकरीबन। शायद आपके कागज ऊपर चले गए हैं-तकरीबन-तकरीबन कार्यवाही पूरी हो गई है। शायद से निकालो तो तकरीबन में डाल दो और तकरीबन से निकालो तो शायद में गर्क कर दो। 'तकरीबन-तीन चार महीने में तहकीकात होगी। शायद महीने-दो महीने में रिपार्ट आएगी।' मैं आज शायद और तकरीबन, दोनों को छोड़ आया हूँ। मैं यहाँ बैठा हूँ और यहीं बैठूँगा। मेरा काम होना है तो आज ही होगा और अभी होगा। तुम्हारे शायद और तकरीबन के ग्राहक ये सब खड़े हैं। यह ठगी इनसे करो...।"

बाबू लोग अपनी सद्भावना से निराश होकर एक-एक करके अन्दर लौटने लगे।

"बैठा है, बैठा रहने दो।"

"बकता है, बकने दो।"

"साला बदमाशी से काम निकालना चाहता है।"

"लेट हिम बार्क हिमसेल्फ टू डेथ।"

बाबुओं के साथ चपरासी भी बड़बड़ाता हुआ अपने स्टूल पर लौट आया-"मैं साले के दाँत तोड़ देता। अब बाबू लोग हाकिम हैं और हाकिमों का कहा मानना पड़ता है, वरना.."

"अरे बाबू, शांति से काम ले। यहाँ मिन्नत चलती है, पैसा चलता है, घौंस नहीं चलती। भीड़ में से कोई उसे समझाने लगा।"

वह आदमी उठकर खड़ा हो गया।

"मगर परमात्मा का हुकम हर जगह चलता है"-वह कमीज उतारता हुआ बोला। "और परमात्मा के हुकम से आज बेलाज बादशाह नंगा होकर कमिश्नर के कमरे में जाएगा। आज वह नंगी पीठ पर साहब के डण्डे खाएगा। आज वह बूटों की

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ठोकर खाकर प्राण देगा। लेकिन वह किसी की मिन्नत नहीं करेगा; किसी के पैसा नहीं चढ़ाएगा; किसी की पूजा नहीं करेगा। जो वाहगुरु की पूजा करता है, वह और किसी की पूजा नहीं करता। तो वाहगुरु का नाम लेकर... ।"

इससे पहले कि वह अपने कहे को किये में परिणत करता, दो-एक आदमियों ने बढ़कर उसके हाथ पकड़ लिए। बेलाज बादशाह हाथ छुड़ाने के लिए संघर्ष करने लगा।

"मुझे जाकर इनसे पूछने दो कि क्या इसीलिए महात्मा गांधी ने इन्हें आजादी दिलाई थी कि ये आजादी के साथ इस तरह सलूक करें? उसकी मिट्टी खराब करें? उसके नाम पर कलंक लगायें। उसे टके-टके की फाइलों में बाँधकर जलील करें? लोगों के दिलों में उसके लिए नफरत पैदा करें? इन्सान के तन पर कपड़े देखकर, इन लोगों की बात समझ में नहीं आती। शरम उसे होती है जो इन्सान हो। मैं तो आप कहता हूँ कि मैं इन्सान नहीं, कुत्ता हूँ।"

सहसा भीड़ में एक दहशत-सी फैल गई। कमिश्नर साहब कमरे से बाहर निकल आए थे। वे माथे की तेवरियों और चेहरे की झुर्रियों को गहरा किए हुए भीड़ के पास आ गए।

"क्या बात है? क्या चाहते हो तुम?"

"आपसे मिलना चाहता हूँ साहब-" वह व्यक्ति साहब को घूरता हुआ बोला। "सौ मरले का एक गड्ढा मेरे नाम एलाट हुआ है। वह गड्ढा वापस करना चाहता हूँ, ताकि सरकार उसमें एक तालाब बनवा दे और अफसर लोग शाम को वहाँ बैठकर मछलियाँ मारा करें। या उस गड्ढे को सरकार एक तहखाना बना दे और मेरे जैसे कुत्तों को वहाँ बन्द कर दे... ।"

"ज्यादा बातें मत करो अपना केस लेकर मेरे पास आओ।

मेरा केस मेरे पास नहीं है साहब। दो साल से सरकार के पास है, आपके पास है। मेरे पास अपना शरीर और दो कपड़े हैं। चार दिन बाद ये भी नहीं रहेंगे, इसलिए इन्हें आज ही उतारें देता हूँ। बाकी सिर्फ बारह सौ छब्बीस बटा सात रह जाएगा। बारह सौ छब्बीस बटा सात परमात्मा के हुजूर में भेज दिया जायगा... । "

"बातें बन्द करो और मेरे साथ आओ।"

कमिश्नर साहब अपने कमरे की तरफ चल दिए। वह आदमी भी कमीज कन्धे पर रखे हुए उनके साथ-साथ चलने लगा।

"दो साल चक्कर लगाता रहा, किसी ने नहीं सुना। खुशामदें करता रहा, किसी ने नहीं सुना। नाश्ते देता रहा, किसी ने नहीं सुना... ।"

चपरासी ने चिक उठा दी और कमिश्नर साहब के साथ वह अन्दर चला गया। घण्टी बजी; फाइलें हिलीं; बाबुओं की बुलाहट हुई और अध घण्टे बाद बेलाज बादशाह मुस्कराता हुआ बाहर निकल आया। उत्सुक आँखों की भीड़ ने उसे देखा तो वह फिर बोलने लगा-"चूहों की तरह बिटर-बिटर देखने से कुछ नहीं होता। भौंको, सबके सब भौंको। अपने-आप सालों के कानों के परदे फट जाएँगे। भौंको, कुत्तों, भौंको... ।"

उसकी भावज दोनों बच्चों के साथ गेट के पास खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। वह दोनों बच्चों के कन्धों पर हाथ रखे हुए सचमुच बादशाह की तरह सड़क पर चलने लगा।

"हयादार हो तो सालों मुँह लटकाए खड़े रहो। अर्जियाँ टाइप कराओ और नल का पानी पियो। सरकार वक्त ले रही है। और नहीं तो बेहया बनो। बेहयाई हजार बरकत है।"

वह सहसा रुका और जोर से हँसा।

"यारों, बेहयाई हजार बरकत है।"

उसके चले जाने के बाद कम्पाउण्ड में और उसके आस-पास मातमी वातावरण और गहरा हो गया। भीड़ धीरे-धीरे बिखरकर अपनी-अपनी जगहों पर चली गई। चपरासी की टाँगे फिर स्टूल पर उठ गई। सामने कैन्टीन का लड़का बाबुओं के कमरे में एक सेट चाय ले गया। अर्जीनवीस की मशीन चलने लगी और टिक-टिक आवाज के साथ उसका लड़का फिर अपना सबक दोहराने लगा। पी ई एन, पेन; पेन माने कलम; एच ई एन हेन, माने मुर्गी; एन डेन, डेन माने अँधेरी गुफा... ।"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

मातम शोक **कंपाउंड** आहाता, प्रांगण **क्यू** लाईन **अर्ज़ी** आवेदन पत्र, प्रार्थना पत्र **फुरसत** खाली समय, अवकाश **दीवान** मंत्री **रिसर्च** शोध **मुरत्तब** क्रमबद्धता,संपादित किया हुआ **फरमायशी** अनुरोध **तशरीफ** महत्त्व, आदर **वक्फा** समय **एक्शन** सक्रिय **दस्तखत** हस्ताक्षर **मुस्तैदी** चुश्ती,कटिबद्धता **एलॉट** आवंटन **बेलाज** बिना लाज का **तकरीबन** लगभग **हुनर** कला,गुण **दफ्तर** कार्यालय, **लफ्ज** बात, जबान **ईजाद** आविष्कार,नयी बात पैदा करना **तहकीकात** जाँच पड़ताल **मिन्नत** विनती **सलूक** व्यवहार **खुशामद** झूठी प्रसंशा, चापलूसी **हयादार** शर्म रखनेवाला **बेहयाई** निर्लज्जता

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) बाबू लोग कहाँ जा रहे थे ?
(2) लालबेल्टवाला चपरासी क्या कर रहा था ?
(3) 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी में किन पक्षियों के नाम आए हैं ?
(4) 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी में किस महीने का जिक्र है ?
(5) कमिश्नर साहब कौन-सी पत्रिका पढ़ रहे थे ?
(6) पाकिस्तान में किसकी टाँगें चीरी गई थीं ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) गजल सुनानेवाले का नाम और विशेषता बताइए।
(2) 'सरकार वक्त ले रही है' का आशय स्पष्ट कीजिए।
(3) 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी के मुख्यपात्र की स्थिति का वर्णन कीजिए।
(4) सरकारी कुत्ते और परमात्मा के कुत्ते में अंतर समझाइए।
(5) आजादी के बाद आम आदमी के साथ नौकरशाही का व्यवहार कैसा है ?
(6) 'बेहयई हजार बरकत है' का अर्थ समझाइए।

योग्यता-विस्तार

- कहानी में आए उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का चयन करें।
- नौकरशाही के भ्रष्टाचार-केन्द्रित एक कहानी ढूँढ़कर पढ़िए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

13 नदी, न पुल

फूलचंद गुप्ता

(जन्म: सन् 1958 ई.)

कवि-कहानीकार फूलचंद गुप्ता का जन्म उत्तरप्रदेश के फैजाबाद जिले के अमराई गाँव रुदौली में हुआ था। प्राथमिक शिक्षा गाँव में हुई। उच्च शिक्षा अहमदाबाद में प्राप्त की। उन्होंने अंग्रेजी और हिन्दी-दो विषयों के साथ गुजरात विश्वविद्यालय से एम. ए. की डिग्री प्राप्त की। साथ ही पत्रकारिता विषय के साथ पोस्ट ग्रेज्युएट डिप्लोमा भी किया। इन दिनों वे उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय से संलग्न साबरग्राम विद्यापीठ में अंग्रेजी के अध्यापक के रूप में सेवारत् हैं। उनकी पहली कविता सन् 1973 में प्रकाशित हुई।

फूलचंदजी मूलत: सामाजिक सरोकारों से संबद्ध प्रबुद्ध विचारक हैं। शोषणमुक्त समाज-रचना के लिए उनके मन में एक प्रकार की बेचैनी और व्यग्रता देखने को मिलती है। उन्होंने लंबी कविता और गजलों की भी रचना की है। 'इसी माहौल में', 'हे राम!','साँसत में हैं कबूतर', 'कोई नहीं सुनाता आग के संस्मरण', 'राख का ढेर','महागाथा', 'दीनू और कौवे' उनके कविता संग्रह हैं। 'ख्वाबख्वाहों की सदी है' उनका गजल संग्रह है। 'प्रायश्चित नहीं प्रतिशोध' उनका कहानी संग्रह है।

प्रस्तुत कविता में शहर की अलगाववादी संस्कृति पर व्यंग्य किया गया है। नदी के आसपास शहर दिन-दिन फैलता-बढ़ता जा रहा है। लोग नदी के एक छोर से दूसरे छोर बेतहासा भाग रहे हैं। हजारों वर्षों से नदी के सानिध्य में रहकर भी मनुष्य नदी-सा नहीं बन पाया। वह नदी की तरह लोगों को अपने साथ जोड़ नहीं पाया है, वह सेतु बनने में सफल नहीं हो पाया है।

शहर
शहर के बीचोबीच नदी
शहर फैलता हुआ नदी के दोनों ओर
निस्सीम----
लोग भागते रहते हैं
शहर के दोनों किनारे
इस ओर से उस छोर तक फैले हुए पुल से
लोग भागते रहते हैं, बेतहासा

हजारों वर्षों से जारी है यह सिलसिला

हजारों वर्षों तक सानिध्य में रहने के बावजूद
एक भी व्यक्ति
नदी नहीं बन सका है-
जिसके आसपास आके बस जाएं लोग

न पुल, जो जोड़ सके
बिखरे लोगों को!

शब्दार्थ-टिप्पणी

निस्सीम सीमा रहित **छोर** किनारा **बेतहासा** दम छोड़ कर भागना **सानिध्य** निकट का संपर्क

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) नदी कहाँ स्थित है ?

(2) शहर कहाँ फैल रहा है ?

(3) शहर के दोनों ओर लोग किससे जाते है ?

(4) हजारों वर्षों से कौन-सा सिलसिला जारी है ?

(5) हजारों वर्षों से व्यक्ति किसके सानिध्य में रहा है ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) शहरी आदमी के नदी न बन पाने का कारण बताइए।

(2) 'नदी, न पुल' में कवि का मूल आशय स्पष्ट कीजिए।

(3) 'एक भी व्यक्ति / नदी नहीं बन सका है-
जिसके आसपास आके बस जाएँ लोग' की व्याख्या करें।

योग्यता-विस्तार

- नदी और व्यक्ति के आपसी संबंध पर एक निबंध लिखिए।
- नदी के पुल पर लिखी किसी और की कविता खोजकर पढ़िए और समझिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

14 धूप-बत्ती : बुझी, जली !

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

(जन्म: सन् 1906 ई ; निधन:न् 1995 ई.)

प्रभाकरजी का जन्म सरहानपुर जिले के देवबंद गाँव में हुआ था। सत्याग्रह आंदोलन दौरान कई बार इन्हें जेल जाना पड़ा। 'ज्ञानोदय' और 'नया जीवन' जैसी पत्र-पत्रिकाओं का सफल संपादन कर पत्रकारिका के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। हिन्दी साहित्य में सफल रेखाचित्रकार, संस्मरणकार एवं निबंधकार के रूप में प्रतिष्ठित प्रभाकरजी अपनी ललित एवं रोचक शैली के कारण सदैव स्मरणीय रहेंगे। सत्याग्रह आंदोलन के दौरान गाँधीजी से बहुत प्रभावित रहे।

'नयी पीढ़ी नये विचार', 'जिन्दगी मुस्करायी', 'माटी हो गई सोना', 'दीप जले शंख बजे', 'पायलिया के घुँघरू' आदि उनकी बहुचर्चित रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत निबंध में धूपबत्ती के बुझने और जलने की छोटी-सी घटना के माध्यम से 'झुकने' अर्थात् विनम्र बनने के महत्व को दर्शाया गया है। अकड़ कर नहीं किंतु झुककर ही कुछ पाया जा सकता है। कहावत एकदम सही है कि बेटा बनकर ही सबने खाया, बाप बनकर नहीं। बुझी हुई धूपबत्ती जब तक अकड़कर खड़ी रही, तीन-तीन दियासलाइयों से भी नहीं जली, किंतु थोड़ी झुका देने पर एक ही दियासलाई के स्पर्श-मात्र से भभक कर जल उठी। पं. मदनमोहन मालवीयाजी ने भी इसी पात्रता-योग्यता के बल पर ही सफलता प्राप्त की थी। लेखक ने देवर-भाभी, कुंदनलाल सुनार तथा रेल-यात्री खान साहब के उदाहरणों द्वारा इसी बात की पुष्टि की है कि कुछ पाने के लिए विनम्रतापूर्वक झुकना जरूरी है। निबंध की भाषा-शैली सहज एवं रोचक है।

अपनी कोठरी में आते ही देखा कि कल सुबह जो धूपबत्ती जलाई थी, वह पूरी तरह जली नहीं ती, कुछ जल कर बुझ गई थी और अब भी ज्यों की त्यों खड़ी है। मुझे वह सिर-जली ऐसी लगी कि जैसे कोई मनुष्य हो, थोड़े-बहुत ज्ञान से जिसका बौद्धिक जागरण तो हो गया हो पर मानसिक विकास न हुआ हो और वह उस बौद्धिक जागरण को अपना संपूर्ण विकास मानकर अहंकार में उफना फिरता हो।

मेरा मन दया से भर गया और मैंने उस धूपबत्ती को बिना उठाए ही फिर से जलाने का निश्चय कर लिया। झट मैंने दियासलाई जलाई और उसे धूपबत्ती के सिर से लगाया दियासलाई जलकर बुझ गई, पर धूपबत्ती न जली। मैंने दियासलाई की दूसरी तीली जलाई और उसे उसके दाहिनी ओर लगाया, पर धूपबत्ती न जली। मैंने तीसरी दियासलाई जलाई और उसे उसके बाईं ओर लगाया, पर वह भी जलकर बुझ गई।

धूपबत्ती अब भी बिना जली, पहले जैसी ही सिर-जली खड़ी थी और मेरे लिए अब कोई मार्ग न था कि उसे खड़ी रहते जला दूँ। मैंने उसे उसके स्थान से उखाड़ लिया और उसे झुकाकर चौथी दियासलाई जलाई। अरे साहब, वह दियासलाई से छूते ही जल उठी। दियासलाई में अब भी इतना दम था कि तैयार हों, तो वह चार-पाँच धूपबत्तियाँ और जला दे !

जली धूपबत्ती ने अपनी सुगंध से कोठरी को भर दिया। यह काम समाप्त हुआ तो बुद्धि ने अपनी कलाबाजी दिखाई: तीन दियासलाइयाँ पूरी जलकर बुझ गईं पर धूपबत्ती न जली और एक दियासलाई के स्पर्श मात्र से ही वह भभक उठी, यह क्या बात है ?

मन ने कहा, ''कोई बात तो है यह; पर प्रश्न तो यह है कि क्या बात है वह ?''

अब ऊहापोह की बारी है, तर्क-वितर्क की बारी है, चिंतन की बारी।

जब तक तीन दियासलाइयाँ जलकर बुझीं, धूपबत्ती खड़ी थी और जब वह चौथी को छूते ही जल उठी, तो झुकी हुई थी।

लगता है, इस अनुभव में मेरे प्रश्न का उत्तर आ गया है, पर वह इतना संकेतात्मक है कि कहूँ-समा गया है। समाए को जानना आवश्यक है, तो सोच रहा हूँ कि धूपबत्ती खड़ी हो या तिरछी, उसमें जलने की शक्ति बराबर ही है, पर खड़ी हुई धूपबत्ती दियासलाई की जवाला को ग्रहण करने में असमर्थ रहती है और तिरछी धूपबत्ती उसे सुगमता से ग्रहण कर लेती है, क्यों कि झुकी हुई धूपबत्ती तो दियासलाई अपनी लौ के पूरे घेरे में ले पाती है और सीधी खड़ी को नहीं।

बात हाथ आ गई, पर बात अपने में इकली-इखहरी बात ही तो नहीं है, उसमें बात-बात में बात भी तो है- ज्यों केले के पात-पात में पात।

तो यह निकली आ रही है बात में-से-बात कि किसी से कुछ लेना हो, तो झुकना आवश्यक है। झुकना, क्या शरीर का ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नहीं जी, यों झुककर, दण्डवत् लेटकर ही तो फौज के सिपाही गोलियाँ दागते हैं तो झुकना देह का नहीं, भाव का। साफ़-साफ़ यों कि पाने के लिए नम्र होना आवश्यक है। लोकोक्ति है, बेटा बनकर सबने खाया, बाप बन कर किसी ने नहीं। यह बेटा बनना नम्रता ही तो है?

याद आ रहा है संस्कृत का एक श्लोक, जिसमें सुख की कुंजी बताई गई है-विद्या ददाति विनयं विनयाद याति पात्रताम्। पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम्। भाव यह है कि विद्या से मनुष्य में विनय आती है, विनय से पात्रता-पाने की योग्यता-और वह पात्रता से पाता है धन, धन से करता है धर्म, तब सुख-ही-सुख। तो पात्रता का मूल है विनय-नम्रता झुकना। क्यों भला? नम्रता से दाता के मन में प्रवेश पाना सुगम है, सहज है। इससे दाता के मन में देने की वृत्ति खिलती है, वह देने में सुख देता है और अविनय से वह वृत्ति संकुचित होती है, वह देने में भार मानता है।

हमारे लोक-जीवन में इसका एक मर्मस्पर्शी संस्मरण सुरक्षित है, 'कानी-भाभी' पानी पिला। हाँ, इन बोलों दूध के कटोरे!

भाभी की एक आँख शीतला में मारी गई और अब वह कानी है। उसका देवर, भाभी के लिए जिससे प्यारा कोई रिस्ता नहीं, उससे पानी चाहता है। लोक की ही अभिव्यक्ति है, पानी से भी पतला क्या? देवर को ही क्या, पानी तो किसी को भी पिलाया जा सकता है, उसके लिए किसी पात्रता की आवश्यकता नहीं।

ठीक है, पानी पीने के लिए पात्रता की आवश्यकता नहीं पर अपात्रता न हो, यह तो आवश्यक है और 'कानी' विशेषण ने, देवर की अविनयी वृत्ति ने, उसकी अपात्रता सिद्ध कर दी है।

भारतीय संस्कार है कि जो अपात्र को दे, वह पतित, तो देवर को भागी का चुभता उत्तर है-हाँ, इन बोलों दूध के कटोरे ! अरे देवरजी, तुम्हारे बोल तो इतने मीठे हैं कि मैं तुम्हें पानी नहीं , दूध पिलाऊँगी, मुँह धोए रहो!'

हमारे लोक-जीवन में विनय का भी एक संस्मरण सुरक्षित है, 'रानी भाभी, पानी पिला; पानी देवर के कुत्तों को!'

प्यासा देवर भाभी से कहता है, मेरी रानी भाभी, दो गूँट पानी पिला दो। रानी के विशेषण में जो नम्रता है, अपनी अपेक्षा दूसरे को महत्त्व देने की जो वृत्ति है, उसने भाभी का मन पुलकित कर दिया और उसकी उदारता को, ममता को जगा दिया है।

वह कहती है, अरे देवरजी पानी का क्या पिलाना, पानी तो मैं लाड़ले देवर के कुत्तों के लिए भी स्वयं कुएँ से भर-खींच लाऊँ; देवरजी, तुम तो कुछ और पियो-दूध, लस्सी, शिकंजी, शरबत!

माँगा था पानी, मिला चभता ताना और माँगा था पानी पर मिल रहा है दूध-शरबत। झुकने और अकड़ने का यह चमत्कार है।

ओह, याद आ गए बुजुर्ग दोस्त कुंदनलाल। मेरी ही जन्मभूमि में सुनार का काम करते थे। बड़े ही दिलचस्प आदमी थे। जब हम उनकी दुकान पर पहुँचते थे सोने-चाँदी का कोई जेवर बनाते होते और हम कहते, "कहिए क्या बना रहे हैं भाई साहब? वे अपना हथौड़ा रोक देते और राजा टोडरमल के समय का अपना चश्मा नाक से माथे पर रखते हुए कहते, अजीब सवाल है कि आज मैं क्या बना रहा हूँ? अरे भाई, किसी की बनती है नथ, किसी की अँगूठी, किसी का हार और किसी का कंगन, पर अपनी तो मैं दाल-रोटी ही बनाता हूँ, क्या आज, क्या कल और क्या परसों।" और तब ऐसी मीठी हँसी हँसते कि उस बुढ़ापे में भी उनका खुबानी चेहरा कंधारी अनार हो जाता!

अपनी ठुक-ठुक के बीच उन्होंने उर्दू में कुछ कविताएँ भी लिखी थीं। एक शेर याद आ गया है पर याद धोखा दे गई, शेर कहाँ, शेर का भाव ही बस कि सुराही बहुत कीमती है, उसमें शराब भी बहुत कीमती है और वह साकी के बहुत कीमती हाथों में भी है-बेशक, वह महत्त्व तो उस मानूली प्याले का है, जो उस सुराही को सिर झुकाकर शराब देने के लिए विवश कर देता है।

वही बात कि देने से बढ़कर लेने वाले की पात्रता है। लो, स्मृति के आसन पर आ बैठे हैं पूज्य मदनमोहनजी मालवीय, जिन पर सदा धन बरसा। उस बार काशी विश्वविद्यालय में उनके दर्शन करने गया, तो बातों-बातों में उन्होंने कहा था, "देश के हर द्वार पर एक दाता खड़ा है अपनी खुली थैली लिए, पर कमी उन होथों की है, जिनमें वह अपनी भेंट दे सके!"

मेरे उठते-उठते, आग्रह से कहा था उन्होंने, "भूलना मत इसे।"

और मुंबई मेल के उस थर्ड क्लास कंपार्टमेंट में उस दिन पूज्य मालवीयाजी के संदेश का परीक्षण कितना सफल रहा था:

मेल का हर डिब्बा करीब-करीब 'एयरटाइट' था, बस खाली था एक डिब्बा पर इसमें चढ़ना शेर की दाढ़ से गोश्त

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निकालना था। स्टेशन के आते ही उसकी बंद खिड़की से एक रोबीले पेशावरी पठान का चेहरा बाहर निकल आया। खिड़की के बाहर हम सात मुसाफिर थे। खान और फौजी उस युग के शेर-साँप थे; उन्हें लाँघना कठिन क्या, असंभव ही था। खान ने मुसाफिरों को देखा और पूरे रोब से कहा,"खिड़की नहीं खुलेगा।"

हम सबने समझ लिया कि ठीक ही है यह कि खिड़की नहीं खुलेगा, तो हम सात मुसाफिरों में से पाँच तो उसी क्षण दूसरे डिब्बे की ओर भाग निकले। छठे ने सामने से आते चैकर से शिकायत की,"जनाब, ये हजरत पूरा डिब्बा घेरे बैठे हैं और हमें चढ़ने नहीं देते।"चैकर महोदय ने अपने नए यूनीफोर्म के रोब में जरा डाँट के स्वर में खान से कहा, "आप दूसरे मुसाफिरों को चढ़ने से नहीं रोक सकते, खोलिए, खिड़की।"खान ने सचमुच खिड़की खोल दी और चैकर की ओर मुसकराते हुए कहा "ओ: तुम बौठाएगा इशको ? बौठाओ। जब गाड़ी चलेगा और हम इस शाला को बाहर फेंकेगा, तो तुम शाला झंडी हिलाना।"चैकर तो खिसका ही, वे मुसाफिर महाशय भी नौ-दो-ग्यारह हुए। खान ने उन्हें आवाज देकर कहा, "ओ: कहाँ जाता है ? आवो ईढर, हम पूरी शीट देगा।"निमंत्रण काफी उदार था पर उसे स्वीकार करने की शक्ति उन महाशय में न थी। वे चले, तो चले ही गए। खान ने अपनी खिड़की धम-से बंद कर ली।

मैं अब भी अपनी जगह खड़ा था, "अपनी अटैची हाथ में लटकाए। खान ने मुझे देखा मैंने खान को। उसने क्या सोचा मैं नहीं जानता, पर मैंने सोचा, मालवीयजी महाराज का वचन है कि हर द्वार पर एक दाता खड़ा है, तो क्या वह खान भी दाता है ?"

तभी खान ने मुझसे कहा, "तुम नहीं गया ?"

मैंने संक्षेप में कहा, "नहीं खान साहब!"

"क्यों, गाड़ी में नहीं चड़ेगा ?"

"चढूँगा, अगर आप प्यार से चढ़ाएंगे।"

"क्यों ? दूसरे डब्बे में नहीं चड़ेगा ?"

"खान साहब, आप एक बहादुर पठान है और बहादुर आदमी का दिल बहुत बड़ा होता है। उसमें ही जगह न मिले, तो फिर कहाँ जगह मिलेगी ?"

"तुम डरता नहीं, हम तुम्हें नीचे फेंक देगा ?" "नहीं खान साहब, बहादुर आदमी के पंजे सख्त होते हैं दिल मुलायम होता है। आप मुझे नीचे नहीं फेंक सकते।"

खान ने कुछ सोचा कि तभी गार्ड की सीटी बजी और हरी झंडी हिली। खान ने दरवाजा खोला और मुझे बुलाया। मैं झपट कर दरवाजे पर पहुँचा कि खान ने सहारा देकर मुझे भीतर ले लिया।

अठारह आदमियों के बैठने लायक उस छोटे-से डिब्बे में खान था, उसकी खूबसूरत बीवी थी और दो बच्चे थे। सबके बिस्तर बिछे थे; जैसे वे पलंग पर ही हों। मैंने खान की बीवी को सलाम किया और खान को धन्यवाद दे, दूसरी तरफ बैठ गया। कुछ देर बाद धीरे-से खान मेरे पास आया और उसने मुझे दो बहुत बढ़िया सेव दिए। खाकर मजा आ गया और मैंने सोचा, "मालवीयजी महाराज का वचन सत्य है कि देश के हर द्वार पर एक दाता खड़ा है, अपनी खुली थैली लिए, पर कमी उन हाथों की है,जिनमें वह अपनी भेंट दे सके।"

सचमुच यह खान, जिसे हम सात मुसाफिरों ने यमदूत या जीता भूत समझा था, एक दाता ही तो था और उसकी प्यार भरी भेंट मेरे हाथों में थी, पर मेरी सनक देखिए कि मैं अब अपने दाता की कसकर परीक्षा लेने पर तुल गया था।

दूसरे स्टेशन पर गाड़ी आकर रुकी तो समय की बात, स्टेशन मेरी तरफ था। खान की तरह मैं खड़की से बाहर झुक गया। तीन मुसाफिर थे-दो जवान एक बूढ़ा। बिना खान की तरफ देखे , जोर से मैंने कहा, "बूढ़े बाबा, यह खान साहब का डिब्बा है। उन्होंने मुझे मेहरबानी करके बैठने की जगह दे दी है। वह जगह मैं तुम्हें दे दूँगा और खुद खड़ा रहूँगा। तुम भीतर आ जाओ।" और बिना क्षण-भर रुके, मैंने उन दोनों जवानों से कहा, "तुम्हारे लिए दरवाजा नहीं खुलेगा, तुम कहीं और चले जाओ।"

तुरंत वे दोनों चले गए और मैंने बूढ़े को भीतर ले अपनी जगह बैठा दिया। मैं कुछ देर तो खिड़की पर झुका रहा और फिर दीवार से लगकर खड़ा-खड़ा अपनी पुस्तक पढ़ने लगा। कोई बीस मिनट बाद खान ने पूछा, "तुम क्यों खड़ा है मेरे भाई ?" सरलता से मैंने कहा, "खान साहब, आपने मेहरबानी करके जो जगह मुझे दी थी, वह मैंने बूढ़े बाबा को दे दी, लेकिन मुझे कोई दिक्कत नहीं है, आप आराम से लेटिए।"खान ने बिना अपनी गंभीरता भंग किए कहा, "नहीं तुम भी बैठो।"खान को धन्यवाद देकर मैं बैठ गया दूसरे स्टेशन पर गाड़ी ठहरी तो मैंने एक स्त्री और उसके बालक को अपनी जगह बिठा दिया और खड़ा हो गया। कुछ देर बाद खान की बीवी ने खान के कान में कुछ कहा और खान ने मुझे फिर बैठा दिया।

और दोपहर भर गई थी। सोने के लिए करवट लेते-लेते खान ने मुझ से कहा, "तुम चाएगा तो किसी को बैठाएगा पर तुम जरूर बैठेगा, हम सोता है।" और खान जब सोकर उठा तो हम बारह थे। खान देख कर हँसा और बोला, " सरकार तुम को रोज बोम्बे मेल में रखे तो बौत मुसाफिर को आराम होगा।"मैंने कहा, "पर खान साहब, आपको भी मेरे साथ रहना पड़ेगा; नहीं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तो मुझे खाली डिब्बा कहाँ मिलेगा!"खान और उसकी पत्नी इतने जोर से हँसे कि मजा आ गया।
शाम को सात बजे मैं अपने स्टेशन पर उतरा तो खान ने मुझसे हाथ मिलाया और उसकी बीवी ने मुझसे पहले मुझे सलाम किया।

खान की सख्ती क्यों छूमेतर हो गई थी?
खान देने को क्यों उतावला हो उठा था?
मेरी सफलता का रहस्य क्या था?
धूपबत्ती तीन दियासलाइयों में क्यों न जली?
चौथी दियासलाई के छूते ही क्यों जल उठी?

देख रहा हूँ, "धूपबत्ती झमझम जल रही है और मेरी कोठरी उसकी भीनी सुगंध से भरी है। सोच रहा हूँ,"यह पहली दियासलाई में जल जाती तो यह बात और बात में छिपी बात मैं कैसे पाता?

शब्दार्थ और टिप्पणी

धूपबत्ती अगरबत्ती **भभक उठना** तेजी से जल उठना **ऊहापोह** उलझन **पात** पत्ता **दंडवत** डंडे की तरह जमीन पर गिरकर प्रणाम करना **शीतला** चेचक **पतित** नीच,गिरा हुआ **पुलकित** प्रसन्न **हज़रत** मान्यवर, महोदय

मुहावरे

छूमंतर हो जाना गायब हो जाना **शेर की दाढ़ से गोश्त निकालना** असंभव काम करना **नौ-दो ग्यारह होना** भाग जाना

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) अपनी कोठरी में आते ही लेखक ने क्या देखा?
(2) सिर-जली धूपबत्ती लेखक को किस तरह के मनुष्य जैसी लगी?
(3) धूप-बत्ती तीन दियासलाइयों से क्यों न जली?
(4) चौथी दियासलाई के छूते ही धूपबत्ती क्यों जल उठी?
(5) 'विद्या ददाति विनंय...' वाले श्लोक का अर्थ बताइए।
(6) लेखक से मालवीयाजी ने क्या कहा?
(7) लेखक को ट्रेन से बाहर रोकने में पठान यात्री क्यों असमर्थ रहा?

2. उत्तर लिखिए :

(1) चौथीबार धूप-बत्ती के जलने के प्रसंग से लेखक ने क्या सिद्ध किया है?
(2) कुंदनलाल के विषय में संक्षेप में लिखिए।
(3) 'मुंबई मेल के डिब्बे में चढ़ना शेर की दाढ़ से गोश्त निकालने जैसा था' समझाइए।
(4) रानी भाभी के संबोधन का क्या प्रभाव पड़ा?
(5) पठान के हृदय-परिवर्तन के प्रसंग को विस्तार से लिखिए।
(6) विनम्रता के महत्त्व को समझने के लिए लेखक ने जो उदाहरण दिए हैं, उनमें से किसी एक को अपने शब्दों में लिखिए।?

3. ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(1) "हाँ इन बोलों दूध के कटोरे! अरे देवरजी, तुम्हारे बोल इतने मीठे हैं कि मैं तुम्हें पानी नहीं, दूध पिलाऊँगी; मुँह धोए रहो!"
(2) "देश के हर द्वार पर एक दाता खड़ा है अपनी खुली थैली लिए, पर कमी उन हाथों की है, जिनमें वह अपनी भेंट दे सके।"

4. नीचे दिये हुए मुहावरों से वाक्य बनाइए :

नौ दो ग्यारह होना, उफनते फिरना, मुँह धोए रहना

योग्यता- विस्तार

- 'विनम्रता का महत्त्व' विषय पर समूह चर्चा का आयोजन कीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिन्दी के विविध रूप

हमारा देश भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। गुजराती, बंगला,उड़िया, असमिया, हिन्दी, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम आदि अनेक भाषाएँ विभिन्न प्रदेशों में बोली जाती हैं। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो देश के एक बड़े भू-भाग में बोली जाती है। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है जिसे हम हिन्दी भाषी प्रदेश कहते हैं। इन प्रदेशों में उत्तरांचल, हिमाचल, दिल्ली-हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार तता झारखंड का समावेश होता है। यहाँ के लोग अपने-अपने घरों में दैनिक व्यवहार में अपनी-अपनी बोलियाँ बोलते हैं और औपचारिक रूप में हिन्दी का प्रयोग करते हैं। हिन्दी में कुल 18 बोलियाँ हैं, जो अपने-अपने क्षेत्र के लोगों की मातृभाषा कहलाती हैं। जैसे कि ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, हरियाणवी, मारवाडी, मेवाती, बुंदेली, गढ़वाली आदि। बोलियों का क्षेत्र सीमित होता है और भाषा का विस्तृत। एक भाषा में कई बोलियाँ होती हैं।

1. व्यावहारिक हिन्दी : स्वरूप और क्षेत्र

भाषा का मुख्य प्रयोजन है- संप्रेषण । अर्थात् अपनी बात को दूसरों तक सार्थक रूप से पहुँचाना। बहुभाषी देश होने के कारण संप्रेषण-व्यवस्था में कठिनाइयाँ आने की संभावना बनी रहती है। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक ऐसी भाषा की अपेक्षा रहती है, जो समूचे देश को एक सूत्र में बाँध सके, वह एक संपर्क-भाषा की भूमिका निभा सके। क्षेत्रीयता से परे राष्ट्रीय स्तर पर इस भाषा का विशेष, दायित्व रहता है। सार्वदेशिक स्तर पर जीवन एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े होने के कारण इस भाषा से अनेक प्रयोजन सिद्ध होते हैं। इसी संदर्भ में हिन्दी भारत की संपर्कभाषा के रूप में जीवन के विभिन्न व्यवहार-क्षेत्रों में कार्य कर रही है। शिक्षा और विज्ञान के बहुमुखी प्रचार-प्रसार के साथ-साथ व्यावसायिक, वाणिज्यिक, औद्योगिक आदि नये-नये कार्यक्षेत्र उभर रहे हैं, जिनमें हिन्दी का प्रयोग दिन-दिन बढ़ रहा है। हिन्दी का प्रयोग पहले साहित्य तक सीमित था किंतु अब इसने अपनी साहित्यिक सीमा को लाँघ कर जीवन और जगत के अनेकानेक क्षेत्रों में प्रवेश कर लिया है। जीवन के विविध विषयों, कार्यकलापों का माध्यम बनकर इसने एक **व्यावहारिक रूप** धारण कर लिया है। यह व्यावहारिक रूप ही उसकी शक्ति बन गया है। इस प्रकार वर्तमान जीवन और जगत की विभिन्न आवश्यकताओं के निर्वाह के लिए जिस हिन्दी का प्रयोग हो रहा है, वह **व्यावहारिक हिन्दी** ही है।

हिन्दी भारत की राजभाषा-राष्ट्रभाषा होने के कारण अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी का व्यवहार-क्षेत्र सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक आदि अनेक कार्य-क्षेत्रों तक फैला हुआ है। इनमें से सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और साहित्यिक क्षेत्रों की भाषा प्राय: **जनभाषा** के अधिक निकट होती है। जब कि वैज्ञानिक, वाणिज्यिक, प्रसासनिक आदि कार्य-क्षेत्रों की भाषा **तकनीकी** भाषा के अधिक निकट होती है। इस दृष्टि से हिन्दी के प्राय: दो रूप दिखाई देते हैं (1) जनव्यवहार के क्षेत्रों की हिन्दी (2) प्रयोजन परक कार्यक्षेत्रों की हिन्दी। ये दोनों रूप व्यावहारिक हिन्दी के अंतर्गत आते हैं।

(1) जनव्यवहार के क्षेत्रों की हिन्दी

सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों तथा अन्य व्यावहारिक क्षेत्रों में हिन्दी का जो प्रयोग होता है उसके अपने अलग-अलग रूप होते हैं; जैसे--

(क) कार्यालय में काम करते समय अपने अधिकारियों, कर्मचारियों और सामान्य जनता से बातचीत या संवाद करना।

(ख) सभा-समारोह आदि का संचालन करना।

(ग) किसी सूचना की उद्घोषणा करना।

(ध) किसी मैच या घटना का आँखों-देखा हाल बताना।

(ङ) समाचार लिखना या देना। (अखबार, रेड़ियो, दूरदर्शन)

(च) औपचारिक संदर्भों में किसी मामले की शिकायत करने या समस्या के निराकरण के लिए बस, रेल्वे, टेलीफोन, बैंक आदि से संबंधित कार्यालयों से पत्र-व्यवहार करना।

इस प्रकार की हिन्दी के मौखिक और लिखित दोनों रूप प्राप्त होते हैं। इसकी शैली औपचारिक-अनौपचारिक दोनों प्रकार की हो सकती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) प्रयोजन परक कार्यक्षेत्रों की हिन्दी

किसी भी देश के शासन संबंधी कार्यों के लिए स्वीकृत भाषा उस देश की राजभाषा कहलाती है। अत: राजभाषा के रूप में हिन्दी कुछ विशिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होती है। हिन्दी के इस रूप को **प्रयोजनमूलक** हिन्दी के रूप में जाना जाता है। 'प्रयोजनमूलक' शब्द दो शब्दों के योग से बना है। 'प्रयोजन' विशेषता है जिसमें 'मूलक' प्रत्यय जोड़कर प्रयोजनमूलक बना है। 'प्रयोजन' का अर्थ है उद्देश्य तथा 'मूलक' का अर्थ है आधारित। इसप्रकार प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य हुआ-'किसी निश्चित उद्देश्य पर आधारित हिन्दी या किसी निश्चित उद्देश्य को केन्द्र में रखकर प्रयुक्त की जाने वाली हिन्दी।'

प्रयोजनमूलक हिन्दी की **प्रयुक्तियों** के अंतर्गत- कार्यालय की हिन्दी, विज्ञान और वाणिज्यिक हिन्दी, तकनीकी हिन्दी एवं जनसंचारी हिन्दी का समावेश किया जा सकता है। अब तो कम्प्यूटर में भी हिन्दी का प्रयोग होने लगा है। इन सभी क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी विशिष्ट प्रयोजन की हिन्दी होती है। इस हिन्दी का प्रयोग सामान्यत: अपने-अपने कार्यक्षेत्र या विषय से संबद्ध व्यक्ति आपस नें करते हैं। इस हिन्दी की अपनी अलग शब्दावली और संरचना होती है। यह भाषा मुख्यत: एकार्थी और अलंकार मुक्त होती है। इस में लक्षणा और व्यंजना के लिए कोई स्थान नहीं होता। यह एक प्रकार की व्यावसायिक शैली होती है जो अपने विषय एवं क्षेत्र के अनुरूप एक स्पष्ट एवं सुनिश्चित विधि के रूप में प्रयुक्त होती है। यह हिन्दी प्राय: तकनीकी और लिखित होती है और अधिकांशत: औपचारिक शैली में लिखी जाती है। इस व्यावसायिक शैली को **प्रयुक्ति** की संज्ञा दी गई है।

इसप्रकार प्रयोजन मूलक हिन्दी का एक निश्चित स्वरूप और व्यवस्था है। इसके अंतर्गत **कार्यालय-पत्राचार** का भी समावेश होता हे। ऐसे पत्राचार के अनेक रूप हैं; जैसे- सरकारी पत्र, सरकारी आदेश, कार्यालय आदेश, कार्यालय ज्ञापन, परिपत्र आदि। पत्रों में तीन प्रकार के पत्र होते हैं: सरकारी पत्र, गैर सरकारी पत्र एवं स्मरण पत्र। आदेश दो तरह के होते हैं: सरकारी आदेश और कार्यालय आदेश। इनके अतिरिक्त ज्ञापन, टिप्पण-लेखन, परिपत्र, अधिसूचना प्रेस-विज्ञप्ति आदि का भी इसी में समावेश होता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि **व्यावहारिक हिन्दी** अपने आप में एक व्यापक अवधारणा है जो सामाजिक जीवन तथा तकनीकी क्षेत्रों की अभिव्यक्ति के रूप में प्रयुक्त होती है। कुछ विद्वान इसे प्रयोजनमूलक हिन्दी अथवा कामकाजी हिन्दी के पर्याय के रूप में मानते हैं किंतु ये दोनों ही रूप व्यावहारिक हिन्दी के भीतर समाहित हैं।

जनसंचारी हिन्दी :

विज्ञान, वाणिज्य, कार्यालयों आदि में प्रयुक्त हिन्दी के साथ-साथ अब जनसंचार के नवीनतम् माध्यमों द्वारा हिन्दी का सर्वाधिक प्रयोग हो रहा है। जो अत्यंत जीवंत है। मुद्रण कला के विकास से समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पोस्टर, पैम्पलेट, विज्ञापन के नये-नये तौर तरीके सामने आ रहे हैं। इसी प्रकार दृश्य-श्राव्य माध्यमों के रूप में रेडियो, टेलीफोन, मोबाइल, टेलिविज़न, फिल्म, कम्प्यूटर, फेक्स, ई-मेल, वॉट्सअप आदि द्वारा विविध प्रयोजनों के तहत हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो रहा है। तत्काल संप्रेषण इसकी प्रमुख विशेषता है। आज अनेक नये-नये क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग के द्वार खुले हैं। इन सभी क्षेत्रों में प्रयोजन मूलक हिन्दी को गढ़ने का कार्य चल रहा है। प्रयोजन मूलक हिन्दी का यह नया रूप बहुत शक्तिशाली बनता जा रहा है।

मानक हिन्दी :

हिन्दी भारत के एक बड़े भू-भाग में बोली जानेवाली भाषा है। कई उपभाषाओं और बोलियों के कारण हिन्दी के विविध रूप देखने सुनने को मिलते हैं। एक ओर जनपदीय हिन्दी है तो दूसरी ओर संस्कृतनिष्ठ हिन्दी है। कहीं उर्दू-मिश्रित हिन्दी प्रयुक्त होती है तो कहीं अंग्रेजी से प्रभावित। प्रयोजन की दृष्टि से भी उसका कार्यक्षेत्र दिन-दिन व्यापक होता जा रहा है। इन तमाम विविधताओं के बावजूद उसका **मानकरूप** (सर्व सामान्य रूप) होना अत्यंत आवश्यक है; जिससे भाषा-प्रयोग में अराजकता न पैदा हो जाए, भाषा की बोधगम्यता बराबर बनी रहे, एक रूपता बनी रहे। जिससे भाषिक संप्रेषण सर्वमान्य और सर्वग्राह्य बना रहे। शब्दों के उच्चारण एवं वर्तनी के विविध रूपों में से किसी एक रूप को मानक मान लिया जाता है। इससे भाषा के प्रयोग में स्थिरता एवं एकरूपता आती है। इस तरह उच्चारण, वर्तनी, शब्द-भंडार आदि व्याकरणिक स्तरों पर मानक रूप में ऐसी एकरूपता आ जाती है जिससे भाषा सभी के लिए सुबोध हो जाए। भाषा के मानक रूप के ज्ञान से उसके शुद्ध-अशुद्ध रूपों को जाँचने-परखने में भी सरलता रहती है। हिन्दी भाषा का यही रूप मानक हिन्दी कहलाता है। मानक हिन्दी खड़ीबोली के लिए देवनागरी लिपि का स्वीकार किया गया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिन्दी : संपर्क भाषा : हिंदी, राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में

संपर्क भाषा : हिन्दी

भाषा पारस्परिक संपर्क का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। इस माध्यम से देश के विभिन्न प्रदेश के लोग, विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले लोग वैचारिक आदान-प्रदान कर संपर्क स्थापित कर सकते हैं। हिन्दी भाषा संपर्क का एक सशक्त माध्यम बनने में सफल हुई है। हमारा देश बहुभाषी देश है। यहाँ उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम कई भाषाएँ बोली जाती हैं। हिन्दी तो बहुत पहले से देश के विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच संपर्क-भाषा की भूमिका निभाती आई है। मध्यकाल में भक्ति-आंदोलन ने पूरे देश को भावात्मक एकता के सूत्र में बाँध दिया था। इस दौर में हिन्दी ही वह माध्यम थी जिसने संतों-भक्तों की वाणी को देश के कोने-कोने तक पहुँचा दिया था।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी हिन्दी ही संपूर्ण देशवासियों के बीच संपर्क का सशक्त माध्यम बन कर उभरी थी। आधुनिक काल में संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। विश्व के ज्ञान-विज्ञान तथा साहित्य को, भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं को सर्वसुलभ बनाने के लिए हिन्दी एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरी है।

आज ज्ञान-विज्ञान के विस्फोट का युग है। इसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए जन-संपर्क की भाषा की सख्त जरूरत है। पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन, फिल्मों, डॉक्यूमेन्टरी आदि ने संपर्क माध्यम के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बड़ा योगदान किया है। संविधान में स्थान मिलने के कारण, लोकतांत्रिक व्यवस्था में व्यापक प्रयोग होने के कारण तथा सरकार के त्रिभाषा फार्मूले के कारण हिन्दी भारत की संपर्क भाषा के रूप में खूब विकसित हुई है। प्रवासन की बढ़ोतरी के कारण संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग दिन-दिन बढ़ रहा है।

राष्ट्रभाषा : हिन्दी

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक राष्ट्रभाषा होती है जो संपूर्ण राष्ट्र को एकता-अखण्डता के एक सूत्र में बाँधकर रखती है। गाँधीजी ने कहा था- 'राष्ट्रभाषा के बिना कोई भी देश गूँगा होता है।' स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संपूर्ण देश को राष्ट्रीय भावना के सूत्र में बांधने का काम हिन्दी ने किया। इसकी सार्वदेशिकता और व्यापक प्रचार-प्रसार के कारण इसे राष्ट्रभाषा का गौरव सहज ही मिल गया। गाँधीजी ने हिन्दी के 'हिन्दुस्तानी' रूप पर बल देते हुए उसे राष्ट्रभाषा घोषित किया। स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हर प्रदेश के महापुरुषों ने बिना किसी विरोध के हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। इस दौरान हिन्दी केवल हिन्दी भाषी प्रदेश की भाषा न रहकर, सारे देश की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई और उसे राष्ट्रभाषा की पहचान मिल गई। भले ही संविधान में हिन्दी को 'राजभाषा' के रूप में स्वीकार किया गया है फिर भी उसे राष्ट्रभाषा का विशिष्ट गौरव प्राप्त है। यह हमारे बहुभाषी देश को जोड़ने वाली मजबूत कड़ी है, देश की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

राजभाषा : हिन्दी

किसी भी देश के राजकाज (प्रशासनिक कार्य)के लिए संवैधानिक रूप से स्वीकृत भाषा 'राजभाषा' कहलाती है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद सारे देश के प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक सामान्य प्रशासनिक भाषा की आवश्यकता पड़ी जो अंग्रेजी का स्थान ले सके। काफी सोच-विचार के बाद 14 सितंबर 1949 को भारत की **संविधान सभा** ने हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए अंतर्राष्ट्रीय अंकों का प्रयोग होगा। संघ के संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे।

भारत के कई राज्यों-उत्तरप्रदेश, उत्तराँचल, बिहार, झारखंड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, और दिल्ली में हिन्दी राजभाषा के रूप में स्वीकृत है। अंडमान में भी उसे राजभा,ा के रूप में मान्यता मिल गई है। साथ ही देश के कई राज्यों में हिन्दी द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है। संविधान में यह भी व्यवस्था की गई है कि जिन प्रदेशों ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार नहीं किया है वे 'सह राजभाषा' के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग कर सकते हैं। उल्लेखनीय है कि 1963 के राजभाषा अधिनियम और बाद में 1967 के संशोधित अधिनियम के अनुसार 26 जनवरी 1965 से अंग्रेजी को तब तक सहराजभाषा के रूप में जारी रखने का प्रावधान किया गया है, जब तक अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त करने के लिए उन राज्यों के विधान मंडल संकल्प पारित नहीं करते।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सरकारी और निजी क्षेत्र के कार्यालयों से संबंधित पत्राचार

कार्यालय पत्राचार से तात्पर्य है उस पत्राचार से जो किसी सरकारी/अर्ध सरकारी संस्था या कार्यालय में विविध प्रकार की प्रशासनिक औपचारिकताओं को पूरा करने के लिए किया जाता है। इस पत्राचार में भावों की जगह तथ्यों को महत्त्व दिया जाता है। कार्यालयों में होने वाले पत्रों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है- (1) सरकारी पत्र (2) अर्ध सरकारी पत्र (3) स्मरण पत्र

(1) सरकारी पत्र का नमूना

आपके विद्यालय के तृतीय वर्ग (श्रेणी) के कर्मचारी राजेन्द्रप्रसाद ने बीमारी के कारण अपनी छुट्टी बढ़ाते हुए चिकित्सा-प्रमाणपत्र भेजा है। इस संदर्भ में चिकित्सा-अधीक्षक के पत्र भेजने के लिए प्रारूप का नमूना-

सं.1/52/265 शि.
शिक्षा निदेशालय
राष्ट्रीय राजधानीक्षेत्र, दिल्ली सरकार,
दिल्ली सचिवालय
इन्द्रप्रस्थ मार्ग, दिल्ली
दि. 10 जुलाई 2015

सेवा में,
चिकित्सा अधीक्षक
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली-110016

विषय : श्री राजेन्द्रप्रसाद के स्वास्थ्य-परीक्षण के विषय में।

महोदय,

मुझे यह बताने का निर्देश हुआ है कि इस निदेशालय के अतर्गत आने वाले 'माध्यमिक विद्यालय' मयूर विहार, नई दिल्ली के तृतीय श्रेणी के कर्मचारी श्री राजेन्द्रप्रसाद 20 जून 2015 से अवकाश पर हैं। उन्होंने एक निजी चिकित्सक का चिकित्सा-प्रमाणपत्र भेजा है। जिसमें 10 अगस्त 2015 तक अवकाश बढ़ाने की सिफारिश की है। आपसे अनुरोध है कि आप उनके स्वास्थ्य की परीक्षा कर अपनी राय इस निदेशालय को शीघ्र भेजने की कृपा करें। श्री राजेन्द्रप्रसाद द्वारा प्रस्तुत किया गया चिकित्सा-प्रमाणपत्र संलग्न है।

भवदीय,
हस्ताक्षर.....
(अरविंद शर्मा)
शिक्षाधिकारी
संलग्नक : (श्री राजेन्द्रप्रसाद का चिकित्सा-प्रमाणपत्र)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) अर्धसरकारी पत्र

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय से अपेक्षित सूचनाएँ मँगवाने के लिए पत्र भेजा जा चुका है, लेकिन अभी तक कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है। इस संदर्भ में अर्धसरकारी पत्र का नमूना–

अ.स.स.से.....
भारत सरकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
विश्वविद्यालय विभाग
शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
दिनांक : 15 दिसंबर 2015

श्री वीरेन्द्र ठाकुर
सचिव
दूरभाष : 3332556

प्रिय श्री मनीष बंसल

इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दि. 25 जुलाई, 2015 तथा 26 अगस्त, 2015 द्वारा आपके कार्यालय से कुछ आवश्यक सूचनाएँ माँगी गई थीं जो अभी तक प्राप्त नहीं हुई हैं। अत: आपसे निवेदन है कि आप इस संदर्भ में व्यक्तिगत रुचि लेकर जरूरी सूचनाएँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करें।

आपका,
हस्ताक्षर.....
(वीरेन्द्र ठाकुर)
श्री मनीष बंसल,
सहायक निदेशक,
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,
रामकृष्ण पुरम् , नई दिल्ली।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) स्मरण पत्र : (अनुस्मारक)

भारत सरकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(उच्च शिक्षा विभाग)
शास्त्रीभवन
नई दिल्ली-110001
दिनांक : 25 सितंबर, 2015

सेवा में,
कुल सचिव,
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान,
आगरा - 282005

विषय : तृतीय श्रेणी के कर्मचारियों से संबंधित संख्या।

महोदय,

उक्त संदर्भ में इस कार्यालय से समसंख्यक पत्र दि. 25 जुलाई, 2015 का अवलोकन करें। (पूर्व प्रेषित पत्र की फोटो-प्रति संलग्न है।)

आपके विभाग से इस संबंध में आज तक संख्या प्राप्त नहीं हो सकी है। कृपया अति शीघ्र संख्या भेजने का कष्ट करें ताकि उसे प्रबंधन-समिति की बैठक में प्रस्तुत किया जा सके।

भवदीय,
हस्ताक्षर.....
(कमल किशोर)
उपसचिव, भारत सरकार।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कार्यसूची और कार्यवृत

कार्यसूची

संस्थाओं और कार्यालयों में किसी विषय या समस्या पर गंभीरता से विचार विनिमय करने के लिए सिमतियों का गठन होता है। इन समितियों में कई सदस्य होते हैं, जिनमें एक अध्यक्ष और एक सचिव होता है। समिति की बैठक सचिव आयोजित करता है। बैठक की कार्यवाई शुरू होने से पूर्व अध्यक्ष या सचिव सदस्यों का स्वागत करता है और पिर विचारमीय विषयों का संक्षिप्त परिचय देता है।

बैठक प्रारंभ होने से पूर्व एक 'कार्यसूची' तैयार की जाती है; जिसमें विचारणीय विषयों को लिखा जाता है। कार्यसूची तैयार होने के बाद बैठक की निर्धारित तारीख से पहले सदस्यों को भेज दी जाती हैं, जिस से बैठक के दौरान मुद्दों पर गंभीरता से चर्चा हो सके।

कार्यसूची का प्रारूप

कर्णावती विद्यालय अमराईवाडी, अहमदाबाद की सांस्कृतिक समिति की होनेवाली बैठक के लिए कार्यसूची बनाने का नमूना–

कर्णावती विद्यालय, अमराईवाडी, अहमदाबाद,
सांस्कृतिक समिति की बैठक–2 दिसंबर, 2015

कार्यसूची

(1) सदस्यों का स्वागत।
(2) पिछली बैठक के कार्यवृत्त की संपुष्टि।
(3) सांस्कृतिक कार्यक्रम की तारीख निश्चित करना।
(4) सांस्कृतिक कार्यक्रम की कार्य योजना पर विचार।
(5) कार्यक्रम की कार्य योजना पर विचार।
(6) अध्यक्ष महोदय की अनुमति से अन्य विषय।
(7) फधन्यवाद ज्ञापन।

हस्ताक्षर–
सचिव, सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यवृत्त

किसी भी बैठक की समाप्ति का बाद सचिव कार्रवाई के लिए कार्यवृत्त का प्रारूप तैयार करता है। बैठक में जो प्रस्ताव और निर्णय लिए गए थे, उनका विवरण कार्यवृत्त में दिया जाता है। अध्यक्ष के हस्ताक्षर के पश्चात् कार्यवृत्त तो अगली बैठक में संपुष्टि के लिए प्रस्तुत किया जाता है। बैठक की संभावना न होने पर उसकी एक–एक प्रति समिति के सगस्यों को बेज दी जाती है।

कार्यवृत्त का प्रारूप

सांस्कृतिक समिति की बैठक 2 दिसंबर 2015 को संपन्न हुई थी। उसमें जो निर्णय लिए गए थे, उसके कार्यवृत्त का नमूना–

कर्णावती विद्यालय अमराईवाडी, अहमदाबाद

2 दिसंबर 2015 को संपन्न सांस्कृतिक समिति की बैठक का कार्यवृत्त

सांस्कृतिक समिति की बैठक 2 दिसंबर 2015 को शाम 5 बजे संपन्न हुई। उसमें निमनलिखित सदस्यों ने भाग लिया–

(1) .....अध्यक्ष (2) .....सदस्य
(3) .....सदस्य (4) .....सदस्य
(5) .....सचिव

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बैठक प्रारंभ होने से पहले सचिव श्री.....ने सदस्यों का स्वागत किया और 5-8-2015 को संपन्न पिछली बैठक का कार्यवृत्त प्रस्तुत काये, सदस्यों ने जिसकी संपुष्टि सर्व सम्मति से की।

इसके बाद सचिव महादय ने बताया कि 22 से 25 फरवरी 2016 तक विद्यालय में वार्षिक कार्यक्रम रखा गया है। इस बीच एक दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा। काफी चर्चा के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए सर्व संमति से 23 फरवरी 2016 निर्धारित की गई। सांसकृतिक कार्यक्रम की कार्य योजना पर चर्चा करते हुए सदस्यों ने कई सुझाव दिए। निम्नलिखित सुझाव पारित हुए–

(1) संगीत

(2) गायन और नृत्य

(3) फैशन शो/फौंसी ड्रेस

(4) बाद–विवाद प्रतियोगिता

(5) नाटक प्रतियोगिता

(6) काव्यपाठ प्रतियोगिता

(7) समूहगान

(8) निबंध प्रतियोगिता

कार्यक्रम में होने वाले खर्च के बारे में प्रधानाचार्य महोदय ने बताया कि सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए वर्ष 2015-2016 के लिए बजर में बीस हजार रुपए का प्रावधान है।

हिन्दी के अध्यापक श्री.....ने अध्यक्ष की अनुमति से यह बात उठाई कि इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध कलाकार को आमंत्रित किया जाय। काफी चर्चा का बाद अंत में निश्चय किया गया कि प्रसिद्ध गायक श्री.....को मुख्य अतिति के रूप में आमंत्रित किया जाए और अध्यक्षता के लिए हमारे जिला शिक्षा अधिकारी महोदय को निमंत्रित किया जाए।

अंत में अध्यक्ष महोदय ने सबी सदस्यों के प्रति आभार प्रक्ट किया।

हस्ताक्षर–
अध्यक्ष

हस्ताक्षर–
सचिव

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पारिभाषिक शब्दावली

राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने के बाद विभिन्न विषयों और क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोजनपरक प्रयोग बढ़ने लगा है। इसके लिए पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता भी बढ़ने लगी। ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी के वहुविध विकास के साथ नई-नई संकल्पनाओं के लिए नये-नये शब्दों का गढ़ना भी जरूरी बन गया है। स्पष्ट और सटीक अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त सामान्य शब्दों से काम नहीं चलता। सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त शब्द अनेकार्थी भी हो सकते हैं जबकि पारिभाषिक शब्द एकार्थी होते हैं, एक निश्चित और सटीक अर्थ प्रकट करते हैं। वस्तुत: पारिभाषिक शब्द वह इकाई है जिसका प्रयोग एक निश्चित संदर्भ या निश्चित ज्ञानक्षेत्र में एक निश्चित अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए होता है। आज ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों - विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, भूगोल, दर्शन, चिकित्सा, वाणिज्य, विधि एवं प्रशासन जैसे क्षेत्रों में हो रहे विकास की वजह से नये-नये पारिभाषिक शब्द गढ़े जा रहे हैं जो विषय-विशेष के संदर्भ में एक निश्चित अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं।

पारिभाषिक शब्द सूची (कुछ चुने हुए शब्दों के उदाहरण)

(अ) व्यवसाय संबंधी पारिभाषिक शब्द :

अनुबंध	:	Agreement
लाभांश	:	Dividend
आयात	:	Import
निर्यात	:	Export
निवेश	:	Investment
अधिभार	:	Surcharge
लागत	:	Cost
शेयर-सूचकांक	:	Sensex
तुलनपत्र	:	Balance Sheet
मुआवजा	:	Compensation

(ख) बैंकों में प्रयोग में आने वाले पारिभाषिक शब्द :

खाता	:	Account
खातावही	:	Ledger
चालू खाता	:	Current Account
मुद्रा	:	Currency
भुगतान आदेश	:	Payorder
नामांकन	:	Nomination
विदेशी मुद्रा	:	Foreign Exchange
जमा	:	Credit
जमाशेष	:	Cash Balance
उधार	:	Debit
सावधिजमा	:	Fixed Deposit
परिसंपत्ति	:	Assets

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ग) प्रशासनिक कार्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द :

अधिसूचना	:	Notification
अध्यादेश	:	Ordinance
अनुदान	:	Grant
कार्यसूची	:	Agenda
अनुभाग	:	Section
संशाधन	:	Resources
राजस्व	:	Revenue
निदेशक	:	Director
प्रबंध	:	Management
कार्यवृत्त	:	Minutes

(घ) विज्ञान-विषयक पारिभाषिक शब्द :

तरंग	:	Wave
गुरुत्व	:	Gravity
उपग्रह	:	Setelite
अम्ल	:	Acid
कोशिका	:	Cell
ऊर्जा	:	Energy
उर्वरक	:	Fertilizer
अंतरिक्ष	:	Space

(च) प्रशासनिक अभिव्यक्तियाँ

केवल सूचनार्थ	:	For Information only
आदेशार्थ प्रस्तुत	:	Submitted for orders
पावती भेजें	:	Kindly acknowledge
जरूरी कार्रवाई कर दी गई है	:	Needful has been done
मामला विचाराधीन है	:	Matter is under consideration
मामले की जाँच की जा रही है	:	Matter is under investigation
केवल कार्यालय उपप्रयोग के लिए	:	For office use only
यथाशीघ्र	:	As soon as
विलंब के लिए खेद है	:	Delay regretted
अनिश्चित काल के लिए स्थगित	:	Adjourned sine die
चिकित्सा आधार पर छुट्टी	:	Leave on medical ground
देख लिया, धन्यवाद	:	Seen, thanks
अनुमति दी जाए	:	May be permitted
सादर निवेदन है	:	I have the honour to say
लोक हित में	:	In public interest

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

द्वितीय सत्र

15 मानसरोदक खंड

मलिक मुहम्मद जायसी
(जन्म : सन् 1393 ई; निधन : सन् 1542 ई.)

भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा की प्रेमाश्रयी शाखा के सूफी संत कवि जायसी का जन्म रायबरेली के जायसनगर में हुआ बतलाया जाता है। बाल्यकाल में ही माता-पिता का निधन हो जाने से ये संतों की संगत में रहने लगे थे। उन्होंने सैयद अशरफ नामक संत को अपना प्रेम-पथ-प्रदर्शक बतलाया है।

जायसी प्रेमाख्यान परंपरा के प्रकवर्तक माने जाते हैं। उनकी रचनाओं में प्रेम के आध्यात्मिक रूप की व्यंजना है। इन्होंने हिन्दू लोककथाओं और लोक संस्कृति को अपनी कविता का आधार बनाकर हिन्दू और इस्लाम धर्म के बीच समन्वय स्थापित करने का उमदा काम किया। काव्यरूप और भाषा की दृष्टि से भारतीय और फारसी परंपरा को निकट लाने का काम किया । जायसी की तीन प्रमुख रचनाएँ हैं 'पद्मावत' (महाकाव्य), 'अखरावट' और 'आखरी कलाम'। 'पदमावत' जायसी की अक्षय कीर्ति का आधार है। इसमें बोलचाल की अवधी भाषा का सुंदर प्रयोग किया गया है। नागमती का विरह-वर्णन 'पद्मावत' की विशिष्ट उपलब्धि है।

प्रस्तुत प्रबंध-खंड 'पद्मावत' से लिया गया है। इसमें महाकाव्य की नायिका पद्मावती और उसकी फूल-सी सखियों की मानसरोवर में स्नान-केलि का वर्णन है। इसी बीच एक सहेली सुझाव देती है कि अब हमें मैके में कुछ ही दिन रहना है अत: जीवन का जितना आनंद उठाना है उठालो। बाद में ससुराल में तरह-तरह की जिम्मेदारी और बंधनों के बीच इस तरह के अवसर शायद न मिलें। काव्यांश के उत्तरार्ध में पद्मावत की अप्रितम सुंदरता का अलंकारिक चित्रण किया गया है। नख-शिख-सौंदर्य वर्णन की दृष्टि से यह अंश बहुत कलात्मक बन पड़ा है।

एक दिवस पून्यौ तिथि आई।मानसरोदक चली नहाई ॥
पदमावति सब सखी बुलाई।जनु फुलवारि सबै चलि आई ॥
खेलत मानसरोवर गई।जाइ पालि पर ठाढ़ी भई॥
देखि सरावर हँसैं कुलेली। पदमावति सौं कहहिं सहेली॥
ऐ रानी ! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी॥
जौ लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू॥
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरवराली॥
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा॥
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारुन ससुर न निसरैं देहीं॥
पिउ पियार सिर ऊपर ,सो पुनि करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख , दहुँ कस जनम निबाह॥
सरवर तीर पदमिनी आई। खोंपा छोरि केस मुकलाई॥
ससि-मुख, अंग मलयगिरि बासा। नागिन झाँपि लीन्ह चहुँ पासा॥
ओनई घटा परी जग छाहाँ। ससि के सरन लीन्ह जनु राहाँ॥
छपि गै दिनहिं भानु कै दसा। लेइ निसि नखत चाँद परगसा ॥
भूलि चकोर दीठि मुख लावा। मेघ घटा महँ चंद देखावा॥
दसन दामिनी कोकिल भाषीं। भौंहें धनुक गगन लै राखीं॥
सरवर रूप विमोहा, हिए हिलोरहिं लेइ।
पाँव छुवै मकु पावौं, एहि मिस लहरहिं देइ॥

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

पून्यौ तिथि पूर्णिमा की तिथि **पालि** किनारा **ठाढ़ी** खड़ी होना **कुलेली** क्रीड़ा करना **नैहर** मायका **गवनब** गमन करना होगा **काली** कल **जिउ लेहीं** प्राण ले लेंगी **दारुन** निर्दयी **निसरैं** निकलने देना **दहुँ** शायद न जाने **निबाह** निर्वाह **खोंपा** बालों का जूड़ा **मुकुलाई** खोला, मुक्त किया **ओनई** झुक आई **राहाँ राहू छपि गै** छिप गए **नखत** नक्षत्र **परगसा** प्रकट हो गया **दीठि** दृष्टि **विमोहा** विमुग्ध हो गया **मकु** कदाचित्, शायद

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) 'एहि नैहर रहना दिन चारी' कथन किस ओर संकेत करता है ?

(2) सासु-ननद और ससुर के विषय में क्या कहा गया है ?

(3) सरोवर में लहरें उठने का क्या कारण बताया गया है ?

(4) चकोर क्या देखकर भ्रमित हो गया ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) सखियों ने क्या कहकर पद्मावती को सरोवर में स्नान करने के लिए प्रेरित किया ?

(2) पद्मावती के रूप-सौन्दर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

(3) सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

सरवर तीर पदमिनी आई। खोंपा छोरि केस मुकुलाई ॥
ससि-मुख, अंग मलयगिरि बासा। नागिन झाँपि लीन्ह चहुँ पासा ॥
ओनई घटा परी जग छाहाँ। ससि के सरन लीन्ह जनु राहाँ ॥

(4) कविता की जिन पंक्तियों में नारी-जीवन की विवशता और परतंत्रता का चित्रण है, उन्हें लिखिए।

योग्यता-विस्तार

- 'पद्मावत' में वर्णित संपूर्ण कथावस्तु को जानिए और उसे संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

16 महाराजपुर से ग्वारीघाट

अमृतलाल बेगड़

(जन्म : सन् 1928 ई.)

अमृतलाल बेगड़ का जन्म जबलपुर में हुआ था। मूलत: चित्रकार वेगडजी ने अपनी कला-शिक्षा शांति निकेतन में प्राप्त की और वहीं लगभग 35 वर्ष तक कला का अध्यापन किया। इनके लिए प्रकृति सबसे प्रिय एवं आत्मीय है। नर्मदा के अनन्य सौंदर्य को आत्मसात् कर उसे अपनी तूलिका एवं लेखनी से साकार कर दिया है। नर्मदा के दोनों किनारों की ढ़ाई हजार किलोमीटर की विकट पदयात्रा द्वारा यह सब संभव हो सका है।

नर्मदा के भव्य सौंदर्य को मूर्त करने वाली अनेक चित्र-प्रदर्शनियाँ देश के बड़े-बड़े शहरों में आयोजित हुईं और कला-मर्मज्ञों द्वारा सराही गई। अपने चित्रों के लिए उन्हें 1994-95 में मध्यप्रदेश शासन के 'शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया। हिन्दी में इनकी तीन और गुजराती में चार पुस्तकें प्रकाशित हैं। बापू, सूरज के दोस्त, भारत मेरा देश, सौंदर्य की देवी नर्मदा, अमृतस्य नर्मदा जैसी कृतियाँ अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत हैं।

'महाराजपुर से ग्वारीघाट' उनकी पुस्तक 'सौंदर्य की देवी नर्मदा' से लिया गया अंश है। इसमें लेखक ने नर्मदा-यात्रा संबंधी अपने अनुभवों का रोमांचक वर्णन किया है। नर्मदा के प्रति लेखक की आस्था-श्रद्धा के साथ ही नर्मदातट-वासियो की लोगों के प्रति आत्मीयता और स्नेहल मानवीयता की भी झलक मिल जाती है। क्या यह वही सहस्त्रधारा है?

सामने तट से जाते समय इसे दीवाली की छुट्टी में देखा था। सचमुच सहस्त्रधारा थी। नर्मदा की अजस्त्र जलधाराओं का सैलाब उमड़ रहा था। दूर-दूर तक फैले अनगिनत प्रपात नदी के वेग को चौबाला कर रहे थे। हहराती, उफनाती, बलखाती, धारा के पास जाने में बड़ा भय लगा था।

और आज?

बहुत खोजने पर एक सूक्ष्म धारा मिली। नर्मदा का खूखा चट्टानी पाट गर्म कड़ाह की तरह खौल रहा था। जहाँ हमने भरी-पूरी नर्मदा को देखा था, वहाँ इस गरमी में उसकी साँस भर चल रही थी। सभी कु छ निर्जीव, सुनसान, नेत्रहीन और मूक.....

और हो भी क्या सकता था? शताब्दी का भयंकर सूखा पड़ा था। कुएँ-तालाब, नदी-नाले प्राय: सूख चले थे। गाँव खाली हो रहे थे। पूरा उत्तर भारत अभूतपूर्व जल संकट का सामना कर रहा था। ऐसे में नर्मदा भी सूखकर कांटा रह जाय, तो क्या आश्चर्य?

27 मई, 80 को महाराजपुर (मंडला)से चले। पहला दिन था और सुबह से ही धूप चटख हो चली थी, इसलिए अधिक नहीं चले। मानादेही में ही रुक गये। वहाँ से सहस्त्रधारा देखने गए। यह अन्दाज तो था कि धारा सिमट कर रह गयी है लेकिन इस तरह उजड़ गयी होगी, यह कल्पना नहीं थी।

सहस्त्रधारा का वह राजराजेश्वर रूप देखा था--पानी से छलकता, चौकड़ी भरता, घन-घमंड घोषणा करता, और आज यह दलित द्राक्षान्सा रूप देखा-- निर्जला, नीरव, मूक और चट्टानों का ढाँचा मात्र! उतार-चढ़ाव किसके जीवन में नहीं आते?

पानी के रहने से एक फायदा था--नदी का पाट खुली किताब की तरह सामने था। वेगवती धाराओं ने चट्टानों का कैसा काटा व तराशा था, इसे हम अच्छी तरह देख सकते थे। तारों की शोभा हम तभी देख सकते हैं, जब चाँद न हो। पेड़ के गठन को तभी समझ सकते हैं, जब पतझड़ हो। आज हमें यही मौका मिला था। पानी ने चट्टानों को तराशा तो था ही, आश्चर्य यह देखकर हुआ कि उनमें बड़े-बड़े सुराख कर दिए थे--बिलकुल गोल। फिर उनको नीचे ही नीचे मिला दिया था। हम लोग एक सूराख से उतरे, दूसरे से बाहर निकले। नदी ने मानो पत्थर के कान बींधे थे। यही भँवर होती है। कोई इसमें फँस जाय, तो जिंदा बाहर नहीं निकल सकता। आज समझ में आया कि अच्छे-से-अच्छा तैराक भी अनजान पानी में क्यों नहीं उतरता।

दूसरे दिन पौ फटते ही चल दिए। दोपहर की दहकती गरमी में बुजबुजिया पहुँचे। इस सूखे में भी यह गाँव हरा-भरा था। यहाँ वन-विभाग की नर्सरी है। तरह-तरह के पौधे उगाये जाते हैं---खासकर सागौन के। दूर दूसरी तरह के पौधे थे। मैंने एक मजदूर से पूछा, 'वे काहे के पौधे हैं?'

'लिपिस्टिक के!'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'लिपिस्टिक के ?' मैंने आश्चर्य से पूछा। उसने फिर वही जवाब दिया तो मैंने पास जाकर देखा। वे यूकिलिप्टिस के पौधे थे!

यहाँ नर्मदा में कुछ अधिक पानी था। प्रपात भी थे। पास ही वन-विभाग के कमरे का बरामदा मिल गया, तो वहीं टिक गये। कमरे में एक कम्पाउंडर रहता था। मंडला से आये उसे पन्द्रह दिन ही हुए थे। बेहद गरमी थी, रात को बाहर सोये। मैं और यादवेन्द्र नीचे जमीन पर, कंपाउंडर चारपाई पर।

रात के कोई डेढ़ बजे बूँदाबाँदी हुई तो मैं बरामदे में आ गया, फिर यादवेन्द्र और अन्त में कम्पाउंडर। हम जमीन पर सोये। कम्पाउंडर चारपाई पर। दरवाजे में पल्ले नहीं थे।

कोई आधा घण्टा हुआ होगा कि कम्पाउंडर जोर से चिल्लाया, 'साँप! साँप! ' हम लोग भी हड़बड़ा कर उठ बैठे। मेरे पास टॉर्च थी, तुरत जलायी। वह कहने लगा, ''साँप था। मेरी बाँह पर था। मुझें ठंडा-ठंडा लगा तो हड़बड़ा उठ कर बैठा।'

वह बुरी करह से डर गया था। अटक-अटक कर बोल रहा था। डर हम भी गये थे। टॉर्च और लालटेन की सहायता से कोने-कोने की तलाशी ली, लेकिन साँप कहीं नहीं था। मैंने कहा, ''तुमहें भ्रम हुआ है ! साँप कहीं नहीं है। फिर तुम तो चारपाई पर लेटे थे, साँप उस पर कैसे चढगा ?

''साँप ही था। मैंने उसे अपनी आँखों से देखा।''

हमें विश्वास नहीं हुआ। लेकिन कोई दस मिनट के बाद देखा, दरवाजे में से साँप आ रहा है।

उसकी बात सच थी। एख लकड़ी की सहायता से मैंने उसे बाहर किया। एक पत्थर पर पानी था, देर तक पीता रहा, प्यासा था। फिर धीर-धीरे आगे बढ़ने लगा।

कम्पाउंडर बोला, 'मारो!' मैंने कहा, 'तुम्हीं मारो।' उसने कहा ''मेरा शरीर तो क्या, आत्मा तक काँप उठी है। मुझसे यह नहीं होगा।''

'यादवेन्द्र, तुम ही मारो!'

''गुरुजी, आज तक साँप नहीं मारा मुझसे भी यह नहीं होगा।''

मैंने कहा,''आप जैसे रथी-महारथी इसे नहीं मार सकते, तो भला मेरी क्या बिसात!''

आगे एक शाल वृक्ष के नीचे जाकर वह रुका, फिर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगा। थोड़ी देर में काफी ऊपर पहुँच गया। साँप को पेड़ पर चढ़ते पहली बार देखा। कम्पाउंडर की बात पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं रहा।

दूसरी ओर एक दूसरा साँप, जो उससे मोटा था। दूसरे पेड़ पर चढ़ रहा था। हम शायद नागलोक में आ गए थे। रात का घना अँधेरा, सन्नाटे का आलम और पेड़ों पर साँप! बड़ा भय लगा।

इतने में कंपाउंडर एक छोकरे को ले गया। उसी समय पहला साँप पेड़ पर से उतर रहा था। जमीन पर आते ही छोकरे ने दो डंडे जमाये तो साँप का काम तमाम हो गया। दूसरा साँप पेड़ में गायब हो गया, हाथ नहीं आया।

ऐसे में नींद कहाँ से आती। बाकी रात जागकर काटी। कम्पाउंडर कहने लगा, ''कल ही मंडला जाकर इस्तीफा दे दूँगा। बीस साल की नौकरी जाय भाड़ में।'' हम भी सोच कहे थे, कब सवेरा हो और यहाँ से कूच करें।

सवेरा होते ही चल दिये। हवा एकदम बन्द थई। पूरा भूखंड जल रहा था। पेड़ धूप से कुम्हला गये थे। भरी दोपहर को घाघा पहुँचे। गाँव न जाकर नदी-किनारे एक पेड़ के नीचे रुके। अब जोरों से लू चलने लगी थी। किसी तरह खाना पकाया, खाकर वहीं लेटे। ज्यों-ज्यों पेड़ की छाया सरकती, त्यों-त्यों हम सरकते। आँधी उठती तो सारी देह धूल से अट जाती। पर हवा का हिनहिनाना और पेड़ों का रँभाना सुनने में मन रम गया, तो लू थपेड़े खाते वहाँ पड़े रहे।

शाम तक हमारे ऊपर धूल की चार-छह पर्तें जम गयीं। मैं मानो मोहें-जो-दड़ो होऊँ और यादवेन्द्र हड़प्पा हो, ऐसा हाल हुआ। फर्क यही था कि उन प्राचीन नगरों को दूसरों ने खोद निकाला था, जबकि हम स्वयं उठ खड़े हुए और चलते बने। घाघा में रहने की व्यवस्था हो गयी, तो घूमने निकले। पास ही दूसरा गाँव है--घाघी। वहाँ नर्मदा-तट गये। नदी की धारा उस तट पर थी, इसलिए सूखे रेतीले पाट को पार कर सामने तट पर गये। वहाँ जाकर चकित रह गये। वहाँ कोई धारा ही नहीं थी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आँखों को विश्वास न हुआ। लेकिन ऐसा पानी नहीं था, तो नहीं था। नर्मदा की धारा टूट गई थी।

पिछले साल भी गरमी में चले थे। लेकिन ऐसा कहीं नहीं देखा था। दाहिनी ओर पतली धारा थी, दूर बायीं ओर भी थी, लेकिन बीच में अचानक गायब हो गई थी। नर्मदा की गागर एकदम खाली थी।

पिछली यात्राओं में हमने नर्मदा का वनवास देखा था, इस बार की यात्रा में उसका अज्ञातवास देखा।

हम चाहते तो दस कदम चलकर उस तट पर पहुँच जाते। लेकिन नहीं गए। नर्मदा ऊपर नहीं है तो क्या हुआ, रेत के नीचे जरूर बह रही है। इकलिए हमने उसे हाजिर-नाजिर माना और वहीं से लौट आये।

अगला पड़ाव बुदेहरा। नर्मदा की धारा यहाँ भी टूट गयी थी।

बुदेहरा से झुरकी। झुरकी के पटेल बड़े विनोदप्रिय थे। हम लोगों का स्वागत करते हुए किसी से कहा, ''आम लोगों के लिए वही प्रागैतिहासिक शरबत ले आओ।''

शरबत आया, बड़ा ही स्वादिष्ट था। कहने लगे, ''यह आँवला, पुदीना आदि से बना है, इसलिए इसे प्रागैतिहासिक शरबत कहता हूँ। ''मैंने देखा, इस विनोदप्रिय आदमी को भी विषाद की काली छाया ने ग्रस लिया था। पास ही बरगी में नर्मदा पर एक विशाल बाँध बन रहा है। उनका यह गाँव और आस-पास के कई गाँव उस बाँध की डूब में आ जायेंगे। तब वे कहाँ जायेंगे, यही चिंता उन्हें सता रही थी। दर असल बेघर होने की यह चिंता इनकी ही नहीं, सारे इलाके की थी।

पद्मघाट में एक अच्छा आश्रम है, रात वहाँ रहे। भोर होते ही चल दिये। पेड़ ऐसे काले दीख रहे थे, मानो झुलसे हुए हों। शाम को बखारी पहुँचे। गाँव के पटेल के यहाँ रहने को तो मिल गया, लेकिन पानी माँगा, तो उसने रस्सी-बालटी थमा दी और कुआँ बता दिया। पानी लेने गए तो रस्सी मुश्किल से बीच कुएँ तक पहुँची! पानी पाताल को चला गया था। पास की झोपड़ी का ग्रामीण हमारी परेशानी समझ गया। अपनी रस्सी ले आया, दोनों को जोड़ा तब पानी निकला। गाँव के इसी एक कुएँ में पानी था, बाकी सब सूख चुके थे।

यहाँ से छिंदवाहा। नर्मदा के संग-संग चले। रोटो पहुँच कर एक वन-रक्षक की झोंपड़ी में डेरा डाला। वह यहाँ के पेड़ कटवा रहा था। यह इलाका बाँध में डूब जाय, इसके पहले पेड़ों को कटवा लेना जरूरी था।

सुबह नदी में से चले। दिन बेहद गर्म था और हवा ने अपने पंख समेट लिए थे। दोपहर को एक जगह बहुत-से मजदूर स्त्री-पुरुष एक पेड़ के नीचे आराम कर रहे थे। पास ही राहत कार्य में सड़क बन रही थी। इसी में लगे थे। कुछ सो रहे थे, कुछ गा रहे थे। उनका अधेड़-उम्र का मुखिया मौज में आकर नाच रहा था। इनके गीतों ने मन मोह लिया तो गोपीटोला में इन्हीं में से एक के घर रात रह गए। रात को वे और भी गीत सुनायेंगे और नाचेंगे।

यादवेन्द्र भोजन बनाने की तैयारी करने लगा, तो हमारे मजदूर यजमान ने मना कर दिया,--भोजन आपका हमारे यहाँ होगा।

यह आदमी, जिसे हमने चार रुपये रोज पर जेठ की तपती दुपहरिया में हाड़तोड़ मेहनत करते देखा था, कहता है कि भोजन आप हमारे यहाँ करेंगे।

भाई मजदूर! मैं जरूर तुम्हारी रोटी खाऊँगा। महाभारत के नेवले की तरह इससे शायद मेरा शरीर सोने का हो जाए!

देर रात तक लोकगीत व लोकनृत्य का आनन्द लेते रहे। सुबह बीजासेन के लिए चल दिए। रात को यहाँ भी नृत्य देखने मिले। दिनभर कड़ी मेहनत करने के बाद और रूखा-सूखा खाने के बाद भी ये लोग जीवन का रस लेना जानते हैं।

दूसरे दिन खुश्क पहाड़ियों से होते हुए पायली पहुँचे। पायली में जिनके यहाँ ठहरे थे, वे विधुर थे। मैंने पूछा,''आपने दोबारा शादी क्यों नहीं की?'' उन्होंने कहा, ''मेरे बच्चे छोटे थे। मैंने सोचा, दोबारा शादी करूँगी तो ये बच्चे माँ से तो गए, बाप से भी जायेंगे। इसलिए नहीं की। अब तो बच्चे बड़े हो गए हैं। बड़े बेटे की बहू भी आ गई है।''

शाम को नर्मदा-तट गए। पच्चीस बरस पहले भी यहाँ आया था। तब यहाँ कैसा घना जंगल था! विशाल वृक्षों से लिपटी सुदीर्घ लताएँ आज भी याद थीं। पर अब कुछ भी नहीं बचा था। इन्सान की कुल्हाड़ी ने सर्वनाश कर डाला था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बड़े सवेरे बरगी कालोनी के लिए चल दिए। मेरी चाल अपने आप तेज हो गयी। उन दिनों मेरा बड़ा लड़का चि. शरद वहाँ रहता था। चंड सूर्य के प्रचंड ताप में उसके द्वार पर खड़े होकर कहा, 'भिक्षां देहि!'

यहाँ नर्मदा पर एक विशाल बाँध बन रहा है। शाम को उसे देखने गए। हजारों मजदूरों और सैकड़ों यंत्रों से यह स्थान जीवन्त हो उठा है। बाँध की दीवार बहुत-कुछ हो चुकी थी। एक सीढ़ी से अन्दर उतरे तो मैं चकित रह गया। बाँध की ठोस नजर आती दीवार में, इस छोर से उस छोर तक, बिजली की रोशनी से जगमगाती सुरंग थी! देख-रेख के लिए बड़े बाँध में ऐसी सुरंग रहती है, यह तभी जाना।

जब यह बाँध बन जाएगा, तो यहाँ का नक्शा ही बदल जायेगा। यहाँ एक विशाल झील बनेगी। मैं सोचने लगा, इस झील का नाम क्या होना चाहिए।

याद आया, कभी यहाँ एक स्त्री रहती थी। एक दिन उसने सुना, राम आ रहे हैं। स्वागत के लिए उसके पास बेर के सिवा और था ही क्या? राम आए तो चख-चख कर मीठे बेर देती रही! प्रेम में विह्वल शबरी को इस बात का ध्यान ही न रहा कि वह राम को जूठे बेर खिला रही है। सोचा, इसी प्रदेश की उस सरला आदिवासी नारी की याद में इस झील का नाम शबरी झील रखा जाय, तो क्या ही अच्छा हो!

शबरी के बेर, सुदामा के चावल, विदुर की भाजी! क्या इनका कोई मोल हो सकता है? महत्त्व इस बात का नहीं है कि क्या दे रहे हैं, महत्त्व इस बात का है जो हम दे रहे हैं उसमें अपना हृदय उड़ेल रहे हैं या नहीं।

यहाँ से पारा पास ही है, पर गाँव की गलियाँ भा गयीं, तो रात यहीं रह गए। भिनसारे चल दिए। आगे टेमर-संगम पड़ा! टेमर किस ठस्से के साथ नर्मदा से मिल रही थी! इस सूखे में भी उसमें पानी था। संगम में देर तक स्नान करते रहे। तभी आकाश में बादल घिर आए। बूँदाबाँदी होने लगी। मैं बहुत खुश हुआ। सोचा, आज त्रिवेणी-स्नान हुआ। दो धाराएँ पहले से थीं, तीसरी ऊपर से आ मिली!

जब से बरगी कॉलोनी से चले हैं, तब से एक नया दृश्य बराबर देखने मिल रहा है। बारूद से चट्टानें तोड़ी जा रही हैं, बड़ी-बड़ी नहरें खोदी जा रही हैं। बाँध के बन जाने पर ये नहरें खुशहाली की सौगात लाएँगी। सारा इलाका धन-धान्य से लहलहा उठेगा।

लेकिन परकम्मावासियों का क्या होगा? नदी के दोनों ओर जब इन नहरों का जाल दूर-दूर तक फैल जाएगा और उनमें नर्मदा जल प्रवाहित होगा, तब परकम्मावासी भारी धर्मसंकट में पड़ जायेंगे। इस नहरों को लाँघा जाये या नहीं? नहरों को लाँघना नर्मदा लाँघने जैसा होगा। नहीं लाँघने पर इतना बड़ा चक्कर लगाना पड़ेगा कि वह फिर नर्मदा परिक्रमा ही नहीं रहेगी। तब क्या किया जाय?

मेरा विचार है कि जब नर्मदा का स्वरूप बदलेगा, तब नर्मदा-परिक्रमा के नियमों का स्वरूप भी बदलेगा। नहर, नदी की दूसरी पीढ़ी हुई। छोटी नहरें, तीसरी पीढ़ी। परकम्मावासी की दायित्व नदी के प्रति है, उसकी दूसरी-तीसरी पीढ़ी के प्रति नहीं। इसलिए इन नहरों को लाँघने में कोई दोष नहीं।

रात खमरिया में रहे। यहाँ से सड़क मिल गयी। दोपहर को ग्वारीघाट (जबलपुर)आ गए। इस बार की यात्रा पूरी हुई। यात्रा का शुभारम्भ इसी ग्वारीघाट से हुआ था। उस तट से गए थे, इस तट से लौटे थे। लौटते समय सामने तट के गाँवों को देखते ही पूर्व-स्मृति के तार झनझना उठते। जिनके यहाँ ठहरे थे, उनकी याद आ जाती। खबर भिजवा देते, तो मिलने आ जाते। पाठा के शिक्षक, सहजपुरी के संन्यासी, छेवलिया का तुलाराम कोटवार, सभी प्रेमे आये थे। तुलाराम तो स्त्री बच्चों को लेकर आया। सभी हमारे लिए सीधा लाये थे।

तो उस तट के पाठा, सहजपुरी, छेवलिया, बरहइयाखेड़ा; और इस तट के घाघी, झुरकी, बखारी, रोटो, पायली-तुम्हें जुहार! अब तो तुम थोड़े ही दिनों के मेहमान हो न? नर्मदा के लुभावने किनारो, तुम्हें भी अलविदा! और सौन्दर्य-सरिता नर्मदा! तुम्हें भी अलविदा, क्योंकि यहाँ तुम भी तो उस विशाल झील में उसी तरह खो जाओगी, जिस तरह दूध के बरतन में पड़ती धारोष्ण दूध की धार खो जाती है!

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

सैलाव बाढ़ **निर्जला** बिना जल का **प्रपात** जल की धारा जो ऊँचे स्थान से गिरती हो **चटख** मसालेदार **बूँदाबाँदी** झरमर बारिश **चौबोला** एक प्रकार का मात्रिक छंद **तराशा** नकाशी **प्रागैतिहासिक** इतिहास के पहले का **उफनाती** प्रचंड वेग से **विशाद** दु:ख **सौगात** उपहार **मोल** कीमत

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) लेखक ने किस नदी के सौंन्दर्य की बात की है ?
(2) अच्छा तैराक भी नर्मदा के अनजान पानी में क्यों नहीं उतरता ?
(3) बुजबुजिया गाँव क्यों हरा-भरा था ?
(4) घाघा में लेखक को कैसा अनुभव हुआ ?
(5) बुखारी में कुएँ में पानी क्यों नहीं था ?
(6) बरगी कॉलोनी से कैसा दृश्य देखने को मिला ?
(7) नर्मदा की यात्रा का शुभारंभ कहाँ से हुआ ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) छिंदवाड़ा के मजदूरों का वर्णन कीजिए।
(2) 'इन्सान की कुलहाड़ी ने कैसे सर्वनाश कर दिया' पाठ के आधार पर समझाइए।
(3) नर्मदा बाँध की वजह से किन लोगों ने अपना सब कुछ खो दिया ?
(4) लेखक ने नर्मदा के किनारेवाले गाँवों को थोड़े ही दिनों के मेहमान क्यों कहा ?
(5) नर्मदा परिक्रमा के नियमों का स्वरूप बदलेगा-ऐसा लेखक क्यों कहते हैं ?

3. मुहावरों का अर्थ समझाकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

दलित द्राक्षा-सा रूप, काम तमाम होना

योग्यता- विस्तार

- 'महाभारत का नेवला सोने का हुआ' - प्रसंग पढ़िए।
- सरदार सरोवर की मुलाकात या प्रवास कीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

17 दातव्य कौ अंग

वाजिदजी
(17वीं शताब्दी)

वाजिदजी का रचना-काल 17वीं शताब्दी माना जाता है। इनके विषय में केवल इतना प्रसिद्ध है कि यह जाति के पठान थे। एक दिन शिकार खेलने निकले, और एक हिरणी पर तीर चलाने ही वाले थे कि हृदय से करुणा का झरना फूट पड़ा। उसी क्षण तीर-कमान तोड़कर फेंक दिया और जीवन जीव-प्रेम की ओर मुड़ गया। सद्‌गुरु पाने के लिए व्याकुल हो उठे। खोजते-खोजते स्वामी दादूदयाल की अकुतो भय शरण पा ली और उनके कृपापात्र शिष्य हो गए। दादूदयालजी के 152 शिष्यों में वाजिदजी की गणना की जाती है।

कहते हैं कि छोटे-छोटे 14 ग्रंथों में इनकी संपूर्ण बानी है, लेकिन सब उपलब्ध नहीं है। 'अरिल' छंद में अनेक अंगों पर इन्होंने प्रसाद युक्त सरल-सरस रचनाएँ लिखी हैं। जीव-दया, उदारता तथा देह की अनित्यता पर इनके बड़े भावपूर्ण 'अरिल' हैं। इन्होंने दोहा और चोपाई में भी रचना की है।

'दातव्य को अंग' में दान की महिमा का वर्णन है। दीन-हीन व्यक्ति को उदार मन से अन्न-वस्त्र का दान ही सबसे बड़ा पुण्य और सच्ची हरि-भक्ति है। माँगने वाले को देखकर मुँह नहीं छिपाना चाहिए। कुछ देकर ही कुछ पाया जा सकता है, ऐसा कवि का दृढ़ विश्वास है।

भूखो दुर्बल देख नाहिं मुहँ मोड़िये।
जो हरि सारी देय तो आधी तोड़िये॥
दे आधी की आध अरध की कोर रे।
हरि हां, अन्न सरीखा पुण्य नाहिं कोइ ओर रे ॥ 1 ॥

खैर सरीखी और न दूजी वसत है।
मेल्हे वासण मांहि कहा मुहँ कसत है॥
तूँ जिन जानें जाय रहेगो ठाम रे।
हरि हाँ, माया दे वाजिद धणी के काम रे ॥ 2 ॥

मंगण आवत देख रहे मुहुँ गोय रे।
जद्यपि है बहु दाम काम नहिं लोय रे॥
भूखे भोजन दियो न नागा कापरा।
हरि हां, बिन दीया वाजिंद पावे कहा बापरा ॥ 3 ॥

शब्दार्थ-टिप्पणी

सारी पूरा,संपूर्ण **तोड़िये** तोड़कर या हिस्सा करके दे दे **कोर** टुकड़ा **खैर** खैरात **वसत** वस्तु **मेल्हे** रख देने पर **वासण** बर्तन **कसत है** बाँधता है **ठाम** मुद्रा, स्थान **माया** धन-संपत्ति **धणी** ईश्वर **मंगण** माँगने वाला **गोय** छिपाकर **नागा कापरा** नंगे को कपड़ा **बापरा** बेचारा, उपयोग करना

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) किसे देखकर मुँह नहीं छुपाना चाहिए ?
(2) वाजिद ने सबसे पुण्य कार्य किसे माना है ?
(3) ईश्वर से वाजिद धन-संपत्ति क्यों चाहते हैं ?
(4) 'मेल्हे वासण मांहि कहा मुँह कसत है' से क्या तात्पर्य है ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) कविता के आधार पर दान की महिमा का वर्णन कीजिए।
(2) ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

मंगण आवत देख रहे मुँहु गोय रे ।
जद्यपि है बहु दाम काम नहिं लोय रे ॥

योग्यता-विस्तार

- 'परोपकार' पर निबंध लिखिए ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

18 स्कंदगुप्त

जयशंकर प्रसाद

(जन्म: सन् 1889 ई; निधन:न् 1937 ई.)

छायावाद के उन्नायक जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के एक प्रतिष्ठित सुँघनी साहू परिवार में हुआ था। अल्पायु में ही माता-पिता का निधन हो जाने के कारण उनकी शिक्षा आठवीं कक्षा से आगे न बढ़ सकी। उन्होंने घर पर ही हिन्दी, उर्दू, फारसी और संस्कृत का अध्ययन किया। उन्हें साहित्य के साथ-साथ इतिहास, दर्शन, वेद, पुराण एवं उपनिषद आदि का गहरा ज्ञान था। इस दृष्टि से उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। प्रसादजी मूलत: तो कवि थे किंतु कहानी, नाटक, निबंध, उपन्यास जैसी अनेक विधाओं में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

'कामायनी' उनकी कीर्ति का प्रमुख स्तंभ है, एक सफल महाकाव्य है। इसके अलावा 'लहर', 'झरना', 'आँसू' उनकी श्रेष्ठ काव्य कृतियाँ हैं। उन्होंने 'कंकाल' और 'तितली' जैसे उपन्यास एवं 'आकाशदीप', 'इंद्रजाल','प्रतिध्वनि' जैसे कहानी संग्रह हिन्दी साहित्य को दिए। उन्होंने 'चन्द्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', 'ध्रुव स्वामिनी' जैसे ऐतिहासिक नाटक लिखकर हिन्दी नाटक को समृद्ध किया। उनकी रचनाशीलता में प्रेम, सौंन्दर्य, भावुकता और कल्पना का स्वर मुखर है किंतु नाटक-कहानी-उपन्यास में यथार्थ के स्वर भी सुने जा सकते हैं। उनकी भाषा तत्सम् प्रधान और समास बहुल होती है।

प्रस्तुत नाटयांश प्रसादजी के सर्वश्रेष्ठ नाटक 'स्कंदगुप्त' के अंतिम अंक (पाँचवें अंक) से लिया गया है। इसमें कथा-नाटक स्कंदगुप्त के देशप्रेम, शौर्य और साहस, निर्भीकता-उदारता, त्याग और बलिदान का सफल चित्रण किया गया है। इस अंक में हम देखते हैं कि स्कंदगुप्त अपनी वीरता और पराक्रम से आक्रमणकारियों को पराजित कर संपूर्ण राज्य को निरापद एवं निष्कंटक बना देता है। निस्वार्थ स्कंदगुप्त विजया के प्रेम-प्रस्ताव को ठुकराकर अपने अनन्य त्याग का परिचय देता है। दूसरी ओर स्कंदगुप्त की प्रेयसी देवसेना देशप्रेम के लिए स्व-प्रेम की बलिदान चढ़ाकर बहुत बड़ा आदर्श प्रस्तुत करती है। वह विजयी स्कंदगुप्त को स्वीकार कर प्रतिदान लेने से इनकार कर देती है। देवसेना के अनन्य प्रेम से प्रभावित स्कंदगुप्त आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प करता है।

देवसेना : संगीत-सभा की अन्तिम लहरदार और आश्रयहीन तान, धूपदान की एख क्षीक गन्ध-रेखा, कुचले हुए फूलों का म्लान सौरभ और उत्सव के पीछे का अवसाद, इन सबों की प्रतिकृति मेरा क्षुद्र नारी जीवन। मेरे प्रिय गान! अब क्या गाऊँ और क्या सुनाऊँ? इन बार-बार के गाये हुए गीतों में क्या आकर्षण है- क्या बल है जो खींचता है? केवल सुनने की ही नहीं, प्रत्युत इसके साथ अनन्तकाल तक कंठ मिला रखने की इच्छा जग जाती है।

शून्य गगन में खोजता जैसे चन्द्र निराश,
राका में रमणीय यह किसका मधुर प्रकाश?
हृदय! तू खोजता किसको? छिपा है कौन-सा तुझमें,
मचलता है, बता क्या दूँ? छिपा तुझसे न कुछ मुझमें।
रसनिधि में जीवन रहा, मिटी न फिर भी प्यास,
मुँह खोले मुक्तामयी सीपी स्वाती आस।
हृदय! तू है बना जलनिधि, लहरियाँ खेलती तुझमें,
मिला अब कौन-सा नवरत्न जो पहले न था तुझमें।

(प्रस्थान)

(वेश बदले हुए स्कंदगुप्त का प्रवेश)

स्कंदगुप्त : जननी! तुम्हारी पवित्र स्मृति को प्रणाम।

(समाधि के समीप घुटने टेककर फूल चढ़ाता है।)

माँ। अन्तिम बार आशीर्वाद नहीं मिला, इसी से यह कष्ट, यह अपमान। माँ तुम्हारी गोद में पलकर भी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तुम्हारी सेवा न कर सका, यह अपराध क्षमा करो।

(देवसेना का प्रवेश)

देवसेना : (पहचानती हुई) कौन? अरे! सम्राट की जय हो।

स्कंदगुप्त : देवसेना!

देवसेना : हाँ, राजाधिराज! धन्य भाग्य, आज दर्शन हुए।

स्कंदगुप्त : देवसेना! बड़ी-बड़ी कामनाएँ थीं।

देवसेना : सम्राट

स्कंदगुप्त : क्या तुमने यहाँ कोई कुटी बना ली है?

देवसेना : हाँ, यहाँ गाकर भीख माँगती हूँ, और आर्य पर्णदत्त के साथ रहती हुई महादेवी की समाधि परिष्कृत करती हूँ।

स्कंदगुप्त : मालवेश-कुमारी देवसेना! तुम और यह कर्म! समय-जो चाहे करा ले। कभी हमने भी तुम्हें अपने काम का बनाया था। देवसेना! यह सब मेरा प्रायश्चित है। आज मैं बन्धुवर्माव की आत्मा को क्या उत्तर दूँगा? जिसने नि:स्वार्थ भाव से सब कुछ मेरे चरणों में अर्पित कर दिया था, उससे कैसे उऋण होऊँगा? मैं यह सब देखता हूँ और जीता हूँ।

देवसेना : मैं अपने लिए ही नहीं माँगती देव! आर्य पर्णदत्त ने साम्राज्य के बिखरे हुए सब रत्न एकत्र किये हैं, वे सब निरवलम्ब हैं। किसी के पास टूटी हुई तलवार ही बची है, तो किसी के जीर्ण वस्त्रखंड। उन सबकी सेवा इसी आश्रम में होती है।

स्कंदगुप्त : वृद्ध पर्णदत्त, तात पर्णदत्त! तुम्हारी यह दशा? जिसके लोहे से आग बरसती थी, वह जंगल की लकड़ियाँ बटोरकर आग सुलगाता है। देवसेना! अब इसका कोई काम नहीं, चलो महादेवी की समाधि के सामने प्रतिश्रुत हो, हम-तुम अब अलग न होंगे। साम्राज्य तो नहीं है, मैं बचा हूँ, वह अपना ममत्व तुम्हें अर्पित करके उऋण होऊँगा, और एकांतवास करूँगा।

देवसेना : सो न होगा सम्राट! मैं दासी हूँ। मालव ने जो देश के लिए उत्सर्ग किया है, उसका प्रतिदान लेकर मृत आत्मा का अपमान न करूँगी। सम्राट, देखो, यहीं पर सती जयमाला की भी छोटी-सी समाधि है, उसके गौरव की रक्षा होनी चाहिए।

स्कंदगुप्त : देवसेना! बन्धुवर्मा की भी तो यही इच्छा थी।

देवसेना : परन्तु, क्षमा हो सम्राट! उस समय आप विजया का स्वप्न देखते थे, अब प्रतिदान लेकर मैं उस महत्व को कलंकित न करूँगी। मैं आजीवन दासी बनी रहूँगी, परन्तु आपके प्राप्य में भाग न लूँगी।

स्कंदगुप्त : देवसेना! एकांत में, किसी कानन के कोने में, तुमहें देखता हुआ जीवन व्यतीत करूँगा। साम्राज्य की इच्छा-एक बार कह दो।

देवसेना : तब तो और भी नहीं। मालव का महत्त्व तो रहेगा ही, परन्तु उसका उद्देश्य भी सफल होना चाहिए। आपको अकर्मण्य बनाने के लिए देवसेना जीवित न रहेगी। सम्राट, क्षमा हो। इस हृदय में....आह! कहना ही पड़ा, स्कंदगुप्त को छोड़कर न तो कोई दूसरा आया और न वह जाएगा। अभिमानी भक्त के समान निष्काम होकर मुझे उसी की उपासना करने दीजिए, उसे कामना के भँवर में फँसाकर कलुषित न कीजिए। नाथ! मैं आपकी ही हूँ, मैंने अपने को दे दिया है, अब उसके बदले कुछ लेना नहीं चाहती। (पैरों पर गिरती है।)

स्कंदगुप्त : (आँसू पोंछता हुआ)उठो देवसेना! तुम्हारी विजय हुई। आज से मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं कुमार-जीवन ही व्यतीत करूँगा। मेरी जननी की समाधि इसमें साक्षी है।

देवसेना : हैं, हैं, यह क्या किया?

स्कंदगुप्त : कल्याण का श्रीगणेश : यदि साम्राज्य का उद्धार कर सका, तो उसे पुरगुप्त के लिए निष्कंटक छोड़ जा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सकूँगा।

देवसेना : (नि:श्वास लेकर) देवव्रत! तुम्हारी जय हो। जाऊँ आर्य पर्णदत्त को लिवा लाऊँ।(प्रस्थान)

(विजया का प्रवेश)

विजया : इतना रक्तपात और इतनी ममता, इतना मोह---जैसे सरस्वती के शोणित जल में इन्दीवर का विकास। इसी कारण अब मैं भी मरती हूँ। मेरे स्कंद प्राणाधार!

स्कंदगुप्त : (घूमकर)यह कौन, इन्द्रजाल मंत्र? अरे विजया!

विजया : हाँ, मैं ही हूँ।

स्कंदगुप्त : तुम कैसे?

विजया : तुम्हारे लिए मेरे अन्तस्तल की आशा जीवित है।

स्कंदगुप्त : नहीं विजया! उस खेल को खेलने की इच्छा नहीं, यदि दूसरी बात हो तो कहो। उन बातों को रहने दो।

विजया : नहीं, मुझे कहने दो। (सिसकती हुई) मैं अब भी. . .

स्कंदगुप्त : चुप रहो विजया! यह मेरी आराधना की--तपस्या की भूमि है, इसे प्रवंचना से कलुषित न करो। तुमसे यदि स्वर्ग भी मिले, तो मैं उससे दूर रहना चाहता हूँ।

विजया : मेरे पास अभी दो रत्न-गृह छिपे हैं, जिससे सेना एकत्र करके तुम सहज ही उन हूणों को परास्त कर सकते हो।

स्कंदगुप्त : परन्तु, साम्राज्य के लिए मैं अपने को नहीं बेच सकता। विजया चली जाओ, इस निर्लज्ज प्रलोभन की आवश्यकता नहीं। यह प्रसंग यहीं तक. . .

विजया : मैंने देशवासियों को सन्नद्ध करने का संकल्प किया है, और भटार्क का संसर्ग छोड़ दिया है। तुम्हारी सेवा के उपयुक्त बनने का उद्योगकर रही हूँ। मैं मालव और सौराष्ट्र को तुम्हारे लिए स्वतन्त्र करा दूँगी,अर्थलोभी हूण-दस्युओं से उसे छुड़ा लेना मेरा काम हैं। केवल तुम स्वीकार कर लो।

स्कंदगुप्त : विजया! तुमने मुझे लोभी समझ लिया है? मैं सम्राट बनकर सिंहासन पर बैठने के लिए नहीं हूँ। शस्त्र-बल से शरीर देकर भी यदि हो सका, तो जन्म-भूमि का उद्धार कर लूँगा। सुख से लोभ से, मनुष्य के भयसे, मैं उत्कोच देकर क्रीत साम्राज्य नहीं चाहता।

विजया : क्या जीवन के प्रत्यक्ष सुखों से तुम्हें वितृष्णा हो गई है? आओ हमारे साथ बचे हुए जीवन का आन्नद लो।

स्कंदगुप्त : और असहाय दीनों को, राक्षशों के हाथ, उनके भाग्य पर छोड़ दूँ?

विजया : कोई दु:ख भोगने के लिए है, कोई सुख। फिर सबका बोझा अपने सिर पर लादकर क्यों व्यस्त होते हो?

स्कंदगुप्त : परन्तु, इस संसार का कोई उद्देश्य है। इसी पृथ्वी को स्वर्ग होना है, इसी पर देवताओं का निवास होगा, विश्व नियन्ता का ऐसा ही उद्देश्य मुझे विदित होता है। फिर उसकी इच्छा क्यों न पूर्ण करूँ, विजया। मैं कुछ नहीं हूँ, उसका अस्त्र हूँ--परमात्मा का अमोघ अस्त्र हूँ। मुझे उसके संकेत पर केवल अत्याचारियों के प्रति प्रेरित होना है। किसी से मेरी शत्रुता नहीं, क्योंकि मेरी निज की कोई इच्छा नहीं। देशव्यापी हलचल के भीतर कोई शक्ति कार्य कर रही है, पवित्र प्राकृतिक नियम अपनी रक्षा करने के लिए स्वयं सन्नद्ध है। मैं उसी ब्रह्मचक्र का एक. . .

विजया : रहने दो यह थोथा ज्ञान। प्रियतम! यह भरा हुआ यौवन और प्रेमी हृदय विलास के उपकरणों के साथ प्रस्तुत है। उन्मुक्त आकाश के नील-नीरद मण्डल में दो बिजलियों के समान क्रीड़ा करते-करते हम लोग तिरोहित हो जायँ। और उस क्रीड़ा में तीव्र आलोक हो जो हम लोगों के विलीन हो जाने पर भी जगत् की आँखों को थोड़े काल के लिए बन्द कर रक्खे। स्वर्ग की कल्पित अप्सराएँ और इश लोक के अनन्त पुण्य के भागी जीव भी जिस सुख को देखकर आश्चर्यचकित हों, वही मादक सुख, घोर आनन्द, विराट विनोद हम लोगों का आलिंगन करके धन्य हो जाय-

अगरु धूप की श्याम लहरियाँ उलझी हों इन अलकों से

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्याकुलता लाली के डोरे इधर फँसे हों पलकों से।
व्याकुल बिजली-सी तुम मचलो आर्द्र हृदय घनमाला से,
आँसू बरुनी से उलझे हों, अधर प्रेम के प्यालों से।
इस उदास मन की अभिलाषा अटकी रहे प्रलोभन से,
व्याकुलता सौ-सौ बल खाकर उलझ रही हो जीवन से।
छवि-प्रकाश-किरणें उलझे हों जीवन के भविष्य-तमसे,
ये लायेंगी रंग सुलालित होने दो कम्पन सम से।
इस आकुल जीवन की घड़ियाँ इन निष्ठुर आघातों से,
बजा करें अगणित यन्त्रों से सुख-दुख के अनुपातों से।
उखड़ी साँसें उछल रही हों धड़कन से कुछ परिमित हो,
अनुनय उलझ रहा हो तीखे तिरस्कार से लांछित हो।
यह दुर्बल दीनता रहे उलझी फिर चाहो ठुकराओ,
निर्दयता के इन चरणों से, जिसमें तुम भी सुख पाओ।

(स्कंद के पैरों को पकड़ती है।)

स्कंदगुप्त : (पैर छुड़ाकर) विजया! पिशाची। हट जा, नहीं जानती--मैंने आजीवन कौमार-व्रत की प्रतिज्ञा की है?

विजया : तो क्या मैं फिर हारी?

(भटार्क का प्रवेश)

भटार्क : निर्लज्ज हारकर भी नहीं हारता, मरकर भी नहीं मरता।

विजया : कौन, भटार्क?

भटार्क : हाँ, तेरा पति भटार्क। दुश्चरित्र! सुना था कि तुझे देशसेवा करके पवित्र होने का अवसर मिला है, परन्तु हिंस्त्र पशु कभी एकादशी का व्रत करेगा--कभी पिशाची शान्तिपाठ पढ़ेगी?

विजया : (सिर नीचा करके) अपराध हुआ।

भटार्क : फिर भी किसके साथ? जिसके ऊपर अत्याचार करके मैं भी लज्जित हूँ, जिससे क्षमायाचना करने मैं आ रहा था। नीच स्त्री!

विजया : घोर अपमान, तो बस. . . . .

(छुरी निकालकर आत्महत्या करती है।)

स्कंदगुप्त : भटार्क! इसके शवका संस्कार करो।

भटार्क : देव! मेरी भी लीला समाप्त है।

(छुरी निकालकर अपने को मारना चाहता है, स्कंदगुप्त हाथ पकड़ लेता है।)

स्कंदगुप्त : तुम वीर हो, इस समय देश को वीरों की आवश्यकता है। तुम्हारा यह प्रायश्चित नहीं। रणभूमि में प्राण देकर जननी जन्मभूमि पर उपकार करो। भटार्क! यदि कोई साथी न मिला तो साम्राज्य के लिए नहीं--जन्मभूमि के उद्धार के लिए मैं अकेला युद्ध करूँगा और तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी होगी, पुरगुप्त को सिंहासन देकर मैं वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करूँगा। आत्महत्या के लिए जो अस्त्र तुमने ग्रहण किया है, उसे शत्रु के लिए सुरक्षित रक्खो।

भटार्क : (स्कंदगुप्त के सामने घुटने टेककर) 'श्री स्कंदगुप्त विक्रमादित्य की जय हो।' जो आज्ञा होगी, वही करूँगा।

(प्रस्थान)

(पट-परिवर्तन)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

म्लान मुरझाया हुआ, मलिन **अवसाद** थकावट, विशाद **राका** चाँदनी, रात्रि **निखलम्ब** निराश्रय, आधार रहित **प्रतिश्रुत** विनत होना, मंजूर **शोणित** रक्त **इन्दीवर** कमल **सन्नद्ध** तैयार **उत्कोच** घूस, रिश्वत **अलक** केश, लट

मुहावरे

आँसू पोछना दिलासा देना **श्रीगणेश करना** शुरुआत करना **सिर नीचा करना** लज्जित होना

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) देवसेना कौन थी ?
(2) विजया का स्कंदगुप्त के पास आने का क्या उद्देश्य था ?
(3) स्कंदप्त विजया से क्यों दूर रहना चाहता था ?
(4) विजया स्कंदगुप्त को पाने के लिए क्या प्रलोभन देती है ?
(5) स्कंदगुप्त महादेवी की समाधि पर उनसे किसलिए क्षमा-याचना करता है ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) देवसेना ने स्कंदगुप्त का ममत्व क्यों अस्वीकार किया ?
(2) स्कंदगुप्त ने विजया का प्रणय-निवेदन क्यों अस्वीकार किया ?
(3) विजया ने आत्महत्या क्यों की ?
(4) भटार्क को आत्महत्या से रोकने का स्कंदगुप्त ने क्या कारण बताया ?
(5) स्कंदगुप्त की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(1) 'रसनिधि में जीवन रहा, मिटी न फिर भी प्यास
मुँह खोले मुक्तामयी सीपी स्वाती आस'!
(2) 'कोई दु:ख भोगने के लिए है, कोई सु:ख। फिर सबका बोझा अपने सिर पर लादकर क्यों व्यस्त होते हो।'

4. मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग लिखिए :

श्रीगणेश करना, आँसू पोछना, सिर नीचा करना

संधि-विच्छेद कीजिए :

आशीर्वाद, निरवलम्ब, व्यतीत, निष्काम, उद्धार, परमात्मा

योग्यता-विस्तार

- प्रस्तुत नाट्यांश का मंचन कीजिए।
- 'स्कंदगुप्त' नाटक पढ़िए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

19 बादल-राग

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(जन्म : सन् 1897 ई; निधन : सन् 1961 ई.)

छायावादी कवि निराला का जन्म बंगाल के मेदनीपुर जिले के महिषादल में हुआ था। निराला का व्यक्तित्त्व सचमुच निराला है। विद्वानों ने उन्हें –'काव्य का देवता : निराला' और 'महाप्राण निराला' जैसे विशेषणों से विभूषित किया है। आजीवन अनेक अभावों से जूझने वाला, किंतु कभी न झुकने वाला यह स्वाभिमानी कवि एक निराली मस्ती और फक्कड़पन के साथ जीया। एक के बाद एक-पिता, पत्नी और पुत्री के अकाल अवसान के आघातों ने कवि को हिलाकर रख दिया किंतु हार नहीं मानी ('दु:ख ही जीवन की कथा रही' जैसी पंक्तियों में फूट पड़ने वाला उद्‌गार इसका प्रमाण है।

प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य के चित्रण में निराला अन्य छायावादी कवियों से अलग मालूम पड़ते हैं। उनकी कविता का मूल स्वर विद्रोह का रहा है। उन्होंने रूढ़ियों और परंपराओं को इस कदर तोड़ा कि स्वयं भी अपनी ही परंपरा में न बँध सके। छायावादी होते हुए भी उन्होंने ही सबसे पहले छायावाद का अतिक्रमणकर प्रगतिशील एवं प्रयोगशील दृष्टि का परिचय दिया। छंद के बंधन तोड़कर मुक्त छंद का प्रवर्तन किया। माधुर्य और ओज दोनों की अभिव्यक्ति में कवि को कुशलता प्राप्त है। भाषा तत्समयुक्त होते हुए भी प्रवाहमयी है। अनामिका, परिमल,गीतिका, तुलसीदास, वेला, नये पत्ते, कुकुरमत्ता उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं। गद्य-साहित्य के अंतर्गत निरालाजी ने अप्सरा, अलका, निरूपमा, कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा जैसे उपन्यास एवं लिली, सखी, सुकुल की बीबी आदि कहानी-संग्रहों की रचना की।

'बादलराग' में कवि ने बादल के विविध रूप-रंगों एवं ध्वनियों को लय के साथ स्वरबद्ध किया है। झूम-झूम कर गरज-गरज कर बरसते बादलों द्वारा धरती को रसधार से सिंचित कर देना, नदी को कल-कल एवं झरनों को झर-झर का मधुर स्वर देना कवि को अभिभूत कर देता है। प्रकृति की इस मनोरम्य लीला को देखकर कवि का मन-मयूर नाच उठता है और वह गगन के उस छोर तक पहुँचना चाहता है जहाँ बादल-राग का और अधिक प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सके। अनुभूति की रागात्मकता एवं स्वर की लयात्मकता इस कविता की अपनी विशेषता है। स्वच्छंद बादलों का अमर राग कवि को उन्मुक्त रूप से विचरण करने को विकल कर रहा है, ऐसा सहज ही प्रतीत होता है।

झूम-झूम मृदु गरज-गरज घन घोर!
राग-अमर! अम्बर में भर निज रोर!
झर झर झर निर्झर-गिरि-सर में
घर, मरु, तरु-मर्मर,सागर में,
सरित-तड़ित-गति-चकित पवन में,
मन में, विजन-गहन-कानन में,
आनन-आनन में, रव-घोर-कठोर-
राग-अमर! अम्बर में भर निज रोर!

अरे वर्ष के हर्ष!
बरस तू बरस-बरस रसधार!
पार ले चल तू मुझको,
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन-गौरव-संसार!
उथल-पुथल कर हृदय-
मचा हलचल-
चल रे चल,-
मेरे पागल बादल!

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

धँसता दलदल,
हँसता है नद खल्-खल्
बहता, कहता कुलकुल कलकल कलकल।
देख-देख नाचता हृदय
बहने को महाविकल-बेकल,
इस मरोर से-इसी शोर से-
सघन घोर गुरु गहन रोर से
मुझे-गगन का दिखा सघन वह छोर!
राग अमर! अम्बर में भर निज रोर!

शब्दार्थ-टिप्पणी

रोर कोलाहल, शोर **मरू** रेगिस्तान **तरु-मर्मर** पत्तों की सरसराहट **तड़ित-गति** बिजली की-सी तेज गति **विजन** निर्जन **आनन** मुँह **रव** आवाज **नद** बड़ी नदी **महाविकल** बहुत बेचैन **मरोर** ऐंठन **गुरु** भारी

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) कवि ने बादल-राग को अमर-राग क्यों कहा है?

(2) कवि बादल के पागल रूप का आह्वान क्यों करता है?

2. उत्तर लिखिए :

(1) कवि बादल से किन-किन को जलमय करने का आग्रह करता है?

(2) कवि बादल को 'अरे वर्ष के हर्ष' रूप में क्यों संबोधित करता है?

(3) कविता का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

(4) निम्नलिखित पंक्तियों भाव-सौंन्दर्य स्पष्ट कीजिए:

उथल-पुथल कर हृदय-
मचा हलचल-
चल रे चल,-
मेरे पागल बादल!
धँसता दलदल,
हँसता है नद खल्-खल्
बहता, कहता कुलकुल कलकल कलकल।

योग्यता-विस्तार

- सुमित्रानंदन पंत की 'बादल' और केदारनाथ सिंह की 'बादल ओ' कविता खोजकर पढ़िए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

20 राजेन्द्र बाबू

महादेवी वर्मा

(जन्म : सन् 1907 ई.; निधन : सन् 1987 ई.)

महादेवी वर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। उनकी शिक्षा प्रयाग में हुई और प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राधानाचार्या रहीं। उनकी कविता में छायावाद और रहस्यवाद दोनों घुल-मिल गये हैं। बौद्धदर्शन के दुखवाद से प्रभावित होने केकारण मधुमय वेदना और करुणा की अंत: सलिला उनकी रचनाओं में निरंतर प्रवाहित होती रहती है। 'नीहार', 'रश्मि, 'नीरजा, 'सांध्यगीत, दीपशिखा आदि उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं। 'यामा' के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

एक अच्छी कवयित्री होने के साथ-साथ महादेवी एक सफल गद्यकार भी हैं। अपने रेखाचित्रों में उन्होंने समाज के दीन-हीन, शोषित-उपेक्षित लोगों के प्रति गहरी संवेदनशीलता का परिचय दिया है। अपने जीवन पथ पर मिलने वाले साथी-सर्जकों एवं महानुभावों की अंतरंग स्मृतियों को उन्होंने अपने संस्मरणों में बड़ी सहृदयता से सँजोया है। उनकी गद्य रचनाएँ उनकी कविता से किसी भी रूप में कम नहीं हैं। 'अतीत के चल-चित्र,' 'स्मृति की रेखाएँ,''पथ के साथी,''मेरा परिवार' उनकी सफल गद्य-कृतियाँ हैं। उनके गद्य में निहित सरलता-सहजता उसकी सबसे बड़ी पहचान है।

प्रस्तुत संस्मरण में महादेवीजी ने भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्रप्रसादजी के निकट सानिध्य में बिताए दिनों की स्मृतियों को बड़ी आत्मीयता के साथ चित्रांकित किया है। राजेन्द्रबाबू के बाह्य और अंतरंग व्यक्तित्व के विविध बिन्दुओं को शब्दों में साकार कर दिखाया है। उनके जीवन की सादगी-सरलता, संयम और शालीनता का बड़ा प्रभावशाली वर्णन इस संस्मरण में हुआ है। राजेन्द्रबाबू के साथ-साथ उनकी पत्नी की सरलता-सहजता को भी रेखांकित किया गया है। लेखिका के मन में सहज ही एक प्रश्न उभरता है कि जीवन मूल्यों के पारखी ऐसे अजातशत्रु व्यक्तित्व का निर्माण करने वाला साँचा क्या अब नहीं रहा, जिससे ऐसे महापुरुष ढलते थे। यह प्रश्न आज के संदर्भ में बहुत सूचक है।

राजेन्द्र बाबू को मैंने पहले-पहले एक सर्वथा गद्यात्मक वातावरण में ही देखा था, परंन्तु उस गद्य ने कितने भावात्मक क्षणों की अटूट माला गूँथी है, यह बताना कठिन है ।

मैं प्रयाग में बी.ए. की विद्यार्थिनी थी और शीतावकाश में घर भागलपुर जा रही थी। पटना में भाई के मिलने की बात थी, अत: स्टेशन पर ही प्रतीक्षा के कुछ घंटे व्यतीत करने पड़े।

स्टेशन के एक ओर तीन पैर वाली बेंच पर देहातियों की वेशभूषा में परन्तु कुछ नागरिक जनों से घिरे सज्जन जो विराजमान थे, उनकी ओर मेरी विहंगम दृष्टि जाकर लौट आई। वास्तव में भाई से यह जानने के उपरान्त कि उक्त सज्जन ही राजेन्द्र बाबू हैं, मुझे अभिवादन का ध्यान आया।

पहली दृष्टि में ही जो आकृति स्मृति में अंकित हो गई थी, उसमें इतने वर्षों ने न कोई नई रेखा जोड़ी है और न कोई रंग भरा है।

सत्य में से जैसे कुछ घटाना या जोड़ना सम्भव नहीं रहता वैसे ही सच्चे व्यक्तित्व में भी कुछ जोड़ना-घटाना सम्भव नहीं है।

काले घने पर छोटे कटे हुए बाल, चौड़ा मुख, चौड़ा माथा, घनी भृकुटियों के नीचे बड़ी आँखें , मुख के अनुपात में कुछ भारी नाक, कुछ गोलाई लिए चौड़ी ठुड्डी, कुछ मोटे पर सुडौल ओंठ, श्यामल झाई देता हुआ गेहुआँ वर्ण, बड़ी-बड़ी ग्रामिणों जैसी मूंछे जो ऊपर के ओंठ को ही नहीं ढँक लेती थीं नीचे के ओंठ पर भी रोमिल आवरण डाले हुए थीं। हाथ, पैर, शरीर सब में लम्बाई की ऐसी विशेषता थी जो दृष्टि को अनायास आकर्षित कर लेती थी।

उनकी वेशभूषा की ग्रामीणता तो और भी दृष्टि को उलझा लेती थी। खादी की मोटी धोती ऐसा फेंटा देकर बाँधी गई थी कि एक ओर दाहिने पैर पर घुटना छूती थी और दूसरी ओर बायें पैर की पिंडली। मोटे, खुरदुरे, काले बन्द गले के कोट में ऊपर का भाग बटन टूट जाने के कारण खुला था और घुटने के नीचे का बटनों से बन्द था। सर्दी के दिनों के कारण पैरों में मोजे जूते तो थे, परंन्तु कोट और धोती के समान उनमें भी विचित्र स्वच्छन्दतावाद था। एक मोजा जूते पर उतर आया था और दूसरा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

टखने पर घेरा बना रहा था। मिट्टी की पर्त से न जूतों के रंग का पता चलता था, न रूप का । गाँधी टोपी की स्थिति तो और भी विचित्र थी। उसकी आगे की नोक बाईं भौंह पर खिसक आई थी और टोपी की कोर माथे पर पट्टी की तरह लिपटी हुई थी। देखकर लगता था मानो वे किसी हड़बड़ी में चलते-चलते कपड़े पहनते आये हैं, अत:जो जहाँ जिस स्थिति में अटक गया, वह वहीं उसी स्थिति में लटका रह गया।

उनकी मुखाकृति देखकर अनुभव होता था , मानो इसे पहले कहीं देखा है। अनेक व्यक्तियों ने उन्हें प्रथम बार देखकर भी, ऐसा ही अनुभव किया। बहुत सोचने के उपरान्त उस प्रकार की अनुभूति का कारण समझ में आ सका।

राजेन्द्र बाबू की मुखाकृति ही नहीं, उनके शरीर के सम्पूर्ण गठन में एक सामान्य भारतीय जन की आकृति और गठन की छाया थी, अत:उन्हें देखने वाले को कोई-न-कोई आकृति या व्यक्ति स्मरण हो आता था और वह अनुभव करने लगता था कि इस प्रकार के व्यक्ति को पहले भी कहीं देखा है। आकृति तथा वेशभूषा के समान ही वे अपने स्वभाव और रहन-सहन में सामान्य भारतीय या भारतीय कृषक का ही प्रतिनिधित्व करते थे। प्रतिभा और बुद्धि की विशिष्टता के साथ-साथ उन्हें जो गम्भीर संवेदना प्राप्त हुई थी, वही उनकी सामान्यता को गरिमा प्रदान करती थी। व्यापकता ही सामान्यता की शपथ है, परन्तु व्यापकता संवेदना की गहराई में स्थिति रखती है।

भाई जवाहरलाल जी की अस्तव्यस्तता भी व्यवस्था से निर्मित होती थी, किन्तु राजेन्द्र बाबू की सारी व्यवस्था ही अस्तव्यस्तता का पर्याय थी। दूसरे यदि जवाहरलाल जी की अस्तव्यस्तता देख लें तो उन्हें बुरा नहीं लगता था, परन्तु अपनी अस्तव्यस्तता के प्रकट होने पर राजेन्द्र बाबू भूल करने वाले बालक के समान संकुचित हो जाते थे। एक दिन यदि दोनों पैरों में भिन्न रंग के मोजे पहने किसी ने उन्हें देख लिया तो उनका संकुचित हो उठना अनिवार्य था। परन्तु दूसरे दिन जब स्वयं सावधानी से रंग का मिलान करके पहनते तो पहले से भी अधिक अनमिल रंगों के पहन लेते।

उनकी वेश-भूषा की अस्तव्यस्तता के साथ उनके निजी सचिव और सहचर भाई चक्रधर जी का स्मरण अनायास हो आता है। जब मोजों में से पाँचों उँगलियाँ बाहर निकलने लगती, जब जूते के तले पैर के तलवों के गवाक्ष बनने लगते, जब धोती, कुरते, कोट आदि का खद्दर अपने मूल ताने-बाने में बदलने लगता, तब चक्रधर इस पुरातन सज्जा को अपने लिए सहेज लेते। उन्होंने वर्षों तक इसी प्रकार राजेन्द्र बाबू के पुराने परिधान से अपने आपको प्रसाधित कर कृतार्थता का अनुभव किया था। मैंने ऐसे गुरु-शिष्य या स्वामी-सेवक फिर अब तक नहीं देखे।

राजेन्द्र बाबू के निकट सम्पर्क में आने का अवसर मुझे सन् 1937 में मिला जब वे कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में महिला विद्यापीठ महाविद्यालय के भवन का शिलान्यास करने प्रयाग आये। उनसे ज्ञात हुआ कि उनकी 15-16 पौत्रियाँ हैं, जिनकी पढ़ाई की व्यवस्था नहीं हो पाई है। मैं यदि अपने छात्रावास में रख कर उन्हें विद्यापीठ की परीक्षाओं में बैठा सकूँ, तो उन्हें शीघ्र कुछ विद्या प्राप्त हो सकेगी।

पहले बड़ी फिर छोटी फिर उनसे छोटी के क्रम से बालिकायें मेरे संरक्षण में आ गईं और उन्हें देखने प्राय: उनकी दादी और कभी-कभी दादा भी प्रयाग आते रहे। तभी राजेन्द्र बाबू की सहधर्मिणी के निकट सम्पर्क में आने का अवसर मिला। वे सच्चे अर्थ में धरती की पुत्री थीं, साध्वी, सरल, क्षमामयी, सबके प्रति ममतालु और असंख्य सम्बन्धों की सूत्रधारिणी। ससुराल में उन्होंने बालिका-वधू के रूप में पदार्पण किया था। सम्भ्रान्त जमींदार परिवार की परम्परा के अनुसार उन्हें घंटों सिर नीचा करके एकासन बैठना पड़ता था, परिणामत: उनकी रीढ़ की हड्डी इस प्रकार झुकी कि युवती होकर भी वे सीधी खड़ी नहीं हो पाईं।

राजेन्द्र बाबू ने मुझे बताया कि बालिकाओं की दादी किसी का छुआ नहीं खातीं, केवल ब्राह्मण रसोइया अपवाद है। छात्रावास का रसोइया महाराज उनकी थाली परोस देगा। कुछ अन्यथा न मानना, कहकर वे संकुचित से हो गए।

बिहार के जमींदार परिवार की बहू और स्वातन्त्र्य युद्ध के अपराजेय सेनानी की पत्नी होने का न उन्हें कभी अहंकार हुआ और न उनमें कोई मानसिक ग्रन्थि ही बनी। छात्रावास की सभी बालिकाओं तथा नौकर-चाकरों का उन्हें समान रूप से ध्यान रहता था। एक दिन या कुछ घंटों ठहरने पर भी वे सबको बुला-बुलाकर उनका तथा उनके परिवार का कुशल-मंगल पूछना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

न भूलती थीं। घर से अपनी पौत्रियों के लिए लाए मिष्ठान में से प्राय: सभी बँट जाता था। देखने वाला यह जान ही नहीं सकता था कि वह सबकी इया, अइया अर्थात् दादी नहीं हैं।

गंगा-स्नान के लिए तो मुझे उनके साथ प्राय: जाना पड़ता था। उस दिन संगम पर जितना दूध मिलता, जितने फूल दिखाई देते सब उनकी ओर से ही गंगा-यमुना की भेंट हो जाते। कोलाहल करते हुए पंड़ों की पूरी पल्टन उन्हें घेर लेती थी, पर वे बिना विचलित हुए शान्तभाव से प्रत्येक को उसका प्राप्य देती चलती थीं।

बालिकाओं के सम्बन्ध में राजेन्द्र बाबू का स्पष्ट निर्देश था कि वे सामान्य बालिकाओं के समान बहुत सादगी से और संयम से रहें। वे खादी के कपड़े पहनतीं थीं, जिन्हें वे स्वयं ही धो लेती थीं। उनके साबुन तेल आदि का व्यय भी सीमित था। कमरे की सफाई, झाड़-पोंछ, गुरुजनों की सेवा आदि भी उनके अध्ययन के आवश्यक अंग थे।

उस समय संघर्ष के सैनिकों का गन्तव्य जेल ही रहती थी। अत: प्राय: किसी की पत्नी, किसी की बहिन, किसी की बेटी विद्यापीठ के छात्रावास में आ उपस्थित होती थी। स्वतन्त्र होने के उपरान्त उनमें से कुछ दिल्ली चली गईं और कुछ विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी के विद्यालयों में भर्ती हो गईं। केवल राजेन्द्र बाबू अपवाद रहे। उनके भारत के प्रथम राष्ट्रपति हो जाने के उपरान्त मुझे स्वयं उनकी पौत्रियों के सम्बन्ध में चिन्ता हुई। उनका स्पष्ट उत्तर मिला, "महादेवी बहन, दिल्ली मेरी नहीं है राष्ट्रपति भवन मेरा नहीं है। अहंकार से मेरी पोतियों का दिमाग खराब न हो जावे, तुम केवल इसकी चिन्ता करो। वे जैसे रहती आई हैं, उसी प्रकार रहेंगी। कर्तव्य विलास नहीं, कर्मनिष्ठा है।"

उनकी सहधर्मिणी में भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ। जब राष्ट्रपति भवन में उनके कमरे से संलग्न रसोई-घर बन गया तब वे दिल्ली गईं और अन्त तक स्वयं भोजन बनाकर सामान्य भारतीय गृहिणी के समान पति, परिवार तथा परिजनों को खिलाने के उपरान्त स्वयं अन्न ग्रहण करती थीं।

उस विशाल भवन में यदि अपने अद्‌भुत आतिथ्य की बात न कहूँ तो कथा अधूरी रह जायगी। बालिकाओं की दादी ने मुझे दिल्ली आने का विशेष निमंत्रण तो दिया ही, साथ ही, प्रयाग से सिरकी के बने एक दर्जन सूप लाने का भी आदेश दिया। उन्हों ने बार-बार आग्रह किया कि मैं उनके लिए इतना कष्ट अवश्य उठाऊँ, क्योंकि फटकने, पछोरने के लिए सिरकी के सूप बहुत अच्छे होते हैं पर कोई उन्हें लाने वाला ही नहीं मिलता।

प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बारह सूपों के टाँगने पर जो दृश्य उपस्थित हुआ, उससे भी अधिक विचित्र दृश्य तब प्रत्यक्ष हुआ; जब राष्ट्रपति-भवन से आई बड़ी कार पर यह उपहार लादा गया। राष्ट्रपति-भवन के हर द्वार पर सलाम ठोंकने वाले सिपाहियों की आँखें विस्मय से खुली रह हईं। ऐसी भेंट लेकर कोई अतिथि न कभी वहाँ पहुँचा था, न पहुँचेगा। पर भवन की तत्कालीन स्वामिनी ने मुझे अंक में भर लिया।

राजेन्द्र बाबू तथा उनकी सहधर्मिणी सप्ताह में एक दिन अन्न नहीं ग्रहण करते थे। संयोग से मैं उनके उपवास के दिन ही पहुँची, अत: उनकी यह जिज्ञासा स्वाभाविक थी कि मैं कैसा भोजन पसन्द करूँगी। उपवास में भी आतिथेय का साथ देना उचित समझकर मैंने निरन्न भोजन की ही इच्छा प्रकट की। फलाहार के साथ उत्तम खाद्य पदार्थों की कल्पना स्वाभाविक रहती है। सामान्यत: हमारा उपवास अन्य दिनों के भोजन की अपेक्षा अधिक व्ययसाध्य हो जाता है, क्योंकि उस दिन हम भाँति-भाँति के फल, मेवे, मिष्ठान आदि एकत्र कर लेते हैं।

मुझे आज भी वह सन्ध्या नहीं भूलती, जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति को मैंने सामान्य आसन पर बैठ कर दिन भर के उपवास के उपरान्त केवल कुछ उबले आलू खाकर पारायण करते देखा। मुझे भी वही खाते देखकर उनकी दृष्टि में सन्तोष ओर ओंठों में बालकों जैसी सरल हँसी छलक उठी।

जीवन मूल्यों की परख करने वाली दृष्टि के कारण उन्हें देशरत्न की उपाधि मिली और मन की सरल स्वच्छता ने उन्हें अजातशत्रु बना दिया। अनेक बार प्रश्न उठता है, क्या वह साँचा टूट गया जिसमें ऐसे कठिन कोमल चरित्र ढलते थे!

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

शीतावकाश सर्दी की छुट्टियाँ **देहाती** ग्रामीण **विहंगम** पक्षीय दृष्टि **सुडौल** सुंदर आकार का **श्यामल** कालापन लिए हुए **फेंटा** कमर का घेरा, धोती का वह भाग जो कमर के घेरे पर बाँधा गया हो **स्वच्छन्दतावाद** बेधड़क,मनमाना **मुखाकृति** मुख का आकार **अनमिल** बेमेल **गवाक्ष** छोटी खिड़की, झरोखा **परिधान** पहनावा, पोशाक **प्रसाधित** शृंगार **कृतार्थता** धन्यता **सहधर्मिणी** पत्नी, भार्या **सूत्रधारिणी** संचालन करने वाला **पदार्पण** आगमन **सम्भ्रान्त** प्रतिष्ठित **अपराजेय** जो पराजित न हो, जो अभी हारा न हो **कोलाहल** शोरगुल **पल्टन** सेना, दल, समूह **गन्तव्य** लक्ष्य, स्थल **संलग्न** जुड़ा हुआ **आतिथ्य** मेहमान नवाजी **सिरकी** सरकंडा **सूप** अनाज फ़टकने का साज **फ़टकना-पछोरना** अन्न आदि को सूप में रखकर और उसे फ़टका देकर साफ़ करना, उलट-पलट परीक्षा करना **निरन्न** फ़लाहार **पारायण** किसी धर्म का नियमित रूप से नित्यपाठ जो आधोपांत किया जाय

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) महादेवी वर्मा शीत अवकाश पर कहाँ जा रही थीं ?
(2) राजेन्द्र बाबू की वेशभूषा कैसी थी ?
(3) राजेन्द्र बाबू प्रयाग क्यों गये थे ?
(4) राजेन्द्र बाबू ने अपने पौत्रियों को सम्मान व सादगी से रहने के लिए क्यों कहाँ ?
(5) महादेवी वर्मा उपवास के दिन राजेन्द्र बाबू के घर गईं तो वहाँ क्या हुआ था ?
(6) बालिकाओं के सम्बन्ध में राजेन्द्र बाबू ने क्या स्पष्ट निर्देश दिये थे ?

2. उत्तर लिखिए

(1) राजेन्द्र बाबू का चरित्र-चित्रण कीजिए।
(2) भारत के राष्ट्रपति होने के बावजूद राजेन्द्र बाबू का जीवन एक सामान्य व्यक्ति जैसा था, समझाइए।

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(1) 'राजेन्द्र बाबू की मुखाकृति ही नहीं,उनके शरीर के संपूर्ण गठन में एक सामान्य भारतीय जन की आकृति और गठन की छाया थी।'
(2) 'राजेन्द्र बाबू की सारी व्यवस्था ही अस्तव्यस्तता का पर्याय थी।'
(3) 'जीवन मूल्यों की परख करने वाली दृष्टि के कारण उन्हें देशरत्न की उपाधि मिली और मन की सरल स्वच्छता ने उन्हें अजातशत्रु बना दिया।'

योग्यता- विस्तार

- राजेन्द्र बाबू के जीवन पर किसी और साहित्यकार द्वारा लिखे हुए संस्मरण को ढूँढकर पढ़िए और समझिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

21 लहरों का निमंत्रण

हरिवंश राय 'बच्चन'

(जन्म : सन् 1907 ई; निधन : सन् 2002 ई.)

बच्चनजी का जन्म प्रयाग के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के अध्यापक के रूप में काम किया और अंग्रेजी साहित्य में कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। छायावादोत्तर युग में 'मधुशाला'के प्रकाशन से उन्हें अपूर्व ख्याति प्राप्त हुई और हालावादी कवि के रूप में उनकी पहचान बनी। जीवन के अनेक उतार-चढ़ावों के बीच उनकी कविता का स्वर बदलता रहा। 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशानिमंत्रण', 'एकांत संगीत','बुद्ध और नाचघर' तथा 'बंगाल का काल' उनकी मुख्य काव्य कृतियाँ हैं। गद्य के अंतर्गत उन्होंने उत्कृष्ट आत्मकथाएँ लिखीं। 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर', 'बसेरे से दूर' तथा 'दशद्वार से सोपान तक' जैसी आत्मकथाओं में उनके गद्य-लेखन की सृजनात्मकता के दर्शन होते हैं। बच्चनजी ने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी के सलाहकार के रूप में महत्वपूर्ण कार्य किया। वे राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे।

'लहरों का निमंत्रण' कवि के आस्था एवं विश्वास को व्यक्त करने वाली कविता है। इसमें कवि ने समुद्र और उसकी तूफानी लहरों के माध्यम से संसार की हर चुनौती से टकराने के अपने दृढ़-संकल्प को प्रकट किया है। विश्व-वेदना से मुँह फेरकर चैन की नींद सोनेवाली संस्कृति उसे स्वीकार्य नहीं है। कवि का संवेदन-शील मन समस्याओं से संघर्ष करने के लिए कितना आतुर है। इसका परिचय कविता में मिलता है। कवि के विचार से 'लहरें' प्रतिकूल परिस्थितियों का प्रतीक हैं और 'निमंत्रण' चुनौती के स्वीकार का।

तीर पर कैसे रुकूँ मैं,
आज लहरों में निमन्त्रण।
रात का अन्तिम प्रहर है,
झिलमिलाते हैं सितारे,
वक्ष पर युग बाहु बाँधे,
मैं खड़ा सागर किनारे,
वेगु से बहता प्रभंजन
केश-पट मेरे उड़ाता,
शून्य में भरता उदधि
उर की रहस्यमयी पुकारें,
इन पुकारों की प्रतिध्वनि
हो रही मेरे हृदय में,
है प्रतिच्छायित जहाँ पर
सिंधु का हिल्लोल-कंपन!
तीर पर कैसे रुकूँ मैं,
आज लहरों में निमन्त्रण।
विश्व की सम्पूर्ण पीड़ा
सम्मिलित हो रो रही है,
शुष्क पृथ्वी आँसुओं से
पाँव अपने धो रही है,
इस धरा पर, जो बसी दुनिया
यही अनुरूप उसके-
इस व्यथा से हो न विचलित
नींद सुख की सो रही है,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

क्यों धरिण अब तक न गलकर
लीन जलनिधि में गई हो ?
देखते क्यों नेत्र कवि के
भूमि पर जड़-तुल्य जीवन ?
तीर पर कैसे रुकूँ मैं,
आज लहरों में निमन्त्रण।

शब्दार्थ-टिप्पणी

तीर किनारा, तट **प्रभंजन** हवा, आँधी **उदधि** समुद्र **धरणि** धरती **प्रतिध्वनि** ध्वनि की लौटकर आई ध्वनि

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) कवि सागर किनारे किस समय खड़ा है ?
(2) हृदय में किसकी प्रतिध्वनि हो रही है ?
(3) पृथ्वी के आँसू किसके प्रतिरूप हैं ?
(4) दुनिया इस व्यथा से विचलित न होकर क्या कर रही है ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) 'लहरों का निमंत्रण' कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।
(2) कविता में व्यक्त सामाजिक पीड़ा को स्पष्ट कीजिए।

योग्यता-विस्तार

- नदी या समुद्र से संबंधित किसी अन्य कवि की कविता खोजकर पढ़िए और समझिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

22 बड़ी दादी की बड़ी बात

कमलेश्वर

(जन्म : सन् 1932 ई.; निधन : सन् 2007 ई.)

कमलेश्वर का जन्म उत्तरप्रदेश के मैनपुरी में हुआ था। एक सफल कथाकार होने के साथ-साथ एक प्रबुद्ध पत्रकार एवं संपादक के रूप में उनका योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। 'नई कहानियाँ,' 'सारिका,' कथायात्रा जैसी चर्चित पत्रिकाओं का सफल संपादन किया। उन्होंने दूरदर्शन के लिए अनेक वृत्तचित्रों का लेखन, निर्देशन और निर्माण किया। 'चंद्रकांता,' 'बेताल पच्चसी' जैसी दूरदर्शन-शृंखलाओं का लेखन कार्य किया।

उनके प्रमुख उपन्यास हैं-'लौटे हुए मुसाफिर', 'तीसरा आदमी', 'डाक बंगला', 'काली आँधी', 'आगामी अतीत', 'सुबह, दोपहर, शाम', 'कितने पाकिस्तान', कहानी संग्रहों में 'जार्ज पंचम की नाक', 'माँस का दरिया', 'इतने अच्छे दिन', 'कोहरा', 'कथा प्रस्थान' आदि मुख्य हैं। 'नई कहानी की भूमिका' उनका महत्त्वपूर्ण समीक्षा ग्रंथ है। उनके बेहद लोकप्रिय आत्म परक संस्मरण हैं- 'जो मैंने जिया', 'यादों के चिराग' और 'जलती हुई नदी'। इसके अलावा उन्होंने अनेक ग्रंथों का लेखन-संपादन किया। सौ से अधिक हिन्दी-फिल्म कथाएँ लिखीं। 'उन्हें साहित्य अकादमी' एवं 'पद्मभूषण' सम्मान भी प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत उपन्यास-अंश 'सुबह....दोपहर...शाम' नामक उपन्यास से लिया गया है। लेखक के अनुसार आजादी के आंदोलन के दौरान केवल बड़े-बड़े नेता ही देश के लिए नहीं लड़ रहे थे बल्कि दूर-दराज छोटे-छोटे गाँव के लोग भी अपने-अपने स्तर पर त्याग-बलिदान कर इस लड़ाई में अपना योगदान कर रहे थे। बड़े बाबा सन् 1857 की लड़ाई में शहीद हो गये थे, इसका स्वाभिमानपूर्वक स्मरण कर बड़ी दादी अपने पूरे परिवार को उसी मार्ग पर चलाना चाहती है। वह जसवंत को अंग्रेजों की गुलामी करने से रोकना चाहती है। बड़ी दादी अपनी बेटी कलावती को उस रास्ते पर चलता न देख उसे हमेशा के लिए भुला दिया था। बड़ी दादी में देशप्रेम तो कूट-कूट कर भरा ही है, उसे अपनी मिट्टी , प्रकृति, पशु-पक्षी से तथा अपने परिवार से बेहद प्रेम और लगाव हैं। उनके विचार भी ऊँचे हैं बातें भी बड़ी।

बस्ती वालों को आँधियों की याद तो थी, रेलगाड़ी की पहचान तक नहीं थी। उनकी समझ में नहीं आता था कि रेलगाड़ी कैसी होगी और कैसे चलेगी! बैल तो बैलगाड़ी को चला सकते हैं, पर कोयला-पानी से गाड़ी कैसे चलेगी! बड़ी दादी बहुत परेशान थीं- खेतों में गेहूँ की फसल पकी खड़ी थी। कटाई होने वाली थी और जसवन्त कह रहा था- मुझे जाना था। बड़ी दादी ने जाँता रोककर अपने हाथ झाड़े, लहँगे का घेर मोर के नाचते परों की तरह फैलाया, फिर उसे समेटा और आकर आंगन में खड़ी हो गईं।

उन्होंने आँगन से मुंडेरों की तरफ देखा-जहाँ घास पककर सोने के तारों की तरह झिलमिला रही थी...फिर मुंडेर के पार आसमान की तरफ़ देखा...

बड़ी दादी फौरन सब-कुछ समझ जाती थीं। वह घर के लोगों से तो बात करती ही थीं, चिड़ियों, मोर और साँप से भी बात कर लिया करती थीं। सोने के तारों की तरह झिलमिलाती घास के इशारे भी समझ लेती थीं और हवा की आवाज़ से प्रकृति के इरादे भी मालूम कर लेती थीं।

यही तो बड़ी बात थी-बड़ी दादी में। उनकी दुनिया बहुत बड़ी थी। एक बार बरसात की रात थी- धाारासार पानी बरस रहा था। मुंडेरों और छतों की मिट्टी कट-कट कर परनालों से गिर रही थी। पतेल के छप्पर पर खिस-खिस करता पानी गिर रहा था। चारों तरफ़ घोर अंधियारा था- आठ कमरों के घर में जगह-जगह तेल-बाती की कुप्पियाँ जल रही थीं। बाहर का बड़ा दरवाजा खुला पड़ा था। कुन्दन कुप्पी लेकर दरवाज़ा बन्द करने गया तो चौखट और दरवाज़े की किनारी जहाँ चूल में फंसती थी- वहाँ से एकदम तेज़ फुफकार की आवाज़ आई थी। कुन्दन डरकर पलटा था। चीखता हुआ-साँप! साँप! और लाठी लेकर लौटने लगा था तो बड़ी दादी ने रोक लिया था।

-कहाँ है साँप?

-वहाँ। दरवाज़े की चौखट में फँसा हुआ है।

-चल, मैं देखती हूँ। लाठी उधर रख, कुप्पी मुझे दे।

हाथ में कुप्पी लेकर, अपने भीगे बालों को संवारती बड़ी दादी बाहर वाले दरवाज़े की तरफ़ चली तो घर के सभी लोग पीछे जुड़ गये थे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

–कहाँ हैं सर्पदेवता ?

–वहाँ...चौखट में। कुन्दन ने डरते हुए दूर से कहा था। तभी अंधेरी चौखट की मुर्दा लकड़ी में से एक ज़हर बुझी फुफकार आई थी।

बड़ी दादी हाथ की कुप्पी ऊँची करके उधर बढ़ गई थीं। कुप्पी की लौ में उन्होंने देखा था–साँप सचमुच फंस गया था। चूल के कड़े में आधा हिस्सा लिपटा रह गया था। वह बहुत गुस्से में आपा खोकर फुफकार रहा था।

बड़ी दादी ने पास पड़े पुआल के ढेरों को खिसका कर ऊपर खड़े होने की जगह बना ली थी और उन्होंने उस साँप को गौर से देखा था, साँप ने उन्हें। बड़ी दादी ने धीरे–धीरे पुचकारा था। साँप ने फुफकारा था।

–तुम्हारे चोट लग गई!

साँप ने फिर कुछ कहा था।

–बहुत दुःख रहा है! बड़ी दादी ने पूछा था। साँप ने पुफकार कर फिर कुछ बोला।

बड़ी दादी ने दरवाज़े को धीरे–धीरे खोला था– साँप के सरकने की चिकनी आवाज़ आई थी और एक पल में साँप सरककर दरवाज़े के बाहर हो गया।

–इतने पानी में कहाँ चले गए... यहीं रुक जाते। कहते हुए बड़ी दादी कुन्दन को कुप्पी थमाकर पलटी थीं...दरवाज़ा बन्द कर दे।

घर के सभी लोग आधे सकते में थे।

धारासार पानी बरसता रहा था।

बड़ी दादी की फतोई में से आती गुड़–जैसी महक को सूँघते हुए छोटी मुनिया ने लेटे–लेटे उनसे और चिपकते हुए पूछा था– बड़ी दादी !

–हूँ !

–साँप क्या बोला था ?

–कहता था, बहुत दुःख रहा है।...

ऐसी कितनी रातें, कितने दिन बीत गए–बड़ी–बड़ी रातें–बड़े–बड़े दिन। उसी तरह जाड़ा, गर्मी, बरसात आती रहीं। उसी तरह खेतों में फसलें उगती रहीं। पिछवाड़े कैथे और बेल पकते रहे। हर मौसम में मुंडेरों पर मोर नाचने आते रहे और छोटी मुनिया हमेशा कहती रही–मोर बड़ी दादी के लिए नाचने आते हैं!

–नहीं बेटा! मोर सबके लिए नाचने आते हैं! बड़ी दादी कहती थीं।

बड़ी दादी ने एक बार फिर अपना लहंगा मोर के नाचते परों की तरफ फैलाकर समेटा और आँगन में खड़े–खड़े आसमान से निगाहें हटाकर जसवन्त से कहा

–आज सगुन अच्छा नहीं। पता नहीं तुम्हें, कैसे दिन हैं। मोर जंगलों में लौट गए हैं.. जरते–बरते दिन आ गए हैं। ऐसे में तू अंग्रेज़ बहादुर की गाड़ी चलाने जाएगा।

–बड़ी अम्मा! दो रुपया महीना मिलेगा। तुमने अभी गाड़ी देखी नहीं– आँधी की तरह आती है। जसवन्त ने कहा।

–मैंने आकाश देखा है, देख ज़रा आकाश का रंग। तेरी गाड़ी जब आएगी, तब आएगी...अभी तो पीली आँधी आ रही है। जगन से कहो, कटाई करने नहीं जाएगा, नहीं तो खेत का अन्न सब उड़ जाएगा। तू भी अंग्रेज़ बाहदुर की गाड़ी चलाने नहीं जाएगा...बड़ी दादी ने बोला, फिर आवाज़ लगाई–बड़की बहू! ज़ोर की आँधी आ रही है। आँगन में बढ़नी सिल–बट्टे से दबा दे !

सबने आसमान की तरफ़ देखा–आँधी के कोई आसार नहीं थे, आसमान में चिड़ियों के झुण्ड और चीलों के एकाध बच्चे चक्कर लगा रहे थे।

बड़ी अम्मा! आँधी तो कहीं नहीं आ रही है। जसवन्त ने कहा तो बड़ी दादी ने आसमान में उड़ते पंछियों की तरफ़ इसारा करके बताया–

–इनके परों को देख। कैसे थरथरा रहे हैं। सारे पंछी पश्चिम की तरफ़ जा रहे हैं। उधर से ही आँधी आ रही है।

तभी आसमान पीला पड़ने लगा–हवा के झकोरे मुंडेरों की घास से टकारा–टकारा कर गुज़रने लगे–चारों तरफ़–पूरी बस्तीं में हवा की सनसनाहट व्याप गई। धीरे–धीरे हवा की आवाज़ चाबुक की तरह छतों पर पड़ने लगी और पूरा आसमान मटमैली, पीली मिट्टी से भर गया–जैसे मीलों दूर कोई ज्वालामुखी फूटा हो और उसकी जलती पीली रेत के मटमैले बगूले

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आसमान में उठते चले गए हों।

अब घर में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं रह गई थी कि जो बड़ी दादी कहती थीं–वह फ़ौरन होता हुआ दिखाई पड़ने लगा था।

जसवन्त और बहुओं ने पीली आँधी की रेत से बचने के लिए जल्दी–जल्दी खिड़कियाँ और दरवाज़े बन्द कर लिए। भीतर कमरों में अजीब–सा पीला अंधेरा छा गया था। आँधी के सनसनाते थपेड़े खिड़कियों के पल्लों और ढीली कुण्डी वाले दरवाज़ों पर लगातार पड़ रहे थे। हवा घूम–घूम नाच रही थी– बड़े घर की कच्ची मिट्टी की कार्निसों में कबूतर आकर दुबक गए थे–मीलों दूर की सूखी पत्तियाँ और तिनके दीवारों पर झाड़–से लगाते नीचे गिर रहे थे–जैसे पंख–जले पतंगे गिर पड़ते हैं। दीवार की किनारियों और दरवाज़ों की संधो से पीली रेत की घुएँ–जैसी बारिश जारी थी। संधों से झाँकते बच्चों की आँखों में रेत भर गई थी–वे आँखें मल रहे थे।

बड़ी दादी छुटकू को गोद में बैठा कर अपनी ओढ़नी का फाया बनाते हुए मुंह की भाप से उसे गरमा कर उसकी आंखों को सेंकते हुए जसवन्त से बोली थीं–

–तुम्हारा जाना जरूरी है जसवन्त ?

–हाँ, बड़ी अम्मा !

–अंग्रेज बहादुर की नौकरी जरूरी है ?

–वह तो नहीं है, बड़ी अम्मा...लेकिन...

–दो रुपये महीना मिलेगा, इसलिए जा रहा है ?

–वह बात भी नहीं है बड़ी अम्मा !

–तब क्यों अंग्रेज बहादुर की गुलामी करने जा रहा है ? तुझे भी क्या अपनी बुआ–फूफाजी की गद्दारी अच्छी लगने लगी है।

जसवन्त ने यह सुना तो सन्नाटे में आ गया। उसने कभी नहीं सोचा था कि बड़ी अम्मा इतना सोचती होंगी–उसे तो हमेशा यही लगी कि बड़ी अम्मा अपनी गृहस्थी, बहुओं, नाती–पोतों में डूबी हुई हैं। घर की दीवारों,चौके और घरेलू बातों में घिरी हुई हैं––वह कभी भी अंग्रेजों और उनकी हुकूमत के बारे में सोचती होंगी– या बुआ–फूफाजी के घराने के बारे में ऐसे विचार रखती होंगी। उनके मुँह से बुआ, फूफाजी के घर को 'गद्दार' सुनकर वह सोच ही नहीं पा रहा था कि उनसे क्या कहे, जवाब दे ? या फिर अपने बारे में वह बड़ी अम्मा को क्या सफाई दे ? उन्हें कैसे बताए कि वह अंग्रेजों के लिए देश से गद्दारी करने नहीं जा रहा है, वह सिर्फ रेलगाड़ी के महकमे में काम करने जा रहा है– यह महकमा ऐसा है जिससे नई ज़िन्दगी देश में आएगी.. रेलें चलेंगी तो देश एकता के सूत्र में जुड़ जाएगा। अपने गाँव का आदमी दूसरे गाँव तक पहुँचा करेगा–दूसरे गाँव का वासी अपने गाँव तक आ सकेगा।

जसवन्त ने बड़ी दादी के मुँह की तरफ़ देखा– तो और भी सहम गया–उनके चेहरे पर अजीब–सा कड़वापन छाया हुआ था। मुँह में जैसे कसैला स्वाद हो। उसकी हिम्मत नहीं पड़ी कि वह उनसे आँख मिला सके, या बिना आँख मिलाए अपनी सफाई दे सके। उसका गला सूखने लगा। उसने कुछ कहने की कोशिश भी की तो हकला कर रह गया...बड़ी दादी ने उसका यह हाल देखा तो खुद ही बोल पड़ीं...

–क्यों, क्या हुआ ? मुँह पर ताला क्यों पड़ गया ? क्या अपना घर, अपनी धरती तुझे कम पड़ती है जो रेलगाड़ी के महकमे में जा रहा है।

–वह बात नहीं है बड़ी अम्मा...

–तो क्या बात है ?

–खेती संभालने वाले बहुत हाथ हैं घर में...

–तुझे रोटी की कमी पड़ती है क्या ?

–नहीं !

–तो फिर अंग्रेज़ बहादुर की गुलामी करने काहे जा रहा है– क्या उनकी रोटी में ज़्यादा गुड़ लगा है...

–वह बात नहीं है, बड़ी अम्मा !

–देख जसवन्त ! रोटी तो कुत्ता भी खाता है, जो टुकड़ा फेंक दो, उसे ही खा लेता है, पर मानुष रोटी–रोटी में भेद करता है...तू रोटी का भेद भूल गया है... जैसे तेरी बुआ भूल गई है। तेरी बुआ इसी पेट की जाई है...पर मेरी कोख उसे जनम देकर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चौदह बरस बाद काली पड़ गई। वह अपने आदमी के साथ अंग्रेज़ बहादुर की रोटी तोड़ने लगी...उसकी तड़क-भड़क, हवेली, पैसा, तलवार-तुझे भी ज़्यादा सुहाने लगीं? खैर छोड़, मुझे कुछ नहीं कहना है, जो जी में आए कर जाके... आँधी बीत जाए, आसमान खुल जाए...तू चला जा...

जसवन्त सिर लटकाकर रह गया। बाहर तो आँधी थी ही, उसकी किसकिसाहट आँखों, कानों, दाँतों में मौजूद ही थी, पर बड़ी अम्मा की ज़हर-बुझी बातों ने उसके मन में भी एक टीसती किसकिसाहट पैदा कर दी थी।

जसवन्त को बड़ी अम्मा का दु:ख मालूम था। बड़े बाबा राजा साहब के सिपहसालार थे। 1857 में जब आज़ादी का संग्राम छिड़ा था तो बड़े बाबा राजा साहब के साथ, खुद घोड़े पर और जान हथेली पर लेकर उनकी रक्षा करने साथ-साथ चले थे। चार घुड़सवार और थे।

राजा साहब को भागना पड़ा था-किला छोड़कर, क्योंकि अंग्रेज़ों का तोपखाना आगरा से आया था। उसने तालाब वाली तरफ़ किले के पिछवाड़े हमला किया था। अंग्रेज़ों के पास ताकतवर तोपें थीं, किसी को अंदाज़ा नहीं था की अंग्रेज़ अपना तोपख़ाना लेकर आएँगे।

अंग्रेज़ महाराजा को किले में क़ैद नहीं कर पाए-किले पर तीन ओर से हमला हुआ था। किसी तरह महाराजा अपने पाँच विश्वस्त साथियों के साथ घोड़ों पर भाग निकले थे। अंग्रेज़ों ने पीछा भी किया था। इलाक़ा मैदानी था-इसीलिए भागते महाराजा और बड़े बाबा ने ही राय दी थी कि वे झाँसी की तरफ़ भागें-उन्हें यह पता नहीं था कि गौस खान की तोपें खामोश हो चुकी हैं और झाँसी का पतन हो चुका है।

फिर भी छह सवार झाँसी की तरफ़ भागते चले जा रहे थे। तभी चौपुला बम्बा पड़ा था। महाराजा ने अपने घोड़े को एड़ लगाकर बम्बा पार किया था-छलांग लगाकर घोड़ा एक चट्टान पर गिरा था,और गिरते ही उसकी छाती फट गई थी! तब पाँच घोड़े रह गए थे। महाराजा अपने प्यारे घोड़े को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे-पर घोड़ा भी ऐसा वफादार था कि अपनी फटी छाती लिए वह पानी में कूद गया था और बहते-बहते गहरे पानी में खो गया था।

तब बाबा ने अपना घोड़ा महाराजा को दिया था और खुद पैदल झाँसी की तरफ़ चल दिए थे। महाराजा तो निकल गए, पर बाबा को अंग्रेजों के सैनिकों ने गोली मार दी थी और बाद में महाराजा को भी क़ैद कर लिया था। बाबा की लाश नहीं मिली थी।

तभी से बड़ी दादी कहती थीं-मैं तो सदा सधवा हूँ! मेरा आदमी शहीद हुआ है...

और तभी से बड़ी दादी के मन में अपनी बेटी कलावती के लिए एक नफरत घर कर गई है। बड़ी दादी और बाबा ने बड़े चाव से अपनी बेटी कलावती की शादी की थी-फर्रुखाबाद के नवाब के दरबारियों में से एक के लड़के के साथ।

उनका दामाद गाजीपुर के अंग्रेजी खज़ाने का खजांची था। जब गदर हुआ तो उसने अंग्रेजी खज़ाना भी लूटा और अपनी हवेली में अंग्रेजों को पनाह देकर जान भी बचाई। एक तरफ़ बेईमानी की, दूसरी तरफ़ वफादारी दिखाई।

और तब से सब-कुछ बदलता चला गया।-बड़ी दादी की जागीरी ज़मींदारियां छिनती चली गईं और दामाद को तमगे और तलवारें मिलती चली गईं। उनकी बेटी अंग्रेजों की दया से बिना तिलक की रानी कहलाने लगी और दामाद बिना तिलक का राजा-क्योंकि उन्होंने दो अंग्रेजों की जान बचाई थी।

जसवन्त एक बार बुआ कलावती के यहाँ गया था। तब उसने वहाँ हवेली में देखा था-फूफाजी की वे बड़ी-बड़ी तस्वीरें, जिनमें उनके फेंटे से मोतियों जड़ी तलवार लटक रही है। एक ऊँचे स्टूल पर गमले में अंग्रेजी पौधा लगा है और फूफाजी अंग्रेजी लिबास पहने, कोहनी टिकाए शान से उस तस्वीर में खड़े हैं- पीछे दीवार पर महारानी विक्टोरिया की फोटो लगी है। घर में फिटन थी, तीस-चालीस नौकर-चाकर थे। ज़मींदारियों से आया अन्न भरने की जगह नहीं थी, जो रोज़ सुबह गरीबों में बाँटा जाता था...गरीबों का झुण्ड रोज़ सुबह उनकी बड़ी हवेली के फाटक पर आता।

तब फूफाजी का एक पुराना नौकर जाकर उन्हें जगाया करता था--साहेब! जय-जयकारी आ गए।

फूफाजी जय-जयकारी से ही जागते थे।

वे बरसात के दिन थे। मूसलाधार पानी बरस रहा था। एक सुबह जब जय-जयकारी नहीं आए, तब साहेब के सारे सेवकों ने ही मिलकर फाटक पर जय-जयकार किया था, तब उनकी आँख खुली थी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वह चीखी थीं-इन सौगातों में तुम लोगों के पिता और बाबा के खून के छींटे हैं। ये अपवित्र हैं। जसवन्त को भी कहीं बाहर वाले दरवाज़े पर खड़ा कर दिया गया था-पहले उस पर गंगाजल छिड़का गया था, फिर भीतर आने दिया गया था।

जसवन्त तब छोटा था, वह यह सब समझ नहीं पाया था। उसी दिन दादी ने घर में ऐलान कर दिया था, कलावती अब कलावती नहीं-वह कलंकवती है, उसके घराने से हमारा कोई लेना-देना नहीं है।

जसवन्त को सब कुछ याद आ गया- और पिछले सब बरस भी। लेकिन अब उसने मिडिल पास किया था, गाँव में रहकर बेकार पड़े रहना उसे सुहाता नहीं था और वह यह बता भी नहीं सकता था कि सच पूछो तो फूफाजी ने ही उसे रेलवे के महकमे की नौकरी दिलवाई थी। वह चाहता था-बड़ी अम्मा को यह बात न मालूम होने पाए। उन्हें मालूम होगी तो बहुत बावेला मचेगा।

जसवन्त इसलिए ज़्यादा बात नहीं कर रहा था। आँधी तो कब की गुज़र गई थी। बड़ी दादी बढ़नी लेकर घर भर की सफाई में उलझ गई थीं, लेकिन उनके चेहरे का कड़वापन अभी गया नहीं था। जसवन्त यह भांप रहा था। अब बड़ी दादी बात भी खुद नहीं करना चाहती थीं, और जसवन्त को नौकरी पर जाना था। आखिर वह खुद ही उनके पास गया और धीरे से बोला था--

-बड़ी अम्मा।

-बोलो!

-मुझे जाना ही पड़ेगा।

-तो अपने अम्मा-बाबू से पूछ लो और चले जाओ। मुझसे क्या पूछते हो?

जसवन्त के पिता और माँ की हिम्मत नहीं थी कि बड़ी दादी के सामने बोल जाएँ। उसकी अम्मा सिर झुकाए सफाई में लगी रहीं। बापू जी अपनी चुटिया टोपी के नीचे करके गर्दन पर खुजाते हुए बाहर की तरफ़ टहल गए।

-बडी अम्मा! जब तक तुम कुछ नहीं कहोगी, तक तक कोई बोलेगा नहीं। तुम हाँ कह दो तो सब ठीक हो जाएगा।

-बोल बहू! तू क्या कहती है? बड़ी दादी ने जसवन्त की माँ से पूछा था, फिर जसवन्त की बहू को आवाज़ लगाकर बोली थीं-छोटी बहू तू बोल।

सबके मुँह पर ताले पड़े थे । वे आँखों-आँखों में देख भी नहीं रही थीं। आखिर बड़ी दादी ने सबकी तरफ़ बारी-बारी से देखकर ,फिर सवाल दोहराया था-

-बोल बड़ी बहू! क्या कहती है?

-मैं क्या कहूँ! जो आप कहेंगी, वही तय होगा।

-लेकिन, हमने तो तय कर लिया है। उनका इशारा जसवन्त की तरफ़ था, फिर अपने सन जैसे सफेद बालों की लट को समेटती हुई वह बोली थीं-

तू शहर कब गया? कब जाके तू गूलामी की नौकरी तय कर आया? 57 में तो बाबा शहीद हुए-तब तेरा बाप तीन साल का था। त्रयालीस बरस उसे पाला है, यही सोचकर कि ये जिएगा तो फले-फूलेगा। यह आंगन किलकारियों से चहकेगा और किसी दिन कोख का जाया कोई माई का लाल अपने बाबा की मौत का बदला लेगा। महाराजा साहब की गढ़ी की दीवार में जो अंग्रेज़ी गोला लगा ता- उसका हिसाब चुकता करेगा।

कहते-कहते बड़ी दादी ने अपनी आंखें पोंछ ली थी। चोखट से चिपटी खड़ी सात बरस की शान्ता बड़ी दादी को टुकुर-टुकुर देख रही थी । उस पर नज़र पड़ते ही बड़ी दादी ने जसवन्त से पूछा-तू छोटी बहू और सन्तो को भी ले जाएगा?

बड़ी दादी शान्ता को प्यार से सन्तो पुकारती थीं। सन्तो ने अपना नाम सुना तो एकदम बोली-बड़ी दादी! मैं तुम्हारे पास रहूँगी।

बड़ी दादी ने उसे कमर से चिपका लिया और जसवन्त की माँ को हुक्म दे दिया- बड़ी बहू! इसे जाने दे...छोटी बहू भी जाना चाहे तो चली जाए---बस, सन्तो तेरे पास रहेगी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

जाँता गेहूँ पीसने की पत्थर की मशीन, जिसे औरतें हाथ से चलाया करती हैं **पर** पंख **मुंडेर** खेत की मेड़ **फौरन** तुरंत **आसार** लक्षण **पुआल** धान **गौर** ध्यान से **फतोई** बंडी, फतूही **बढ़नी** झाड़ू **फाया** काहा, **हूकुमत** शासन अधिकार **महकमा** विभाग **जाई** पैदा **सुहाने** अच्छे **हमला** आक्रमण **सौगात** भेंट, उपहार **नफरत** घृणा विरक्ति **वफादार** निष्ठावान **हुकम** आदेश

मुहावरे

मुँह पर ताला पड़ना बोलती बंद हो जाना **आपा खोना** होश खोना **जान हथेली पर रखना** जान की परहवाह न करना **कोख काली पड़ना** कोख को कलंकित करना

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) बस्तीवालों को किसकी पहचान नहीं थी ?

(2) घास पककर कैसी लग रही थी ?

(3) बड़ी दादी और जसवन्त के बीच कौन-सा रिश्ता है ?

(4) राजा साहब के सिपहसालार कौन थे ?

(5) अंग्रेजों का तोपखाना कहाँ से आया था ?

(6) बड़ी दादी अपने को सघवा क्यों मानती थी ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) बड़ी दादी घर के लोगों के अलावा किनसे बातें करती थीं ?

(2) बड़ी दादी और साँप के बीच क्या-क्या बातें हुई।

(3) रेलगाड़ी के लाभ समझाइए।

(4) मनुष्य और कुत्ते की रोटी में फर्क बताइए।

(5) बड़ी दादी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(6) बड़ी दादी कलावती को कलंकवती क्यों कहती थी ?

योग्यता-विस्तार

- भीष्मसाहनी कीं 'चीफ की दावत' कहानी ढूँढ कर पढ़िए और समझिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

23 रामदास

रघुवीर सहाय

(जन्म : सन् 1922 ई; निधन : सन् 1992 ई.)

रघुवीर सहाय का जन्म लखनऊ में हुआ था। लखनऊ से ही अंग्रेजी में एम. ए. कर उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया। उन्होंने 'प्रतीक' और 'कल्पना' में सहसंपादक और 'दिनमान' के संपादक के रूप में उल्लेखनीय कार्य किया। अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' के कवि के रूप में वे प्रकाश में आए। आकाशवाणी से भी वे संबद्ध रहे।

रघुवीर सहाय की कविता अपने समय के सरोकारों-समस्याओं से जुड़कर चलने वाली कविता है। अपने समय की अमानवीय राजनीति पर तीखा व्यंग्य उनकी कविता की सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने आम बोलचाल की अखबारी भाषा का प्रयोग कर भाषा की परंपरागत रूढ़ियों को तोड़ा है। इनकी प्रसिद्ध काव्य-कृतियाँ हैं-'सीढ़ियों पर धूप,' 'आत्महत्या के विरुद्ध' 'हँसो हँसो जल्दी हँसो' तथा 'लोग भूल गये हैं'। 'आत्महत्या के विरुद्ध' नाटकीय एकालाप की कविता है।

'रामदास' कविता में रामदास नामक एक आम आदमी की हत्या की घटना के माध्यम से वर्तमान परिवेश में साधारण मनुष्य की असुरक्षित, लाचार-विवश जिंदगी का यथार्थ चित्र अंकित किया गया है। कानून और व्यवस्था के अंधेर का संकेत देती हुई कविता अपराधी तत्त्वों की बेरोक-टोक खौफ पैदा कर देने वाली क्रूरता को उभारती है। कविता में बहुत कम शब्दों में आतंक के घिनौने चेहरे को उजागर करते हुए तमाशा देखने वालों की नपुंसकता को भी बेनकाब किया गया है।

चौड़ी सड़क गली पतली थी
दिन का समय घनी बदली थी
रामदास उस दिन उदास था
अंत समय आ गया पास था
उसे बता यह दिया गया था उसकी हत्या होगी

धीरे धीरे चला अकेले
सोचा साथ किसी को ले ले
फिर रह गया, सड़क पर सब थे
सभी मौन थे सभी निहत्थे
सभी जानते थे यह उस दिन उसकी हत्या होगी

खड़ा हुआ वह बीच सड़क पर
दोनों हाथ पेट पर रखकर
सधे कदम रख करके आये
लोग सिमट कर आँख गड़ाये
लगे देखने उसको जिसकी तय थी हत्या होगी

निकल गली से तब हत्यारा
आया उसने नाम पुकारा
हाथ तौलकर चाकू मारा
छूटा लोहू का फ़व्वारा
कहा नहीं था उसने आख़िर उसकी हत्या होगी

भीड़ ठेलकर लौट गया वह
मरा पड़ा है रामदास यह
देखो देखो बार बार कह
लोग निडर उस जगह खड़े रह
लगे बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

घनी सघन **निहत्था** बिना हथियार के **लोहू** खून

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) रामदास की उदासी का क्या कारण था ?

(2) हत्यारा कहाँ से आया और उसने कैसे रामदास की हत्या की ?

(3) लोग निडर होकर किन्हें बुला रहे थे ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) 'रामदास' का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

(2) हत्यारे के सुरक्षित लौट जाने के क्या कारण हैं ?

योग्यता-विस्तार

- 'रामदास' कविता के आधार पर समकालीन समाज में आम आदमी की असुरक्षा पर एक निबंध लिखिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

24 गंगा : देश की प्राण नाड़ी

विद्यानिवास मिश्र

(जन्म : सन् 1926 इ., निधन :सन् 2005 ई.)

विद्यानिवास मिश्र का जन्म गोरखपुर के पकड़ड़ीहा गाँव में हुआ था। वे संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं के मर्मज्ञ थे। वे संपूर्णानंद संस्कृत विश्व विद्यालय, वाराणसी के कुलपति भी रहे।भाषा विज्ञान और व्याकरण के पंडित थे। परंपरा और आधुनिकता दोनों को उन्होंने आत्मसात् किया था।

मिश्रजी ललित निबंधकार के रूप में सविशेष जाने जाते हैं। सांस्कृतिक विरासत के प्रति अहोभाव, लोकजीवन में आस्था और गहरी मानवतावादी दृष्टि उनके निबंधों की विशेषता है। वे संस्कृत शब्द संपदा के साथ लोकजीवन में प्रचलित देशज शब्दों एवं भोजपुरी कहावतों का ऐसा ताना-बाना बुनते हैं कि भाषा का प्रवाह भी बराबर बना रहते हैं। छितवन की छाँह, बनजारा मन, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, शेफाली झर रही है, आँगन का पंक्षी, कँटीले तारों के आरपार, परंपरा बंधन नहीं आदि उनकी प्रमुख निबंध रचनाएँ हैं। उन्हें 'महाभारत का काव्यार्थ' पर मूर्तिदेवी पुरस्कार, बिड़ला फाउन्डेशन से 'शंकर सम्मान' एवं 'पद्मश्री' सम्मान प्राप्त हुआ था।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने पर्यावरण की सुरक्षा को हमारे जीवन का प्राण-प्रश्न बतलाया है। उनके विचार से गंगा हमारी एक प्राकृतिक धरोहर तो है ही हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना का महत्त्वपूर्ण स्त्रोत भी है। हमारी आस्था का केन्द्र है। लेखक का मानना है कि गंगा की सफाई के लिए प्रयत्न तो अनेक हुए किंतु वे पर्याप्त नहीं हैं। सिर्फ बातों से काम नहीं चलेगा, सच्चे मन, सच्ची लगन से दृढ़ संकल्प के साथ समाज और शासन को मिलकर काम करना होगा। शहरीकरण और औद्योगीकरण संबंधी दूषणों को दूर करने के लिए ठोस योजना के तहत गंगा की निर्मलता-पवित्रता को पुन:कायम करना होगा। गंगा हमारे देश की प्राण-नाड़ी है, शुद्ध-पवित्र जल का संचार ही उसे स्वस्थ बना सकता है।

हमारे योजनाप्रेमी देश में पर्यावरण की रक्षा की योजना बहुत पहले ही बननी शुरू हो गयी, स्टाकहोम सम्मेलन में आज से दशक से अधिक पूर्व भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री ने पर्यावरण-रक्षा की चेतना की बात उठायी थी और विकसित देशों से माँग की थी कि वे अपने बाहर के विश्व के पर्यावरण की भी चिन्ता करें। इसी क्रम में कई आन्दोलन हुए, चिपको आन्दोलन ने हिमालय के बनों की रक्षा की बात की, उसको अखबारी समर्थन मिला। केरल में शान्त घाटी(साइलेंट वैली) की रक्षा के लिए आन्दोलन चला, केन्द्रीय सरकार ने वहाँ हस्तक्षेप किया। प्रकृति में सन्तुलन बनाए रखने के लिए कितने अरण्य अभ्यारण्य घोषित हुए। अंत में गंगा की रक्षा के लिए एक समग्र योजना की घोषणा की गयी। कुछ महत्वपूर्ण स्थानों पर गंगा के जल की शुचिता बनाये रखने के लिए उसमें गिरने वाले दूषित पदार्थों के निस्तारण की वैकल्पिक व्यवस्था के लिए कुछ करोड़ में रुपये खर्च हुए पर अभी तक मेरे जैसे साधारण आदमी की दृष्टि में गुणात्मक परिवर्तन दिखायी नहीं पड़ता।

मैंने इस समस्या पर गहराई से सोचा, कई बार मन में यह भी संकल्प हुआ कि गंगा भारत की प्राणनाड़ी है इसके लिए जीवन उत्सर्ग करना पड़े तो करना चाहिए, केवल कागज़ी चेतना से काम नहीं चलेगा। एक समूह तैयार करना होगा जो गंगा के और उसमें मिलने वाली नदियों के स्त्रोत से ही मनुष्य की धन-लोलुप्ता और भविष्य के प्रति अचेतनता के कारण जो कुछ विनाशकारी कार्य हो रहे हैं, इनको रोकने के लिए धरने का कार्यक्रम चलाना चाहिए। यह भी सोचा कि कई ऐसे मुद्दे हैं जो वर्तमान पर्यावरण विधियों के अधीन भी सर्वोच्च न्यायालय में सार्वजनिक हित में उठाए जा सकते हैं, इसके लिए स्वयंसेवी विधि विशेषज्ञों की टोली तैयार करनी चाहिए। काशी में एक संस्था है, उसको भी गतिशील बनाने की बात सोची। परन्तु अभी कुछ भी हो न सका। उसके कारण कई हैं, पर सबसे बड़ा कारण यह है कि हमारा जातीय मन कहीं मर रहा है, गंगा के लिए हम बौद्धिक स्तर पर सोचते हैं और तब ऋण-धन का हिसाब लगाते हैं, गंगा को निर्मल बनाने की बात सोचते हैं मानो गंगा केवल भौतिक पदार्थ हो, इतने बड़े देश की हज़ार-हज़ार वर्षों की साधना, तपस्या और भावना के सूक्ष्म कणों से बनी हुई गंगा की सूक्ष्म शक्ति का जैसे कोई महत्व न हो। हम अपने मन को निर्मल बनाने की बात नहीं सोचते कि कहीं नदियों, पर्वतों, वनों, निर्झरों के प्रति हमारा भाव कुछ गंदला हो गया है, हम इन्हें अपनी ऊर्जा के स्त्रोत के रूप में या अपनी निरन्तरता, अपनी ऊर्ध्वगामिता और अपनी समष्टि चेतना का साकार शिखर न मानकर इन्हें सम्पदा के रूप में उपभोग्य वस्तु के रूप में विहार-साधन के रूप में देखने लगे हैं। ऐसा ही मन हिसाब लगता है कि गंगा में दूषित जल रासायनिक प्रक्रिया से शुद्ध किया जाय और उसका कचरा औद्योगिक उपयोग में लाया जाय, जिससे कचरा भी एक कमाऊ उद्योग बन जाय। यह सोच बहुत ही खतरनाक है, क्योंकि तब

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फिर गंगा की चिन्ता भूल जायेंगी, बस कचरे के उत्पादन की चिन्ता प्रमुख हो जायेगी। यह सब हम इसीलिए सोचते हैं कि हम बुद्धिवादी जाल में फँसे हुए हैं कि गंगा एक नदी है, जड़ पदार्थ है, संयोग से उसमें हिमालय की औषधियों की जड़ों का कुछ रस जाता है, कुछ और रासायनिक प्रक्रियाएँ होती हैं, उसकी धारा में आत्मशोध शक्ति अनुपात में दूसरी नदियों से ज्यादा है। वह सिंचाई का साधन है और पुरातत्व का ही प्रमाण लें, कम से कम 8000 वर्षों से वह बहुत बड़े भू-भाग की उर्वरता बनाए हुए है, अपने जल से, अपनी मिट्टी से, हम इतना सोच सकते हैं कि इस सम्पदा के दोहन पर ऐसा नियंत्रण लगायें की सम्पदा चुक न पाये, पर हम यही नहीं सोच सकते कि गंगा सम्पदा ही नहीं कुछ और भी है।

वह गंगा क्या है, इसे समझने के लिए एक ऐसा मन चाहिए जो इतिहास से अधिक पुराण को विश्वसनीय मानता है, वह समग्र दृष्टि से मनुष्य और प्रकृति को एक दूसरे में ओतप्रोत देखता है, वह मानवीय रिश्तों में प्रकृति को आबद्ध करता है। वह रहीम की तरह कहीं पैदा हो, किसी मज़हब में पैदा हो सोचता है, गंगा तो विराट् नारायण भाव की सेवा और तप का पिघलन है, जिसे ब्रह्मा का ज्ञान कमंडल नहीं संभाल पाता, जिसे शिव का जटाजूट भी नहीं रोक पाता, सेवा और तप से पिघला हुआ पदार्थ असंख्य-असंख्य चरअचर जीवों को तारने और सन्तप्त करने के लिए उमड़ पड़ता है। हिमालय की जटों की लट सरीखी पर्वत श्रेणियाँ इस पिघली धारा को रोक नहीं पातीं, हिमालय की जमी हुई शीतलता और आकाश-चुम्बी गरिमा नहीं रोक पाती, वह शिखरों की ऊँचाई का आकर्षण, देवदारु वनों से गुजरती हुई सुरभित बयार नहीं रोक पाती, वह देवताओं के बीच में जनमी, पली देवताओं के रोके नहीं रुकती, स्वयं एक महान् देश की महादेवता बन जाती है क्योंकि वह इस देश का सामान्य धर्म बन जाती है, जियो दूसरों के लिए जियो, दूसरों को लेकर जियो।

रहीम यह कह सकते थे---

अच्युत चरण तरंगिनी हरसिर मालतिमाल।
हरि न बनायो सुरसरि कीजै इन्दव भाल॥

तुम विष्णु के चरणों की द्रव हो, उन्हीं चरणों से निकली हो, तुम शिव के शिर में गुंथी हुई मालती की माला हो, तुम्हारे किनारे शरीर छूटेगा तो एक न एक तो होना ही है, शिवरूप हों या विष्णु रूप पर माँ तुम शिवरूप देना विष्णुरूप नहीं। तुम सिर पर विराजना। ऐसे मनवाला आदमी गंगा में पैर रखने के पहले, जल माथे लगाता है, बड़े ही विनम्र समर्पित भाव से जल में प्रवेश करता है, केलि के लिए नहीं, निमज्जन के लिए, अपने शरीर के मल छुड़ाने के लिए नहीं, स्नान के सुख के लिए नहीं, मन की पवित्रता के लिए, ऐसी पवित्रता के लिए, जिसमें सबका हित अपना होता है, "सुरसरि सम सब कर हित होहू"।

ऐसी पवित्रता से एकाकार होना ही गंगा-स्नान का लक्ष्य है। गंगा के पास आदमी आता है अपनी आपूर्ति पाने के लिए , गंगा सब अधूरापन अपने बहाव से पूरा कर देती है, गंगा एक अनविच्छन्न आहुति का आमंत्रण है, यह जीवन लोक के लिए अर्पित होने के लिए, इसी में अधूरे जीवन की पूर्ति है, यही सबसे बड़ा साकल्य है।

ऐसा मन जीवन के अन्तिम क्षण में द्विजेन्द्रलाल राय की तरह सोचता है कि उस क्षण में माँ तुम्हारे जल का कलरव कानों को भरे, तुम्हारे जल के छींटे रोमांच बन जायें, तुम्हारा जल आँखों का जुड़ाव बन जाय, तुम्हारे स्पर्श से पुलकित हवा मेरे प्राणों की प्राण बन जाय, बस वह क्षण जीवन का साकल्य बन जायेगा। ऐसा मन दुर्भाग्य से मेरा भी है और असंख्य ऐसे लोगों का है जिनके पास तथाकथित समझदारी का भाव नहीं है।

ऐसे ही मन से कुछ प्रश्न उठाना चाहता हूँ, इनका उत्तर हमें चाहिए। पहला प्रश्न यह है कि गंगा की मुख्य धारा इसलिए है कि उसमें संवहन-क्षमता है (कैरीइंग पॉवर), यह क्षमता कम करने का अधिकार किसी को नहीं होना चाहिए, अत: जितना जलसंभार मिलता रहा है, उतना लोगों को मिलते रहना चाहिए, पर ऐसा नहीं हो रहा है। विगत बीस वर्षों में गंगा का जलसंभार प्रयाग,काशी जैसे स्थानों में काफी घटता रहा है। इस तटवासियों के जलाधिकार को कौन सुरक्षित करेगा? क्या इसके लिए सार्वजनिक हित का मुद्दा सर्वोच्च न्यायालय में नहीं उठाया जाना चाहिए?

दूसरा प्रश्न यह है कि औद्योगिक कचरा डालने वाले उपक्रमों पर कार्रवाई में शिथिलता क्यों है, पर्यावरण कानून इतना कड़ा क्यों नहीं है कि इसका उल्लंघन गम्भीर सार्वजनिक अपराध माना जाय। उद्योगपतियों की अभिसन्धि का ही फल है कि कागज़ की आवश्यकता की वृद्धि के नाम पर रसशोषक पेड़ों की बढ़ती हो रही है जो पृथ्वी को कुछ देते नहीं और उल्टे भूगर्भ का जल खींच लेते हैं और कागज बनाने के लिए उपयुक्त रसायनों के कचरों से नदियाँ दूषित हो रही हैं, तापी, सोन, नर्मदा का जल देखा नहीं जाता। इन्हीं उद्योगपतियों की लोभलोलुप्ता के कारण रासायनिक कचरे के निस्तारण की केवल कागज़ी कार्रवाई होती है, कोई प्रभावी कदम नहीं उठाया गया है। इस समस्या के समाधान के लिए सर्वोच्च न्यायालय ने नोटिसें जारी की हैं, पर अभी तक कोई प्रतिफल दिखायी नहीं पड़ा है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तीसरा प्रश्न महानगरों की दूषित मल-प्रणालियों के निस्तारण से सम्बद्ध है। वाराणसी में कहा गया है कि मलजल को अन्यत्र ले जाकर संशोधित किया जायगा, पर अन्तरिम काल में पंप से नालियों का जल निकालकर ऊपर फेंका जायेगा, नदी में जाने से रोका जायेगा। वास्तविकता यह है कि न तो पंप बारहों महीने काम करते हैं, न दूषित जल का गिरना रुका है। एक समय था कि काशी के भीतर निपटते तक नहीं थे, अशुचि वस्त्र पहनकर जल में प्रवेश नहीं करते थे, गंगा के किनारे कहीं भी साबुन लगाने वाले दिखते थे तो उनकी बड़ी फजीहत होती थी। आज घाट सभी धोबीघाट हो गये हैं और महानगरों के सीमा से अधिक विस्तार से पुरानी दूषित जलप्रणालियां अवरुद्ध होने लगी हैं, इतना प्रदूषण का संचार है और जल का संचार निरन्तर क्षीणप्राण है। नदी की गहराई पेड़ों के कटने से सिल्ट के भराव से कम होती जा रही है, जंगलों के नाश से हिमालय की वनौषधियों के सर्वनाश के कारण औषधियों का शोधक रस भी नहीं मिल रहा है। हम यह अनुभव नहीं कर पा रहे हैं, कि कैसी घुटन में है हमारी जातीय जीवन धारा। हम सतही उपाय कर रहे हैं, उसमें भी विलम्ब लगा रहे हैं। अकेले शासन के भरोसे कैसे रहा जाय। शासन के लिए गंगा की समग्रता का कोई महत्व नहीं है, वह सांस्कृतिक स्मृति मात्र है। वह जीवन की प्रत्यक्ष अपरिहार्यता नहीं है। होगी भी नहीं जब तक शासन को चुनने वाला सचेत नहीं है।

गांधीजीकी राजनीति के उत्तराधिकारियों को तो अपनी पूरी आर्थिक-सांस्कृतिक नीति ही ऐसी रखनी चाहिए थी जो यूरोप की ग्रीन पार्टियों के समकक्ष होती, पर अब उपभोक्ता अपसंस्कृति के इस तरह फैल जाने के बाद आवश्यकता है कि एक ग्रीन पार्टी जैसी भारतीय आवश्यकताओं और भावनाओं के अनुरूप पार्टी बने, जो सत्तासीन होने के लिए नहीं सत्तासीनों को बड़ी सजगता से खबर लेने के उद्देश्य से बने और सम्पूर्ण जीवन की सुरक्षा का नारा उठाये, अलग-अलग टुकड़ों में अभयारण्य न बनाये, इस समय सम्पूर्ण जीवन विनाश के भय से, ग्रस्त है केवल गंगा ही नहीं, यह भाव लाने वाली राजनीतिक चेतना उत्पन्न करना जरूरी हो गया है। तभी कुछ कारगर कदम सरकारें उठायेंगी और लोग उठायेंगे।

शब्दार्थ-टिप्पणी

निस्तारण काम की पूर्ति **मजहब** धर्म **पिघलन** पिघलना **सन्तप्त** दु:खी **ऊर्ध्वगामिता** ऊपर की ओर जाना **मलजल** मैलाजल **अभयारण्य** जानवरों को भय रहित रहने का, जीने का वन

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) नदियों-पर्वतों के प्रति हमारा भाव कैसा हो गया है ?
(2) गंगा को समझने के लिए कैसा मन होना चाहिए ? कैसे समझेंगे ?
(3) गंगा के प्रति हमारा कैसा भाव है ?
(4) लोग अपने जीवन का साफल्य किसमें मानते हैं ?
(5) पर्यावरण कानून क्यों कड़ा बनाना चाहिए ?
(6) नदियाँ क्यों दूषित हो रही हैं ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) मानवजीवन में गंगा का महत्त्व क्या है ?
(2) गंगाघाटों की आज की स्थिति का वर्णन कीजिए।
(3) शासन के लिए गंगा का क्या महत्त्व होना चाहिए ?
(4) गंगा में प्रदूषण रोकने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?
(5) 'गंगा संपदा नहीं कुछ और भी है'- समझाइए।
(6) 'गंगा हमारी प्राण नाड़ी' शीर्षक की सार्थकता समझाइए।

योग्यता-विस्तार

- 'मानवजीवन एवं हमारी संस्कृति में गंगा का महत्त्व'-विषय पर चर्चा कीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

25 गुठली आम की

रंजना जायसवाल

(जन्म : सन् 1968 ई.)

रंजना जायसवाल का जन्म उत्तरप्रदेश के पड़रौना नामक गाँव में हुआ था। उन्होंने कविता और कहानी के साथ-साथ निबंध भी लिखे हैं। उनके कविता संग्रहों में 'मछलियाँ देखती सपने', 'दुख पतंग', 'जिंदगी के कागज पर', 'माया नहीं मनुष्य', 'जब मैं स्त्री हूँ', प्रमुख हैं।

'तुम्हें कुछ कहना है भर्तुहरि' उनका कहानी संग्रह है। 'स्त्री और सेन्सेक्स' उनके निबंधों का संकलन है। उन्हें 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त है।

प्रस्तुत कविता में आम की गुठली की सृजन-क्षमता के माध्यम से जीवन के प्रति आशावादी दृष्टि का संकेत दिया है। घूरे की सूखी जमीन पर पड़ी आम की गुठली अपने कुनबे के स्वर्णिम अतीत को याद कर रही है। एक-के-बाद एक पूरे कुनबे को बिखरते भी उसने देखा है। वह अकेली बच गई किंतु उसे भी जबरन पकाकर, उसका रस चूस कर फेंक दिया गया। फिर भी वह निराश नहीं है। उसे इंतजार है बादलों का, वर्षा की बूँदों का। उसे विश्वास है उसमें फिर से अंकुर फूटेगा, वह फिर से वृक्ष बनेगी। फिर से उसका कुनबा महकेगा। गुठली के माध्यम से कवयित्री ने स्त्री-सृजन के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है।

घूरे की सूखी ज़मीन पर पड़ी
गुठली आम की
याद कर रही है अपना अतीत
जब वह पिता के कन्धे पर चढ़ी
पूरे कुनबे के साथ
मह-मह महका करती थी
मगर कभी आँधी
कभी बन्दर
कभी शैतान बच्चों के कारण
टूटता गया कुनबा
उसकी अनगिनत बहनें
बचपन में ही नष्ट हो गयीं
और अनगिनत जवानी में ही।
काट-पीटकर
मिर्च मसालों के साथ मर्तवानों में बन्द कर दी गयीं
वह बची रह गयी।
कुछ के साथ
पर कहाँ जी पायी पूरा जीवन
भुसौले में दबा-दबाकर
दवा के जोर पर
जबरन पैदा किया गया उसमें रस
और फिर चूसकर उसका सत्व
फेंक दिया गया घूरे पर
निराश नहीं है फिर भी गुठली
उसमें है सृजन की क्षमता
इन्तजार है उसे
बादलों का
फिर फूटेगा उसमें अंकुर और वह वृक्ष बन जाएगी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

कुनबा परिवार **भुसौला** भूसा रखने की जगह, वह स्थान जहाँ कच्चे आमों को पकाने रखा जाता है **मर्तमान** चीनी मिट्टी का बर्तन, अचारदान

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) आम की गुठली कहाँ पड़ी थी ?

(2) गुठली का पिता कौन है ?

(3) बचपन में उसकी बहिनें कैसे नष्ट हो गई थीं ?

(4) घूरे पर फेंकने पर भी गुठली निराश क्यों नहीं है ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) आम की गुठली अतीत की किन-किन बातों को याद करती है ?

(2) 'आम की गुठली' किसका प्रतीक है ?

(3) गुठली के माध्यम से नारी जीवन की विषमता का वर्णन किया गया है, समझाइए।

योग्यता-विस्तार

- कविता के माध्यम से वर्तमान समाज में नारी की स्थिति और पीड़ा पर एक निबंध लिखिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

26 ओ लाल आफताब !

फणीश्वर नाथ 'रेणु'

(जन्म : सन् 1921 ई.; निधन : सन् 1977 ई.)

शीर्षथ आँचलिक कथाकार रेणुजी का जन्म बिहार के पूर्णिया जिले के औराही-हिंगना गाँव में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई और उच्च शिक्षा वाराणसी में। उन्होंने भारत एवं नेपाल के स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के जन-आंदोलन में भी उनकी भूमिका अहम् रही। उन्हें पद्मश्री सम्मान प्राप्त हुआ था।

रेणु ने भारतीय ग्राम-जीवन को बहुत निकट से देखा था। गरीबी और भुखमरी को वे सबसे बड़ी बीमारी मानते हैं। उन्होंने भारतीय ग्राम जीवन को उसकी समग्रता में चित्रित किया है।उनके कथा साहित्य में लोकजीवन और लोक संस्कृति का लोक भाषा के माध्यम से अर्थपूर्ण आलेखन हुआ है। 'मैला आँचल' और ' परती परिकथा' प्रमुख उपन्यास हैं। 'ठुमरी','एक आदिम रात्रि की महक','अग्निखोर' एवं 'एक श्रावणी दोपहरी की धूप' उनके कहानी संग्रह हैं। 'ऋणजल-धनजल', 'नेपाली क्रांति कथा' तथा 'समय की शिला पर' रिपोर्ताज संग्रह हैं। 'मैला आँचल', एक सर्वश्रेष्ठ आँचलिक उपन्यास माना गया है।

प्रस्तुत गद्य-गीत में लेखक 9 अगस्त 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के अंतर्गत 'करो या मरो' के नारे के साथ शहीद होने वालों को पुन: एक बार याद करता हुआ उस दिन के सूरज को वंदन करता है। वह उस लाल आफताब से भारत के लोगों में फिर से क्रांति की वही शक्ति और साहस भरने को कहता है। आजादी के कुछ ही वर्षों बाद लोगों का मोहभंग हो गया, उनके सपने बिखर गए। गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार से सारा देश आक्रांत है। इस दुर्दशा में घुट-घुट कर मरने से कुछ करके मरजाना ही अच्छा है। लेखक के विचार से करो या मरो के मंत्र को फिर दोहराना होगा। मुट्ठीभर लोगों को स्वराज का सुख मिला, यह सुराज नहीं है। अत: स्वतंत्रता संग्राम के तमाम शहीदों का स्मरण कर इंकलाब के आफताब की साक्षी में पुन: एकबार जनक्रांति की अनिवार्यता का संदेश यहाँ दिया गया है। लेखक बगावत के प्रतीक सूरज से जन-क्रांति का वरदान माँगता है।

प्यारे 9 अगस्त ! सलाम !

पूरब आसमान में उठते हुए, 9 अगस्त के लाल आफताब ! तुम्हें भी सलाम !! अपनी किरणों में, हमारे लाखों-लाख शहीदों की उठती हुई जवानियों के तेज, हँसती हुई रंगीनियों के रंग समेटकर, आज तुम उग आये हो। शहीदों की समाधियों पर, फैली हुई हरियालियों पर, रात में सितारे ओस की माला चढ़ा गये हैं। उन मोतियों पर, तुम्हारी किरणों की छटा, विभिन्न रंगों की सृष्टि कर रही है। और उन रंगों को अपने प्राणों में घुलाने के लिए हमारी आत्मा आतुर हो उठती है। आज से सात वर्ष पहले, ऐसी ही आतुरता आत्मा में लगी थी।

याद है तुम्हारा वह रूप ! ठीक इसी तरह 'उग' कर तुमने हमें सन्देश सुनाया था-' सदा शान्त हिमालय के विशाल हृदय को फोड़कर ज्वालामुखी भड़क उठा है। उठो ! दिशाओं में 'करो या मरो' का महामन्त्र गूँज रहा है।' तुम्हारी प्रचण्ड किरणों ने हमें झकझोर कर जगा दिया था। और उस दिन हम जगे थे....

इन्कलाब के देवता ! तुम साक्षी हो कि हम जगे थे। कोई यह नहीं कह सकता कि हिन्दुस्तानियों ने 'सप्ताश्व अरुण रथ' के झंकार को सुनकर भी अनसुना कर दिया था। कोई यह नहीं कह सकता कि हम अपने देवता की पुकार पर नहीं जगे थे। शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान की श्रेष्ठता की डींग हाँकनेवाले राष्ट्रों ने अचरज-भरी निगाहों से हमें देखा था और हमारी 'क्रान्ति' की 'नवीन पद्धति' की सफलता ने उनकी आँखों में चकाचौंध डाल दिया था। हाँ, हम उस दिन जगे थे।

शक्ति के भण्डार 9 अगस्त ! प्रकाश पुंज-प्यारे-लाल आफताब ! हममें फिर वही शक्ति भरो, हमे फिर वही प्रकाश दो !!

प्यारे ध्रुव, तुम्हारे 'रक्तपर्व' का दिन है आज। ज़रा उठो, देखो-9 अगस्त फिर तुम्हारी समाधि पर फूल चढ़ाने आया है।

चिताओं, कब्रों,समाधियों में सोये हुए देवताओ ! आज जन-जन के मन में फिर वैसी ही बेदारी भर दो कि अपमानित और लांछित होने से पहले वे अपनी गर्दन दे दें।

हमारे बाग़वानो ! तुमहारे खून से सींचे हुए आजादी के पौधे और फूल के हम नये रखवाले हैं। विश्वास करो ! तुम्हारे लहू की लाली को लेकर जो कली खिली है वह कभी सूखकर झड़ नहीं सकती। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि इस पर कभी किसी बेदर्द सैयाद की उँगलियाँ भी नहीं पड़ने देंगे। भगवान के मुकुट या माला में गूँथने के लिए भी यदि कोई इसे तोड़ना चाहेगा तो उसे निराश होना पड़ेगा।

और, आज जागो फिर से, करोड़ों करोड़ कब्रों में गड़े हुए जीवित नरकंकालो ! वह पुण्य महीना, वह पवित्र सप्ताह, वह महान दिवस और वह अलौकिक क्षण, फिर उपस्थित हुआ है जिसने तुम्हारी सूखी हड्डियों और निस्पन्द तन्तुओं में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बिजलियाँ भर दी थीं।

आजाद भारत के गुलाम नर-नारियो! आओ, देखो! आज जलियाँवाले आये हैं, आज भगतसिंह आये हैं, जतीन्द्र आये हैं, खुदीराम आया है।

नौजवानो! सुनो! मौन दिवस भंग कर आज 'बापू' बोलनेवाले हैं। आज आसमान में फिर गूँजेगा महामन्त्र, पवित्र मन्त्र-'करो या मरो'!

'करो या मरो !'

फिर इसी मन्त्र को दुहराने की आवश्यकता है। क्योंकि 'सत्य' कहता है कि 'वादा' अधूरा ही है, 'अहिंसा' कहती है कि कुर्बानी में कमी रह गयी। हमें फिर से करना है, फिर से मरना है।

जेलों, सेलों और फाँसी के तख्तों से सन्देश लेकर जो अल्हड़ हवा आती है, वह कहती है कि 'सुनहरा सपना' पूरा नहीं हुआ है।

यह कैसा स्वप्न भंग है ? यह कैसी छलना है ? कलाइयों और पैरों में बेड़ियाँ मौजूद हैं। अपने अंग-अंग पर बन्धनों को देखकर हम कैसे विश्वास कर लें कि हम स्वतन्त्र हैं। विश्वास की बात तो दूर, कोई ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकता। हमें विश्वास हो गया है, सुराज हुआ है जरूर, लेकिन वह हमारे लिए नहीं हुआ है। वह सुराज हुआ है बिड़लाओं के लिए, टाटाओं के लिए, डालमियाओं के लिए, देशी नरेशों और जमींदारों के लिए, भ्रष्टाचारियों के लिए। यह जनता का सुराज नहीं। महाभारत छिड़ा हुआ है, जनता का संघर्ष अभी जारी हैं। दरिद्रता, भूख और रोगों से मरनेवाले एक-एक प्राणी को आज हम 'शहीद' कहते हैं। क्योंकि दुश्मनों के इन अस्त्रों से जूझनेवाले, मरनेवाले वीरों को हम 'वर्ग संघर्ष' में लड़नेवाला सिपाही समझते हैं।

इस भ्रष्टाचार के आलम में घुल-घुलकर मरने से अच्छा है एक ही बार कुछ करना या करते-करते मर जाना। इसीलिए फिर से टटोलता हूँ अपनी बेड़ियों को!

किन्तु हम हिम्मत नहीं हारेंगे, हम विश्वास नहीं खोयेंगे। हमने देखा है क्रुद्ध जनसमुद्र के उत्ताल तरंगों को, जनशक्ति की प्रचण्ड ज्वाला को! हमने सुना है अपने महामानव के महाशंखनाद को!... हिमालय के विशाल हृदय को फोड़कर एक बार फिर आग भड़कना चाहती है, उसे कौन बुझावेगा ? 'गंगा' फिर एक बार अपने पवित्र जल में लहू घोलने को मचल रही है, इसे कौन समझा सकता है ? आसमान पर चढ़कर 'न्याय' फिर बोलना चाहता है-इस संसार में कौन-सी ऐसी शक्ति है जो उसे चुप कर सके ?

सब्र का प्याला भरने को है, इस प्याले से छलककर एक बूँद भी गिरी कि दुनिया जलकर क्षार हो जायेगी!

प्यारे 9 अगस्त!

ये हैं शहींदों की विधवाएँ! इनकी सुधि के दीपकों के पवित्र प्रकाश को स्वीकार करो और इनकी खाली माँगों में सिन्दूर को आज फिर से हवा में बिखेर दो। ये हैं उनके बच्चे ! इन्हें एक बार दुलार दो ताकि यह आसमान से चाँद-खिलौना तोड़ ला सकें।

ये हैं उनकी वृद्धा मातायें-इनकी ज्यातिहीन आँखों में आज थोड़ी देर के लिए भी प्रकाश दे दो!

ये हैं उनके निस्सहाय पिता! इन्हें सहारा दो! और...यह है हमारी टोली, श्रमजीवी, सर्वहारा की टोली ! सैंकड़े 99 की टोली, दुखी-दरिद्रों का दल!.. इन्हें आदेश दो!

और.. वे हैं-हमारे मुँह से कौर छीननेवाले, अनाज चोर, काले बाजारवाले, भ्रष्टाचार के देवता, शोषण के आचार्य, अन्धकार के सम्राट, गरीबी के जनक, आजादी के शत्रु। दुनिया भटक जाय! धोखा खाये जाय! लेकिन तुम तो उनकी, छद्मवेष के अन्दर छिपी हुई, सूरतों की पहचानते हो'!

और..स्वर्ण सिंहासन पर बैठकर अपने मुल्क को भूल जानेवाले वे हैं- 8 अगस्त' 42 के उस ऐतिहासिक प्रस्ताव की धज्जियाँ उड़ानेवाले महापुरुष गण, जिन्होंने अँगरेजों को भगाने का बीड़ा उठाया था, वे आज अँगरेजों के चरण पर आजादी को पिर चढ़ाकर राष्ट्रध्वज तिरंगे के 'चक्र' के पास 'यूनियन जैक' की मनहूस रेखाएँ अंकित करवाने के लिए बेचैन हैं, वे हैं किसान-मजदूर राज्य स्थापित करने की प्रतिज्ञा करनेवाले, जिन्होंने 'ताकत' को अपनी बपौती सम्पति समझ ली है और जनसाधारण को पद-पद पर लांछित और अपमानित करके जनशकित को दबाने की नापाक हरकत कर रहे हैं।

- बगावत के प्रतीक! हमें बगावत का वरदान दो! हम इनके स्वर्ग में आग लगाना चाहते हैं, हम सच्चा स्वराज्य लाना चाहते हैं।

इन्कलाब के आफताब, तुम साक्षी रहना! कोई यह नहीं कह सके कि हमने..!

9 अगस्त! सलाम!

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

आफ़ताब सूरज, सूर्य **आतुरता** घबराहट, व्यग्रता, व्यकुलता, शीघ्रता **प्रचन्ड** अत्यन्त, तीव्र, तेज, असह्य **झंकार** झनजन आवाज, झींगुर आदि के बोलने का शब्द **सभ्यता** सभ्य होने का भाव, किसी जाति अथवा राष्ट्र की वे सब बातें जो उसके सौजन्य और शिक्षित एवं उन्नत होने की सूचक होती हैं **संस्कृति** सुसंस्कारिता **डींग** शेखी लन्बी-चौड़ी बात **अचरज** आश्चर्य **लांछित** कलंकित जिसे दोष लगा हो **अलौकिक** स्थिरता, अचंचलता **निस्पन्द तंतु** स्थिर तार या धागा जो हिलता डुलता न हो **अल्हड़** मस्तमौला **भंग** भाँग **छलना** धोखा देना **सुराज** अच्छा या सुखद राज्य या शासन **टटोलना** ढूँढने के लिए इधर-उधर हाथ फैलाना **क्रुद्ध** क्रोधित **उत्ताल** उत्कट, तीव्र **सब्र** संतोष **निस्सहाय** जिसका कोई सहायक या मददगार न हो, **श्रमजीवी** मजदूरी करके जीविका चलाने वाला **कौर** ग्रास, उतना भोजन जितना एक बार में मुँह में डाला जाय **सम्राट** राजा **जनक** जन्मदाता, बाप, उत्पादक **छद्मवेश** बदला हुआ, कृत्रिम वेश **सिंहासन** राजा या देवता के बैठने का स्थान **मुल्क** देश, वतन **मनहूस** अशुभ, बुरा **बपौती** बाप से मिली हुई संपत्ति **लांछित** जिसे दोष या लांछन लगा हो

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) 9 अगस्त का आफ़ताब कैसा है ?
(2) इन्कलाब के देवता किसके साथी हैं ?
(3) लेखक के अनुसार हम कैसी प्रतिज्ञा करते हैं ?
(4) लेखक के अनुसार सुराज किसके लिए हुआ है ?
(5) लेखक अपनी बेड़ियों को फ़िर से क्यों टटोलता है ?

2. उत्तर लिखिए:

(1) लेखक ने बगावत का प्रतीक किसको और क्यों कहा है ?
(2) 'ओ लाल आफ़तब' निबंध में स्वतंत्र भारत की विडंबनाओं का चित्रण किया गया है, समझाइए।
(3) लेखक 'करो या मरो' के मंत्र द्वारा क्या कहना चाहते हैं ?
(4) जब हम जगे थे तब राष्ट्रों ने हमें किस नजर से देखा था ?

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(1) ''शक्ति के भण्डार 9 अगस्त! प्रकाश पुंज-प्यारे-लाल आफ़ताब! हममें फिर वही शक्ति भरो, हमें फिर वही प्रकाश दो''!!
(2) ''बगावत के प्रतीक! हमें बगावत का वरदान दो! हम इनके स्वर्ग में आग लगाना चाहते हैं, हम सच्चा स्वराज लाना चाहते हैं।''

योग्यता- विस्तार

- स्वतंत्र भारत की स्मस्याओं पर लिखे गए किसी अन्य साहित्यकार के निबंध को ढूँढकर इस निबंध से तुलना कीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

27 मकई के खेत में

निलय उपाध्याय

(जन्म: सन् 1963 ई.)

निलय उपाध्याय का जन्म बिहार के बक्सर जनपद के दुल्लहपुर गाँव में हुआ था। कवि और कथाकार के रूप में उनकी पहचान है। उनके प्रकाशित कविता संग्रह हैं– 'अकेला घर हुसैन का', और 'कटौती'। 'अभियान' और 'वैतरनी' उनके उपन्यास हैं।

प्रस्तुत कविता में मकई के खेत के तीन दृश्य-चित्र अंकित हैं। पहला चित्र आकाश में कुलांचें भर बरस रहे बादलों का है, जिनके स्वागत में मकई के नवजात पौधे सिर उठाये खड़े हैं। दूसरा चित्र बादलों और पौधों के बीच चल रहे कबड्डी के खेल का है जिसमें बादलों ने पौधों को धर दबोचा है। तीसरे दृश्य में पौधों ने बादलों को अंतिम साँस तक के लिए जकड़ लिया है। हवा साँस रोककर इस खेल को देख रही है। पृथ्वी की छाती में दूध उतर आया है।

(1)

बादल
कुलाँचें भर रहे हैं
आकाश का रंग काला हो रहा है
लहराता समुद्र
आ रहा है खेतों में,
हाथी के बच्चों की तरह
सूँड़ उठाए खड़े हैं
स्वागत में–
गूँफे खोलकर
मकई के नवजात पौधे।

(2)

आज फिर जमेगी
कबड्डी
मेघ संग
मकई के पौधों की,
हवा की पीठ पर पाँव रखकर
भागना ही चाहते थे कि
पकड़ लिया मेघों ने
पौधों को
छोड़ेंगे नहीं
साँस टूटने तक

(3)

गजब !
मकई के पौधों ने
पकड़ लिया है मेघों को
छोड़ेंगे नहीं
साँस टूटने तक।
हवा, साँस रोककर देख रही है
पेड़ पीठ ठोक रहे हैं
पृथ्वी के सीने में
दूध उतर गया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

मकई मक्का **कुलाँचें** छलांग, चौकड़ी **गूँफे** बाल खोलकर **नवजात** नये उत्पन्न **मेघ** बादल **कबड्डी** उत्तर भारत का विशेष खेल

मुहावरे

पीठ पर पाँव रखकर भागना सरपट भागना **पीठ ठोकना** हौसला बढ़ाना,बढ़ावा देना **सीने में दूध उतरना** मातृत्व का परिचय देना

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) बादल कहाँ कुलाँचें भर रहे हैं ?
(2) सूँड़ उठाए हाथी के बच्चों की तरह कौन खड़े हैं ?
(3) मेघों ने किसको पकड़ लिया है ?
(4) मकई के पौधों ने किसे पकड़ लिया है ?
(5) किसके सीने में दूध उतर आया है ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) मकई के पौधों का हाथी के बच्चों जैसा सूँड़ उठाने का आशय स्पष्ट कीजिए।
(2) हवा के साँस रोकने, पेड़ों के पीठ ठोकने, पृथ्वी के सीने में दूध उतर आने का अर्थ समझाइए।

योग्यता-विस्तार

- बादल और फसल के परस्पर संबंध पर एक निबंध लिखिए।
- प्रकृति और फसल के संबंध पर दो कविताएँ ढूँढ़कर पढ़िए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

28 खितीन बाबू

अज्ञेय

(जन्म : सन् 1911 ई.; निधन : सन् 1987 ई.)

अज्ञेय का जन्म उत्तरप्रदेश के देवरिया जिले के कसया गाँव के एक पुरातत्व शिविर में हुआ था। उनका पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन था। आरंभ में वे विज्ञान के तेजस्वी छात्र रहे किंतु बाद में साहित्य से जुड़ गए। स्वाधीनता संग्राम की क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण उन्हें कई वर्ष जेल में बिताने पड़े। द्वितीय विश्वयुद्ध में सेना में भरती होकर असम-बर्मा सीमांत पर रहे। उन्होंने हिन्दी की कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया। 'प्रतीक और दिनमान' मुख्य हैं।

अज्ञेय 'प्रयोगवाद' और 'नई कविता' के पुरस्कर्ता रहे। उन्होंने वस्तु और शिल्प दोनों में नये-नये प्रयोग किए। उन्होंने कई-कई बार देश-विदेश की यात्राएँ की और इस दौरान अनेक भाषाओं और दर्शनों का गहरा अध्ययन किया। साहित्य की सभी विधाओं में उन्होंने सृजन किया और हरविधा में नये प्रतिमान बनाए। 'तारसप्तक' का संपादन हिन्दी जगत की एक विशिष्ट घटना बनी। 'भग्नदूत', 'चिंता','हरीघास पर क्षणभर' 'आँगन के पारद्वार' और 'कितनी नावों में कितनी बार' उनके प्रमुख कविता संग्रह हैं। 'शेखर एक जीवनी','नदी के द्वीप' और 'अपने अपने अजनबी' उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। उनकी कहानियाँ 'अज्ञेय की कहानियाँ भाग-1तथा 2' में संकलित हैं। उन्होंने निबंध, यात्रावर्णन और समीक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत कहानी में एक साधारण व्यक्ति के असाधारण व्यक्तित्व को व्यंजित किया गया है। खितीन बाबू के माध्यम से लेखक ने मनुष्य की जिजीविषा, जिंदादिली, और प्रतिकूल स्थितियों से हार न मानकर उनके बीच से रास्ता निकाल लेने की दृढ़ संकल्प शक्ति एवं अदम्य उत्साह को चित्रित किया है। चेचक ने चेहरे को कुरूप कर दिया, एक आँख चली गई और इसके बाद तो विभिन्न दुर्घटनाओं में एक के बाद एक सारे अंग-चले गये लेकिन फिर भी जिंदादिली के साथ हँसते-हँसते जीने वाला खितीन बाबू का चेहरा कभी भुलाया नहीं जा सकता। खितीन बाबू के चरित्र-चित्रण में लेखक ने अद्‌भुत कलात्मक्ता का परिचय दिया है।

वो चेहरे। कौन से चेहरे? कौन सा चेहरा? जो जीवनभर चेहरों की स्मृतियाँ संग्रह करता आया है, उसके लिए यह बहुत कठिन है कि किसी एक चेहरे को अलग निकालकर कह दे कि यह चेहरा मुझे नहीं भूलता; क्योंकि जिसने भी जो चेहरा वास्तव में देखा है, सचमुच देखा है, वह उसे भूल ही नहीं सकता-फिर वह चेहरा मनुष्य का न होकर चाहे पशु-पक्षी का ही क्यों न हो...युरापीय को हर हिन्दुस्तानी का चेहरा एक जान पड़ता है; हन्दुस्तानी को हर फिरंगी का चेहरा एक। मानव को सब पशु एक-से दीखते हैं। वह भी एक तरह का देखना ही है। लेकिन जिसने सचमुच कोई भी चेहरा देखा है, वह जानता है कि हर व्यक्ति अद्वितीय है, हर चेहरा स्मरणीय। सवाल यही है कि हम उसके विशिष्ट पहलू को देखने की आँखें रखते हों।

मैं भी जब किसी एक चेहरे पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूँ तो और अनेक चेहरे सामने आकर उलाहना देते हैं "क्या हम नहीं? क्या हमें तुम भूल गए हो?"इनमें पुरुष हैं, स्त्रियाँ हैं, बच्चे हैं; इतर प्राणियों में घोड़े हैं; कुत्ते हैं, तोते हैं; एक गिलहरी है, जो मैंने पाली थी और मेरी जेब में रहती थी; एक मुनाल है, जो मेरी जोली से घायल होकर चीखता हुआ मीलों दौड़ा था; एक कुत्ता है, जो मेरी बीमारी में मेरे सिरहाने बैठकर आँसू गिराता था; एक टूटी चोंच और कटे पंख वाला कौआ है, जो मुलतान-जेल में मेरा दोस्त बना था और परकटे नाम से पुकारने पर आधा उड़ता और उचकता हुआ आकर हाजिर हो जाता था - कहाँ तक गिनाया जाए पेड़-पौंधों के हम चेहरे नहीं मानते, नहीं तो शायद वे भी सामने आ खड़े होते। कालिदास ने शकुन्तला के जाने पर रोती हुई वनस्पतियों का वर्णन किया है?

"अपसृतपाण्डुपत्रा मुंचति अश्रु इव लता:।"

मेरी सहानुभूति उतनी दूर तक शायद नहीं है, लेकिन चेहरों का मेरे पास यथेष्ट संग्रह है-सभी अद्वितीय, सभी स्मरणीय। अगर एक चुनता हूँ, तो किसी असाधारणत्व के लिए नहीं चुनता हूँ, एक अत्यन्त साधारण व्यक्ति का अत्यन्त साधारण चेहरा; क्योंकि यही तो मैं कहना चाहता हूँ- असाधारण ही स्मरणीय नहीं हैं, हर गुदड़ी में लाल हैं, जरा उसे लौटकर झाँकने का कष्ट तो करो।

वो चेहरे। वह एक चेहरा। खितीन बाबू का चेहरा न सुन्दर था, न असाधारण; न वह 'बड़े आदमी' ही थे- सादारण पढ़े-लिखे, साधारण क्लर्क। मैंने पहले-पहल उन्हें देखा, तो कोई देखने के लायक था! चेचक के दागों से भरे चेहरे पर एक आँख

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गायब थी और एक बाँह भी नहीं थी–कोट की आस्तीन पिन लगाकर बदन के साथ जोड़ दी गई थी। पर खितीन बाबू की हँसी में एक विलक्षण खुलापन और ऋजुता थी इसलिए बाद में औरों से उनके बारे में पूछा, तो मालूम हुआ, आँख बचपन में चेचक के कारण जाती रही थी, बाँह पेड़ से गिरने पर टूट गई थी और कटवा देनी पड़ी। उनके हँसमुख और मिलनसार स्वभाव की सभी प्रशंसा करते थे।

मेरी उनसे भेंट अचानक एक मित्र के घर हो गई थी। मैं दौरे पर जानेवाला था, इसलिए दोस्तों से मिल रहा था। दो–तीन महीने घूम–घाम कर फिर आया; लेकिन खितीन बाबू के दर्शन कोई छः महीने बाद उन्हीं मित्र के यहाँ हुए– अबकी बार उनकी एक टाँग भी नहीं थी। रेलगाड़ी की दुर्घटना में टाँग कट जाने से वे अस्पताल में पड़े रहे थे, वहाँ से साखियों का उपयोग सीखकर बाहर निकले थे।

उनके लिए घटना पुरानी हो गई थी, मेरे लिए तो नई सूचना थी। मैं सहानुभूति भी प्रकट करना चाहता था; पर झिझक भी रहा था, क्योंकि किसी की असमर्थता की ओर इशारा भी उसे असमंजस में डाल देता है, कि उन्होंने स्वयं हाथ बढ़ाकर पुकारा, "आइए, आइए, आपको अपने नए आविष्कार की बात बतानी है।" उनसे हाथ मिलाते हुए समझ में आया कि एक अवयव के चले जाने से दूसरे की शक्ति कैसे दुगुनी हो जाती है। वैसे जोर की पकड़ जीवन में एक–आध बार ही किसी हाथ से पाई होगी। मैं बैठ ही रहा था कि वे बोले, "देखा आपने, कितना व्यर्थ बोझा आदमी ढोता चलता है ? मैंने टांसिल कटवाए थे, कोई कभी नहीं मालूम हुई, एपेंडिक्स कटवाई, कुछ नहीं गया, केवल उसका दर्द गया। भगवान औधड़दानी हैं न, सब कुछ पालतू देते हैं दो हाथ, दो कान, दो आँखें ! अब जीभ तो एक है आप ही बताइए, आपको कभी स्वाद लेने के साधन की कमी मालूम हुई है ?''

मैं अवाक् उन्हें देखता रहा। पर उनकी हँसी सच्ची हँसी थी, और उनकी आँखों में जीवन का जो आनन्द चमक रहा था, उसमें कहीं अधूरेपन की पंगुता की झाई नहीं थी। उन्होंने शरीर के अवयवों के बारे में अपनी एक अद्‌भुत थ्योरी भी मुझे बताई थी, यह ठीक याद नहीं कि वह इसी दूसरी भेंट में या और किसी दूसरी बार, लेकिन थ्योरी मुझे याद है, उनका पूरा जीवन उसका प्रमाण रहा। वैसे शायद बताई होगी उन्होंने थोड़ी–थोड़ी करके दो–तीन किस्तो में।

तीसरी बार मैंने देखा, तो वे दूसरी बाँह भी खो चुके थे। मालूम हुआ कि रिक्शे से उतरते समय गिर गए थे, कोहनी टूट गई थी और फिर घाव दूषित हो गया, जिससे कोहनी से कुछ ऊपर बाँह काट दी गई। इस बार भी भेंट तो उन्हीं मित्र के यहाँ हुई, मगर उनकी बैठक में नहीं, उनके रसोईघर में। मित्र–पत्नी भोजन–बना रही थी और खितीन बाबू एक मूढ़े पर बैटे हुए बताते जा रहे थे कि कौन व्यंजन कैसे बनेगा। वे खाने के शौकीन तो थे ही, खिलाने का शौक उन्हें और भी अधिक था, और पाकविद्या के आचार्य थे। मेरे मित्र ने उनकी दावत की थी। दावत का उपलक्ष्य बताया नहीं गया था, लेकिन इस बार कई दिन तक उनकी स्थिति संकटापन्न रही थी। खितीन दा भी इस बात को समझ गए थे, तभी उन्होंने कहा–"दावत रही और तुम्हारे यहाँ ही रही, पर दूँगा मैं, और सब कुछ अपनी देखरेख में बनवाएँगे, बनवाएँगी गृहपत्नी, मगर विधान खितीन बाबू का होगा। मित्र ने यह बात सहर्ष मान ली थी। खितीन बाबू का उत्साह इतना था कि वही सबके लिए सहारा बन जाता था।"

मैं भी मूढ़ा लेकर उनके पास बैठ गया। निमंत्रण मुझे भी बाहर ही मिल चुका था। मैंने गृह–पत्नी से पूछा – "क्या बना रही हैं ?"और उन्होंने उत्तर दिया, "मैं क्या बना रही हूँ, बना तो खितीन दा रहे हैं।"इस पर खितीन दा बोले, "हाँ, मेरा छुआ हुआ आप खा तो लेंगे न ?"और ठहाका मारकर हँस दिए। उनका छुआ हुआ, जिनके दोनों हाथ नदारद ! फिर बोले–"आपने भोजन–विलासी और शय्या –विलासी की कहानी सुनी है ?"

मैंने सुनी थी। वे सुनाने लगे। एक राजा के पास दो व्यक्ति नौकरी की तलाश में आए। पूछने पर एक ने कहा–"मैं भोजन विलासी हूँ।" यानी ? यानी राजा जो भोजन करेंगे, उसे पहले चखकर वह बताएगा कि भोजन राजा के योग्य है या नहीं। जाँच के लिए उसी दिन का भोजन लाया गया, थाली पास आते–न आते भोजन विलासी ने नाक बन्द करते हुए चिल्लाकर कहाँ– उ–हू–हूँ ले जाओ, इसमें से मुर्दे की बू आती है !"बहुत खोज करने पर मालूम हुआ जिस खेत के धान से राजा के लिए चावल आए थे, उसके किनारे के पेड़ में एक मरा हुआ पक्षी टंगा था ! भोजन–विलासी को नौकरी मिल गई। शय्या–विलासी ने बताया कि वह राजा के बिछौने की परीक्षा करेगा। उसे शयन–कक्ष में ले जाया गया। मखमली गद्दे पर वह जरा बैठा ही था कि कमर पकड़कर चीखता हुआ उठ खड़ा हुआ, "अरे रे, मेरी तो पीठ में बल पड़ गया, क्या बिछाया है किसी ने !"सबने देखा कहीं कोई सलवट तक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

न थी, सब गद्दे -वद्दे उठाकर झाड़े गए, कहीं कुछ नहीं था जो विलासी की कमर में चुभ सकता-पर हाँ, आखिर गद्दे के नीचे एक बाल पड़ा हुआ था। इस प्रकार शय्या-विलासी को भी नौकरी मिल गई।

कहानी सुनाकर खितीन बाबू बोले- " वह भी क्या जमाने थे!"

मित्र-पत्नी ने कहा-"आप उन दिनों होते,तो क्या बात होती न? "

खितीन दा ने कहा, "और नहीं तो क्या। मैं होता, तो राजा को दो नौकर थोड़े ही रखने पड़ते?"

मित्र-पत्नी ने मेरी और उन्मुख होकर कहा, "खितीन बाबू गाते भी बहुत सुन्दर हैं।"

खितीन दा फिर हँसे। बोले -"हाँ, हाँ, संगीत-विलासी की नौकरी भी मैं ही कर लेता न?"

चार बजे भोजन तैयार हुआ, हम आठ-दस आदमियों ने खाया। मेरे लिए स्मरणीय स्वादों में भोजन का स्वाद प्रधान नहीं हैं, फिर भी उस भोजन की याद अभी बनी है।

तब लगातार दो-चार दिन उनसे भेंट होती रही; पर उसके बाद मैंने खितीन बाबू को एक बार और देखा, एक लम्बी अवधि के बाद। और अबकी बार उनकी दूसरी टाँग भी मूल से गायब थी।

दोनों हाथ नहीं, दोनों टाँगे नहीं, एक आँख नहीं। टांसिल, एपेंडिक्स वगैरह तो जैसा वे स्वयं कहते, रूंगे में चढ़ा दी जा सकती हैं। केवल एक स्थाणु बैठक में गद्देदार मूढ़े पर बैठा था। घर तक वे एक विशेष पहिएदार कुर्सी में लाए गए थे, लेकिन वह कुर्सी कमरे में ले जाने में उन्हें आपत्ति थी; क्योंकि वह अपाहिजों की कुर्सी है। कुर्सी से उठाकर उन्हें भीतर ला बिठाया गया था, और यहाँ वे सहज भाव से बैठे थे मानो किसी स्वप्नाविष्ट चतुर मूर्तिकार ने पत्थर से मस्तक और कन्दे तो पूरे गढ़ दिए हों, बाकी स्तम्भ अछूता छोड़ दिया हो।

मैं चुपके से एक तरफ बैठ गया, वे कुछ बात कर रहे थे। उन्हें देखते हुए मुझे बचपन में आत्मा के सम्बन्ध में की गई अपनी बहसें याद आ गईं। आत्मा है, तो सारे शरीर में व्याप्त है, या किसी एक अंग में रहती है? अगर सारे शरीर में, तो अंग कट जाने पर क्या आत्मा भी उतनी ही कट जाती है? अगर एक अंग में, तो अंग कट जाने पर क्या होता है? अपनी थ्योरी याद आ गई, जिसमें इस पहेली को हल कर दिया गया था; कि जब कोई अंग कटता है, तो उसमें से आत्मा सिमटकर बाकी शरीर में आ जाती है, पंगु नहीं होती। यह थ्योरी कहाँ तक मान्य है, इस बहस में तो वैज्ञानिक पड़ें, पर उनको देखते हुए इनके बारे में जरूर इसकी सचाई मानो ज्वलन्त होकर सामने आ जाती थी, उनकी आत्मा न केवल पंगु नहीं थी, वरन् शरीर के अवयव जितने कम होते जाते थे उसमें आत्मा की कान्ति मानो उतनी बढ़ती जाती थी मानो व्यर्थ अंगों से सिमट-सिमट कर आत्मा बचे हुए शरीर में और धनी पुंजित होती जाती-सारे शरीर में भी नहीं, एक अकेली आँख में-प्रेतात्माओं से भरे हुए विशाल शून्य में निष्कम्प दिपते हुए एक आकाश-दीप के समान...

तभी खितीन बाबू ने मुझे देखा। छूटते ही बोले ''बोले छिलाम, बेचे थाक्ते बेशि किछु लोग न!'' (मैंने कहा था, बचे रहने के लिए ज्यादा कुछ नहीं चाहिए!) और हँस दिए।

इसके बाद मैंने फिर खितीन बाबू को नहीं देखा। कहानी की पूर्णता के लिए एक बार और देखना चाहिए था; पर मैं कहानी नहीं सुना रहा, सच्ची बात सुना रहा हूँ। तो मैंने उन्हें फिर नहीं देखा। लेकिन सुनने वाले की कमी में कहानी नहीं रुकती। देखने वाला न होने से जीवन-नाटक नहीं हो जाता। मैंने भी सुनकर ही जाना; खितीन बाबू की कहानी अपने चरम उत्कर्ष तक पहुँचकर ही पूरी हुई; टहलने ले जाते समय उनकी पहिएदार कुर्सी एक मोटर ठेले से टकरा गई थी, वे नीचे आ गए और गाड़ी का पहिया उनके कन्धे के ऊपर से चला गया- बाँह का जो ठूँठ बचा हुआ था, उसे भी चूर करता हुआ। वे अस्पताल ले जाए गए, ढूँढ अलग की गई और कन्धे की पट्टी हुई; ओपरेशन के बाद उन्हें होश रहा और उन्होंने पूछा कि कन्धा है या नहीं? फिर कहा, "जाना गेलो ऐटा छाडाओ चले!" (मालूम हो गया कि इसके बिना भी चल सकता है!) लेकिन अबकी बार यह चलना अधिक देर तक नहीं हुआ; अस्पताल से वे नहीं निकले। शरीर में विष फैल गया और भोर में अनजाने में उनकी मृत्यु हो गई।

खितीन बाबू: एक सादारण क्लर्क : साधारण दुर्घटना : मृत्यु हो गई लेकिन क्या सचमुच? अब भी उन्हें देख सकता हूँ। कभी लगता है कि जिसे देखता हूँ वह केवल अंगहीन ही नहीं है, मानो अशरीरी ही हैं; केवल एक दीप्ति अंगों से क्या? अवयवों से क्या? जाना गेलो एटा छटाओ चले इस सबके बिना काम चल सकता है। केवल दीप्ति केवल संकल्प शक्ति। रोटी, कपड़ा, आसरा, हम चिल्लाते हैं, ये सब जरूरी हैं, निस्सन्देह जीवन के एक स्तर पर ये सब निहायत जरूरी हैं लेकिन मानवजीवन की मौलिक प्रतिज्ञा ये नहीं हैं; वह है केवल मानव का अदम्य अटूट संकल्प...

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पणी

फिरंगी अंग्रेज **अद्वितीय** जिसके जैसा दूसरा नहीं **यथेष्ट** पर्याप्त **गुदड़ी** फटे-पुराने कपड़े सिलकर बना बिछावन **क्लर्क** बाबू **अवयव** अंग **आस्तीन** बाँह को ढकने वाला कपड़ा **पंगु** विकलांग **पाकविद्या** भोजन पकाने की कला **संकटापन्न** संकट से घिरा हुआ **विधान** तरीका **सलवट** मोड़ **निष्कंप** बिना काँपे **आसरा** सहारा

स्वाध्याय

1. उत्तर दीजिए :

(1) हिन्दुस्तानी को हर फिरंगी का चेहरा कैसा लगता है ?

(2) मनुष्य के अतिरिक्त कहानीकार का संबंध किन-किन प्राणियों से है ?

(3) खितीन बाबू के कौन-कौन से अंग नहीं थे ?

(4) खितीन बाबू किस विद्या के आचार्य थे ?

(5) मानव-जीवन की मौलिक प्रतिज्ञा क्या होनी चाहिए ?

2. उत्तर लिखिए :

(1) खितीन बाबू का चेहरा कैसा था ?

(2) 'गुदड़ी के लाल' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(3) खितीन बाबू की मृत्यु कैसे हुई ?

(4) अपंग होने पर भी खितीन बाबू में अधूरापन क्यों था ?

(5) खितीन बाबू का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(6) भोजन-विलासी और शय्या-विलासी का अंतर स्पष्ट कीजिए।

3. ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(1) 'मैं अवाक् उन्हें देखता रहा। पर उनकी हँसी सच्ची थी। और उनकी आंखों में जीवन का जो आनंद चमक रहा था, उसमें कहीं अधूरेपन की पंगुता की झाईं नहीं थी'

योग्यता- विस्तार

- कहानी में प्रयुक्त बंगाली वाक्यों को पहचानकर उनका अर्थ लिखिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

साहित्यशास्त्र

साहित्य हमारे जीवन के विविध रूप प्रस्तुत करता है। जिस तरह जीवन में विविधता है उसी तरह साहित्य में भी। साहित्य के विविध प्रकारों को हम साहित्य की विधाएँ कहते हैं।

साहित्य के मुख्य भेदोपभेद इस प्रकार हैं:

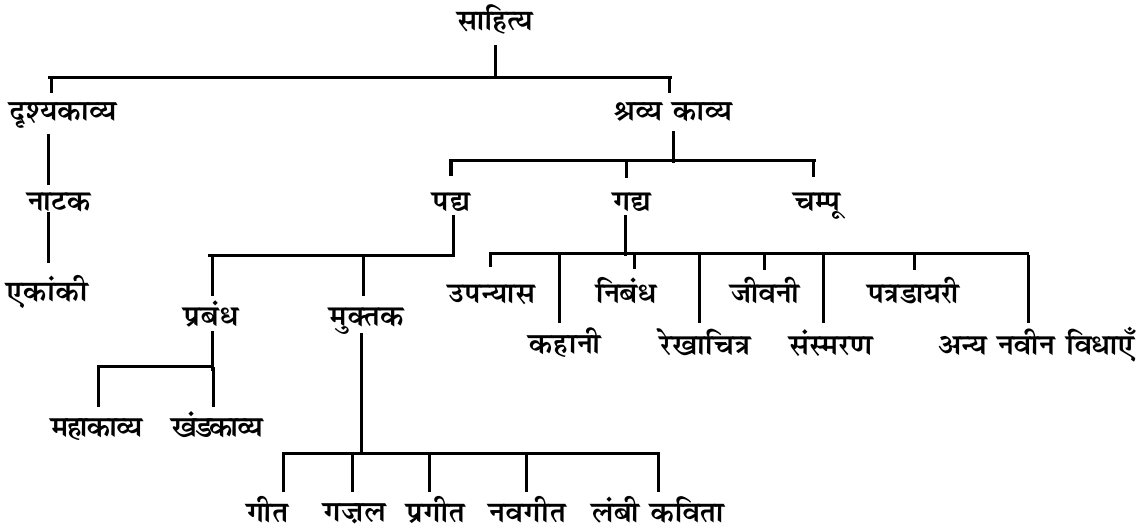

उपर्युक्त विभाजन साहित्य का एक निश्चित स्वरूप स्पष्ट करता है। यहाँ उल्लेखनीय यह है कि साहित्य का यह वर्गीकरण हम साहित्यशास्त्र के आधार पर कर सकते हैं।

साहित्य के अध्येता के सामने सबसे पहला प्रश्न साहित्य के प्रयोजन का आता है। वास्तव में साहित्य का मूल प्रयोजन आनंद है, यह आनंद सुनकर,पढ़कर या देखकर प्राप्त होता है। यह साहित्य की विधा या प्रकार पर आधारित है। साहित्य का रसास्वाद ही साहित्य का मूल लक्ष्य या प्रयोजन है – इसीलिए तो 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' कहा गया है।

साहित्य का प्रयोजन कभी 'स्वांत:सुखाय' कभी यश, कभी धन तो कभी व्यवहार का ज्ञान देना भी होता है। उत्तम साहित्य का अध्ययन तार्किकी दृष्टि को व्यापक फलक देता है, जीवन के विविध पहलुओं का परिचय, समस्याओं का चित्रण करते हुए कुछ हद तक उनका निराकरण भी प्रस्तुत करता है। अर्थात् साहित्य वास्तव में 'हितयुक्त' एवं 'सार्थक शब्द एवं अर्थ' के साथ प्रकट होने का भाव प्रकट करता है।

यहाँ हम साहित्यिक विधाओं का परिचय, रस, अलंकार, छन्द, शब्दशक्ति, काव्य-गुण, काव्य दोष आदि की चर्चा करेंगे।

साहित्यिक विधाओं का परिचय

(क) दृश्यकाव्य : नाटक यह दृश्यकाव्य का महत्वपूर्ण साहित्य प्रकार है। यह ऐसी काव्य विधा है, जिसे हम अभिनय के द्वारा रंगमंच पर प्रदर्शित होते हुए देख सकते हैं। इसमें दृश्य के साथ-साथ श्रवण का तत्व भी रहता है, किन्तु प्रधानता तो दृश्य की ही बनी रहती है। भारतवर्ष में नाट्य-साहित्य की परम्परा बहुत प्राचीन है, इसका मूल स्रोत वेदों में मिलता है। आचार्य भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' से उसका सुनिश्चित वैज्ञानिक विधान उपलब्ध होने लगता है।

'काव्येषु नाटकम् रमयम्' कहकर भारतीय काव्यशास्त्र में नाटक की महिमा का गान किया गया है। 'नाटक' शब्द की व्युत्पति ही 'नट' धातु से हुई है। 'नट्' का अर्थ है अभिनेता द्वारा की गई अनुकृति, अर्थात् अभिनय। यह अभिनय ही नाटक का प्राणतत्व है। लोकहित और लोकरंजन की दृष्टि से साहित्य के समस्त रूपों में नाटक सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नाटक के तत्व : प्राचीन भारतीय आचार्यों ने नाटक के प्रमुख तीन तत्व माने हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने यह संख्या छः बताई है। सर्वप्रथम वस्तु, नेता और रस इन तीनों तत्वों को महत्व दिया गया, किंतु अब भारतीय नाटक में भी कुल छः तत्व माने जाते हैं, जो इस प्रकार हैं-

(1) **कथावस्तु :** नाटक की कथा या घटना-क्रम को कथावस्तु कहते हैं। भारतीय और पाश्चात्य नाटक में सबसे बड़ा अंतर 'रस' को लेकर है। क्योंकि भारतीय काव्यशास्त्र में 'रस' को नाटक की आत्मा माना गया है, जबकि पश्चिम में 'संघर्ष' को नाटक का प्राण माना गया है। आज के नाटक की कथावस्तु में अन्विति, चुस्तता, सुसंगतता, संक्षिप्तता, सांकेतिकता एवं तीव्रता का होना अति आवश्यक माना जाता है। संकलनत्रय (स्थान-काल-घटना)का निर्वाह और नाटकीय विडंबना भी इसके महत्वपूर्ण पहलू हैं।

(2) **पात्र एवं चरित्र का विकास :** नाटक में पात्र ही कथावस्तु या घटना व्यापार के मुख्य आधार होते हैं। नायक, नायिका, प्रतिनायक आदि पात्र आवश्यक हैं।

(3) **संवाद (कथोपकथन) :** जिस प्रकार नाटक बिना पात्रों या चरित्रों के नहीं हो सकता, उसी प्रकार इन पात्रों में परस्पर संवाद के बिना भी नाटक संभव नहीं है। संवाद दो प्रकार के होते हैं-स्वगत तथा प्रकट। स्वगत कथन का आशय यह है कोई पात्र अपने मन में जो कुछ सोचता है, उसे अपने ही मुँह से कहे। मंचन के समय यह मान लिया जाता है कि किसी भी पात्र के स्वगत कथन को नाटक का कोई दूसरा पात्र नहीं सुन रहा है, केवल दर्शक उसे सुन रहे हैं। प्रकट कथन सबके लिए होता है, उसे मंच पर खड़े पात्र एवं दर्शक सभी सुन सकते हैं।

(4) **देशकाल और वातावरण :** जिस प्रकार की कथावस्तु नाटक में ली गई है, उसके अनुसार देश-काल तथा वातावरण का चित्रण नाटककार को करना चाहिए। यह पात्रों के रहन-सहन, वेश-भूषा, भाषा-शैली और रीति-रिवाज के द्वारा संभव है।

(5) **भाषा-शैली :** नाटक में भाषा अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्त्व है। यह किसी भी भाषा में हो सकता है किन्तु भाषा पात्र, कथा, देश-काल और वातावरण के अनुरूप होनी चाहिए।

नाटक वास्तव में अभिनय की कला है इसलिए रंगमंच से उसका सीधा संबंध है, नाटक की प्रस्तुति में विभिन्न शैलियों का समन्वय होता है। प्राचीन काल में अभिनय के चार मुख्य प्रकार थे- आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक, किन्तु आधुनिक युग में ज्ञान-विज्ञान की नई-नई खोजों के कारण नई-नई शैलियों का विकास हुआ है। प्रकाश एवं ध्वनि की नई-नई प्रभावशाली तकनीकों से नाटक समृद्ध बना है।

(6) **उद्देश्य :** कला का कोई भी माध्यम एवं साहित्य की कोई भी विधा कभी उद्देश्यहीन नहीं होती। भारतीय आचार्यों ने तो आदर्श के अनुसार महान उद्देश्य अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में से किसी एक की प्राप्ति ही माना है। वास्तव में नाटक आधुनिक युग में एक सफल एवं प्रभावशाली माध्यम के रूप में आया है जो संघर्ष के चित्रण द्वारा हमारे जीवन, समाज की वास्तविकता, खोखलापन, दंभ आदि का चित्रण करे, साथ-साथ शिक्षा, संस्कारिता एवं सामाजिक क्रांति का माध्यम बने।

(7) **रंग निर्देश :** रंग निर्देश अर्थात् नाटक की प्रस्तुति के समय रंगमंच की साज-सज्जा, भौतिक-सम्पत्ति एवं अभिनेताओं को किस समय क्या करना है इसकी सूचनाएँ।

नाटक दृश्यकाव्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विधा है। इसके अलावा आधुनिक युग में एकांकी भी स्वतंत्र विधा के रूप में उभरकर आई है। एकांकी में केवल एक अंक होता है, यह अंक दृश्यों में विभाजित हो सकता है। एकांकी में जीवन की कोई एक घटना, एक परिस्थिति, एक समस्या या कोई एक प्रसंग प्रस्तुत किया जाता है।

काव्य-नाटक, गीति-नाट्य, रेडियो-रूपक, नृत्य-संगीत-काव्य-रूपक आदि आधुनिक काल में विकसित होनेवाली अन्य दृश्य-काव्य की विधाएँ हैं, जिनका विकास आधुनिक तकनीक की वजह से हुआ है।

(ख)श्रव्य काव्य : श्रव्य-साहित्य वह है जिसके आस्वाद का माध्यम है श्रवण या पठन। वर्णन शैली के आधार पर श्रव्यकाव्य के तीन भेद किए जाते हैं-पद्य, गद्य और चम्पू काव्य।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(i) **पद्यकाव्य :** लय, संगीत, नाद, स्वर, अलंकार आदि से युक्त शब्दबद्ध काव्य को पद्यकाव्य कहते हैं। ऐसी रचना प्राय: छन्दोबद्ध होती है। बंध की दृष्टि से इसके दो भेद हैं : प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य

प्रबंधकाव्य : प्रबंध काव्य एक ऐसे विचार या भाव के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। उसमें आरंभ से अंत तक एक मूल भाव बना रहता है। इसके दो मुख्य भेद हैं–महाकाव्य और खंडकाव्य।

महाकाव्य : महाकाव्य का अर्थ है प्रत्येक दृष्टि से महान काव्य। इसमें कथानक, पात्र और शैली आदि की उदात्तता अनिवार्य है। इसका उदेश्य महान होता है। इसके मुख्य तत्व इस प्रकार हैं:

कथानक : महाकाव्य कथानक की दृष्टि से एक ऐसी सुसम्बद्ध रचना है, जिसमें उत्कृष्ट उदात्त भावों की अभिव्यक्ति हो। समग्र कथा सर्गबद्ध हो, सर्ग संख्या आठ या उससे अधिक हो।

प्रारंभ : महाकाव्य का प्रारंभ मंगलाचरण, आशीर्वचन, नमस्कार आदि से होना चाहिए।

कथा जगत प्रसिद्ध ऐतिहासिक या पौराणिक व्यक्ति से संबंधित हो। नायक महान, उच्च कुलोत्पन्न, महानगुणों से संपन्न हो। सभी रसों का परिपाक हो किन्तु शृंगार, वीर या शान्त में से कोई एक रस अंगीरस के रूप में आए। प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द का प्रयोग हो और सर्ग के अन्त में छन्द परिवर्तन आवश्यक है।

प्रकृति – चित्रण महाकाव्य का एक आवश्यक लक्षण है।

महाकाव्य का शीर्षक नायक, कवि या केन्द्रीय घटना–स्थल के नाम पर होना चाहिए।

खण्डकाव्य : महाकाव्य का 'खण्ड' यानि आंशिक रूप में अनुसरण करने वाली विधा खण्डकाव्य है। खंडकाव्य में कोई एक प्रसंग, घटना, किसी बड़ी कथा का एक अंश, एक चरित्र, एक समस्या आदि का वर्णन हो सकता है। महाकाव्य की भाँति इसमें जीवन की समग्रता या पूरी कथा नहीं होती। दिनकर का खंडकाव्य 'रश्मिरथी' कर्ण के चरित्र पर आधारित है। गुप्त जी के 'यशोधरा', 'विष्णुप्रिया' भी चरित्र–प्रधान खण्डकाव्य हैं।

महाकाव्य और खण्डकाव्य दोनों ही प्रबंध की विधाएँ हैं, दोनों ही में कथा–सूत्र, पात्र आदि रहते हैं; पर महाकाव्य के समान खंडकाव्य में कथा और वर्णनों को विस्तार की पूर्णता नहीं मिल पाती।

मुक्तक काव्य : मुक्तक स्वतंत्र किन्तु अपने आप में पूरी रचना है। जो पूर्वापर संबंध के बग़ैर ही रस उत्पन्न कर सके, अर्थ व्यंजक हो, अपने आप में संपूर्ण हो। मुक्तक में संक्षिप्तता और संकेत महत्वपूर्ण है। इनमें कथा का निर्वाह नहीं होता। सफल मुक्तक रसानुभूति कराने में सफल होता है तथा पाठक को चमत्कृत करता है।

मुक्तक दो प्रकार के होते है: गेय और अगेय।

गीत: गेयता से युक्त छोटी भावपूर्ण रचना को गीत कहते हैं। गीत में संक्षिप्तता, भावमयता, मार्मिकता, वैयक्तिकता आदि गुण होते हैं। गीत में ताल, लय और छंद का विशेष ध्यान रखा जाता है, गीत स्थायी और अंतरा दो भागों में विभाजित रहता है। हिन्दी में भक्तिकालीन कवियों ने काफ़ी मात्रा में गीत लिखे हैं, जिन्हें पद कहा जाता है। कबीर, तुलसी, सूर, मीरा, रैदास आदि ऐसे ही उल्लेखनीय भक्त कवि हैं। आधुनिक काल में भी गीत लिखे जा रहे हैं किंतु उनमें भक्ति का तत्व आवश्यक नहीं माना गया है।

प्रगीत : प्रगीत एक ऐसी लयबद्ध पद्य रचना है, जो छंदबद्ध या छंदमुक्त हो सकती है। इसमें भावों की तीव्रता अपेक्षित रहती है। यह विधा हिंदी पद्य साहित्य के लिए अपेक्षाकृत नई विधा है, वैसे तो इसमें गीत के सभी आवश्यक तत्त्व रहते हैं, किंतु आकार एवं गेय न होना इसे गीत से अलग करता है।

छंद मुक्त कविताओं में छंद का बंधन नहीं रहता। वर्णिक या मात्रिक छन्दों के नियमों का भी पालन नहीं किया जाता, किंतु लय इसमें अंत:सलिला की भांति बहती है।

लंबी कविता : हिन्दी की आधुनिक पद्य–विधा है। कुछ लंबी कविताएँ तो 40-50 पन्नों तक की हैं। इनमें विषय के प्रति काफी गंभीरता रहती है। हिन्दी में निराला की 'राम की शांति पूजा', अज्ञेय की 'असाध्य वीणा', मुक्तबोध की 'अँधेरे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

में 'सुल्तान अहमद की 'दीवार के इधर-उधर' महत्वपूर्ण लंबी कविताएँ हैं।

गज़ल : फारसी और उर्दू की काफ़ी प्रचलित विधा है। आजकल हिंदी में काफ़ी मात्रा में गज़लें लिखी जा रही हैं। गज़ल का अपना अलग छंदविधान होता है। उसी निश्चित छंद-विधान में चलना गज़ल के लिए आवश्यक होता है। 'शेर' का एक चरण मिसरा कहलाता है, पहले शेर को 'मतला' तथा अंतिम शेर को 'मकता' कहा जाता है। और कई शेरों से मिलकर गज़ल बनती है। हर शेर अपने आप में स्वतंत्र किन्तु गज़ल सम्पूर्ण होती है। हिंदी में दुष्यंतकुमार, शमशेर, त्रिलोचन, सूर्यभानु गुप्त, सुल्तानअहमद आदि महत्वपूर्ण गज़लकार हैं।

(ii) गद्य :

जो साहित्य छंद या लय में बंधा हुआ न हो, जिसे बोला जाए या कहा जाए वह गद्य है। आधुनिक गद्य साहित्य अत्यन्त समृद्ध है, इसमें अनेक विधाएँ विकसित हुई हैं, जैसे- उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, डायरी, पत्र, यात्रावृतांत, संस्मरण आदि। यहाँ प्रमुख गद्य-विधाओं का परिचय दिया जा रहा है।

उपन्यास

अंग्रेजी के Novel शब्द का हिंदी पर्याय है। यह एक आधुनिक लोकप्रिय गद्य विधा है। यह वस्तुत: कथा-प्रधान विधा है। यह महाकाव्य की तरह आकार और कथानक के प्रसार में विशाल होता है। इसमें जीवन का समग्र और यथार्थ रूप प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास में समाज, इतिहास और संस्कृति का व्यापक अध्ययन एक विशिष्ट कलात्मक एवं रचनात्मक रूप में हमारे समक्ष आता है।

उपन्यास के तत्त्व इस प्रकार हैं :

(1) **कथानक :** कथानक उपन्यास का प्राण-तत्व है। इसे अंग्रेजी में 'प्लॉट' Plot कहते हैं। उपन्यास की कथा का चुनाव जीवन और जगत के किसी भी क्षेत्र से किया जा सकता है। कथानक में चार गुणों का होना आवश्यक है-मौलिकता, रोचकता, विश्वसनीयता और गतिशीलता। कथानक का संगठन संतुलित और कलात्मक होना चाहिए। उपन्यास में एक कथा मुख्य या अधिकारिक होती है और कई छोटी-छोटी कथाएँ गौण या प्रासंगिक होती हैं। उपन्यास की सारी घटनाएँ कार्य-कारण शृंखला से बंधी रहती हैं। कथानक की समग्रता और विशालता के कारण उपन्यास को गद्यात्मक महाकाव्य कहा गया है।

(2) **संवाद या कथोपकथन :** संवाद वास्तव में नाटक का प्राण-तत्व है, किन्तु उपन्यास के विशाल फलक को जटिलता, बोझिलता और नीरसता से बचाने के लिए पात्रानुकूल, समयानुकूल, प्रसंगानुकूल, विषयानुकूल संवादों की योजना की जाती है। संवादों से लेखक कई उदेश्य सिद्ध करता है; जैसे कथाविकास, पात्रों का चरित्र, चित्रण लेखकीय विचारों की अभिव्यक्ति आदि। कथोपकथन कथानक का एक आवश्यक अंग हो यह जरूरी है। स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, सहजता, सोदेश्यता और मनोवैज्ञानिकता इनके आवश्यक गुण हैं। संक्षिप्त और चुटीले संवाद उपन्यास को सजीव और सरस बना सकते हैं।

(3) **पात्र और उनका चरित्र-चित्रण :** यदि उपन्यास मानव-चरित्र का चित्र मात्र है तो स्वाभाविक है उपन्यास के पात्र हमारे आस-पास के परिवेश के होंगे, इन पात्रों के सहज-सामान्य पात्रों को प्रस्तुत करके लेखक साहित्य और समाज को और नज़दीक लाता है। पात्र प्राय: दो प्रकार के होते हैं: विशिष्ट व्यक्तित्व के पात्र, व्यक्तिपात्र है तो 'गोदान' का होरी और 'निर्मला' की निर्मला वर्ग प्रतिनिधि पात्र हैं। पात्रों का क्रमश: चरित्र विकास उपन्यास को गति देना है। संवादों से, घटनाओं से, परिस्थितिओं से पात्रों के चिरत्र का उद्घाटन होता है। ये पात्र आदर्शवादी, यथार्थवादी, संघर्षशील व्यक्ति के रूप में विकसित हो सकते हैं। पात्र लेखक के हाथ का खिलौना न बने उसके चरित्र का सहज-स्वाभाविक विकास हो यह जरूरी है।

(4) **देशकाल-वातावरण (परिवेश) :** यह तत्व उपन्यास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कोई भी लेखक उपन्यास से संबंधित, तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, प्राकृतिक और परिस्थितियों को अनदेखा नहीं कर सकता इसलिए चित्रित युग-विशेष की विभिन्न परिस्थितियों का ज्ञान उपन्यासकार के लिए जरूरी है।

(5) **भाषा-शैली :** यह विशिष्ट कला-कौशल से जुड़ा तत्व है। लेखक अपने अनुभव, विचार, भाव-प्रतिभाव,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आदि को एक विशिष्ट भाषा-शैली के माध्यम से आकार देता है। भाषा इस बात में सहायता करती है कि हम उपन्यास के कथा जगत में आसानी से प्रवेश कर सकें, उसमें विचरणा कर सकें। लेखक को कलात्मक बुनावट के द्वारा बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। संकेतात्मकता, व्यंग्यात्मकता, प्रतीकात्मकता आदि भाषा को सुन्दर बनाते हैं।

शैली भी प्रत्येक उपन्यास के कथानक से अनुरूप भिन्न-भिन्न हुआ करती हैं। प्रारंभ में विवरण प्रधान शैली ही प्रमुख थी, किंतु आज डायरी, आत्मकथा, मनोविश्लेषणात्मक, व्यंग्य शैली आदि का प्रचलन बढ़ा है।

(6) **उद्देश्य :** उपन्यास जीवन की विशद् आलोचना है। उपन्यास जीवन को निकट से देखता-समझता है, मानवीय जीवन-व्यवहार को आत्मसात करता है, मानवजीवन की जटिलताओं को देखता-समझता है। देखने के साथ ही वह परोक्ष रूप से उनका परीक्षण-मूल्यांकन भी करता है और कभी अपना मत भी देता है। यथार्थ का कलात्मक रूपांतर कर लेखक जीवन के अत्यंत व्यापक फलक में मनुष्य को दिशानिर्देश देता है।

हिन्दी साहित्य में सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, आँचलिक तथा जीवनीपरक उपन्यास लिखे गए हैं।

कहानी

उपन्यास की तरह कहानी भी कथा-प्रधान विधा है। कहानी गद्य की ऐसी विधा है, जिसमें जीवन के किसी एक प्रसंग, घटना या मन:स्थिति का वर्णन होता है। यह विधा संक्षिप्त होने के बावजूद अपने आप में पूर्ण होती है। कहानी अपने संक्षिप्त आकार के कारण आधुनिक युग की लोकप्रिय विधा बन गई है। इसकी परिभाषा इस प्रकार है-"कहानी एक ऐसा आख्यान है जो यथार्थ का उद्‌घाटन करता है, आकार में छोटा होता है, जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सकता है और पाठक पर समन्वित प्रभाव डालता है।"

कहानी के तत्व वही हैं जो उपन्यास के हैं, अन्तर यह है कि इसमें सभी बातें कुछ संक्षिप्त आकार में आती हैं। कहानी में भी कथा, संवाद, पात्र और चरित्र-चित्रण, देशकाल या वातावरण, भाषा-शैली और उद्देश्य आदि तत्व आवश्यक हैं।

विषय की दृष्टि से कहानी मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक, सामाजिक आदि कई प्रकार की हो सकती है। हिंदी में प्रेमचंद महान् सामाजिक कहानीकार के रूप में उभरे हैं। आधुनिक युग में समस्या प्रधान, मनोविश्लेषणात्मक, वैज्ञानिक आदि कई प्रकार की कहानियाँ लिखी जा रही हैं। आधुनिक युग में कहानी परंपरागत तत्वों के साथ आधुनिक युग-बोध एवं नई परिस्थितियों ने कहानी जीवन की आंशिक अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त माध्यम है, इसलिए सफल और लोकप्रिय है।

निबन्ध

'निबन्ध' **शब्द** 'नि' उपसर्ग के साथ 'बंध' (बाँधना) धातु से बना है। विचारों या भावों को सुसम्बद्ध रूप में बाँधकर जिस विधा में प्रकट किया जाए वह निबंध है। हिंदी में निबंध अंग्रेजी के 'Essay' का पर्याय है। निबंध के संदर्भ में पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए उसके स्वरूप को स्पष्ट किया है।

निबंध गद्य का ऐसा प्रकार है, जिसमें लेखक किसी विषय अथवा वस्तु के संबंध में अपने विचारों या भावों को एक सीमित आकार में इस प्रकार प्रकट करता है कि वे पाठक के मन पर एक निश्चित छाप पैदा कर सकें। लेखक के व्यक्तित्व, चिंतन या संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति निबंध में आवश्यक है।

हिंदी में निबंध को गद्य साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विधा बतानेवाले आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं-"यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।" बाबू गुलाबराय के अनुसार "निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सभ्यता के साथ किया गया हो।" इसके बावजूद डॉ. धीरेन्द्र वर्मा कहते हैं कि निबंध को परिभाषित करना काफी कठिन है।

निबंध की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं : निबंध सीमित आकार की गद्य-रचना है, इसमें गद्य का चरम विकास झलकता है, लेखक के निजी व्यक्तित्व की चरम अभिव्यक्ति निबंध का प्राण तत्व है। ललित निबंध में तो व्यक्तित्व ही निबंध का पर्याय बनकर प्रकट होता है। निबंध में विषय का महत्व नहीं किन्तु लेखक की उस विषय तक पहुँचने की पद्धति, उसकी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भाषा शैली, उसका वर्णन-विवरण, उसके व्यक्तित्व का स्पर्श अधिक महत्वपूर्ण है। निबंध में उनमुक्तता और स्वच्छंदता होते हुए भी, प्रभावपूर्ण अन्विति, सरसता, सजीवता आदि अपेक्षित है। इतना होने के बाद भी परिपक्वता, प्रौढ़ता और परिष्कृत भाषा-शैली भी निबंध की महत्व की विशेषताएँ हैं। निबंधकार स्वयं आदि से अन्त तक अपनी बात कहता है। अत: भाषा सहज, सरस और सुन्दर होनी चाहिए।

निबंध के प्रमुख प्रकार हैं : वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, ललित निबंध आदि। निबंध में कई शैलियों का प्रयोग होता है, यथा-व्यास शैली, समास शैली, धारा शैली, तरंग शैली, विक्षेप शैली। वास्तव में निबंध गद्य साहित्य की अत्यन्त महत्वपूर्ण विधा है, क्योंकि अन्य विधाओं में लेखक पर्दे के पीछे रहता है, इसमें वही सीधा पाठक के सामने होता है। वह अपना हृदय खोलकर पाठक के सामने रख देता है, इसलिए निबंध लेखक और पाठक को सर्वाधिक करीब लानेवाली विधा है।

रेखाचित्र

आधुनकि गद्य-साहित्य की रेखाचित्र सर्वथा नवीन विधा है। रेखाचित्र वास्तव में 'चित्रकला' का शब्द है, जो अंग्रेजी के 'स्केच' का पर्याय है। रेखाओं के द्वारा बना हुआ चित्र रेखाचित्र है। चित्र में जो काम रेखाएँ करती हैं, वही काम रेखाचित्र में शब्द करते हैं। जब लेखक शब्दों के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु या दृश्य का चित्र अंकित करता जाए, तो इसे रेखाचित्र कहते हैं।

रेखाचित्र की कुछ प्रमुख लाक्षणिकताएँ इस प्रकार हैं : कल्पना की अपेक्षा इसमें वास्तविकता का प्राधान्य होता है, जिस व्यक्ति, वस्तु आदि का रेखाचित्र तैयार करना हो उसके प्रति लेखक का घनिष्ठ रागात्मक संबंध हो, चित्रात्मक सूझ भी आवश्यक है। महादेवी वर्मा के रेखाचित्र इन सभी विशेषताओं से पूर्ण हैं। हिंदी में कई प्रकार के रेखाचित्र लिखे गए हैं जिनमें मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, घटनाप्रधान, परिवेशप्रधान, व्यंग्यप्रधान, व्यक्तिप्रधान या आत्मपरक मुख्य हैं। हिंदी के प्रसिद्ध रेखाचित्रकारों में महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, कन्हैयालाल मिश्र, जयनाथ नलिन, बेढब बनारसी, श्रीराम शर्मा आदि मुख्य हैं।

संस्मरण

सम्यक स्मरण अर्थात् संस्मरण। किसी महान् या स्मरणीय व्यक्ति या घटना की यादों को लेकर दिया गया चित्रण संस्मरण है। संस्मरण प्राय: विशिष्ट व्यक्तियों से संबंधित होते हैं। संस्मरण के लिए लेखक का स्मरणीय व्यक्ति के साथ व्यक्तिगत संबंध होना आवश्यक है। यह आत्मपरक होता है। इसमें विवरण की प्रचुरता रहती है, स्वाभाविक तौर पर इसमें अतीत की घटनाओं का वर्णन होता है। चित्रोपम शैली संस्मरण को अधिक सुन्दर और सार्थक बना देती है। संस्मरण कई प्रकार के होते हैं: आत्मकथात्मक, यात्राविषयक, जीवनी-स्वरूप, पत्रात्मक, डायरी, श्रद्धांजलि आदि से संबंधित।

रेखाचित्र और संस्मरण मिलती-जुलती विधाएँ हैं। संस्मरण प्राय: प्रसिद्ध व्यक्ति के विषय में ही लिखा जाता है, रेखाचित्र के लिए यह आवश्यक नहीं है। ये दोनों विधाएँ पाश्चात्य साहित्य की देन है।

जीवनी :

जीवनी में लेखक किसी व्यक्ति का जीवन चरित्र प्रस्तुत करता है। इसमें प्राय: उस व्यक्ति की जन्म से लेकर मृत्यु तक की प्रमुख घटनाएँ होती हैं। जिसकी जीवनी लिखी जा रही हो उसकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला जाता है। जीवनी न इतिहास है न उपन्यास, इन दोनों की खूबियाँ इसमें मिलती हैं। सत्य की उपेक्षा करके सफल जीवनी लिखना संभव नहीं, अत: लेखक जीवनी-नायक से जुड़े सभी तथ्यों को इकट्ठा करके, निष्ठा और ईमानदारी से अपनी प्रतिभा और कला के बल पर जीवनी लिखने का काम करता है।

आत्मकथा :

आत्मकथा जीवनी का ही एक दूसरा रूप है। आत्मकथा में व्यक्ति स्वयं अपने जीवन की गाथा कहता है जबकि जीवनी में किसी अन्य व्यक्ति के जीवन से जुड़े तथ्यों के आधार पर ही उसके बारे में लिखा जाता है। इसके अलावा और भी कई गद्य विधाएँ पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव से हिंदी में आई हैं उनमें से रिपोर्ताज, डायरी, पत्र-साहित्य, यात्रा-वृत्तांत, साक्षात्कार,फीचर आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रस

साहित्य शास्त्र में रस को ब्रह्मानन्द स्वरूप माना गया है, क्योंकि साहित्य या कला से मिलने वाला सात्विक आनंद अवर्णनीय और अद्‌भुत होता है; यही रस है। आचार्य भरत ने अपने नाट्यशास्त्र में **विभावानुभाव संचारी संयोगात रसनिष्पत्तिः** कहकर साहित्य से प्राप्त होने वाली रस प्रक्रिया को समझाया है।

रस के अंग– स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारीभाव रस के आवश्यक अंग हैं।

स्थायी भाव : ये भाव जन्मजात होते हैं, और मनुष्य के चित्त में सदैव विद्यमान रहते हैं, और कारण उपस्थित होने पर जागृत होकर प्रकट होते हैं। स्थायी भावों की संख्या दस मानी जाती है – रति, हास्य, शोक, क्रोध,उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय, निर्वेद एवं वात्सल्य।

विभाव : इनके कारण ही स्थायी भाव जागृत होते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं, आलम्बन और उद्‌दीपन। जिन व्यक्तियों या पात्रों से स्थायीभाव उत्पन्न होता है, उन्हें आलंबन कहा जाता है। जिसके मन में यह भाव जागृत होता है उसे आश्रय कहते हैं। आश्रय के मन में जिन प्राकृतिक स्थितियों द्वारा स्थायी भाव उत्पन्न होता है उसे उद्‌दीपन विभाव कहते हैं।

अनुभाव : ये स्थायी भाव के बाद पैदा होनेवाला भाव है, यह वहीं उत्पन्न होता है जहाँ स्थायी भाव जागा हुआ होता है। अनुभाव आश्रय के मन में जागे हुए स्थायी भाव के कारण स्वत: ही प्रकट हो जाते हैं; जैसे– पसीना आना, रोमांचित हो जाना इत्यादि। अनुभाव चार प्रकार के होते हैं––

(1) कायिक–दैहिक क्रियाएँ (2) मानसिक–वाचिक, कथन आदि (3) आहार्य–आभूषण, वेश–भूषा (4) सात्विक–स्वेद, अश्रु रोमांच।

व्यभिचारी अथवा संचारी भाव : ये भाव स्थायी भाव को अधिक पुष्ट करते हैं, और रस–निष्पत्ति में मदद करते हैं। संचारी भावों की संख्या तैंतीस बताई गई है –इनमें प्रमुख हैं – शंका, लज्जा, चिंता, गर्व, विषाद, आलस्य, आवेग, स्मृति, धैर्य, निद्रा, मोह आदि।

रस के भेद –

शृंगार रस : इसका स्थायी भाव रति है। स्त्री–पुरुष के बीच के प्रेम का वर्णन साहित्य में शृंगार रस कहलाता है। इसके दो प्रकार हैं संयोग और वियोग । संयोग में नायक–नायिका साथ होते हैं, उनके बीच प्रेम होता है। वर्षा, बिजली चमकना, चाँदनी रात आदि उद्‌दीपन हैं। इनके साथ संचारी भाव लगे होते हैं जैसे–चिंता, लज्जा, भय, उत्सुकता आदि। इन संचारी भावों से शृंगार और पुष्ट होता है।

वियोग शृंगार वहाँ होता है जहाँ नायक–नायिका अलग होते हैं। कोयल की कूक, पपीहे की पुकार आदि उदद्‌ीपन हैं तथा विषाद, मोह आदि संचारी हैं।

हास्य रस : इसका स्थायी भाव हास्य है। विकृत चेष्टाओं, कथनों आदि की वजह से हास्यरस उत्पन्न होता है। उपहास का पात्र आलंबन और इससे संबंधित वस्तुएँ उद्‌दीपन हैं। हर्ष, चपलता, आलस्य आदि संचारी भाव हैं।

करुण रस : इसका स्थायी भाव शोक है। जब साहित्य में अत्यन्त दुखद घटना या प्रसंग का निरूपण होता है तब करुण रस की उत्पत्ति होती है। अपने किसी प्रिय व्यक्ति से सदा के लिए वियोग करुणा उत्पन्न करता है, वही प्रिय व्यक्ति आलंबन है, उससे संबंधित वस्तुएँ उद्‌दीपन हैं; रोना, आहें भरना, मूर्छित होना आदि अनुभाव हैं तथा निर्वेद स्मृति, चिन्ता, विषाद आदि संचारी भाव हैं।

रौद्र रस : इसका स्थायी भाव क्रोध है। इसमें कोई शत्रु या खलनायक आलम्बन होता है; उसकी चेष्टाएँ या कार्य उद्‌दीपन होते हैं। आँखें लाल होना, मुट्ठियाँ भींचना, दाँत किट–किटाना आदि अनुभाव हैं तथा क्रोध से काँपना,भौंहें तन आना, चेहरा लाल होना आदि अनुभाव हैं तथा आवेग, गर्व, चपलता, उत्सुकता संचारी भाव हैं।

वीर रस : इसका स्थायी भाव उत्साह है। इसका चित्रण किसी महान नायक के महान धर्म, युद्ध, उदारता, दानवीरता आदि में होता है। इसमें शत्रु या याचक आलंबन है। शत्रु की चालें, उत्तेजनापूर्ण कथन, चेष्टाएँ आदि उद्‌दीपन हैं। क्रोध से काँपना, भौंहें तन जाना, चेहरा लाल होना आदि अनुभाव हैं। तथा आवेग, हर्ष, गर्व, चपलता आदि संचारी भाव हैं।

भयानक रस : इसका स्थायी भाव भय है। डरावने दृश्य या भयजनक प्रसंगों के चित्रण से भयानक रस की उत्पत्ति होती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

छंद

'छन्द' का अर्थ होता है 'बाधना'। इसलिए जब कोई उक्ति किसी विशेष लय, मात्रा या वर्ण-योजना में बंध जाती है तो उसे छन्द कहते हैं।

काव्य में छन्दों को बहुत महत्व दिया गया है, क्योंकि छन्द काव्य में छिपे भाव एवं रस के संप्रेषण में मदद करते हैं। प्राचीन और मध्यकाल में काव्य का छन्द-बद्ध होना आवश्यक था, किन्तु आधुनिक काल में छन्द मुक्त या अछांदस काव्य-रचना भी होती है।

छन्द का उपयोग पद्य को सही तरीके से पढ़ने-समझने में आवश्यक तौर पर किया जाता है। छन्द के घटकों में यति, गति और लय मुख्य माने जाते हैं। लय अंतर्निहित होती है, जिसके कारण काव्य कर्णप्रिय होता है। तथा यति और गति छंद के प्रवाह और लय को बनाए रखने में मदद करते हैं।

छन्द के भेद : छन्द के दो भेद हैं : (1) वर्णिक (2) मात्रिक

वर्णिक छन्द उन्हें कहा जाता है, जिनमें वर्णों के विशेष क्रम अथवा योजना का आधार होता है। मात्रिक छन्द में मात्राओं की गणना का आधार लिया जाता है। वर्णिक छन्दों में प्रमुख हैं: कवित्त, सवैया, मालिनी, शिखरणी, मन्दाक्रान्ता, इन्द्रवज्रा आदि हैं। मात्रिक छन्दों में प्रमुख हैं। दोहा, रोला, सोरठा, बरवै, चौपाई, छप्पय, कुंडलिया आदि।

गण पहचानने की रीति : वर्णिक छन्द में वर्णों के क्रम का नाम 'गण' दिया गया है। गण तीन वर्णों का समूह है, इसमें निश्चित लघु-गुरु क्रम से तीन वर्ण होते हैं। गण कुल आठ हैं, इन गणों को समझने और याद करने की रीति इस प्रकार है :

'य माता रा ज भा न स ल ग म्'- मात्र इस एक सूत्र के सहारे हम प्रत्येक गण के लघु-गुरू क्रम को समझ और याद रख सकते हैं - उदाहरण के लिए

गण		उदाहरण	लघु-गुरु का क्रम	मात्राएँ
(1)	य गण	य माता (हमारा)	ISS मात्राएँ	5
(2)	म गण	मा तारा (राजासा)	SSS मात्राएँ	6
(3)	त गण	ता राज (पाताल)	SSI मात्राएँ	5
(4)	र गण	राज भा (गायिका)	SIS मात्राएँ	5
(5)	ज गण	जभा न (न हान)	ISI मात्राएँ	4
(6)	भ गण	भान स (मानस)	SII मात्राएँ	4
(7)	न गण	न स ल (नमन)	III मात्राएँ	3
(8)	स गण	सलग म्(सुकथा)	IIS मात्राएँ	4

जिस गण की मात्रा का क्रम देखना हो उपर्युक्त सूत्र के अनुसार, उसी गण के प्रथम नामाक्षर से शुरू करके तीन अक्षर ले लेने से उसका मात्रा का क्रम स्पष्ट हो जाएगा।

लघु और गुरु : छन्द के सन्दर्भ में, ह्स्व को 'लघु' और दीर्घ को 'गुरु' कहते हैं। ये दोनों वर्ण के भेद हैं। दीर्घाक्षर को 'गुरु' कहते हैं, जिसका चिह्न 'S' है, यह अंग्रेजी के एस-S के समान है, लघु का चिह्न 'I' है यह खड़ीपाई के समान होता है।

मात्रा - गणना के नियम :

(1) अ, इ, उ, ऋ (ह्स्व स्वर) या इनसे युक्त व्यंजन लघु माने जाते हैं।

(2) चन्द्रबिन्दु वाले स्वर या इनसे युक्त व्यंजन होते हैं, जैसे 'हूँ'

(3) आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, इत्यादि दीर्घ स्वर और इनसे युक्त व्यंजन गुरु होते हैं जैसे- ईख, मामा, ऐनक आदि।

(4) जिस वर्ण पर अनुस्वार हो वह अ होता है, जैसे 'सुगंध' में गं गुरु है।

(5) विसर्ग युक्त वर्ण भी गुरु होता है, जैसे : दु:ख =SI

(6) संयुक्त वर्ण के पूर्व का लघु वर्ण भी गुरु हो जाता है, जैसे -'धर्म'=SI

(7) हलन्त के पहले का वर्ण भी गुरु होता है जैसे- सन् में 'स' S है, और 'न्' की मात्रा नहीं गिनी जाएगी क्योंकि उसमें स्वर नहीं है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रमुख छंदों का परिचय

वर्णिक छंद

कवित्त : कवित्त के प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं, 16–15 या 8,8,8,7, वर्णों पर यति रहती है तुक चारों चरणों में होती है;जैसे–

सहज विलास हास, प्रिय की हुलास तजि 8+8=16
दु:ख के निवास प्रेम पास परियत है। 8+7=15

सवैया : सवैया छंद के कई भेद होते हैं। ये भेद गणों के संयोजन के आधार पर बनते हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध ' 'मत्तगयंद सवैया' है। अन्य सुन्दरी, मदिरा, दुर्मिल सवैया भी जाने जाते हैं।

मत्तगयंद सवैया में प्रत्येक चरण में सात भगण और अंत में दो गुरु वर्ण होते हैं, इस प्रकार सवैया के प्रत्येक चरण में 23-23 वर्ण होते हैं ; जैसे–

कल काननि कुंडल मोरपखा, उर पै बनमाल बिराजति है।
मुरली कर में अधरा मुसकानि – तरंग महाछवि छाजति है।
रसखानि तन पीत पटा दामिनि की दुति लाजति है।
वहि बांसुरी की धुनि कान परें कुलकानि हियो तजि भागति है।

मात्रिक छंद

दोहा : इस छंद के पहले और तीसरे चरण में 13-13 तथा दूसरे एवं चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण के प्रारंभ में 'जगण' नहीं होना चाहिए और अंत में लघु होना आवश्यक है ; जैसे–

I I	I I	S I I	S I	S	=13	I I S	I S	I S I	+11
बत	रस	लालच	लाल	की,		मुरली	धरी	लुकाय।	=24
S I	I S	S I I	I S			S I I S	I I	S I	+11
सौह	करे	भौंहन	हँसे		=13	दैन कहे	नट	जाय ॥	=24

सोरठा : दोहा और सोरठा दोनों अर्धसम जाति के मात्रिक छंद है। यह छंद दोहे का उलटा होता है, अर्थात् इसके पहले तथा तीसरे चरण में 11–11 तथा दूसरे और चौथे चरण में 13–13 मात्राएँ होती हैं। सोरठा में पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे में तुक मिलता है, जैसे

S I	I I I I	I I	S I	= 11	I I S I I	I I I I	I I I			+13
जेहि	सुमिरत	सिधि	होइ,		गननायक	करिवर	वदन			=24
I I I	I I S I	S I		= 11	I S	S I	I I	I I	I I I	= 13
करहु	अनुग्रह	सोइ,			बुद्धि	रासि	सुभ	गुन	सदन	=24

चौपाई : यह सम जाति का मात्रिक छंद है, इसमें चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं, जैसे –

S S I	S I I	S I I	I I	I I		=16
कंकन	किंकिनि	नूपुर	धुनि	सुनि।		
I I I	I I I	I I	S I	I I I	I I	=16
कहत	लखन	सन	राम	हृदय	गुनि।।	
S I I	I I I	S I S	S S			=16
मानहु	मदन	दुंदुभी	दीन्ही।			
I I S	S I	I I I	I I	S S		=16
मनसा	विस्व	विजय	कहँ	कीन्ही।।		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रोला : यह एक सममात्रिक छंद है, इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। 11 तथा 13 मात्राओं पर विराम होता है। कभी-कभी अन्त में लघु या गुरु या दो लघु वर्ण आते हैं, जैसे-

I I SS	II	I S	S I	I I	S	I I S S		=16
मद माता	जग	भला	दीन	दुख	क्या	पहचाने।		
S I S I	I I	S I	S I	S	II	S	S S	=24
दीनबंधु	बिन	कौन	दीन	के	हिय	को	जाने।	
S S	S	I	I S I	S I	S	S I	I S S	=24
होता	जो	न	अधार	शोक	में	नाथ	तुम्हारा।	
I S S I	II	S I	I I I S	I I S	S S			=24
निराधार	यह	जीव	भटकता	फिरता	मारा।			

बरवै : यह मात्रिक अर्धसम छंद है। इसके पहले तीसरे चरण में 12 तथा दूसरे-चौथे में 7 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में जगण अथवा तगण का प्रयोग होता है, जैसे

S I	S I	I I	S I I	=12	I S	I S I	= 07
वाम	अंग	शिव	शोभित		शिव	उदार	= 19
I I I	I S I I	S	II	=12	I I I	I S I	= 07
सरद	सुवारिद	में	जनु		तड़ित	विहार	= 19

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अलंकार

'अलंकार' शब्द की व्युत्पत्ति 'अलम्' धातु से हुई है। व्युत्पत्ति के आधार पर अलंकार उसे कहा जाता है जो भूषित करने का उपादान हो। नारी के आभूषणों की भांति अलंकार भी काव्य के शोभाकारक धर्म हैं। अर्थात् अलंकार ऐसे उपादान हैं, जो काव्य की शोभा में वृद्धि के साथ-साथ भावाभिव्यक्ति एवं भावग्रहण में भी सहायक सिद्ध होते हैं। कवि सुमित्रानंदन पंत के शब्दों में- "अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं। भाषा की पुष्टि के लिए, राग की परिपूर्णता के लिए आवश्यक उपादान हैं, वे वाणी के आचार, व्यवहार, रीत, नीति हैं।"

काव्य में अलंकार का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है, आचार्य केशवदास के शब्दों में-

"जदपि सुजाति, सुलक्षणी, सुबरन, सरस, सुवृत।
भूषण बिनु न बिराजई, कविता, बनिता मित्ता।।"

वास्तव में अलंकार काव्य का आवश्यक उपादान तो है, किन्तु अनिवार्य नहीं।

अलंकार भेद : शब्द और अर्थ साहित्य के मूल तत्व हैं। इसी अधार पर अलंकार के भी दो प्रकार हैं शब्दालंकार और अर्थालंकार।

(1) शब्दालंकार : शब्द के सौन्दर्य की वृद्धि करने वाले, और उसे आकर्षक, अलंकारमय बनाने वाले तत्व शब्दालंकार हैं। इसके प्रमुख भेद हैं : अनुप्रास, श्लेष, यमक, और वक्रोक्ति।

अनुप्रास : जहाँ काव्य में वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार हो, आवृत्ति के कारण लय, सौन्दर्य पैदा हुआ हो ; जैसे-

'तुम तुंग हिमालय श्रृंग और मैं चंचल गति सुर सरिता,
तुम विमल हृदय उच्छ्वास और मैं कान्त कामिनी कविता'

श्लेष : 'श्लेष' का शाब्दिक अर्थ है चिपका हुआ, अर्थात् एक शब्द के एकाधिक अर्थ निकलते हों, तो श्लेष अलंकार होता है; जैसे-

'रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानस चून ॥'

यहाँ 'पानी' के तीन अर्थ हैं- मोती के संन्दर्भ में कान्ति, मानस अर्थात् मनुष्य के संदर्भ में आत्मसम्मान और चूने के सन्दर्भ में जल।

यमक : जहाँ एक या एक से अधिक शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हों तथा उनका अर्थ भी प्रत्येक बार भिन्न हो। शब्द की एकाधिक बार आवृत्ति और भिन्न अर्थ काव्य में चमत्कार पैदा कर देता है; जैसे-

"कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाए बौराय जग, या पाए बोराय ॥"

इस दोहे में 'कनक' का दो बार प्रयोग हुआ है। दोनों बार उसका अर्थ भिन्न है। पहले स्थान पर 'कनक' यानी 'धतूरा' और दूसरे स्थान पर कनक यानी 'स्वर्ण' है।

वक्रोक्ति : जहाँ पर वक्ता के कथन का श्रोता द्वारा वक्ता के अभिप्रेत आशय से चमत्कार पूर्ण भिन्न अर्थ लगाया जाए, वहाँ वक्रेक्ति अलंकार होता है, जैसे-

" को तुम हो ? इत आए कहाँ ?
घनश्याम हौं, तो कितहूँ बरसो।
चितचोर कहावत हैं हम तो,
तहँ जाहु जहाँ धन है सरयो॥"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस पद में राधा-कृष्ण का सुन्दर परिहास है, यह वक्रोक्ति का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। राधा अपने महल में कृष्ण की प्रतीक्षा में है कि कृष्ण आकर द्वार खटखटाते हैं। कृष्ण के आगमन से प्रसन्न राधा का प्रफुल्लित हृदय परिहास करना चाहता है, अत: वह तुरंत द्वार खोल नहीं देती, पूछती है "तुम कौन हो ? यहाँ कैसे आये।"कृष्ण उत्तर देते हैं "घनश्याम हूँ"। राधा इसका अर्थ जो कृष्ण को अभिप्रेत है वह न लगाकर घन+श्याम यानी 'बादल' लगाती है। उत्तर देती है 'अगर घनस्याम (बादल) हो तो कहीं जाकर बरसो'। कृष्ण हारकर दूसरा नाम बताते हैं- 'मुझे चित्तचोर भी कहा जाता है'- राधा विदुषी थी, यहाँ वह चित्तचोर का अर्थ चोर लगाकर जवाब देती हैं- तो फिर जहाँ काफ़ी मात्रा में धन है वहाँ जाओ। इस प्रकार यहाँ श्लेष के आधार पर भिन्नार्थ की कल्पना करने से श्लेष वक्रोक्ति है।

(2) अर्थालंकार : अर्थालंकार में किसी शब्द विशेष के कारण चमत्कार नहीं रहता है। वास्तव में अर्थालंकार भाषाभिव्यक्ति की शैलियाँ ही हैं। अर्थालंकार के प्रमुख चार अंग हैं: **उपमेय**-जो प्रस्तुत हो या जिसकी समानता बतानी हो, **उपमान**- जो अप्रस्तुत हो या जिससे समानता बताई जाए, **साधारण धर्म** - उपमेय और उपमान के बीच जो भी समान गुण या दोष हो उसे साधारण धर्म कहते हैं,

वाचक शब्द-उपमेय और उपमान के बीच जिस शब्द के द्वारा समानता दिखाई जाए, उसे वाचक शब्द कहते हैं।

प्रमुख अर्थालंकार इस प्रकार हैं-

उपमा : जब दो वस्तुओं में भिन्नता रहते हुए भी समानता स्थापित की जाए, तब उपमा अलंकार होता है, जैसे

'बन्दौं कोमल कमल-से जग जननी के पाँव'

यहाँ 'पाँव' शब्द उपमेय है, 'कमल' उपमान है, 'कोमल' साधारण धर्म है और 'से' वाचक शब्द है। पूर्णोपमा में उपमा के सभी अंग अर्थात् उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द विद्यमान रहते हैं; जैसे-

'राम लखन सीता सहित सोहत पर्ण निकेत।
जिमि वासव बस अमरपुर शची जयन्त समेत॥'

रूपक : जब उपमेय पर उपमान का आरोप करते हुए अभेद बताया जाए, तब रूपक अलंकार होता है। इसमें प्रस्तुत (उपमेय) अप्रस्तुत (उपमान) का रूप ग्रहण कर लेता है, इसलिए यह रूपक कहलाता है, जैसे-

(1)

'मुख राशि वा राशि ते अधिक।
उदित ज्योति दिन राति॥'

(2)

रनित भृंग घंटावली झरत दान मधुनीर।
मंद-मंद आवत चल्यो कुंजर कुंज समीर॥

पहले उदाहरण में मुख पर राशि का, और दूसरे उदाहरण में समीर की सामग्री भृंग और मकरन्द में हाथी के घण्टे का आरोप किया है।

उत्प्रेक्षा : जहाँ प्रस्तुत (उपमेय) की अप्रस्तुत (उपमान) के रूप में संभावना की जाए वहाँ उत्प्रेक्षा होती है, यह अलंकार मनु, जनु, मनों, जानो आदि शब्दों से प्रकट होता है; जैसे-

'सोहत ओढ़े पीत-पट, स्याम सलोने गात।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतप परयो प्रभात॥'

संदेह : जहाँ उपमेय में उपमान का संदेह प्रकट किया जाता हो, वहाँ संदेह अलंकार होता है; जैसे-

'कि तुम हरिदासन में कोई। मोरे हृदय प्रीति अति होई।
की तुम रामदीन अनुरागी । आयहु मोहि करन बड़ भागी॥'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इसमें प्रस्तुत का वर्णन इस प्रकार किया जाता है कि तथ्य और अतथ्य का निश्चय न किया जा सके, इस प्रकार संदेहालंकार की रचना होती है, जैसे–

विरोधाभास : वास्तविक विरोध न होते हुए भी जहाँ विरोध का आभास मालूम पड़े वहाँ 'विरोधाभास' अलंकार होता है, जैसे–

या अनुरागी चित्त की, गति समुझहिं नहिं कोय।
ज्यों–ज्यों बूड़ै श्याम रंग, त्यों–त्यों उज्ज्वल होय॥

यहाँ श्याम रंग में डूबने पर उज्ज्वल होना विरोध मालूम पड़ता है, लेकिन यह वास्तविक विरोध नहीं है क्योंकि जितना श्याम रंग (कृष्ण के ध्यान) में डूबेगा (मग्न होगा) उतना ही उसका हृदय उज्ज्वल (निर्मल) होगा।

मानवीकरण :जब प्रकृति या जड़ पदार्थों में मनुष्य के गुणों का आरोप करके चेतन के समान, उनकी चेष्ठाओं का चित्रण किया जाए, तब मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे–

'सिंधु –सेज पर धरा वधू, अब तनिक संकुचित बैठी–सी।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में, मान किए–सी, ऐंठी–सी।

यहाँ 'पृथ्वी' पर वधू के रूप, गुण और कार्यों का आरोप किया गया है, इसलिए मानवीकरण अलंकार है।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दशक्ति

मनुष्य के हृदय के सभी भावों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है। भाषा में शब्द और अर्थ दोनों का समान महत्त्व है। शब्द के बिना अर्थ और अर्थ के बिना शब्द का कोई अस्तित्व नहीं है।

किसी भी शब्द के सुनने या पढ़ने पर हमें किसी विशेष पदार्थ भाव आदि का बोध होता है। यह बोध यदि कोष, व्याकरण आदि के द्वारा निश्चित किए गए या प्रसिद्ध अर्थ पर आधारित है तो उसे मुख्यार्थ या वाच्यार्थ कहते हैं। सामान्य बातचीत में अधिकतर मुख्यार्थ या विद्यमान रहता है। किन्तु कई बार बात को विशेष चमत्कारपूर्ण और हृदयस्पर्शी बनाने के लिए ऐसे शब्दों को लिया जाता है, जिनमें मुख्यार्थ के अतिरिक्त अन्य विशिष्ट अर्थ शब्द शक्तियों का रूप धारण करते हैं।

शब्द शक्ति के प्रकार :

शब्द की अभिव्यंजना शक्ति और क्षमता अलग-अलग और विशेष होती है। शब्दों को सुनकर या पढ़कर अर्थ का ज्ञान हम कई प्रक्रियाओं से करते हैं। इस दृष्टि से शब्द शक्ति के तीन भेद हैं;

(1) अभिधा : शब्द की जिस शक्ति से उसके प्रथम स्वाभाविक, सामान्य अर्थ का ज्ञान होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं। अभिधा शक्ति द्वारा ज्ञात होने वाले अर्थ को वाच्यार्थ तथा उस शब्द को वाचक शब्द कहते हैं।

सीधा, स्पष्ट कथन अभिधा की खास विशेषता है, अभिधा शक्ति का बोध कराने वाले साधन हैं-व्याकरण, कोश व्यवहार आदि। जैसे ;

वह तोड़ती पत्थर
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।

यहाँ सीधे-सीधे जो अर्थ प्रकट होता है, वही अर्थ कविता का है।

(2) लक्षणा: जब किसी शब्द के वाच्यार्थ अथवा मुख्यार्थ को ग्रहण करने से अर्थ प्राप्ति न हो तब अभिधा को छोड़कर लक्षणा शक्ति का प्रयोग किया जाता है। लक्षणा शब्द शक्ति से विदित होने वाले अर्थ के लिए तीन बातों का होना आवश्यक है :

(1) मुख्यार्थ से अभिव्यक्त अर्थ में बाधा पड़ना।

(2) जब मुख्य अर्थ बाधित हो जाता है तो उसके स्थान पर दूसरा अर्थ लिया जाता है, परंतु यह दूसरा अर्थ भी मुख्य अर्थ से ही संबंधित होता है।

(3) मुख्य अर्थ को छोड़कर अन्य अर्थ ग्रहण करने में या तो कोई विशेष कारण हो या कोई रूढ़ि अथवा प्रयोजन हो यह आवश्यक है। जैसे;

उषा सुनहले तीर बरसती
जयलक्ष्मी सी उदित हुई।

यहाँ 'तीर' का अर्थ 'किरण' है 'भाला या तीर' नहीं।

(3) व्यंजना : काव्य का ऐसा गूढ़ अर्थ जो अभिधा से न जाना जा सके, उसे व्यंजना से जाना जाता है। अर्थात् ऐसा अर्थ जो अभिधा या लक्षणा के प्रयोग के बाद भी इतना गूढ़ हो कि उसे प्रकट करने के लिए तीसरी अर्थात् व्यंजना शक्ति का सहारा लेना पड़ता है। व्यंजना से काव्य में सौन्दर्य और भाव में गहनता आती है। जैसे;

चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय॥

यहाँ चक्की के पाट का अर्थ है जन्म और मृत्यु। जिनके बीच पिसकर कोई बच नहीं सकता है।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

काव्य के गुण - दोष

साहित्य में गुण का अत्यधिक महत्त्व है, यह काव्य की आंतरिक वस्तु है। गुण के यथोचित प्रयोग से ही काव्य-सौन्दर्य में वृद्धि होती है। काव्य की विषय-वस्तु भाव और रस से गुण का अनिवार्य संबंध है। जैसे - प्रकृति-प्रेम और श्रृंगार रस में माधुर्य गुण, वीर रस में ओजगुण तथा भक्ति या शान्त रस में प्रसाद गुण। काव्य के आवश्यक तत्त्व हैं।

गुणों के प्रकार

प्रयोग के आधार पर गुण तीन प्रकार के होते हैं : (1) माधुर्य गुण (2) ओज गुण (3) प्रसाद गुण

(1) माधुर्य गुण :

माधुर्य गुण श्रृंगार, करुण और शान्त रसों में पाया जाता है। इस गुण में वर्ण शब्द आदि की कोमलता, मधुरता अपेक्षित है। विषय वस्तु की अभिव्यक्ति कोमल वर्णों, शब्दों और संगीतात्मक ढंग से की गई हो, जिसमें ट, ढ, ड, ढ़, ण आदि कठोर वर्णों का प्रयोग न हो; संधि और समास का प्रयोग सीमित हो, वहाँ माधुर्य गुण होता है। इस गुण के कारण ही काव्य हमें पढ़ने या सुनने में अच्छा लगता है। उसका भाव और अर्थ हमारे हृदय को स्पर्श करता है, और हमें आनंद विभोर कर देता है। जैसे;

निरखि सखी ये खंजन आए

फेरे उन मेरे रंजन ने इधर नयन मन भाए।

(2) ओज गुण :

ओजगुण का सम्बन्ध वीर रस से है, लेकिन रौद्र और बीभत्स में भी इसका प्रयोग होता है। इस गुण के कारण काव्य में उत्साह, ऊर्जा और स्फूर्ति का संचार होता है। वर्णन को प्रभावशाली बनाने के लिए इसमें कठोर वर्णों का प्रयोग होता है। सामासिक शब्दावली और संधियुक्त शब्द भी ओजगुण में वृद्धि करते हैं। जैसे ;

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती

अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,

प्रशस्थ पुंय पंथ है बढ़े चलो बढ़े चलो।

(3) प्रसाद गुण :

प्रसाद गुण काव्य का महत्त्वपूर्ण गुण है। यह गुण काव्य में पवित्रता, निर्मलता, स्वच्छता आदि से संबंधित है। काव्यार्थ सीधा श्रोता या पाठक के हृदय में उतर जाए और सहृदय को निर्मल आनंद दे, वही प्रसाद गुण है। यह गुण किसी विशेष रस के लिए नहीं है, इसका प्रयोग सभी रसों में, सभी स्थानों पर, सभी रचनाओं में आवश्यकतानुसार होता है। जैसे;

हे प्रभो! आनंददाता ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए॥

काव्य दोष :

काव्यार्थ ग्रहण में रसास्वादन में जब बाधा उत्पन्न होती है; अर्थ को समझने में कठिनाई होती है; ऐसी स्थिति में काव्य-दोष होता है। काव्य दोष के कारण काव्य सहृदय तक पहुँच नहीं पाता, और अर्थ प्राप्ति में बाधा पड़ती है। काव्य दोष के मुख्य चार प्रकार हैं; शब्दगत, रसगत, अर्थगत और पदगत।

(1) **शब्दगत दोष :** इसमें शब्द संबंधी दोषों का समावेश होता है। जिसमें सबसे प्रमुख है-श्रुतिकटुत्व।

श्रुतिकटुत्व : ऐसे शब्दों का प्रयोग जो सुनने में मधुर न लगे, अर्थात् कानों को कटु लगे उन्हें श्रुतिकटु या कर्णकटु कहा जाता है; ऐसे शब्दों से युक्त काव्य में श्रुतिकटुत्व दोष होता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(1) **अर्थगत दोष :** जहाँ अर्थ की प्राप्ति में बाधा हो वहाँ अर्थगत दोष होता है। इसका सबसे प्रमुख भेद है – क्लिष्टत्व।

क्लिष्टत्व : जहाँ अर्थ का बोध कठिनाई से हो रहा हो, वहाँ यह दोष होता है। रीतिकालीन और छायावादी कविताओं में तथा सूर आदि के कूट पदों में यह दोष बहुत मिलता है; अन्य अर्थ-दोषों में संदिग्ध, अव्याहत, अनावश्यक प्रयोग दोष, अपयुक्त दोष आदि मुख्य हैं।

(3) रस दोष : जहाँ उपयुक्त रस के सभी अंगों की ठीक-ठीक योजना न हो और रस-निष्पत्ति में बाधा उत्पन्न हो, वहाँ रस-दोष होता है। इसके कई भेदों में सर्व प्रमुख दोष है –

स्वशब्द वाच्य दोष : जब किसी रस के भाव या विभावादि की उपयुक्त योजना न करके कवि उस रस का या उसके अंगों का कथन मात्र कर देता है तब वहाँ स्वशब्दवाच्य दोष होता है; जैसे-

''मुख सूखहिं लोचन श्रवहिं शोक न हृदय समाय।
मनहुँ करुण रस कमल लै उतरा अवध बजाय।''

यहाँ करुण रस और उसके स्थायी भाव शोक का वर्णन कथन में किया गया है, परन्तु करुण रस के अंगों की सम्यक योजना करके रस-निष्पत्ति नहीं की गई है, इसलिए यहाँ स्वशब्दवाच्य दोष है।

अन्य रस-दोषों से विभाव और अनुभाव की कष्ट कल्पना, रस की पुनः पुनः दीप्ति, अकांड छेदन आदि हैं।

(4) वर्णन-दोष : जहाँ काव्य में किए गए वर्णन में कई प्रकार के दोष होते हैं; जैसे- पूर्वापर विरोध-एक बात जो पहले कही जाए और बाद में उसी का खंडन किया जाए। यह दोष अधिकतर प्रबंध काव्यों में होता है। प्रकृति-विरोध, अर्थ-विरोध, स्वभाव-विरोध आदि इसके अन्य प्रकार हैं; जैसे-

''फाड़-फाड़कर कुम्भस्थल, मदमस्त गजों का मर्दन कर,
दौड़ा सिमटा जमा उड़ा पहुँचा दुश्मन की गर्दन पर''

इन पंक्तियों में एक अश्व का वर्णन है किन्तु यह वर्णन अश्व के स्वभावगत गुणों के विरोध में है; अतः यहाँ स्वभाव विरोध वर्णन दोष है।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पूरक वाचन

1 जुदाई गुजरात की

वली

(जन्म : सन् 1648 ई; निधन : सन् 1744 ई.)

वली का जन्म औरंगाबाद में हुआ था। उनका संबंध अपने समय के प्रसिद्ध सूफ़ी विद्वान शाह वजीहुद्दीन अल्वी के खानदान से रहा है। उन्हें वली दकनी, वली औरंगाबादी और वली गुजराती जैसे तीन नामों से पुकारा जाता रहा है। सच यह है कि पुराने जमाने में गुजरात सहित पूरे दक्षिण भारत को 'दकन' कहा जाता था और गुजरात के प्रति कवि के बेहद लगाव को ध्यान में रख उनका वली गुजराती होना ही निश्चित माना जाता है।

वली को सचमुच गुजरात से बहुत लगाव था। वे कहा करते थे- गुजरात से उनका नाम ऐसे जुड़ा है जैसे गोश्त से नाखून। उन्हें गुजरात के सांप्रदायिक सौहार्य के वातावरण पर बड़ा नाज़ था। उन्होंने गुजरात के शहर सूरत पर एक सुंदर मस्नवी लिखी और गुजरात से बाहर जाने पर इसकी याद में 'दर फ़िराक-ए-गुजरात' शीर्षक से क़त्आ लिखा था। असल में वली के गुजरात से लगाव का कारण यह था कि उनके गुरु शादुल्लाखाँ गुलशन का अहमदाबाद से ताल्लुक था। गुजरात से गए हुए कई सूफी शायर दकन में उनके मित्र थे। सूरत, अहमदाबाद वली के जमाने में गूजरी (खड़ीबोली) शायरी के बहुत बड़े केन्द्र थे और यहाँ भी उनके मित्र थे। दकन से दिल्ली जाते समय और दिल्ली से दकन जाते समय वे गुजरात में बहुत दिन ठहरे और उनकी अहमदाबाद में मृत्यु हुई थी और यहीं वे दफनाए गए। गुजरात से लगाव और जुदाई की बेमिसाल कविता हैदर-फ़िराक-ए-गुजरात, जिसमें गुजरात से जुदाई का बड़े मार्मिक ढंग से बयान है। उन्हें सबसे ज्यादा दु:ख और अफसोस अपने मित्रों की मृत्यु का है, फिर भी उन्हें गुजरात से इतना गहरा लगाव है कि वे बार-बार गुजरात को देखने की ख्वाहिश रखते हैं।

गुजरात के फ़िराक़ सूँ है ख़ार-ख़ार दिल
बेताब है सिने मिनी आतिश बहार दिल

मरहम नहीं है उसके ज़ख़म का जहाँ मिनीं
शमशीर-ए-हिज्र सूँ जो हुआ है फ़िगारे दिल

अव्वल सूँ था ज़ाईफ़ पे पाबस्ता सोज़ में
ज्यूँ बाल है अगन के उपर बेक़रार दिल

इस सैर के नशे सूँ अवल तर दिमाग़ था
आख़िर कूँ इस फ़िराक़ ने खींचा ख़ुमार-दिल

मेरे सिने में आके चमन देख इश्क का
है जोश-ए-ख़ूँ सूँ तन में मिरे लाला ज़ार दिल

हासिल किया हूँ जग में सरापा शिकस्तगी
देखा है मुझ शकेब सूँ सुब्ह-ए-बहार दिल

हिज़ात सूँ दोस्ताँ के हुआ दिल मिरा गुदाज़
इशरत के पैरहन कूँ किया तार-तार दिल

हर आशना की याद की गर्मी सूँ तन मिनीं
हर दम में बेक़रार है मिस्ल-ए-शरार दिल

सब आशिक़ाँ हुजूर, अछे पाक सुर्ख़ रू
अपना अपस लहूँ सूँ किया है निगार दिल

हासिल हुआ है मुजकूँ समर मुझ शिकस्त सूँ
पाया है चाक-चाक हो शक्ल-ए-अनार दिल

मिज्मर निमन हुआ है बदन सोज़-ए-हिज्र सूँ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस्पद का मिसाल है आतिश-सवार दिल
अ.फ़सोस है तमाम कि आख़िर कूँ दोस्ताँ
इस मैकदे सूँ उठ के गए सुध बिसार दिल
लेकिन हज़ार शुक्र 'वली' हक के फ़ैज़ सूँ
फिर उसके देखने का है उम्मीदवार दिल

शब्दार्थ-टिप्पणी

फ़िराक जुदाई,वियोग **खार** काँटा **सीनेमिनी** दिल में **आतिश** आग **जखम** घाव **जहाँ मिनी** संसार में **शमशीर-ए-हिज्र** जुदाई की तलवार **फिगार** घायल **जईफ** कमजोर **पाबस्ता** बँधे हुए पाँव **सोज़** ऊष्मा,ताप **अगन** आग **बाल** पूरा हाथ **बेकरार** बेचैन **अवल** सबसे आगे **तर** भीगा हुआ **खुमार** नशा **चमन** बगीचा **जोश-ए-खूँ** खून का उफान **जार दिल** दिल का फूट फूट कर रोना **सरापा** सिर से पाँव तक **शिकस्तगी** हार, पराजय **शकेब** सब्र **सुब्ह-ए-बहार** मौसम की सुबह **गुदाज** मांसल,गदराया हुआ **इशरत** चैन,आनंद **पैरहन** लंबा पहनान **आशना** दोस्त **मिस्ल-ए-शरार** चिनगारी की तरह **अछे** है **पाक** पवित्र **सुर्खरु** लाल **निगार** मूर्ति,चित्र **मुजकूँ** मुझे **समर** फल **चाक-चाक** तार-तार **शक्ल-ए-अनार** अनार की तरह **मिज्मर निमन** अंगीठी जैसा **बदन** शरीर **सोज-ए-हिज्र** वियोग केताप से **इस्पद** नजर उतार ने के लिए जलाया जानेवाला एक प्रकार का काला बीज **मिसाल** उदाहरण **आतिश सवार** आग पर सवार **मैकदे सूँ** मदिरालय से **बिसार** भुलाकर **शुक्र** धन्यवाद **हक के फैर्ज सूँ** भलाई की मंशा से **उम्मीदवार** आस लगाए हुए

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 गाँधीजी को एक चिट्ठी

जयप्रकाश नारायण

(जन्म: सन् 1902 ई.; निधन सन् 1979ई.)

स्वतंत्रा संग्राम के बहादुर सेनापति एवं संपूर्ण क्रांति के दृष्टा लोकनायक जयप्रकाश नारायण का जन्म गंगा-सरयू संगम के निकट दो नदियों के बीच दोआब पर सिताब्दिआरा गाँव में हुआ था। माध्यमिक शिक्षा पटना में प्राप्त की। गाँधीजी के चंपारण सत्याग्रह के दौरान पढ़ाई छोड़कर बिहार विद्यापीठ में राष्ट्रीय शिक्षा पाने के लिए जुड़ गए। बीस साल की आयु में सेन्फ्रांसिस्को गए और सात वर्ष तक वहाँ रहकर बहुत कुछ सीखा। मार्क्सवाद से भी प्रभावित हुए। स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े और कईबार जेल गए। गाँधीजी, नहेरूजी के अतिरिक्त डॉ. राममनोहर लोहिया के संपर्क में आए। 1942 के 'भारत छोड़ो आंदालन' ने उन्हें बहुत लोकप्रिय बना दिया। विनोबाजी के भूदान यज्ञ के प्रचारार्थ पूरे देश की पद-यात्रा की।

गुजरात के नवनिर्माण आंदोलन का सफल नेतृत्व करते हुए उन्होंने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया और इन्हीं दिनों लोकनायक का बिरूद प्राप्त हुआ। आपात्काल के दौरान उन्हें जेल जाना पड़ा जेल से मुक्त होने के बाद उन्होंने जनता पार्टी से जुड़कर आपात्काल थोपने वाली शक्तियों को पराजित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बिहार में उन्होंने एक नई चेतना जगाई। राष्ट्रीयता उनकी सबसे बड़ी पहचान थी। 1998 में मरणोप्रांत उन्हें 'भारतरत्न' का सम्मान दिया गया। राजसत्ता से नहीं जन-हृदय से जुड़कर ही वे सच्चे लोकनायक बन सके थे।

कारावास के दौरान गाँधीजी के नाम लिखी चिट्ठी में जयप्रकाशजी ने उनके प्रति अपना आदरभाव व्यक्त किया है। साथ ही कुछ मौलिक सिद्धांतों को लेकर उनसे अपने मतभेदों की ओर भी विनम्रतापूर्वक संकेत करते हैं। वे लिखते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में कारावास यातनापूर्ण होते हुए भी एक अनिवार्य स्थिति है। आंदोलन में नवयुवकों का जुड़ना आशा की नई किरण है अत: उनके भविष्य के बारे में सोचना भी आवश्यक है। अपनी चिट्ठी में सरदार साहब का स्मरण करना वे नहीं भूलते।

प्रिय बापू जी,

चरणों में सादर सप्रेम प्रणाम!

प्रभा के हाथों आपका जो कृपा-पत्र आया था, वह उसी समय मिल चुका था। खेद है कि अब तक उत्तर नहीं दे पाया था, क्षमा प्रार्थी हूँ।

मैंने प्रभा से सिर्फ इतना ही कहा था कि आपसे पूछ लें कि जो पत्र लाहौर से सेवा में भेजा था, वह मिला था या नहीं। मुझे दु:ख है कि उसने आपको पत्र लिखने का कष्ट दिया। फिर भी कृपापत्र पाकर धन्य हुआ हूँ।

यह सही है कि कुछ विचार-क्षेत्रों में मैं खिंचकर आपके बहुत निकट आ गया हूँ, जिससे मुझे प्रसन्नता ही मिलती है। परन्तु साथ ही इस बात का दु:ख बना हुआ है कि मौलिक सिद्धान्तों के क्षेत्रों में आज भी अपने को आपसे उतनी ही दूर पाता हूँ, जितना कभी भी था और कार्य क्षेत्र से तो मुझे ऐसा लगता है कि मेरा क्षेत्र दूर ही नहीं, बल्कि नितान्त पृथक भी हो जाएगा। इधर प्राय: जितनी घटनाएँ हुई हैं, उनका कारण तो मैं इस धारा में अपने को अधिकाधिक बेगवान ही हुआ पाता हूँ। अस्तु, जैसा आपने लिखा है, जेल की और बाहर जगत की भावनाओं में अक्सर अन्तर पाया जाता है।

यों तो जेल मनुष्य का रहने का स्थान नहीं है, फिर भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं न अपनी रिहाई के दिन ही गिन रहा हूँ कि यही सोचता हूँ कि कोई महायज्ञ कर रहा हूँ।

क्रान्तियों में कुछ का मरना, कुछ का बरबाद हो जाना, कुछ का कारीगरों में सड़ते रहना अनिवार्य है। इसमें किसी प्रकार के सोच-विचार का स्थान ही कहाँ है? अभी हजारों जेल में पड़े हैं - आगे भी हजारों पड़ेंगे।

अब हमारे बाग के बरसाती फूलों के म्लान मुख पर बुढ़ापे की झुरियाँ पड़ चुकी हैं। उनको जगह लेने के लिए शीत ऋतु के फूलों के अंकुर मिट्टी के आंचल में झाँक रहे हैं। और, आजकल मेरा अधिक समय उन्हीं के भविष्य के निर्माण में बीत रहा है और इस कल्पना में की मेरी इस-छोटी दुनिया के किस कोने को कौन-सा फूल आलोकित करेगा और किस क्यारी को अपनी मुस्कान से ढ़क लेगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

परिस्थिति इस बात का विश्वास दिला रही है कि अपनी कल्पनाओं का मूर्त रूप अवश्य देखने को मिलेगा। और, इससे प्रसन्नता का ही अनुभव करता हूँ; क्योंकि अपने परिश्रम का निष्फल जाना साधारणत: मनुष्य सह्य नहीं होता।

आशा है, इस बकवास से कुछ मनोरंजन ही हुआ होगा। फिर भी पत्र की लम्बाई के लिए क्षमा चाहता था। पत्रोत्तर देने का कष्ट न करें, तो ही मुझे संतोष होगा।

बम्बई में ज्वर हो जाने का समाचार पढ़कर दु:खी हुआ था। आशा है, अब स्वास्थ्य ठीक होगा। सरदार साहब के चरणों में मेरा प्रणाम। समाचार पत्रों से यह जानकर खुशी हुई है कि उनके स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। आशा है, सीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर सकेंगे।

प्रभा पिछले मास के 15, 16 को आई थी। फिर इस महीने के अन्त में उसके आने की आशा है।

आपका
जयप्रकाश नारायण

शब्दार्थ-टिप्पणी

क्षमा प्रार्थी माफ़ी माँगने वाला **कृपापत्र** बड़ों का छोटो को लिखा जानेवाला पत्र **मौलिक** असली, जो किसी की नकल पर न हो बल्कि अपनी उभ्दावना से निकला हो **नितान्त पृथक** एकदम अलग **बेगवान** तेज गति वाला **म्लान** मुरझाया **आलोकित** प्रकाशित **सह्य** सहन करने योग्य **पत्रोत्तर** पत्र का उत्तर **ज्वर** बुखार

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 पुस्तकें

विश्वनाथप्रसाद तिवारी
(जन्म: सन् 1940 ई.)

विश्वनाथ तिवारी का जन्म उत्तरप्रदेश के कुशीनगर के रायपुर भेड़िहारी गाँव में हुआ था। उच्च सिक्षा प्राप्त कर गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहे। कई बार कई देशों की यात्राओं ने उनके अनुभव-विश्व को समृद्ध किया। 'दस्तावेज' जैसी महत्त्वपूर्ण हिन्दी पत्रिका के सफल संपादन के लिए उन्हें 'सरस्वती, सम्मान मिला। कविता, संस्मरण, आलोचना और यात्रा-संस्मरण के साथ-साथ पत्रकारिता जैसी कई विधाओं में उनका विशेष योगदान है।

उनके मुख्य काव्य-संग्रह हैं 'आखर अनंत', 'चीजों को देख कर', 'बेहतर दुनिया के लिए', 'शब्द और शताब्दी'। आलोचना-ग्रंथ हैं- 'आधुनिक हिन्दी कविता', 'समकालीन हिन्दी कविता', 'रचना के सरोकार', 'कविता क्या है', और 'गद्य के प्रतिमान।' उनके संस्मरणों में 'आत्मकी धरती', 'अंतहीन आकाश', 'एक नाव के यात्री' प्रमुख हैं। 'फिर भी कुछ रह जाएगा' के लिए व्यास सम्मान, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान से 'साहित्य भूषण' सम्मान एवं मोस्को का पुश्किन सम्मान प्राप्त हुआ। समकालीन कविता में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

प्रस्तुत कविता में कवि ने एक ओर पुस्तकों के प्रति समाज की अनदेखी और उपेक्षा के प्रति अपनी चिंता प्रकट की है तो दूसरी ओर आनेवाले भविष्य के लिए उनकी अनिवार्यता एवं बहुमूल्यता का स्वीकार किया है। पुस्तकों को यदि कहीं भी- किसी भी अंध गह्वर में छिपा दिया गया होगा तो भी उन्हें खोजता-टटोलता कोई जिज्ञासू अवश्य आ टकराएगा। कवि पुस्तक से निवेदन करता है कि तुम उस जिज्ञासू को स्पर्श-मात्र से ही पहचान लेना और अपने अंतर में सहेजा हुआ सब कुछ उसके सामने खोलकर रख देना। कवि के विचार से पुस्तकें ही हमारे साहित्य और संस्कृति की सच्ची संरक्षिका हैं।

नहीं, इस कमरे में नहीं
उधर
उस सीढ़ी के नीचे
उस गैरेज के कोने में ले जाओ
पुस्तकें
वहाँ, जहाँ नहीं अँट सकती फ्रिज
जहाँ नहीं लग सकता आदमकद शीशा

बोरी में बाँधकर
चट्टी से ढककर
कुछ तख्ते के नीचे
कुछ फूटे गमले के ऊपर
रख दो पुस्तकें

ले जाओ इन्हें तक्षशिला-विक्रमशिला
या चाहे जहाँ
हमें उत्तराधिकार में नहीं चाहिए पुस्तकें
कोई झपटेगा पासबुक पर
कोई ढूँढ़ेगा लॉकर की चाभी
किसी की आँखों में चमकेंगे खेत

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

किसी में गड़े हुए सिक्के
हाय-हाय, समय
बूढ़ी-दादी सी उदास हो जाएँगी
पुस्तकें
पुस्तको!
जहाँ भी रख दें वे
पड़ी रहना इंतजार में

आएगा कोई न कोई
दिग्भ्रमित बालक जरूर
किसी शताब्दी में
अँधेरे में टटोलता अपनी राह

स्पर्श से पहचान लेना उसे
आहिस्ते-आहिस्ते खोलना अपना हृदय
जिसमें सोया है अनंत समय
और थका हुआ सत्य
दबा हुआ गुस्सा
और गूँगा प्यार
दुश्मनों के जासूस
पकड़ नहीं सके जिसे।

शब्दार्थ-टिप्पणी

अँटना समाना **आदमकद** मनुष्य की लंबाई जितना **बोरी** जूट का बना बड़ा थैला **चट्टी** चटाई **दिग्भ्रमित** दिशाहीन **आहिस्ता-आहिस्ता** धीरे-धीरे

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 रसायन और हमारा पर्यावरण

डॉ. एन. एल. रामनाथन
(जन्म: सन् 1927 ई.)

डॉ. रामनाथन का जन्म केरल में हुआ था। कोचीन से आरंभिक शिक्षा प्राप्त कर इन्होंने काशी विश्वविद्यालय से भौतिक में एम. एस. सी. की उपाधि प्राप्त की। बंगलौर तथा कलकत्ता में रहते हुए इन्होंने भौतिक और पर्यावरण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण शोध कार्य किया। जादवपुर विश्व विद्यालय से इन्हें पी. एच. डी. की उपाधि प्रदान की गई। पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर इन्होंने गम्भीरता पूर्वक विचार किया है।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने रासायनिक पदार्थों से होने वाले पर्यावरण-प्रदूषण एवं उनके घातक प्रभावों पर प्रकाश डाला है। वस्तुत: आजका युग रसायनों का ही युग है। पृथ्वी पर जल, जीव-जंतुओं का अस्तित्व रसायनों के कारण ही है। हमारा जीवन सामान्य रूप से भी अनेक छोटे-बड़े खतरों से भरा है। रसायन भी हमारे जीवन के लिए कई प्रकार के खतरे पैदा करते हैं। हमारे स्वास्थ्य के लिए अनेक चुनौतियाँ पैदा करते हैं। डी.डी.टी, मरकरी सेल, सीसा, सल्फर डाइऑक्साइड आदि ऐसे अनेक तत्त्व हैं। ऐसे रसायनों के बारे में हमें जानकारी होनी चाहिए। इनसे होनेवाले लाभ तथा हानियों के प्रति हमारी सतर्कता-सजागता का होना बहुत जरूरी है। इनका प्रत्यक्ष या परोक्ष उपयोग करते समय हमें विवेकपूर्वक विचार करना चाहिए। इस विषय में हमें अपनी ही नहीं, आनेवाली पीढ़ियों की भी चिंता करनी होगी।

हम रसायनों के युग में रह रहे हैं। हमारे पर्यावरण की सारी वस्तुएँ और हम सब, रासायनिक यौगिकों के बने हुए हैं। हवा, मिट्टी, पानी, खाना, वनस्पति और जीव-जंतु ये सब अजूबे जीवन की रासायनिक सच्चाई ने पैदा किए हैं। प्रकृति में सैंकड़ों-हजारों रासायनिक पदार्थ हैं। रसायन न होते तो धरती पर जीवन भी नहीं होता। पानी, जो जीवन का आधार है, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बना एक रासायनिक यौगिक है। मधुर-मीठी चीनी, कार्बन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बनी है। कोयला और तेल, बीमारियों से मुक्ति दिलाने वाली औषधियाँ, एंटीबायोटिक्स, एस्प्रीन और पेनिसिलीन, अनाज, सब्जियाँ, फल और मेवे-सभी तो रसायन हैं।

जीवन जोखिम से भरा है, गुफा-मानव ने जब भी आग जलाई, उसने जल जाने का खतरा उठाया। जीवनयापन के आधुनिक तरीकों ने कुछ खतरों को कम किया है, पर कुछ खतरे अनेक गुना बढ़ गए हैं। ये खतरे नुकसान और शारीरिक चोट के रूप में हैं। हम सभी अपने दैनिक जीवन में जोखिम उठाते हैं। जैसे जब हम सड़क पार करते हैं, स्टोब जलाते हैं, कार में बैठते हैं, खेलते हैं, पालतू जानवरों को दुलारते हैं, घरेलू काम-काज करते हैं, या केवल पेड़ के नीचे बैठते होते हैं, तो हम जोखिम उठा रहे होते हैं। इन जोखिम में से कुछ तात्कालिक हैं, जैसे जलने का, गिरने का या अपने ऊपर कुछ गिर जाने का खतरा। कुछ खतरे ऐसे हैं जिनके प्रभाव लम्बे समय के बाद सामने आते हैं जैसे लम्बे समय तक शोर-गुल वाले पर्यावरण में रहने वाले व्यक्तियों की श्रवण शक्ति कम हो सकती है।

क्या रसायन भी जोखिम उत्पन्न करते हैं? स्पष्ट है कि कुछ अवश्य करते हैं। उनमें से अनेक बहुत अधिक जहरीले हैं, कुछ प्रचंड विस्फोट करते हैं और कुछ अन्य अचानक आग पकड़ लेते हैं, ये रसायनों के कुछ तात्कालिक 'उग्र' खतरे हैं। रसायनों में कुछ दीर्धकालिक खतरे भी होते हैं, क्योंकि कुछ रसायनों के सम्पर्क में अधिक समय तक रहने पर, चाहे उन रसायनों का स्तर लेशमात्र ही क्यों न हो, शरीर में बीमारियाँ पैदा हो सकती हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वास्तव में रसायनों के बारे में यह कहना शायद गलत न हो कि जो रसायन जितना अधिक जहरीला या खतरनाक होता है, उसका उपयोग आज उतना ही सुरक्षित है, क्योंकि लोग उसके बारे में पहले से सावधान होते हैं और इसलिए इन्हें इस्तेमाल करते वक्त काफी सतर्क रहते हैं।

लेकिन अपेक्षाकृत कम जहरीले रसायनों के बारे में यह बात नहीं कही जा सकती है। रसायनों के लम्बे समय के बाद उजागर होने वाले प्रभाव, दीर्घकालिक खतरे, अभी हाल ही में पहचानी गई समस्या है, कुछ रसायन उस पीढ़ी को तो प्रभावित नहीं करते जो उसके सम्पर्क में रहती है, पर उनके प्रभाव अगली या उससे भी अगली पीढ़ी को झेलने पड़ते हैं। ऐस्बेस्टस ने, जिसे हमने एक सुरक्षित पदार्थ समझा था और जो अग्नि को भी सह सकता है, अपने कैंसर पैदा करने के अवगुण से हमें आश्चर्य में डाल दिया। पोलीक्लोरीनेटिड बाइफेनिल, जो अपने परावैद्युत (डाई-इलेक्ट्रक) गुण के कारण जाने जाते हैं, वातावरण में धीरे-धीरे इकट्ठे होते जाते हैं, और एक लम्बे समय के बाद जीवों, मछलियों और यहाँ तक कि मनुष्यों के लिए भी खतरा उत्पन्न कर देते हैं। एक अन्य गजब के रसायन, डी.डी.टी. को तब खतरनाक करार दिया गया जब रचैल कार्सन ने अपनी पुस्तक 'लाइलेंट स्प्रिंग' में इसके अवगुण बखाने। कास्टिक सोड़ा के उत्पादन में काम आने वाली मरकरी सेल प्रौद्योगिकी दो दशक पहले तब तक बड़े मजे से इस्तमाल की जाती रही, जब तक कि विश्व के सामने जापान में मिनामाटा की मछली खाने वाली आबादी में, अपंग बना देने वाला और आमतौर पर घातक सिद्ध होनेवाला स्नायु रोग फैलने की घटना सामने नहीं आई। यह रोग पानी में बहि:स्राव के रूप में बहाए जाने वाले मरकरी के कारण फैल रहा था। इसका मेथिल मरकरी में जैविक परिवर्तन हो रहा था और मछलियाँ उसे मनुष्य में पहुँचा रही थीं।

हमारा आधुनिक औद्योगिक अनुभव, प्रतिदिन इस्तेमाल होने वाले रसायनों के दीर्घकालिक खतरों से भरा पड़ा है, इन रसायनों में भारी धातुएँ, कार्बनिक विलायक, जहरीली बाष्प और गैसीय उत्सर्जक शामिल हैं। इनमें से अनेक प्रदूषकों को हम भोजन और पानी के साथ अपने पेट में अथवा साँस के साथ अपने फेफड़ों में ले जाते हैं। दुर्भाग्य से वायु प्रदूषण तक घरेलू शब्द बन गया है। कुछ ऐसे रसायन भी मौजूद हैं जो हमारी सही सलामत खाल से होते हुए हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

सीसा यानी लेड एक सर्वव्यापी विष है। सल्फर डाइऑक्साइड सब जगह पाई जाती है। हमारे लगभग सभी खाद्य पदार्थों में कीटनाशक दवाइयों के अवशेष पहुँच चुके हैं। इनमें से अधिकतर रसायनों के जहरीलेपन के बारे में हमें जानकारी है, पर फिर भी उनसे जुड़े खतरों के बारे में वैज्ञानकों की अलग-अलग राय है, पर इस बात से सभी सहमत हैं कि रसायनों के सम्पर्क में रह कर काम करने वाले कर्मचारियों को उनसे सुरक्षा प्रदान करने और आम जनता तथा पर्यावरण को निम्न स्तरीय प्रदूषण से बचाने के लिए कदम उठाये जाने चाहिए। रासायनिक उत्पादों से निश्चित सुरक्षा पाने और पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए हमें और अधिक जानकारी हासिल करने की जरूरत है।

सबसे पहले यह जरूरी है कि खतरों को पहचाना जाए। इसके बाद हमें अपने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के वर्तमान ज्ञान के आधार पर उन्हें निम्नतम स्तर पर काम करना चाहिए, किन्तु ज्ञान का कितना भी ऊँचा स्तर अथवा सरकारी कानून इन जोखिमों को पूरी तरह दूर नहीं कर सकते। क्यों कोई दुनिया की उस स्थिति की कल्पना कर सकता है जिसमें सभी संभाव्य खतरनाक रसायनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया हो? ऐसा कुछ भी तो नहीं है जिससे हानि हो सकने की संभावना न हो। एक पुरानी कहावत है जिसका आशय है "अति से तो अमृत भी जहर बन जाता है।"

हमें जोखिमों पर अपने निर्णय की संभाव्यता के आधार पर जोखिम-लाभ विश्लेषण की संकल्पना को ध्यान में रखकर लेने होंगे। यह कोई ऐसा मामला नहीं है जिसमें काले को विशुद्ध काला और सफेद बतलाया जा सके अथवा स्पष्ट 'हाँ' या ''ना' कहा जा सके। यह किया कैसे जाए? और क्या यह किया जाना आवश्यक है भी? इस बारे में लोगों की रायों में बहुत अन्तर होता है। इसलिए 'ग्राह्य जोखिम' और 'अग्राह्य जोखिम' शब्दों का इस्तेमाल होने लगा है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खेती में इस्तेमाल होने वाले कीटनाशी मनुष्य के लिए किसी न किसी हद तक जहरीले हैं, इन्हें पर्यावरण में जानबूझ कर छिड़का जाता है, किन्तु इसके लिए इन्हें भली-भाँति परखा जाता है और इस्तेमाल की अनुमति दी जाती है। कारण, इससे फसल की वृद्धि के रूप में अधिक लाभ प्राप्त होता है। रासायनिक कीटनाशियों के इस तरह नियंत्रित इस्तेमाल के खतरे ग्राह्य जोखिम हैं, लेकिन जोखिम का मूल्यांकन समय अथवा परिस्थितियों के साथ बदल सकता है। विकसित देशों में सन् 1972 ई. के बाद डी.डी.टी. पर प्रतिबन्ध लगा दिया था, किन्तु विकासशील देश डी.डी.टी. के लगातार इस्तेमाल में आज भी लाभ देख रहे हैं।

कुछ रसायन जो अपने आप में सुरक्षित हैं, इस समय हानि पहुँचाते हैं जब वे अन्य पदार्थों से क्रिया कर लेते हैं या फिर जब वे अन्य पदार्थों के साथ मिलने के बाद अपना जहरीलापन छोड़ देते हैं। सोडियम और क्लोरिन दोनों खतरनाक हैं, किन्तु साधारण नमक, सोडियम क्लोराइड जीवन के लिए जरूरी है। दूसरी ओर समुद्र का पानी पीने की दृष्टि से अत्यन्त जहरीला है और लम्बे समय तक नमक का सेवन रक्तचाप बढ़ने का कारण बन जाता है, जो एक दीर्घकालिक जोखिम है। यहाँ पर, मात्रा और जहरीलापन-दोनों तथ्य जोखिम के अर्थ को प्रभावित करते हैं।

कैंसर सबसे भयानक रोग है। कहा जाता है कि कैंसर अधिकतर पर्यावरणीय रसायनों के प्रति अद्‌भासन के कारण होता है। यह तथ्य है या युँ ही उड़ाई गई बात? कैंसर से सम्बन्धित आँकड़े आज अविश्वसनीय हैं। ऐसी रिपोर्ट भी मौजूद है जो संकेत देती है कि कैंसर के मामले बढ़ रहे हैं, किन्तु अन्य रिपोर्टों के अनुसार कैंसर के मामले कम होते जा रहे हैं। जिछले 25 वर्षों में पेट के कैंसर मामलों में भी कमी आई है, किन्तु फेफड़ों का कैंसर बढ़ा है। आमतौर पर यह बताया गया है कि कैंसर के 80 प्रतिशत मामले पर्यावरणीय कारकों से संबन्धित हैं। इसका अर्थ यह लगा लिया जाता है कि सारा दोष संश्लेषित रसायनों और वायु प्रदूषण का है। तथ्य जबकि यह है कि ये आँकड़े केवल अर्थ अनुमान आधारित हैं, उनमें उन सभी कैंसरों के मामलों को भी गिना जाता है जो आनुवांशिक नहीं हैं। पर्यावरण कारकों में तम्बाकू, शराब, सूरज की रोशनी और स्वच्छता भी शामिल है और प्रदूषण भी। प्रत्यक्ष रूप से कामकाज के वातावरण के कारण उत्पन्न कैंसर, कुल कैंसरों के मामलों का एक से पाँच प्रतिशत है।

रसायनों के बारे में, समाज के प्रति उसके लाभों और खतरों के बारे में निर्णय कौन करे? इस सम्बन्ध में व्यक्तिगत और सामाजिक दृष्टिकोण है जो आदमी सिगरेट पीता है या शराब का सेवन करता है और अपनी सेहत के प्रति लापरवाह है, जोखिमों के सम्बन्ध में यह अपना ही निर्णय ले रहा है। दूसरी ओर, सामाजिक निर्णय सरकार को लेने होते हैं। किन्तु सरकार विज्ञान से लेकर सामान्य बुद्धि तक, सभी उपलब्ध सूचनाओं का उपयोग करके यह निर्णय किस प्रकार ले? रसायनों के इस्तेमाल पर सरकारी निर्णय, कानून और नियम बढ़ते जा रहे हैं क्योंकि जनता के स्वास्थ्य की सुरक्षा सरकार का कानूनी उत्तरदायित्व है।

रसायनों के सम्बन्ध में सूचनाओं का विश्लेषण आसान नहीं है। सभी प्रकार के लोगों का इस सूचना-भंडार में योगदान होता है। इनमें अक्सर असहमतियाँ होती हैं। मोटर-गाड़ियों की गति सीमा कितनी होनी चाहिए? कोई रसायन कारखाना, रोजगार, उत्पादन और सेवाएँ उपलब्ध करने के लिए बनाया जाना चाहिए या उसे इसलिए नहीं बनाया जाना चाहिए क्योंकि वह प्रदूषण फैलाता है? ये सब रोज के प्रश्न हैं। हमारे निर्णय पर भावनाएँ और आशंकाएँ हावी हो जाती हैं। सही वैज्ञानिक तथ्य अधिकतर मौजूद नहीं होते या पर्याप्त नहीं होते। रसायनों के जोखिम के प्रति निर्णय लेना कभी भी आसान नहीं है, किन्तु आवश्यक हमेशा है। जोखिमों और लाभों के बारे में निर्णय लेने वाले तो हम सब ही हैं।

रसायन हमारी आवश्यकता है। ये हमारे पर्यावरण में हमेशा मौजूद हैं, इनकी सूक्ष्म अथवा लेश मात्रा भी 'अर्थपूर्ण' हो सकती है। इन लेश रसायनों के बारे में हमें और अधिक जानने की जरूरत है। हमें इस बारे में भी और जानकारी हांसिल करनी है कि इनसे क्या हो सकता है। जब तक कोई रसायन बिना किसी संदिग्धता के गैर जरूरी और हानिकर सिद्ध न हो जाए, तब तक उसका इस्तेमाल जारी रहने देना चाहिए। लेकिन यह इस्तेमाल सुरक्षित ढंग से और सुरक्षित मात्रा में होना चाहिए। तात्पर्य यह

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

है कि संभावी लाभकारी पदार्थों का इस्तेमाल, उनके गलत इस्तेमाल से हो सकने वाली सभी हानियों को पूरी तरह जानते-समझते हुए, पूरे विवेक के साथ किया जाना चाहिए प्रश्न उठता है कि क्या हम ऐसा करने में सफल हो सकते हैं ? बहुत से मामलों में ऐसा किया जा चुका है और यदि हम कोशिश करें तो ऐसा अवश्य कर सकते हैं। इसमें शक नहीं, हमें लगातार सतर्क रहना होगा। रासायनिक सुरक्षा को प्रतिदिन का कार्य मान लिया जाना चाहिए।

शब्दार्थ-टिप्पणी

रसायन वह औषध जिसके सेवन से सब रोग हट जाते हैं,पदार्थों के तत्त्वों का ज्ञान **अजूबे** अद्‌भुत **उद्‌मासन** अच्छे से प्रकट होना **दीर्घकालिक** लम्बे समय तक

• • •

Downloaded from https:// www.studiestoday.com